प्रभु साथे

एकांतमां करवानी वातो

अटले

स्तवन, सज्झाय, पद, चैत्यवन्दन अने स्तुतिओनो संग्रह

साथे

साधु-साध्वी योग्य आवश्यक क्रियाना सूत्रो

अने

जीवविचारादि प्रकरणो

नो पण समावेश करवामा आव्यो छे

मूल्य रुपिया ३॥

प्रकाशक
शा मूलचन्द अग्रवालजी,
दावनगेरी

पुस्तक मळवानुं ठेकाणुं
शा जोरमल मलाजी
C/o शा मलाजी पुखराज
दावनगेरी, (मैसूर स्टेट)

प्रस्तावना

सारमेतन्मया लब्धं श्रुताब्धेरवगाहनात् ।
भक्तिर्भागवती बीजं परमानन्दसम्पदाम् ॥ १ ॥ द्वा द्वा

"आगमोरूपी महासागरना आलोडन (मथन) नो सार मने मोक्षसुखनु बीज कद होय ता जिनेश्वरनी भक्तिज ए मळ्यो छ" आ म श्रीमद् न्यायाचार्य श्री यशोविजयजी महाराजना टकशाळी वचनो छे

आजकाल घणा लोकोने धर्म, मोक्ष आदि शब्द अरुचिकर लागे छे, माटे आ पुस्तकमा छपायेला धर्मधुरधर प्राचीन महा पुरुषो रचित स्तवनो प्रभु आगळ भक्तिथी एकानमा कहेवानी वातो होवाथी पुस्तकनु नाम पण एवुज खास राख्यु छे, के जेथी विरलनाचायानी कृतिनो लोको लाभ ले

प्राचीन आचार्योना स्तवनो प्रत्ये तो घणुज अणगमो पेदा करायो छे, अने वैराग्य उपजावनारा खास रागोने बदले मारी नाटक सिनेमाना रागोमा नवा रचाता स्तवनादिनो आदर अने प्रचार खूब करवामा आवे छे एक अपेक्षाए एम कही शकाय के शान्तरस अने वैराग्यरसना स्थाने पोतानी जोडकलाना प्रचार माटे शृगाररसने स्थान अपायु छे, अर्थगाम्भीर्यनु स्थान उपलकिया ज्ञानने अपायु छे हृदयमा भक्तिनी उर्मिओ प्रगटे त्यारे पदोनी रचना करवी जूदी वात छे, अने स्तवनो के पोताना प्रशसानी गहुलीओ रोज नवी नवी रची खास व्यक्तियो द्वारा पोताना व्याख्यानोमा के प्रतिक्रमणमा बोलावरावी मळकावु ए जूदी वात छे एमा शासनप्रभावना ने गुरुभक्ति गणाती होय तो वाचक श्री देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणे आगमोने वलभीपुरमा

तेमा नथी क्याय सोरठनी छाया के नथी पोतानु तेमज पोताना गुरनु नाम के चित्र एटले एमनामा गुरुभक्तिनो छांटोय होतो एम कहेवु पडशे, आ वात मानमूल्या ने गुरुभक्तिनी पेलछावाळाए खास विचारवा जेवी छे, नहि तो एनो आकरो फटको आज नहि तो भविष्यमाय लाग्या विना नहि रहे, परिणाम जूना स्तवनो विगेरेनी उपेक्षाज नहि, किंतु अणगमो आव्या विना नहिज रहे

अजैनोए पण ज्ञानयोग अने कर्मयोगनी साथे भक्तियोगने मान्यो छे, के जेने आपणे सम्यग्दर्शन (भक्तियोग) ज्ञान (ज्ञानयोग) अने चारित्र (कर्मयोग) अथवा ज्ञानक्रियाना नामथी ओळखीए छीए, जैनाचार्योए तो भक्तिनो महिमा घणोघणो गायो छे, "चमक पाषाण जेम खेंचशे लोहने०, जिनभक्ते जे होने राता०, तहवि मम हुज्ज सेवा" आम ठेरठेर भक्तिना अप्रतिम फळो वर्णवता भक्तिने उच्च स्थान अपायु छे जो के बहारना उपचारने पण भक्ति कही छे, छता साची भक्ति तो जिनेश्वरनी आज्ञाना पालनमान छे के जेने "धार तरवारनी०" इत्यादि वचनोथी योगीराज श्रीआनदघनजी महाराजे दुष्कर जणावी छे, तेथी तेने महापुण्यशालिओज करे आवी भक्ति जन्मावरा प्रथम तेनी धून जगाडवी पडे छे, ते माटे वीतरागना गुणगान करवाना होय हाथ, पग, आख, कान, जीभ विनाना, के श्रमण पण भणेला अने देखता विगेरेनी जेम भक्ति करी शके छे लोकोमा निंदापात्र गणाता रावणे पण अनन्य भक्तिथी तीर्थंकर गोत्र बाध्यु अने श्रेणिक राजा पण दररोज १०८ सोनाना जवोथी भगवाननी भक्ति करता, कुमारपाळ पाच कोडीना फूलोथी प्रभुपूजा करी अढार देशनी राज्यलक्ष्मीने पाम्या छे, छता गाधर थशे ते भक्ति पुष्पादि पूजा, गुणगान, नाट आगळ करवाथी थाय छे अरिहत उपर जेटे नेहे

है

अने जेवो उल्लास तेवी भक्तिना साधनोनो ठाठ आत्माने भक्तिरसमां झीलतो बनाववा आपणा जेम अजैनोमाय गीतो भजनो आदिना निर्माण थया छे आपणे मोक्षनाज आदर्शवाळा माटे मोक्षार्थे कराती भक्तिने ऊचा प्रकारनी गणी छे, माटेज सेवाभक्तिना फळ रूपे भव-निर्वेद अर्थात् संसारनो कटाळो, भवनी भयंकरता मने सचोट भासो एम " जय वीयराय " मा मांगीए छीए, अने आपणा स्तवन सज्झायोमा भाव पण एज तरी आवे छे भक्ति करनारे पोतानी लघुता अने वीतराग देवनी परम उच्चता मानवी ए भक्तिनु प्रथम पगथीयु छे सामान्य माणसनी सेवाथीय लाभ थाय तो पछी तीन लोकना बादशाहनी भक्तिथी शु न मळे ? एनाथी जे मळे ते तो बीजा कोईथीय न मळे, माटे एनी एटली महत्ता वर्णवी छे, अने तेथीज आपणा प्राचीन पूर्वजोए आगमो अने प्रकरण ग्रथो रचवा उपरात स्तवनो, गीतो, पदो, विनतिओना पण चालु भाषामा रचना करी छे जेमा परमात्माना गुणो, ऋद्धि पृ ९, ११, उपकार ने पोतानी करुणाजनक दीन स्थिति पृ ८३, ७६, दासपणु पृ ८२, परमपदनी नम्रभावे याचना पृ ४, ? उपरात केटलाक शास्त्रीय विषयो पृ १७६, १८८, १३६ पण गूथी दीधा छे, जेथी सुंदर रागरागणीवाळा ते गीत, गायनो, पदो कर्णमधुर लागवाथी गानारा के वारवार सांभळनारा लोकोने सहेजे अभिरुचि थाय, भक्तिप्रिय आत्माओ ते तरफ झुके, साथे साथे महत्त्वना विषयोनु पण तेमने स्थूळरूपे ज्ञान थाय

श्री आनंदघनजी के श्री यशोविजयजी महाराज आदिना केटलाक स्तवन–सज्झायोनो अर्थ बहु गंभीर होवाथी आपणा जेवा बाळजीवो माटे ते समजवो बहु मुश्केल थई पडे छे, अर्थ समजेलु बोलाय तेमा अनेरो आनद अने अपूर्व भक्ति जागे छे, माटे केटलाक न समजाय

तेवा शब्दोनो जाणी शकाया ने ते अर्थ संक्षेपथी टिप्पणमा आप्यो छे ए शिवाय अंतिम आराधनाने उपयोगी पुण्यप्रकाशनु स्तवन, पद्मावती, चार शरणा अने श्रीसीमंधरस्वामीने विनति आदि आत्महितकर वस्तुओ पण आ पुस्तकमा आपी छे परलोक सुधारवा मरण सुधारवु जोइए, माटेज जन्म करताय मरणनु महत्त्व आम अनेकगणु वधी जवाथी शास्त्रोमा जन्मनो नही पण मरणनो विधि कह्यो छे अंत वखते बधा साथे (शत्रु साथे के अबोला होय तेओना साथे तो खास) खमत खामणा, पच्चक्खाण, करेला पापोनु स्मरण, पापोनो पश्चात्ताप, पुण्यकार्योनी अनुमोदना, पंचपरमेष्ठीनु छेल्ला श्वासोच्छ्वास सुधी स्मरण, घरबार, मालमिल्कत अने छेवटे शरीरने पण वोसिराववु विगेरे अवश्य करवानो विधि होय छे पुण्य प्रकाशनु स्तवन चार शरणा अने संथारा पोरिसी आदि तो दररोज बोलवामा आवे तोन अंतवेळाए ते संभळावनारनो जोग न मळे तोय मरनार आपमेळे तेनो अर्थ विचारी आराधना करी शके, आ वस्तुओ मरती वखतेज बोलवानी के सांभळवानी होय एवी वहेमभरी मान्यता केटलाक लोको मक्कम पकडी बेठा छे ते स्वपरनी घातक छे

आ पुस्तकमा प्रभुसाथे एकतामा करवानी वातो अथात् स्तवन विनति सज्झाय चैत्यवन्दनादि उपरात घणाओने सदा उपयोगी जीव-विचार नवतत्त्वादि प्रकरणो अने साधुसाध्वी योग्य आवश्यक क्रियाना सूत्रो पण आपवामा आव्या छे ते एटलाज माटे के नित्य उपयोगी वस्तुओवाळु आ एकज पुस्तक पासे होय तो स्वाध्याय माटे बीजा पुस्तकोनी भाग्ये जरूर नहा रहे

केटलाक कठिण शब्दोनो अर्थ लखता पं श्री प्रभुदासभाई बे पारेखनी अर्थसहित श्री आनंदघन चोवीसी अने श्री सोमचंद डी

शाहे प्रकाशित श्री सीमधरस्वामीनु १२५ गाथानु स्तवन आ बे पुस्तकोनो उपयोग करवामा आव्यो छे माटे तेमनो आभार मानु छु

आ अने बीजा पण बधा पुस्तकोनी उपन ज्ञानकार्यमां खर्चो वानी छे, तेनो हिसाब अने वहिवट शेठ मोटाजी रगनाथजी अने शेठ जेताजी साकळाजी समाळे छे

आ अने "टगेरो अथवा गुरमत्र' पुस्तक छपाववा माटे रु २००० पूना भवानी पेठ वाळा लाकडाना वेपारी शेठ मोटाजी रगनाथजीए आपेला छे ते माटे तेओने धन्यवाद।

आ पुस्तकमा केटलाक ठेकाणे प्रेसदोषथी अशुद्धि तेमज कोइ कोइ ठेकाणे प्रूफ तपासनार मुनि केवळविजयजीना स्मृतिदोषथी गाथाओ रही गइ छे, तेमज केटलीक फूटनोटमाय अशुद्धिओ रही गइ छे ते माटे पृष्ठ अने पक्तिवार शुद्धिपत्र अने पृ १५, १६ मा खुलासो छाप्यो छे, ते प्रमाणे सुधारीने अभ्यास करवा दरेक जिज्ञासुने सादर विनति करी सुधारता छता रहेली भूलो माटे त्रिकरण योगे क्षमा यावु छु

द्वि वै व १२।२००९ } शा मूळचद भगवानजी.

ग्रन्थानुक्रमणिका

पृ. १–२४८ प्रभु साथे एकांतमा करवानी वातो

(स्तवन, सज्झाय, पदो, चैत्यवन्दन, स्तुतिओ)

,, १–३३ साधु-साध्वी योग्य आवश्यक क्रियाना सूत्रो

३१ श्री दशवैकालिक सूत्र मूल ४ अध्ययन

४५ जीवविचार	मूल	गाथा	५१
४९ नवतत्त्व	,,	,,	५९
५४ दण्डक	,,	,,	४२
५८ लघु संग्रहणी	,,	,,	३०
६१ प्रथम कर्मग्रंथ	,,	,,	६१
६६ दूसरा ,,	,,	,,	३४
६९ तीसरा ,,	,,	,,	२४
७१ चौथा ,,	,,	,,	८६
७८ पंचम ,,	,,	,	१००
८७ षष्ठ ,,	,,	,,	९१
९५ चैत्यवन्दन भाष्य	,,	,,	६३
१०० गुरुवन्दन भाष्य	,,	,,	४१
१०४ पच्चक्खाण भाष्य	,,	,,	४८

१०९ तत्त्वार्थाधिगम सूत्रम्

रचनाराओना नामो

(मोटा टाइपना आंकडाओ सज्झायना पानाना छे)

क्रमांक	कर्ताओना नामो	पृ
१	अमृतविजयजी	१०१
२	आनंदघनजी	८, १०, १८
३	इन्द्रसूरि	१३२, १५२
४	उदयरत्नजी	१०२, १४७
५	उदयसागरजी	५४
६	ऋषभदासजी कवि	२७
७	कनकविजयजी	४७
८	कांतिविजयजी	१०, ३४
९	कीर्तिविमलजी	१३८
१०	कुंवरविजयजी	१५७
११	क्षमाविजयजी	१७
१२	चिदानन्दजी	१४, ९८, १७४, १७५
१३	जिनहर्षसूरि	५, ४०, १२७, १५७
१४	जीवविजयजी	१२९
१५	ज्ञानविमलसूरि	३, १५, १८, ३५, ४६, ६५, ८३, १७५
१६	दीपविजयजी	२१
१७	देवचंद्रजी	८२, १२६
१८	धर्मरत्नजी	१२३, १३५
१९	नयविजयजी	१३४
२०	नयविमलसूरि	१०५
२१	पद्मविजयजी	३३
२२	भाग्यविमलसूरि	१२४
२३	मानविजयजी	१२, १२१, १६०
२४	मेघविजयजी उपा०	२६
२५	मोहनविजयजी	२, ७, १०९
२६	यशोविजयजी उपा०	४, ५, ११, १६, २१, ८६, ७६, ७०, ११०, १३६, १४०, १४३, २१८, २२१
२७	यशाविजयजी	१३, २६
२८	रत्नचंद्रजी	१४२
२९	रत्नविजयजी	७, ९
३०	रत्नसागरजी	१३०
३१	राजविजयजी	१०८
३२	रामविजयजी	१२
३३	रूपविजयजी	१२८, १२९
३४	लब्धिविजयजी	११८
३५	विजयलक्ष्मीसूरि	२१
३६	विनयविजयजी वा०	२७, ५७, १५८
३७	वीरविजयजी उपा०	३२, ३६, १०४, १२२, १५०
३८	शुद्धविजयजी	१३९
३९	श्रीकर्णवाचक	१३६
४०	सकलचंद्रजी उपा०	१०७
४१	समयसुंदरजी	२२, ६७, १३३
४२	सिद्धिविजयजी	७२
४३	सौभाग्यलक्ष्मीसूरि	३१, ३२
४४	हर्षविजयजी	२
४५	हेतविजयजी	१२५

अनुक्रमणिका

क्रमांक	स्तवनोना नामो	पृ
१	श्री अनंतनाथ जिन स्तवन	१०
२	श्री अभिनंदन ,, ,,	८
३	श्री अरनाथ ,, ,,	१३
४	आठमनुं ,,	२१
५	श्री ऋषभदेवना स्तवनो	१ थी ७
६	श्री कुंथुनाथ जिन स्त०	१२
७	श्री ज्ञानपद स्तवन	३१
८	श्री तपनुं ,,	३२,८३
९	दोढसो गाथानुं ,,	१७६
१०	नारकीना ढालियां	७
११	श्री नमिनाथनुं ,,	१४,१५
१२	पच्चखाणना आगारना	६७
१३	श्री पार्श्वनाथ जिन स्त०	१५, १७,१८
१४	पुण्यप्रकाशस्त०	५७
१५	नवार्यपदस्त०	४१
१६	श्री महावीर स्तवन	१८था२७ ६५,६६,८२
१७	श्री विमल जिन स्त०	१०
१८	श्री शांति जिन ,,	११,१२
१९	षडावश्यक (प्रतिक्रमण) स्तवन	२७
२०	श्री संभव जिन स्त०	७
२१	समकितसित्तरी स्तवन	४०
२२	साडा त्रणसो गा०,,	१८८
२३	सामायिकपद ,,	३२
२४	श्री सिद्धाचलना ,,	३५,३६
२५	श्री सीमंधरजिन स्त०	४६,१८८
२६	,, विनति	८३,४७ ५८,७२,८६
२७	श्री सुविधि जिन स्त०	९

क्रमांक	सज्झायोना नामो	पृ
१	अइमुत्तानी	१३०
२	[illegible]	१७२
३	अढार नातरांनी	१०७
४	अमरसेनने [illegible] नी	२२१
५	,, [illegible]	७०
६	अरणिक मुनिनी	१२८
७	आठ मदनी	१२१
८	आठ योगदृष्टिनी	११०
९	आप स्वभावनी	१२९
१०	इरियावहीनी	१२२
११	उत्तराध्ययननी	१३६
१२	उदाइ राजानी	१४२
१३	एलाची कुमारनी	११८
१४	कार्तिक शेठनी	१२१
१५	कुगुरुनी	२१२
१६	कृष्णनी	१३२
१७	क्रोधनी	१०२
१८	गजसुकुमुनिनी	१०९
१९	चन्दापक्षानी	२१८
२०	चन्दनबालानी	१५७
२१	चेतन अने कर्मनी	२२५
२२	चौद गुणठाणानी	१३६
२३	जंबूस्वामीनी	१२४, १२५

क्रमांक	सज्झायोना नामो	पृ
२४	जिन प्रतिमाना	२२३थी२२५
२५	दम्ण ऋषिना	१२६
२६	दश दृष्टांतनी	१४०
२७	देवानन्दानी	१०३
२८	द्वारकाना	१२८
२९	धनाजीनी	११९, १६०
३०	नवकार मंत्रनी	११८
३१	नागीलानी	१३१
३२	बार भावनानी	१६१
३३	मानना	१०३, १७
३४	मायानी	१०३, २२६
३५	मिथ्यात्वनी	१४०
३६	मृगापुत्रनी	१५४
३७	मेतारज मुनिनी	१०८
३८	रहनेमिनी	१२९
३९	लोभनी	१०३
४०	विजय शेठनी	१४२
४१	श्रीविजयहीरसूरिना	१७५
४२	वैराग्यना	१२३, १३५
४३	समकितनी	१२६, १४३, १५०
४४	सहजानन्दीनी	१०४
४५	साधु पदनी	१०१
४६	सामायिकनी	२२७
४७	सिद्धना	१३४
४८	सुगुरुनी	२२८
४९	सुबाहु कुमारनी	११७
५०	साळ स्वप्नना	१५०
५१	स्थूलिभद्रनी	१५२

क्र.	चैत्यवन्दनादिना नामो	पृ
	चैत्यवन्दनो	
१	अजितनाथजीनु	२२६
२	अभिनन्दननु	२३७
३	आरती चालीशीनु	२४०
४	ऋषभदेवनुं	२२५, २४१
५	चन्द्रप्रभुनु	२३८
६	चोवीश जिनना लंछनादिनु	२४३
७	जिनपूजानु	२४३
८	जिनचन्दनु	२४१
९	पद्मप्रभुनु	२३७
१०	परमात्मानु	२४२
११	महावीर प्रभुनु	२३९
१२	विमलनाथजीनु	२२९
१३	शांतिनाथजीनु	२३९
१४	श्रेयांसनाथजीनु	२३८
१५	संभवनाथजीनु	२२६
१६	सामान्य चैत्यवन्दन	२४४
१७	सुमतिनाथजीनु	२२७
१८	सुविधिनाथजीनु	२२८
	स्तुतिओ	
१	ऋषभदेवजीनी	२४४
२	एकादशीनी	२४८
३	नेमिनाथजीनी	२४५
४	पजुसणनी	२४८
५	पंचमीनी	२४७
६	पार्श्वनाथजीनी	२४६
७	महावीर स्वामीनी	२४६
८	शांतिनाथजीनी	२४५
९	चार शरणां	२४०

शुद्धिपत्रक

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
८	४	अनिनाशा	अविनाशी
१८	७	सहसारे	सहस्सार
२०	२५	साश्य	सारख
२१	२	फल्नी	फून्नी
२२	१५	तेरा	तीरा
२७	७	ते न जावे	ते नाजे
३०	६	रामय	रमे
३१	७	सद्राव चिकाधेरे	सदसद्राव मकाशरे
३४	३	नीर	धीरे
३४	१०	गोर	घोर
३४	१२	स्वतन	स्तवन
३४	२१	तेह भवि	तेह भणी
३५	३	तणी	तणु
३५	१२	माग्नयो नीर	मासिनो वीरे
३५	१७	वधमान	वर्धमान
३६	१७	माग्न रे	भासे रे
३९	२०	उदीर तह	उदीरे तेह
३९	२३	ए फला	ए फ्न
४९	१७	तानहा	किणही
,,	२१	कोइ कर्म	कृतिकर्म
,,	२३	पहि काले	अहि कालो
,,	,,	टाळे	टालो
४३	२	समति	सुमति
५१	४	ग्रंथ	कत
५४	१०	जदु	जद्दु
५६	१२	मान्य	मान्या
६३	१०	प्रकार	अधिकार
६६	१३	ससार	समार
६९	२	कोधन	कागज
८२	८	विटाणो	वींटाणो
,,	१३	जोवता	जोयतां
८३	११	प्रसुता	प्रभुता
८४	११	आहोनिशे	अहोनिशे
८५	१६	चित्त म	चित्तमां
८७	६	मोळारे मृग दशो	भूलो रे मृग दिशि
८८	१५	त्रिमासो	विमासे
९२	६	निन	निज
,,	१०	महापापी	पावनी थोडि होय
१०२	२	भारचा	भाषा
१०५	५	द्यास रे	पास रे
,,	१३	वळे विष देती भर तार रे	वळे विषय ग मार रे, झुजो दूरिकता नार रे, विष देती भरतार रे, तुप जिनधर्म आधार रे,
१०६	४	पुनीय गाजो	पुनी गीजी
१०७	१६	अवध	अवधे
,,	१८	निसला	त्रिसलादे
,,	१९	देराणी	राणी

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१०७	१८	छ्न्काय	छटकाया
११०	१	विथियनतरे	वोसिरावे रे
११०	२१	नन	नय
११४	१७	काति	कान्ति
११५	१	शान क्षेप	शानाक्षेप
		क्वत	क्वत
,,	३	प्राणा	पाणी
११६	८	प्रवृत्त चक्र	प्रवृत्तचक्र
११७	२	इस	इम
,,	१५	यग्गद्यौ	वरस सो
,,	२२	वन्दुरोना	यन्दुरोना
११८	११	सुसमा	सुनमा
,,	२१	विशेक	विशेष
१२०	७	पुरा	पुवी
१२१	६	प्रनितुद्धरे	प्रतिबुद्ध रे॥१॥
,,	१७	गणधारो रे	गणधारो रे ॥ १ ॥
,,	१८	॥ १ ॥	•
१२२	१९	व्यथ	अर्थ
१२३	३	पण	ऋण
१२३	१८	वराग्य	वैराग्य
१२५	१७	रहनेमजी	श्री रहनेमिजा
१३५	२५	ग्र	तु
१३७	४	नमतां	घमतां
१३९	९	परि	परी
१४१	१७	फेरो	[illegible]

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
१४१	२१	शतुने परम शास्त्र	शतु ने परम शस्त्र
१४२	४	धूमाडानी	धूमाडाना
१४२	११	निह्नवन	निह्नव ने
१४३	१८	कोडाकोडी	कोडाकोडे
१४५	२	श्रीतु	श्रीतु
१४७	९	चेल	चले
१४८	१५	रसते द्रुमांथी	रस तेहमांथी
१४९	१	छद	छद
१५०	८	कम्म पन	कम्मपय
,,	९	क्षन	क्षन
१५१	२१	महाम्ते	महारथे
१५३	११	अवारनी	आवारनी
१५६	१०	सुकरो	सुह्नलो
१५८	५	नगरीना	नगरानी
१६०	१७	रेखो	रम्यो
१६९	१८	मन	मन
१७०	६	शांभाल्तु	सांभल्तु
,,	११	परमन	पर मन
१७९	१२	चिह्नु	नि[illegible]
१९२	१५	गद्दे	प्रद्दे
१९३	१९	पुनारी	देवद्रव्यभक्षक
१९६	२५	आचारां गमां	आचारांग अ ५ उ ५ मां
१९७	२२	भक्ति	भगते
१९९	९	भारगी	मार्गी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१९९	२१	निरधे	निषेधे	२१४	१०	भवसामला	भव सामला
२०१	१	माग	मागे	२१८	१७	तिहा	विहां
२०४	६	एम	खेम	,,	११	नष	जुए
२०४	११	काण	ठाण	२१९	६	उत्तरगुणनी	उत्तरगुणनी
२०६	१	धारतोर	धारता रे	२२०	८	तुझे	तुम्हे
,,	२२	अर्धविरोधा	अर्थविरोधी	२२२	२०	पडे	पडे मत
२०७	१३	वली ६	वली ७	२३६	१	दगत्	जगत्
२११	७	अवि द	अविवाद	२३८	२२	नां	नां–

साधु साध्वी योग्य आवश्यक क्रियाना सूत्रो

अने

जीवविचारादि प्रकरणो

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
१४	८	जावजीवाए	जाव जीवाए	५९	१७	नवगे, गरस	नवगे, गारस
१८	२	नेवे	नेव	६२	१८	सामाणा	समाणो
२०	५	अहिरन	अहिरण्ण	७०	८	व	व्व
२७	१४	सत्र	सत्त	,,	१३	जिणपण	जिणपणग
२८	११	त	ते			महीण	हीण
३४	११	सनम	समम	,,	१५	साय	साय
४१	२२	निविहेण	तिविहं तिविहेण	७४	१९	मणवया	मणवयण
४३	१	दतस्स	दत्तस्स			कायजोगा	कायजोगी
,,	६	नाही य	नाहाइ	७८	१०	दपह	दुप्पह य
		समनमे	समम	,,	१४	न त होइ	न त होइ
,,	२०	नाण दसण	नाण दसण	८०	२४	छसाहग	छस्सगट
५६	५	केवलि	केवल			अतिनधा	अट्टतिगध

पाठातरो अने अधिक गाथाओ

पृ ७५ १७ मा सातमी गाथा आ प्रमाणे जाणवी—

"ओळग काधी लेगे लागी चरणभेट प्रभु दीधी, रूप विबुधना मोहन पमणे रसना पावन कीधी ॥ ७ ॥"

पृ १४३–१२ नवमी गाथा पछी—

"मन्दा अन्नाणी दूरे छडो, त्रीजी सद्दहणा ग्रहो परदर्शनीनो सग तजिये, चोथी सद्दहणा कही, हीणा तणो सग ते न तजे, तेहनो गुण नवि रहे, ज्यु जलधिजलमा भळ्यु गगा–नीर लूणपणु लहे ॥ १० ॥"

ए दशमी गाथा नोवामा आवे छे

पृ १९० फूट नोट चोथी एम वाचवी—

"व्यवहारथी साधुपणाना पालना विनानी गोचरी पापानुबधी पापना उदयथी पचवस्तुमा श्री हरिभद्रसूरीश्वरजीए कही छे, अने ते अष्टकनी साखे बल्हरणी भिक्षा कहेवाय"

पृ १९८–२४ फूट नोट ४४ मी एम वाचवी—

"अगीतार्थनी निश्राए विहरनारा साधुओना गुणोनो 'मत्स्यगलागल' न्याये नाश थाय छे जेम मोटो मत्स्य नाना मत्स्यने खाय, नानु तेथीय नानाने खाय, तेम परपराए ज्ञानादिगुणोनो नाश थाय"

पृ २०० फूट नोट ५० मी एम वांचवा—

"पतीना पोत एटले रज्जुना दृष्टांते अगीतार्थनो विहार निषेध्यो छे जेम जेने पारो न आवी होय एवु पण्तु रज्जु मातानी निश्राए रहे तोज तेनु रक्षण होय छे, तेम अगीतार्थनु पण गीतार्थनी निश्राएज रक्षण छे"

पृ २२०–२० मा ३१ मी गाथा छापता रहेली आ प्रमाणे छे—

"शुद्ध द्रव्य सयत ते दणि परि, भावचरण पणि पावे, प्रवचन वचन प्रभावे तेहना, सुरपति पणि गुण गावेरे, ॥ लोको० ॥ ३१ ॥"

पृ ५४–१८ "नवतत्त्व" मां ६० मी गाथा आम क्यांक जोवामां आवे छे—

"जइआइ होइ पुच्छा, जिणाण मग्गमि उत्तर तइया॥ इक्कस्स निगोयस्स अणतभागो य सिद्धिगओ ॥ ६० ॥"

पृ ५६ प १२ "दण्डक प्रकरण' मां २१ मी अने २२ मी गाथा क्यांक आ प्रमाणे मळे छे—

"सच्चेयर मीस असच्च–मोस मण वय विउव्वि आहारे ॥ उरल मीसा कम्मण, इय जोगा देसिया समए ॥ २१ ॥ ति अनाण नाण पण चउ, दसण बार जिअलक्खणुवओगा ॥ इय बारस उवओगा, भणिया तेउस्सदसीहिं ॥२२॥"

पृ ६९ प ९ बीजा कर्मग्रंथमां त्रीजी गाथा आ छे—

"गइ इंदिए य काये, जोए वेए कसाय नाणे य । सजम दसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥ २ ॥"

पृ ७१–१३ चोथा कर्मग्रंथमां पहेली त्रणे अने त्रीजी गाथा क्यांक आ प्रमाणे पण छे—

"नमिय जिण वत्तव्वा, चउदसजिअठाणएसु गुणठाणा । जोगुवओगो लेसा, बधुदयोदीरणा सत्ता ॥ १ ॥ तह मूल चउद मग्गणठाणेसु बासट्ठि उत्तरेसु च । जिअगुण जोगुवओगा, लेसप्पबहु च छट्ठाणा ॥ २ ॥ चउदस गुणेसु जिअजोगलेसा य बंधहेऊ य । बंधाइ चउ अप्पाबहु च तो भाव सखाइ ॥ ३ ॥"

पृ १२८ थी १४३ ना बदले १२७ थी १४२ वांचवा

पृ ३९ अने १७३ आम सिद्धाचलनीतु स्तवन भूलथी बे वार छपाई गयु छे

पृ ८७ था शरु थता छठ्ठा कर्मग्रंथनी गाथाओनी सख्याना खुलासा माटे आत्मानद सभा तरफथी छपायेल साक्षररत्न मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज साहेबनी छठ्ठा कर्मग्रंथनी प्रस्तावना पृ १२ वांचवी

' ढंढेरो अथवा गुरुमंत्र " उपरना इनाम
रु ८०० आ पुस्तक माटे आपनार



शेठ मोटाजी ग्नी [illegible] भाइ, मनाजी"

,
क
ग
ता
ाणे
वयो
। छोड
भ राया
सुनन्दा
र तणो
मपने,
ल थाय

श्री ऋषभदेवजीनुं स्तवन

बाल्पण आपणे ससनेही रमता नवनव वेषे, आज तुम पाम्या प्रभुताई अमे तो संसारनी वेषे हो प्रभुजी! ओलंभडे मत खीजो १ जो तुम ध्याता शिवसुख लहिये तो तुमने केई ध्यावे, पण भव स्थिति परिपाक थया विण कोइ न मुक्ति जावे प्र० २ सिद्धनिवास लहे भवि सिद्धि तेहमां शो पाड तुमारो, तो उपगार तुमारो वहिये अभव्य सिद्धने तारो हो प्र० ३ नाणरयण पामी एकांते थइ बेठा मेवाशी, ते माहेलो एक अंश जो आपो तो वाते शाबाशी हो प्र० ४ अक्षय पद देता भविजनने संकीर्णता नवि थावे, शिवपद देवा जो समरथ छो तो जश लेता शुं जाय हो प्र० ५ सेवागुण रंज्या भवि जनने जो तुमे करो वडभागी, तो तुम स्वामी केम कहावो निर्मम ने नीरागी हो प्र० ६ नाभिनन्दन जगवन्दन प्यारो जगगुरु जग जयकारी, रूपविबुधनो मोहन पभणे वृषभ लंछन बलिहारी हो प्र० ७

श्रीऋषभजिनस्तवन

जी रे सफल दिवस आज महारो, दीठा प्रभुनो देदार, लय लागी जिननी थकी, प्रगट्यो प्रेम अपार, घडिय न विसरे हो साहेबा, साहेबा घणो रे सनेह, अंतरजामी छो माहरा, मरुदेवाना नन्द, सुनंदाना हो कंत घडिय० १ साहेबा ल्घु थई मन मारु रया रह्यु, तमारी सेवाने काज, ते दिन क्यारे आवशे, होशे सुखनो आवास घडीय० २ साहेबा प्राणेश्वर प्रभुजी तुम्हे, आतमाना रे आधार, माहरे तो प्रभुजी तुमे एक छो, जाणजो निरधार घडीय० ३ साहेबा एक घडी पण तुम विना, जाय वरस समान, प्रेम विरह दुवे केम खमु, जाणो वचन प्रमाण घडिय० ४ साहेबा अन्तर्गतनी वातडी घडी काने कहेवाय, वालेसर विश्वासीया कहेता दुःख दूर जाय, सुणता सुख थाय घडिय० ५ साहेबा देव अनेक जगमा वसे तेहनी चाहि

अनेक, तुम विना अवरने नहि नमु, हृदयी शुभ मन टेक घडिय० ६
ताहेवा पडित विवेकविजय तणो, प्रणमे शुभ पाय, हरखविजय
श्री ऋषभना जुगते गुण गाय घडिय० ७

श्री ऋषभदेवजीनु स्तवन

प्रथम जिनेश्वर वन्दिए, सारथपति धन नाम लालरे
पूर्वे विदेहे साधुने, दीधा घृतना दान लालरे । प्रथम० ॥ १ ॥
युगल सुधर्मे सुर थया, महाबल भूप विदेह लालरे,
ललिताग सुर ईशानमा, स्वयप्रभासु नेह लालरे, । प्रथम० ॥ २ ॥
वज्रजघराय विदेहमा, युगलि सोहम देव लालरे,
जीव वैद्य विदेहमा, चार मित्र मुनिसेव लालरे ॥ प्रथम० ॥ ३ ॥
अच्युत अमर विदेहमा, वज्रनाभ चक्रधार लालरे,
ऊ नाण साथे सयमी, बाधे जिन पद सार लालरे । प्रथम० ॥ ४ ॥
सर्वारथमा उपना, तिहाथी ऋषभ अवतार लालरे,
इस्वाकु भूमि सोहामणी, आदि धर्म कहेनार लालरे ॥ प्रथम० ५॥
कुलकर नाभि नरिन्दनो, मरुदेवीनो नंद लालरे,
शत लखन कंचन वने, सेवे सुरनर इद लालरे ॥ प्रथम० ६ ॥
गृहवासे पण जेहने, कल्पद्रुम फल भाग लालरे ।
पाणी सार समुद्रनु, पूरे सुरवर लोग लालरे ॥ प्रथम० ७ ॥
युगल धर्म निवारणो, तारणो भवजल राशि लालरे,
ज्ञानविमलसूरीन्दनी, पूरा वछित आश लालरे ॥ प्रथम० ८ ॥

---

१ चक्रवर्ती

श्री ऋषभजिन स्तवन

ऋषभ जिनराज मुज आज दिन अति भलो,
गुणनीलो जेणे तुज नयण दीठो,
दुःख टळ्यां सुख मळ्यां स्वामी तुज निरखतां,
सुकृत संचय हुओ पाप नीठो ॥ ऋषभ ॥ १ ॥
कल्पशाखी फळ्यो, कामघट मुज मळ्यो,
आंगणे अमीयनो मेह वूठो,
मुज महिराण महिभाण तुज दर्शने,
क्षय गया कुमति अंधार जूठो ॥ ऋषभ ॥ २ ॥
कवण नर कनक मणि तजी तृण संग्रहे,
कवण कुंजर[1] तजी करह लेवे,
कवण बेसे तजी कल्पतरु बाउले,
तुज तजी अवर सुर कोण सेवे ॥ ऋषभ ॥ ३ ॥
एक मुज टेक सुविवेक साहिब सदा,
तुज विना देव दुजो न ईहुं[2],
तुज वचन राग सुखसागरे झीलतो,
कर्म भर भर्मथी हुं न बीहुं ॥ ऋषभ ॥ ४ ॥
कोडी छे दास विभु ताहरे भलभला,
माहरे देव तुं एक प्यारो,
पतितपावन समो जगतनोद्धार कर,
मेहर करी मोहे भवजलधि तारो ॥ ऋषभ ॥ ५ ॥
मुक्तिथी अधिक तुज भक्ति मुज मन वसी,
जेहशुं सबल प्रतिबंध लाग्यो,
चमक पाषाण जिम लोहने खींचशे,
मुक्तिने सहज तुज भक्तिरागो ॥ ऋषभ ॥ ६ ॥

---

१ हाथी तजी ऊंट कोण ले? २ इच्छुं

धन्य जे काय जेणे पाय तुज प्रणमीए,
तुज थुणे जह धन्य धन्य जीहा,
धन्य जे हृदय तुज सदा समरता,
धन्य ते रातने धन्य दीहा ॥ ऋषभ ॥७॥
गुण अनता सदा तुज खजाने भर्या,
एक गुण देत मुज शु विमासो,
रयेण एक दस दी हाथ रयणायरे,
लोकनी आपदा जेणे नासो ॥ ऋषभ ॥८॥
गगसम रग तुज कीर्तिकल्लोलनो,
रविथकी अधिक तप तेज ताजा,
नयविनय बुध सेवक हु आपरो,
जस कहे अब माहे भवथी निवाजा ॥ ऋषभ ॥९॥

श्री आदिनाथ प्रभुने विनति

सुण जिनवर शत्रुजा धणीजी रे, दास तणी अरदास,
तुज आगळ बालक परेनी रे, हु तो करु वेमास रे जिनजी,
मुज पापीने र तार
तु तो करुणारसभर्योजी रे, तु सहुनो हितकार रे जिनजी मुज० ॥१॥
हु अवगुणनो ओरडोजी र, गुण तो नहीं लवलेश,
परगुण पेखी नवी शकुनी र, कम ससार तरीश रे जिनजी०॥२॥
जीवतणा वध में कयानी, बोल्या मृषावाद,
कपट करी परधन हयानी र सेव्या विषयसवाद रे जिनजी० ३॥
हु लपट हु लालचुनी, कर्म किधा केइ क्राड,
क्षण भुवनमा को नहींनी रे जे आवे मुजने जोड रे जिन० ॥४॥

---

१ एक गुणरूपी रत्नने आपता २ रत्ना समुद्ररूपी आपना गुणोमा

छिद्र पराया अहानिशजी रे, जोतो रहु जगनाथ,
कुमति तणी करणी करीजी रे, जोड्यो तहेणु साथ रे जि० ॥ ५ ॥
कुमति कुटिल कदाग्रहीजी, बांधी गति मति मुज,
बांधी करणी माहरीजी, शु समझावु तुज रे जिनजी० ॥ ६ ॥
पुण्य विना मुज प्राणियोजी जाण मेलु रे आथ;
ऊचा तरुवर मोरियाजी, त्याही पसारे हाथ रे जिनजी ॥ ७ ॥
विण खाधा विण भोगव्याजी फोगट कर्म बधाय;
आर्तध्यान मिटे नहींजी, कीजे कवण उपाय रे जिनजी० ॥ ८ ॥
काजल्थी पण शामळाजी रे, माहरा मन परिणाम,
सोहणामाही ताहरुजी, संभारु नहीं नाम रे जिनजी० ॥ ९ ॥
मुग्धलोक ठगवा भणीजी रे, करुं अनेक प्रपच,
कूड कपट बहु केळवीजी पाप तणा करु सच रे जिनजी० ॥१०॥
मन चपल न रहे किमजी रे, राचे रमणी रे रूप;
कामविडबणा शी कहुजी, पडीश हु दुर्गति कूप रे जिनजी० ॥११॥
किशा कहु गुण माहराजी, किशा कहु अपवाद,
जेम जेम सभारु हैयेजी, तेम बाध विखवाद रे जिनजी० ॥ १२ ॥
गिरुआ ते नवि लेखवेजी, निगुण सेवकनी रे वात,
नींच तणे पण मदिरजी, चद्र न टाळे ज्योत रे जिनजी० ॥ १३ ॥
निगुणो तो पण ताहरोजी, नाम धरायु रे दाम,
कृपा करी सभाळजोजी, पूरजो मुज मन आश रे जिनजी० ॥ १४ ॥
पापी जाणी मुज भणीजी, मत मूको विसार,
विष हलाहल आदर्योजी, ईश्वर न तजे तास रे जिनजी० ॥ १५ ॥
उत्तम गुणकारी हुवेजी, स्वार्थ विना सुजाण,
करषण सींचे सर भरेजी मेह न मागे दाण रे जिनजी० ॥ १६ ॥
तु उपगारी गुणनिलोजी, तु सेवकप्रतिपाल,
तु समरथ सुख पूरवाजी, कर माहरी सभाळ रे जिनजी० ॥ १७ ॥

तुमने शु कहीओ पशुनी तु सहु धारे रे नाण,
मुजने थानो साहिबानी, भवाभव त हरी आण रे जिनजी० ॥ १८ ॥
नाभि राया कुलचन्दलानी मरुदेवीनो नद,
कहे जिनहर्ष निरानन्दीनी, म्हेनो परमानद रे जिनजी० ॥ १९ ॥

श्री समतनाथजिन स्तवन

समकित दाता समकित आपा मन मागे थई मीठु, छती वस्तु देता शु सोचो मीठु ते सहुए दीठु, प्यारा प्राणथकी छो राज संभव जिनवर मुजने ॥ १ ॥ अेम मत जाणो ज आप लहिये सो लाग्यु शुं देवु, पण परमारथ प्रीछी आपे तेहज कहिये देवु प्यारा० ॥ २ ॥ अह अर्थी हु अर्थसमर्पक अेम मत करजो हासु, प्रगट न हतु तमने पण पहेला जाई हासानु रहासु प्यारा० ॥ ३ ॥ परमपुरुष तुम प्रथम भजीने पाम्या श्रा प्रभुताई तेण रूप सुमन अमे भजिये तेणे तुमे हाते वडाइ प्यारा० ॥ ४ ॥ तुम स्वामी हु सेवाकामी मुजरो स्वामी निवाजो, नहि तो हठ माडी मागता सेवक किणविध लाजा प्यारा० ॥ ५ ॥ ज्यातिम ज्योत मिले मत प्रीछो कोण लेशे कोण वरशे, मारा भक्तिने हम तणी परे लीग्नार परे करशे प्यारा० ॥ ६ ॥

श्री संभवजिन स्तवन

संभव जिनवर साचा साहिब जेह छ परम दयाळ, करुणानिधि जगमाही मोटो मादन गुणमणिमाळ, भविया भाव धरीन लाए, श्रीजिनसेवा कीजे, दुमति दूर करीने लाल नरभव सफलो कीजे ॥ १ ॥ एह जगतगुरु जुगते सेवो सद्भावप्रति पाट, द्रव्य भाव परिणति करी निर्मल पूजो थई उजमाळ भवि० २ केसर चदन मृगमद भेळी अर्चो जिनवर अग, द्रव्यपूजा ते भावनु कारण कीजे अनुभव रग भवि०३ नाटक करता रावण

तीर्थंकर पद सार, देवपाल प्रमुख जिनपद ध्याता प्रभुपद लह्यु श्रीकार भवि० ४ वीतराग पूजाथी आतम परमातम पद पावे, अज अक्षय सुख जिहां शाश्वता रूपातीत स्वभावे भवि० ५ अजर अमर अविनाशी कहिये पूर्णानन्द जे पाम्या, लोकालोक-स्वभावविभासक चउ गतिना दुःख वाम्या भवि० ६ अेवा जिननुं ध्यान करतां लहिये सुख निर्वाण, जिन उत्तम पदने अवलंबी रतन लहे गुण खाण भवि० ७

श्री अभिनंदन स्वामीनुं स्तवन

अभिनंदन जिन ! दरिसण तरसीअे, दरिसण दुर्लभ देव ! मत-मत भेदे रे जो जई पूछीअे, सौ थापे "अहंमेव" अभि०१, सामान्ये करी दरिसण दोहिलुं, निर्णय सकल विशेष, मदमें घेर्यो रे अंधो केम करे, रवि-शशि रूप विलेख अभि० २ हेतुं विवादे हो चित धरी जोईअे, अति दुर्गम नयवाद, आगमवादे हो गुरुगम को नहि, अे सबला विखवाद अभि० ३ घांती डुंगर आडा अति घणा, तुज दरिसण जगनाथ ! धीठाई करी मारग संचरुं, संघु कोई न साथ अभि० ४ दरिसण दरिसण रटतो जो फिरुं तो रणरोझ समान, जेहने पिपासा हो अमृतपाननी, किम भांजे विषपान ? अभि० ५. तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरिसण काज, दरिसण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी, आनंदघन महाराज अभि० ६

१ 'हुं ज छुं' एम जाणे २ तो साचा सब निर्णयो तो दुर्लभ होय ज ३ जोई न शके तो ते सूर्य के चंद्रमा एम जुदा जुदा विभाग करी जोई केम शके ? ४ अनुमान प्रमाणथी ५ गुरुकृपाथी समजाय तेवो कठण नयवाद छ ६ गुरु पासेथा शास्त्रज्ञान पामेला आजे कोई नथी ७ ज्ञानावरणीय आदि चार घाति कर्मोरूपी डुंगराओ मुक्तिए जतां आडा छे ८ आलम्बन थाये नथी ९ आपनुं दर्शन थाय तो जीवनमरणना भारी तृष्णा मटी जाय १० समकितनी दुर्लभता ११ मारे हे आनंदघन प्रभु ! मने दर्शन आपो, अर्थात् समकित प्राप्त करावो !

श्री सुविधिनाथ जिन स्तवन

में कीनो नहीं तुम बिन ओरशु राग

दिन दिन वान चढे गुण तारे, ज्यु कचन पर भाग, ओरनमें है कषायकी गटप, तो क्यु सेवा लाग मे० १ राजहस तु मान सरोवर ओर अशुचिरुचिकाग, विषयभुजग गरुड तें कहिये, ओर विषय विषनाग मे० २ ओर दव छिल्लर जल कहिये, तु समुद्र अथाग, तु सुरतरु मनवांछित पूरण, ओर ता सूके साग मे० ३ तु पुरुषोत्तम अतरजामी तु शकर वडभाग, तु ही ब्रह्मा बुद्धिमहाबल, तु ही देव वीतराग मे० ४ सुविधिनाथ गुण फूलन केरो मेरो दिल है वाग, जस कहे भ्रमर रसिक होई तामें, लीजिये भक्ति पराग मे० ४

श्री सुविधानाथजीनु स्तवन

सुविधि जिनेश्वर साहिब साभळो, तुमे छो चतुर सुजाणोजी, साहेब सन्मुख जोवता, वाधे सेवक वानोजी सु० १ भवमडप मा रे भमता जगगुरु, काळ अनादि अनतोजी, जनममरणना रे दुःख ते आकरा, हजुए न आव्यो अतोजी, सु० २ छेदन भेदन वेदन आकरी, शुणानिधि नरक मोझारोजी, भेत्र-कुभी-वतरणी वेदना, कहेता नाव पारोजी सु० ३ विकल विकलपणे करी, न लह्यो तत्त्वविचारोजी, गति तिर्यंचमा रे परवशपणे करी में सह्या दुःख अपारोजी सु० ४ विषयासगरे रगे राचीयो बधाणा मोहपाशोजी, अमरी सगे रे सुरभव हारीयो, कीधा दुर्गति वासोजी सु० ५ पुण्यमहोदय जगगुरु पामीया, उत्तम नर अवतारोजी, आरज क्षेत्र सामग्री धर्मनी, सद्गुरु सगति सारोजी

१ रागरहित २ आपना गुणरूपा फूलोमा मारु मन लाग्यु छे, ते गुणाना रसिक बना भक्तिरूपी पराग ग्रहण करशो ३ दवी

सु० ६ ज्ञानानंद रे पूरण भावना, तीर्थपति जिनराजाजी। पुण रंजन करता जगगुरु सीध्या मंदर आनोनी सु० ७ नाम न पतार सवि संपत्ति मीले, स्तवता पारज नीधोनी, जिन उत्तम पद पंकज सवता रतन लहे नव नीधानी सु० ८

श्री विमलनाथ स्वामीनु स्तवन

प्रभुजी ! मुज अवगुण मत देखो रागद्वेषार्थी तुं रहे न्यारो हुं मन राग वाळुं, द्वेष रहित तु समतार्मीनो द्वेषमार्गे हुं चालुं हो प्र० १ मोहलेश फरस्या नहि तुजने, मोहलगन मुज प्यारी, तुं अकलंकी कलंकित हुं तो, जे पण रहेणी न्यारी हो प्र० २ तुं ही निरागी भावपद साधे हुं आशामग विलुद्धो, तुं निश्चल हुं चल तुं सूधों, हुं आचरणे ऊंधो हो प्र० ३ तुज स्वभावथा अवळा मारा चरित्र सकल जगे जाण्या, अेहवा अवगुण मुज अति भारी न घटे तुज मुख आण्या हा प्र० ४ प्रेमनवल जो होय सवाई विमलनाथ मुख आगें काति कहे भव रान उतरता तो घेरा नवि लागे हो प्रभु० ५

श्री अनंतनाथ स्वामीनु स्तवन (शास्त्रमुजब वर्तनानी भलामण)

धार तरवारनी सोहिली दोहिली, चौदमा जिन तणी चरणसेवा, धार पर नाचता देख बाजीगरा सेवनो धार पर रहे न देवा धार० १ अेक कहे सेविअे विविध किरिया करी फल अनेकांत लोचन न देखे, फल अनेकांत किरिया करी बापडा रडवडे चार

१ तलवारनी धार पर नट लोको नाचे पण जिनसेवा (संयम) रूपी धार पर भलभला देवो टकी शकता नथी २ जिनसेवा करीनु कहे, पण तेनु विपरीत फळ मळे छे ते जाई शकता नथी ३ पौद्गलिक सुख माटे कियाओ करी

गतिनाहि रैग धार० २ गन्छना भन यु नयणे नीहालता तत्त्वनी वात करता न लाज, उदरभरणादि निज काज करता घरा। मोहनडिया कलिकाल राज धार० ३ वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो, वचन सापेक्ष व्यवहार साचो वचन निरपेक्ष व्यवहार ससारफळ, सांभळी आदरी कांई राचो ? धार० ४ देव गुरु धर्मनी शुद्धि कहा कमे रहे केम रह शुद्ध श्रद्धा न आणो, शुद्ध श्रद्धान विण सब किरिया करी, छार पर लींपणु तेह जाणो धार० ५ पाप नहि कोइ उत्सूत्र भाषण जिस्यो, धर्म नहि कोइ जग सूत्र सरिखो; सूत्र अनुसार जे भविक किरिया करे, तेहनु शुद्ध चारित्र परीखो धार० ६ एह उपदेशनो सार संक्षेपथी जे नरा चित्तमां नित्य ध्यावे, ते नरा दिव्य बहु काळ सुख अनुभवी, नियत आनन्दघन राज पावे धार० ७

श्री शांतिनाथजिन स्तवन

हम मगन भये प्रभु ध्यानमे, बिसर गई दुविधा तन मनकी अचिरासुत गुन गानमे १ हरिहर ब्रह्मा पुरंदर की ऋद्धि आवत नहि कोइ मानमे, चिदानन्दकी मोज मची है समतारस के पानमे हम० २ इतने दिन तुम नाहि पिछान्यो जनम गयो सब अजानमें, अब तो अधिकारी होइ बैठे, प्रभुगुण अक्षय खजानामे हम० ३ गइ दीनता सबही हमारी प्रभु तुम समकितदानमें, प्रभुगुण

४ त्यागी हर्ता मोहवश पर मरवामां अने मान मळवामां फसाइ जाय छे, ससारना रागना तरफ खेंचाइ जाय छे ५ रागमां ६ आगमनी आज्ञा मुजब न होय तो साधु के साध वान्धु न गणाय, तेनु बोलवाथी ससार वधे ७ शास्त्रना आज्ञानिरुद्ध बोलवाथी देवादिनी शुद्ध आराधना केम थाय ? ८ जिनाज्ञा समान धर्म नथी ९ परीक्षा करीने आणो १० तनमनना विकल्पवाळी डामाडोळ स्थिति ११ ...

जे ऋद्धि कइ हिसाबमां नथी

अनुभव रसके आगे आवत नही कोई मानम हम० ४ जिन ही पाया तिन ही छिपाया, न कहे कोई के कानम, ताली लागी जब अनुभवकी, तब समजे कोई सानमे, हम० ५ प्रभुगुण अनुभव चद्रहास ज्यु सो तो न रहे म्यानम, वाचक जस कहे मोह महा अरि जीत लियो है मेदानम हम० ५

श्री शांतिनाथजिन स्तवन

म्हारो मुजरो ल्यो ने राज साहेब शांति सलूणा, अचिराजीना नन्दन तोरे दर्शन हेते आव्या, समकित रीझ करीने स्वामी भक्ति भेटणु लाव्यो म्हारो० १ दु खभजक छे बिरुद तुमारो अमने आश तुमारी, तुमे निरागी थइने छूटो शी गति थाश अमारी म्हारो० २ कहेश लोक न ताणी कहेवु अेवडु स्वामी आगे, पण बालक जो बोली न जाणे तो केम व्हालो लागे म्हारो० ३ म्हारे तो तु समरथ साहिब तो केम ओछु मानु चिन्तामणी जणे गांठे बांध्यो तेहने काम किशानु म्हारो० ४ अध्यातम रवि ऊग्यो मुज घट मोह तिमिर हयु जुगते, विमलविजय वाचकनो सेवक राम कहे शुभ भगते म्हारो० ५

श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन

कुंथू जिनेश्वर जाणजो हो लाल मुज मनना अभिप्राय रे, जिनेश्वर मोरा तु आतम अलवसरु रे लाल, रखे तुज विरहा थाय रे जिने० ॥तुज विरहो किम वाळीये रे लाल, तुज विरहा दुःखदाय रे, जिनेश्वर मोरा, क्षण वरसोंमो जाय रे, जि०० विरहा मोटी बलाय

१ जा एड्ग २ मांगे नहु ३ एक एक क्षण वरस जेवो जाय

रे जिने० १ तुम पासे जे आवतु रे लाल, पहेला न आवतु दाय रे जिने० आगो पाछा जावतु रे लाल, तुन गुण विषय न सुहाय रे जिने० २ नहि मिथ्यानो धोमो नही रे लाल, जस गुणनु नहि नाण रे जिने० मिलिया ते गुण कठिया पछी गे लाल, निठडत जाय रे प्राण हो जिनेश्वर० ३ जातिअधने दुख नहि रे लाल, न लहे नयणनो स्वाद रे जिन०, नयणनो स्वाद लई करी र लाल, हाम्याने विखवाद र जिनेश्वर० ४ वीने पग विहा नवि गमे रे लाल, जिणे तुन विरहो वचाय रे जिनेश्वर०, मालती कुसुमे मोहिया रे लाल, मधुप करी न जाय रे जिनेश्वर० ५ वनदव दाझ्या रूखडा रे लाल, पाल्हव करी वरसाद रे जिनेश्वर० जे तुन विरहे नवि बळ्या रे लाल, याळ अनत गुमात रे जि० ६ ठडक र्ड् तुन सगमा रे लाल, आकुलता मिट जाय रे जिनेश्वर०, तुम सगे सुखिया सदा रे लाल, मानविजय उवझाय रे जिनेश्वर० ७

श्री अरनाथजिन स्तवन

मारा साहिब श्री अरनाथ, अरज सुणो अके मारी, प्रभुनी परम दयाल चाकरी चाहू तेरी चाकरो चाहु प्रभुगुण गाऊ सुख अनंता पाऊं मा० १ जिन भगत जे हवे राता पामे परभव शाता, प्रभु पूजामा आलसु थाता ते दु खीया परभव जाता मा० २ प्रभु सहायथी पातक छूटे, सारी शुभ माते सुझे, ते देखी भविषण प्रतिबूझे वली कर्मरोग सवि रुझे मा० ३ सामान्य नरनी सेवा करता तो पण प्राप्ति थाय, तो त्रिभुवन नायकनी सेवा निष्फ न निष्फळ जाय मा० ४ साची सेवा जाणी प्राणी जे जिनवर आराधे श्री खिमाविजयपय पामी पुण्ये जस सुख लहे निराबाधे मा० ५

---

१ ममरो केरना झाडे न जाय २ वनमानी आगथी बळेला वृक्षो वरसादथी फरी लीला थाय छ ३ तमारा विरहना दु खविनाना जीवो अनतु सख लड़े छे

श्री नेमिनाथजिन स्तवन

परमातम पूरण कला, पूरण गुण हो पूरण जन आश, पूरण दृष्टि निहाळीय, चित्त धरिये हो अमची अरदास, प० १ सर्वदेश घाती सहु, अघाती हो करी घात ल्याळ, वास कीयो शिवमंदिर, मोहे विसरी हो भमतो जगजाळ प० २ जगतारक पदवी लही, तार्या सही हो अपराधी अपार, तात कहो मोहे तारता, किम कीनी हो इण अवसर वार प० ३ मोह महा मद छाकथी, हुं छकियो हो नहि शुद्ध लगार, उचित सहि इणे अवसरे, सेवकनी हो करवी सभाळ प० ४ मोह गया जो तारशो, तिण वेला हो किहा तुम उपगार, सुख वेळा सज्जन घणा, दुःख वेळा हो विरला संसार प० ५ पण तुम दरिशन योगथी, थयो हो हृदये अनुभव प्रकाश, अनुभव अभ्यासी करे, दुःखदायी हो सहु कर्मविनाश प० ६ कर्मकलंक निवारिने, निज रूपे हो रम रमता राम, लहत अपूर्व भावथी, इण रीते हो तुम पद विश्राम प० ७ त्रिकरण जोगे हुं विनवुं, सुखदायी हो शिवादेवीना नंद, चिदानंद मनमें सदा, तुमे आवो हो प्रभु नाणदिणंद प० ८

श्री नेमिनाथ प्रभुनुं स्तवन

(जो हरि नहि मले रे, जो रे मारा पापी प्राण ए देशी)

निरुपम नेमजी रे, वालम[1] मूकी कयां जाओ, कारण आवीने रे, एम काई विरह जगाओ नि० १ करुणा पशु तणी रे, करता अबला उवेखो, दुर्जन वयणथी रे, ए नहि साजन लेखो नि० २ शशिलंछन कीओ रे, सीता राम वियोगो, विबुधजने कह्यो रे न्याये नाम कुरंगो नि० ३ गुन्हा का कीओ रे, जी रडती एकलडी छंडी, गणिका

---

[1] चंद्रमाने कलंकित करनार ने रामसीतानो वियोग करावनार-हरणमां भाग करनार हरण छे

सिद्धि वधू रे, तेहनु प्रीतडी मंडी जि० ४ अड भव नेहली ए नवम छेह म दाखो, ग्यासी गौन्ती रे, साहेब गोत्मा राखो, जि० ५. पुण्य परवडा रे सुजवी याचक लोगा, दान संवत्सर र, पाम्या यठित भागा जि० ६ विवाह अवसरे रे जमणो हाथ न पामी, भिक्षा अवसरे र देर्यो अतरजामी जि० ७ माता शिवा तणो रे, नंदन गुणमणिखाणी, संयम आपीत रे, नारी राजुल नारी, मुक्ति महेले मल्या रे दंपति अविचल भावे, क्षमाविजय तणो रे, सबक जिन गुण गावे जि० ९.

श्री नेमिनाथजिननु स्तवन

इण भरते अचलापुरी, नृप विक्रमधन नामे मेरे लाल, भवर एई सुर थया सौधर्म सुख धामे मेरे लाल, जिनवरने करूं वंदना वैताढ्य सारीपुरे चित्रगति विद्याधर मेरे लाल, दीक्षा ग्रही माह इमा, सुर सुख पाम्या सार मेरे लाल जिनवर० २ सिंहपुरे अपर जिते भूपति चवला नाम मेरे लाल अग्यारमा सुरलोकमा सुरव थया उदार मेरे लाल जिन० ३ हस्थिणाउर शख भूपति, सया जिनपद बांधी मेरे लाल, अपराजित सुखी च्यवी, शौरिपुं शिवाय मेरे लाल जिन० ४ समुद्रविजय शिवादेवीनो सुत, श लछन जिणंद मेरे लाल, अजन वान बावीशमी, अरिष्ट नेमि जिनवर [१] ज्ञान [२] जिणंद मेरे लाल, जिन० ५

भावपूजारहस्यमय श्री पार्श्वनाथजिन स्तवन

[१] पूजाविधिमांहि भाविये जा, अतरंग जे भाव, ते सवि तु आगळ कहुंनी, साहेब सरळ स्वभाव सुहंकर, अवधारो प्रभु पास

१ राजुल २ सरस्वती दान र्दे इच्छित पामनारा याचको पण मारा क बहु पुण्यवान्, ५ श्याम वर्णनुं शरीर.

दातण करता भावियेजी, प्रभु गुण जल मुख शुद्ध, ओल उतारो जीभनीजी, हो मुज निर्मल बुद्ध सुईकर० २ जयणाओ स्नान कीजियेजी, काढो मेल मिथ्यात, अंगूछो अंग शोषवीजी, जाणु हु अवदात सुह० ३ क्षीरोदकना धातीवाजी, चिंतवे चित्त संतोष, अष्ट कर्म संवर भलोजी, आठ पडो मुखकोष सुह० ४ ओरसीयो, अेकामताजी, केसर भक्ति कल्लोल, शुद्धि चंदन चितवोजी, ध्यान घोल रंग रोल सुह० ५ भाल बहु आणा भलीनी तिलक तणो तेह भाव, ने आभरण उतारिअेजी ते उतारो भवपार. सुह० ६ जे निर्माल्य उतारीअेजी, ते तो चित्त उपाधि, पखाल करता चिंत वोनी निर्मल चित्त समाधि सुह० ७ अंगलूहणा बे धर्मनाजी आत्मस्वभाव जे अंग, जे आभरण पहेरावियेजी, ते स्वभाव निज चंग सुह० ८ जे नव वाड विशुद्धतानी त पूजा नव अंग, पचावार विशुद्धताजी, तेह फूल पंच रंग सुह० ९ दीवो करता चिंतवोजी ज्ञान दीपक सुप्रकाश, नयचिंता घृत पूरियूर्ना, तत्त्वपात्र सुविलास सुह० १० धूपरूप अति कार्यतानी, कृष्णागरुनो योग, शुद्ध वासना महमहेजी, ते सा अनुभव योग सुह० ११ मद स्थानक अड छांड वाजी तेह अष्ट मंगलिक, जे नैवेद्य निवेदियेजी ते मुज निश्चल टेक सुह० १२ लवण उतारी मुक्तिअेजी, कृत्रिम धर्मनो रे त्याग, मंगलदीवो अति भलोजी रे शुद्ध धर्म पर राग सुह० १३ गीत नृत्य वाजिंत्रनोनी रे नाद अनाहत सार, राम रती रमणी करिजी ते साचो थैकार सुह० १४ भावपूजा अेम साचवीनी सत्य बजावो रे घंट, त्रिभुवन माहे ते विस्तरेनी टाळे कर्मनो कंट सुह० १५ अेणी परे भावना भावताजी साहेब जस सुप्रसन्न, जन्म सफल जग तेह नोनी, तेह पुरुष धन्न धन्न सुहं० १६ परम पुरुष प्रभु शामळाजी मानो अे मुज सेव, दूर करो भव आंमळाजी, वाचक जश कहे देव सुह० १७

१ फेरा

श्री पार्श्वनाथ स्वामीनुं स्तवन

[गोडीनी आई थारा देशमा मारूनी—अे देशी]

परम पुरुष परमातमा साहेबजी, पुरिसादाणी पास हो, शिव सुन्दर भमर थासे विनती साहेबनी, अवसर पामी ओळगु, सा० सफल करो अरदास हो शिव० १ दोय नन्दन मोह भूपना सा० तणे कर्या जग धघोल हो शि० द्वेष करी राग केसरी सा० तेह ना राणा साठे हो शिव० २ मिथ्या मोह ता अस्त्रो सा० काम कटक शिरदार हो, शिव० त्रण रूप धरी ते रमे सा०, हास्यादिके परिवार हो शिव० ३ मोह महिपतिं जोरथी सा०, जग मघतो थयो जेर हो, शिव० हरिहर सुर नर सहु नम्या सा० जकडी कर्मे ने घेर हो शिव० ४ भवस्थिति चौगति चोकसा सा०, लोक करे पाकार हो शि०, आप उदासी थई रह्या सा० ईम किम रहेशे नीर हो, शिव० ५ क्षपक श्रेणी ने गजघटा सा० हलकारो अरिहंत हो, शिव० नाण खड्ग मुज कर दीओ सा० क्षणमा करु अरि अंत हो शिव० ६ करुणालयण कटाक्षथी सा० रिपुदल होय विसराळ हो, शिव० क्षमाविजय जिन संपदा सा० प्रगटे झाक झमाल हो शिव० ७

---

१ द्वेषरूपी हाथी रागरूपी सिंह २ सोळ कषायो ३ कामरूपी सेनापति ४ मिथ्यात्वमोहनीय, समकितमोहनीय मिश्रमोहनीय ए मोहनीयना त्रण भेद छे ५ हास्य आदि नव नोकषाय ६ मोहराजा ७ मोहना पुत्र रागद्वेष [illegible] नेशार करी दीधु छे ८ मर्यादा ९ क्षपकश्रेणीरूपी हाथीओनो समूह [illegible] पणानो हल्कारो छे १० ज्ञानरूपी तरवार मारा हाथमा आपो तो [illegible] नाश करु ११ आपनी करुणा नजर होय तो, शत्रुनी सेना [illegible]

श्री पार्श्वनाथजीनु स्तवन

जबूद्वीपे पोतनपुरमा, अरविंद नामे राजा रे, तास पुरोहित विश्वभूति द्विजसुत मरुभूति गुण ताजा रे, पास जिनेश्वर पुरिसा दाणी १ श्रावक धर्म आराधी अते कमठ शिलातल चाप्यो रे, कुजर होय स्त्री तस वरणा, करेणी मोहे व्याप्यो रे, पास० २ अरविंद राजऋषि प्रतिबोधीने, जातिस्मरण पाम्यो रे, कमठ कुकड अहि डस्यो सहसारे सुर काम्या रे पास० ३ महाविदेहे विद्युत गति नृप, तिलकावती तस राणी रे, किरणवेग सुत सयम लई, लहे अच्युत सुर खाणी रे पास० ४ पूर्वे विदेहे, विद्याधरवर, सयम मारग साधे रे, कमठ जीवे सिंहे त हणियो मध्य ग्रैवेयक सुर लाधे रे पास० ५ सुवर्णबाहु चक्री सुविदेह, सयम जिन पद बाधे रे, कमठ जीवे व्याघे ते हणियो, प्राणत सुर सुसमाधे र पास० ६ अश्वसेन नृप वामानदन, नगरी वाराणसी जेहनी रे, नील वरण अहि लछन दीप, आण वहु हु तेहनी रे पास ० ७ पास जिनेश्वर जगीशमो जिन ज्ञानविमल गुण भरियो रे, बाह्य ग्रही सेवकने तारे, अपरपार भव दरियो रे पास ०८

श्री महावीर स्तवन

वीर जिनेश्वर चरणे लागु, वीरपणु ते मागु रे, मिथ्या मोह तिमिर भय भाग्यु जित नगारु वाग्यु रे वीर० १ छउमस्थ वीरज लेश्या सगे अभिसंधिज मति अगे रे, सूक्ष्म स्थूल क्रियाने रग योगी थयो उमगे र वी० २ असख्य प्रदेशे वीर्य असख्यो योग असं

---

१ हाथी २ हाथणी ३ साप ४ छद्मस्थना इरादा पूर्वकना प्रयत्नथी थे थठ प्रवर्ते ते अभिसधिज वीर्य ते याना बळथी रगमा आवीने आत्मा मोहजन्य उत्साहथी मन आदि मार्फत बलवान बन्यो होय छे ५ आत्मिक वीर्यना असरव्य अशोन योगस्थानक होय छे [illegible]

रित करिं रे, पुद्गल गण तेणे लगु निशेषे यथाशक्ति मति लेखे रे वी० ३ उत्कृष्टे वीर्य निवेश योगक्रिया नवि पेसेर, योग तणी ध्रुवतान लश आतमशक्ति न खेसे रे वी० ४ कामवीर्य वशे जेम भोगी तेम आतम थयो भोगी रे, शूरपणे आतम उपयोगी थाय तेह अयोगी रे वी० ५ वीरपणु ते आतम ठाणे जाण्यु तुमची वाण्ये रे ध्याने विनाणे शक्ति प्रमाणे निज ध्रुव पद पहिचाण रे. वी० ६ आलंबन साधन जे त्यागे पर परिणतिन भागे रे, अक्षय दर्शन ज्ञान वरागे आनंदघन प्रभु जागे रे. वी० ७

श्री महावीरस्वामीनु स्तवन (हालरियु)

माता त्रिशला झूलावे पुत्र पारणे, गावे हालो हालो हालरवाना गीत, सोना रुपा ने वळी रत्ने जडियु पारणु, रेशम दोरी घुघरी वागे छुम छुम रीत, हालो हालो हालो हालो मारा नन्दन, १ जिनजी पास प्रभुथी वरस अढीसे अतरे, होशे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परिमाण, केशी स्वामी मुखथी एवी वाणी साभळी, साची साची हुई ते मारे अमृत वाण हालो० २ चाद स्वप्ने होव चक्री के जिनराज, वीत्या बारे चक्री नहि हवे चक्रीराज,

---

१, २ वीर्य उत्कृष्ट हदे पहोंचा जाय छे त्यारे मनोयोगादिनी प्रवृत्ति तद्दन मंद पडी जाय छे, अने तद्दन स्थिर थइ जाय छे त्यारे आत्मा योगोने पकडी राखी शकतो नथी ३ वीर्यथी मैथुनजन्य भोगो भोगवाय, तेम आत्मबळथी मनोयोगादि द्वारा जीव संसारमां ममे अने सुखदुःख भोगवे छे, पण पुरातन लाग आत्मामां तत्त्वज्ञान थाय तो परमात्मा बने छे ४ आत्मामां छे ते तमारा वचनामृतथी ६ शास्त्रज्ञानना आधारथी यथाशक्ति आगळ वधे ते पोतानु आत्मबळ ओळखे ७ जीवबामां देहरूप थनारा मन वचन कायाना त्याग क्षायिक दर्शन ज्ञान चारित्रथी जे करे छे ते आनंदमय आत्मा सदा जागता होय छे

जिननी पास प्रमुना श्री केशी गणधार, तेहने वचने जाण्या चोवी शमा जिनराज, मारी कूखे आव्या त्रण भुवन शिरताज, मारी कूखे आव्या संघ तीर्थनी लाज, हु तो पुण्य पनोती इद्राणी थई आज हा० ३ मुजने दोहलो उपन्यो बेसु गज अंबाडीअे, सिंहासन पर बेसु चामर छत्र धराय, अे सहु लक्षण सुजने नंदन ताहरा तेजना, ते दिन संभारु ने आनंद अंग न माय हा० ४ करतल पग तल लक्षण अेक हजारने आठ छे, तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश, नंदन जमणी जंघे लंछन सिंह बिराजतो, मे तो पहेले सुपने दीठो विसवा वीश हा० ५ नंदन नवला बधव नदीवर्धनना तमे, नंदन भोजाईओना दीयर छो सुकुमाल, हसशे भोजाईओ कही दीयर माहरा लाडका, हसशे रमशे ने वली चूंटी खणशे गाल, हसशे रमशे ने वली ठूसा देशे गाल हा० ६ नंदन नवला चेडा राजाना भाणेज छो, नंदन नवला पांचसे मामीना भाणेज छो, नंदन मामलीयाना भाणेजा सुकुमाल, हसशे हाथे उछाळी कहीने न्हाना भाणेजा, आव्यो आंजी ने बस्ती टपकु करशे गाल, हा० ७ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगला, रत्ने जडीया झालर मोती कसबी कोर, नीला पीला ने वली राता सर्वे जातिना, पहेरावशे मामी महारा नंदकिशोर हा० ८ नंदन मामा मामी सुखडली सहु लावशे, नंदन गूजुण भरशे लाडु मोतीचूर, नंदन मुखडा जोईने लेश मामी भामणा, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर. हा० ९ नंदन नवली चेडा मामानी सात सती, मारी भत्रीजी ने बेन तमारी नंद, ते पण गूज भरवा लावणसाई लावशे, तुमने जोइ जोई होशे अधिको परमानंद, हा० १० रमवा काजे लावशे लाल टकाने घूघरो, वली सूडा मेना पोपट ने गजराज, साहस हस कोयल तीतर ने वली मोर ज्यु, मामी लावशे रमवा नंद तमार काज, हा० ११ छप्पन कुमरी अमरी जल कळशे नवरावीया,

नदन तमन अमन केली घरनी माहि, फलनी वृष्टि कीधी योजन अेक्ने माडले, बहु चिरजीवो आशीष दीधी सुमने त्याहि हा० १२ तमने मेरु गिरिपर सुरपतिअे नवरावियो, निरखी निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय, मुखडा उपर वारु कोटि कोटि चद्रमा, वळी तनपर वारु ग्रहगणनो समुदाय, हा० १३ नदन नवला भणवा निशाळे पण मूकशु, गजपर अबाडी बेसाडी मोटे साज, पसली भरशु श्रीफळ फोफळ नागरवलशु सुखडली लेशु निशाळियाने काज, हा० १४ नदन नवला मोटा थाशो न परणावशु, वहुवर सरखी जोडी लावशु राजकुमार, सरखा वेवाइ वेवाणने पधरावशु वरवहु पोंखी लेशु जोईई जोईने देदार, हा० १५ पीयर सासर मारे बहु पक्ष नदन ऊजळा, मारी कूखे आव्या तात पनोता नद, मारे आगण वूठा अमृत दूधे मेहुला, मारे आगणे फळिया सुरतरु सुखना कद, हा० १६ इणीपरे गायु माता त्रिशलाअे पारणु जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज्य, बालपणा नेे वरणव्यु वीरनु हालरु, जयजय मगल होजो दीपविजय कविराज, हा० १७

पील्ता पीलती मोह मिथ्यात्व वली, आविआ भावियो धरम पथ हु हवे दीजिअे परम पद होई वेली आ० ५ सिंह निरि दीह आ न्दयगिरि मुन रम तु सुगुणलीह अविचल गिरीहो, ता कुमतरंग मातगना यूथथी मुज नहीं कोई ल्यलेश बीहो आ० ५ शरण तुज चरण म चरणगुणनिधि मह्या, भव तरण करण दम शरम रासो, हाथ जोडी कहे जमविनय बुध इस्यु देय निज भजनमा दास रासो आ० ७

श्री महावीरजिन स्तवन

वीरजी सुणो मोरी विनती, कर जोडी कहु मननी वात, बाल कनी परे वीनवु, मारा स्वामी हो तमे त्रिभुवन तात वी० १ तुम दरिसण विण हु भम्यो, भवमाहि हो स्वामी समुद्र मोझार, दु:ख अनता म मह्या, त कहता हो किम आवे पार वी० २ पर उप गारी तु प्रभु, दु:खभजक हो, जगदीनदयाल, तणे तोरे चरणे हु आवीयो, स्वामी मुजने हो निज नयणे निहाळ वी ३ अपराधी पण उद्धर्या, कहु केता हो तेरा अवदात, सार करो हवे माहरी, मन आणो हो स्वामी मोरी वात वीर० ४ शूलपाणी प्रतिबूझव्यो, जणे कीधो हो तुनने उपसग, डस दीधा चडकोशीअे, जेने दीधो हो तुम आठमो स्वग वीर० ५ गोशाला गुनही घणो, जेणे बोल्या हो तोरा अवर्णवाद, ते बळतो त रासीया, शीत लेश्या हो मूकी सुप्रसाद, वीर० ५ अे कुण छे इन्द्रजाळीयो, इम कहेता हो आव्या तुम तीर, ते गौतमने तुम कीयो, पोतानो हो प्रभु मुख्य वजीर वी० ७ वचन उत्थाप्या ताहरा जे झगड्या हो तुम साथे जमालि, तेहने पण पनर भव, ते कीधो हो कृपाळ शिवगामी वीर० ८ अइमत्ता ऋषि ज रम्या, जळमाहि हो बाधी माटीनी पाळ, तरती मूकी काचली, ते तार्यो हो तहने तत्काल वीर० ९ मेघ कुमार ऋषि बूझव्यो, चित्त

१ अपराधी

चूस्या हा चारित्रथी अपार, अकायसारी तहन, त र्याधा हा करणा भडार. वी० १० राय श्रेणिक राणी चेलणा, रूप देखी हो चित्त चूस्या जेह, समवसरण साधु साध्वी, तें र्याधा मे आराधक तह, वीर० ११ चार वरस वेश्या घेरे, रह्या मूकी हा सजमनो भार, नदिषेण पण उद्धर्यो, सुर पदवी हो आधी अति सार, वीर० १२ पच महाव्रत परिहरी, गृहवास हा रह्या वर्ष चोवीश, तें पण आर्द्र कुमारने तार्यो हो, तारी जेह जगीश वीर० १३ व्रत नही नही आखडी, नही पासह हो अन्न शील, त पण श्रेणिक रायने तुम कीधो हा स्वामी आप सरीखा वीर० १४ अेम अनेकने उद्धर्यो, कहु केता हो करुणाकर नाम, हु प्रभु भक्त छु ताहरो, तेन तारो हा नही ढीलनु काम वीर० १५ शुद्ध सजम तो नाथे पळ, नही सद्दथा हो गुन दर्शण ज्ञान, पण आधार अक छ अेवलो, ताम हो धरु निशदिन ध्यान वी० १६ मेह महीतल वरसता, नही जाव हो समविषम ठाम, गिरुआ सहज गुण वरे स्वामी सारो हो सारा वछित काम वी० १७ तुम नाम सुख सपदा तुम नामे हा दु ख जाय दूर, तुम नामे वछित फळे, तुम नाम हो सुख आनद पूर वीर० १८

कलश

इम नगर जेसलमेर मडण, तीर्थंकर चावीसमा, शासनधीर श्री सिद्धारथ, सेवता सुरतरु समो, जिन चद जिनराज भाल नदन सकलचद कला निलो, वाचनाचारज समयसुदर सथुण्यो त्रिभुवन तिलो १९

---

१ समोसरणमांना साधुसाध्वी श्रेणिक अने चेल्णानु रूप जोई

श्रीमहावीर जिन स्तवन अथवा मुक्ति जवानी डिग्री

तीर्थंकर महावीरने कौशल गणधर साज, क़ानून प्ररूप्या है दया सब जीवन हितकाज १ दान शियल तप भावना अमल खुलासा सार, जिण पुन्ये धारण किया पहोंच्या मुक्ति मझार २ चउद सहस साधु हुवा साध्वी छत्रीस हजार, लाखा श्रावक श्राविका पाम्या भव जल पार ३

ढाल

मेरी अदालत प्रभुजी कीजिये जिनशासननायक !
मुक्ति जाणेकी डिगरी दीजिये ॥

खुद चेतन मुदइ (वादी) बना है आठों कर्म मुदायला, दाबा रस्ता मुक्ति मारगका धोका देकर टालाजी जिन० १ तप कागद इष्टाम लियो तत्त्वाणा गिमा विचारी, सज्झाय ध्यान मजमुन बनाकर अरजी आन गुजारीजी जि० २ मैं जाता था मुक्तिमार्गको कर्मों ने आ घेरा, धोखा देकर राह भुलाया लूट लिया सब डेराजी जि० ३ नहात खराब किया कर्मोने चाउगति माहि, दु ख अनता पाया भवे अंत पार कछु नाहीजी जि० ४ सबे मिले वकिल कानुनी पंच महाव्रतधारी, सूत्र देख मसूदा कीया तब मे अरजी डारीजी जि० ५ पाचों समिति तीनों गुप्ति आठो गवाह बुलावो, शील अफसर बडा चौधरी उसको पूछ मगावोजी जि० ६ अरजी गुजरी चेतन तेरी हुवा सफाना जारी, हाजर आओ जवाब लिखावो लावो सबूती सारीजी जि० ७ आठो मुदायलेके हाजर आये मोह मुख्त्यार बुलाये, चार कषाय और आठो मदका साथ गवाहिमे लायेजी जि० ८

जवाब प्रतिवादिनो

जिनशासननायक ! झूठा दावा है चेतन जीवका जि० ॥

हमने नहीं बहकाया इसको यह मेरे घर आया, करता लश्कर हमसे गाया ऐसा फरेब मचायाजी जि ९ विषयभोगमें राच्या चेतन घाटा नफा नहीं जाना, करजदार जब हरि लाग्या तब लाग्या पिछतानाजी जि १० हाजर गवाह हमारे पूछिय हाकम मारा, बिना लिया करजा चेतनसे कैसा करे जिनाराजी जि ११

जवाब वादीनो

चेतन यह सतावी माहे सुणो शासनसिरदार ! इमानदार है गवाह हमारे आगे मय ससारनी जि० मुक्ति० १२ मैं चेतन अनाथ प्रभुजी कर्म करेषी भारी, जीव अनना राह चलतको लूट चोरासीमें डारीजी जि १३ बड़े बड़े पंडित इन लूट ऐसा दम बतलाया, धर्म कहा और पाप कराया एसा करज बढायाजी जि १४ हिंसामाहे धर्म बताया तपस्या सेती छिगाया, इन्द्रियसुखम मग्न बना कर मृग जाल फेलायाजी जि १५ ऐसा करो इन्साफ प्रभुजी अपील होने न पावे, हबरनी चतरफी होय जन्ममरण मिट जावे जी जि १६

कोर्टनो इन्साफ

ज्ञान दर्शन करी मुन्सफी दोनों को समझाया, चेतनकी डिग्री कर दीनी कर्मोका करजा चतायाजी जि १७ अमल करन जो था कर्मोका चेतनमे दिखवाया, शुद्ध सत्तम नय करी जमानत आगेसा दुःख मिटायाजी जि १८ आश्रव छोड़ सबरको धारा तपस्यासे चित्त लायो, जल्दी करज अदा कर चेतन सिधा मुक्तिका जावोजी जि १९ शुद्ध संयम जय करी जमानत चेतन डिग्री पाइ, फागण सुद दसमी दिन मगळ सन आगणीसे अठाइजी जि २०

उवीसत्थो वन्दन पडिक्कमण, काउस्सग्ग पच्चक्खाण कर आतम निर्मळ एण ३ क्षेर जाम जिम जागुली मक्षतणे महिमाय, तेम आवश्यक आदर्ये पातक दूर पळाय ४ भार वजी जिम भारवही रहेने हल्वो थाय अतिचार आलोवता जन्मदोष तिम जाय ५

ढाळ पहेली

पहेलु सामायिक करो रे आणी समता भाव, राग द्वेष दूरे करो रे आतम एह स्वभाव रे प्राणी समता छे गुण गेह, ए तो अभिनव अमृत मेह रे प्रा० आपोआप विचारिये रे रमिये आप स्वरूप, ममता जे परभावनी रे विषयो ते विषकूप रे प्रा० २ भवभव मेहली मूर्कीया रे धन कुटुंब सजोग, वार अनती अनुभव्या रे सवि सजोग विजोग रे प्रा० ३ शत्रुमित्र जगको नहीं रे सुखदुःख माया जाळ, जो जागे चित्त चेतना रे तो सवि दुःख विसराल रे प्रा० ४ सावद्य योग सवि परिहरी रे एह सामायिक रूप, हुवा एह परिणाम थीरे सिद्ध अनत अरूप रे प्रा० ५

ढाळ बीजी

आदीश्वर आराधीये साहेल्डी रे, अजित नाथ भगवत तो, संभव नाथ सोहामणा साहेल्डी रे, अभिनदन अरिहत तो, सुमति पद्मप्रभ पूजीये सा०, समरु स्वामी सुपास तो, चन्द्रप्रभ चित्त धारीये सा० सुविधि ऋद्धिवास तो २ शीतल भूतल दिनमणि सा०, श्रीपूरण श्रेयास तो, वासुपुज्य सुर पूजीया सा०, विमळ विमळ प्रकास तो, करु अनत उपासना सा० धर्मशर्म धुर धीर तो, शाति कुथु अर मल्ली नमु मुनिसुव्रत वडवीर तो ४ चरण नमु नमीनाथना सा० नेमीश्वर करु ध्यान तो, पार्श्वनाथ प्रभु पूजीये सा० वन्दू श्रीवर्धमान तो ५ ए चोवीसे जिनवरा सा०, त्रिभुवन करण उद्योत तो, मुक्तिपथ जेण

दारख्यो सा० निर्मळ केवळ ज्योत तो ६ समकित शुद्ध एहथी होये सा० लीजे भवनो पार तो वीजु आवश्यक इस्यु सा० चउवीसत्थो सार तो ७

ढाळ त्रीजी

बे कर जोडी बे कर जोडी गुरु चरणे दिओ वादणा रे आवश्यक पचवीस धारो रे धारो रे दोष बत्रीस निवारिये रे १ चार वार चार वार गुरु चरणे मस्तक नामिये रे, बार निआवर्त राखो रे रा० टाळी तेत्रीस आशातनारे २ गीतार्थ गीतार्थ गुण गिरुआ गुरुने वादता रे, नीच गोत्र क्षय थाय थाये रे था० उंच गोत्रनी अर्जना रे ३ आण वहंथे आण० कांई न जगमा तेहनी रे परभव लहे सौभाग्य भाग्य रे भा० दीपे जगमा तेहनु रे ४ कृष्ण राये कृ० मुनिवरने दीधा वादणा रे, क्षायिक समकित सार पाम्या रे पा० तीर्थंकर पद पामशे रे ५ शीतळाचारज शी० जिम भाखे सहु जगे र क्रूर वादणा दीध भावे रे भा० देता वळी केवळ लह्यु रे ६ एह आवश्यक त्रीजु जाणनो रे गुरुवन्दन अविकार करजो रे करजो रे विनय भक्ति गुणवतनी रे ७

ढाळ चोथी

ज्ञानादिक जिनवरे कह्या ए जे पांचे आचार तो दोष वार ते जिन प्रत्ये ए पडिक्कमिये अतिचार, जयो जिन वीरजीए १ आलोईने पडिक्कमिये मिच्छा दुक्कड देय तो, मन वच काय शुद्ध करी ए चारित्र चोक्खु करेय ज० २ अतिचार शल्य गोपवे ए ने करे दोष प्रकाश वा, मच्छीमार तणी परे ए ते पामे परिहास ज० ३ शल्य प्रकाशे गुरु मुखे ए होय तस भाव विशुद्ध तो, ते हुशियार हारे नहीं ए करे कर्मेशु जुद्ध ज० ४ अतिचार एम पडिक्कमिये करो धर्म निःशल्य तो नितपताका तेम वरी ए जेम जग फरहरी मल्ल ज० ५ "वदित्तु" विधिशु पढो ए तम पडिक्कमणा सूत्र तो, चोथु आवश्यक इस्यु ए पडिक्कमणा सूत्र पवित्र ज० ६

ढाळ पाचमी

वैद्य विचक्षण जिम हरे ए पेहला साल (शल्य) विकार तो, दोप शेप पछी रूझवा ए फेर ओसड उपचार ज० १ अतिचार व्रण रूझया ए काउस्सग तीम होय तो, नव पल्लव संजम हुवे ए दूपण न रहे कोय तो ज० २ काउसगे थिरता करी ए चपल चित्त करे त्याग तो वचनजोग सवि परिहरी ए रामय आतमराम ज० ३ मास उ-मासादिक कह्या ए जे सोलह आगार तो, तेह विना सवि परिहरो ए देह तणो व्यापार तो ज० ४ आवश्यक ए पाचमुं ए पाचमी गति दातार तो, मन शुद्धि आराधीये ए लहिये भवनो पार तो ज० ५

ढाळ छठी

सुगुण पच्चक्खाण आराधजो, एह छे मुक्तिनु हेत रे, आहारनी लालच परिहरो चतुर तु चित्तमा चेत रे सुगुण० १ साल काढ्यु व्रण रूझव्यु गई वेदना दूर रे, पछी भला पथ्य भोजन थकी वधे देह जेम नूर रे सुगुण० २ तेम पडिक्कमण काउस्सगथी गयो दोप सवि दुष्ट रे, पछी पच्चक्खाण गुण धारणे होय धर्मतनु पुष्ट रे सुगुण० ३ एहथी कर्मआश्रव टळे एह छ सवर रूप रे, अविरति कूपथी उद्धरे तप अनल्प स्वरूप रे सुगुण० ४ पूर्व जन्मे तप आचर्या विशल्या थई नार रे, जहना न्हवणना नीरथी शमे सकल विकार रे सुगुण० ५ रावणे शक्तिशस्त्रे हण्यो पडथा लक्ष्मण सेन रे, हाथ अडता सचेतन थयो विशल्या तप तेज रे सुगुण० ६ छट्ठु आव श्यक ज यह्यु एहवु ते पच्चक्खाण रे, छए आवश्यक जणे कह्या नमु तेह जगभाण रे सुगुण० ७

तपगच्छ नायक मुक्तिदायक श्रीविजयदेव सूरीश्वरो, तस पट्टदीपक मोहजीपक विजयप्रभसूरि गणधरो १ श्रीकीर्तिविजय उवज्झाय सेवक विनयविजय वाचक कहे, षड् आवश्यक जेह आराधे तेह शिवसंपद लहे २

ज्ञानपदपूजा स्तवन

ज्ञानपद भजिय रे जगत सुहंकर पाच एकावन भेद रे, सम्यग् ज्ञान जे जिनवरे भाखीयु जडता जननी उच्छेदे रे - ज्ञान० १ भक्ष्याभक्ष्य विवेचन परगडो खीरनीर जेम हसो रे, भाग अनतमो अक्षरनो सदा अप्रतिपाति प्रकाश्यो रे - ज्ञान० २ मनथी न जाये रे कुभकरण विधि तेहथी शुभ कर्म धारो रे, ज्ञान त्याथी रे प्रथम छे जीवमा सद्भाव विकासे रे - ज्ञान० ३ वचन नाणु रे लोचनवत लहे अन्योअन्य पुलाय र, एकान्तवादी रे तत्त्व पामे नहीं स्याद्वाद रस समुदाय रे - ज्ञान० ४ ज्ञानभर्मा भरतादिक भव तर्या ज्ञान सकल गुण मूल रे, ज्ञानी ज्ञान तणी परिणति थकी पामे भवजल कूळ रे - ज्ञान० ५ अल्पागम जइ उग्र विहार कर विचरे उग्रमवत रे उपदेश माळामा किरिया तेहनी कायक्लेश तम तुल रे - ज्ञान० ६ जयत भूपो रे ज्ञान आराधतो तीर्थकर पद पामे र, रवि शशि मह परे ज्ञान अनत गुणो विजय लक्ष्मी हित नाम रे - ज्ञान० ७

ब्रह्मचर्य पदपूजा (स्तवन)

ब्रह्मचर्य पद पूजीये व्रतमा मुकट समान हो विनीत, शीयळ सुरतरु रागया कही छे नव वाड हो विनीत नमो नमो ब्रह्मचर्य धारीण १ कृत कारित अनुमति तन दिव्य औदारिक काम हो विनीत, त्रिकरण योगे ए परिहरो भेद अढार गुणधाम हो विनीत नमो० २ दश अवस्था कामनी तेवीस विषय हरत हो विनीत, अढार सहस शीलाग रथे बेठा मुनि विचरत हो विनीत नमो० ३ द्रव्यथी चार दारा तने भावे पर परिणति त्याग हो वि० दश समाहिठाण सेवता वीस अब्रह्मन त्याग हो विनीत नमो० ४ दीये लाख सोवन रोडीनु कचन चैत्य कराय हो वि० तेहथी ब्रह्मव्रत धारता

समुदाय हो विनीत नमो० ५ चोरासी सहस मुनि दाननु गृहस्थ भक्तिफळ जोय हो वि० किया गुणठाणे मुनि धडा भावतुल्य नहीं कोय हो वि० नमो० ६ दशमे अंगे वरणावीयो चन्द्रवर्मा नरींद हो वि० तेम आराधी प्रभुता वर्यो सौभाग्यलक्ष्मी सूरींद हो वि० नमो० ७

सामायिक पूजा (स्तवन)

हे सुखकारी आ संसार थकी जो मुजने उद्धरे, हे उपकारी ए उपकार तुमारो कदिय न विसरे, नवमे सामायिक उच्चरिये जमे दर्शननी पूजा करिये निज आतम रूप अनुसरिये समता सामायिक सचरिये हे सुख० १ सामान्य ज्या मुनिवर भाळे अतिचार पाच एहना टाळे साधु परे जीवदया पाळे निज घर चैत्ये पोषधशाळे हे सुख० २ राजा मंत्री ने व्यवहारी घोडा रथ हाथी शणगारी वाजित्र गीत ने आगळ पाळा परशमे स्पष्ट दर्शन धारा – हे सुख० ३ एणी रीते गुरु पासे आवी करे सामायिक समता लावी घडी बे सामायिक उच्चरिये वळी बत्रीस दोषने परिहरिये – हे सुख० ४ लाख ओगणसाठ बाणु कोडी पचविश सहस नवसे जोडी पचवीश पल्योपम झाझेरु ते बांधे आयु सुर केरु – हे सुख ०५ सामायिक व्रत पाळी जुगते ते भव धनमित्र गयो मुगते आगम रीते व्रत हु पालु पचम गुणठाणु अजवाळु –हे सुख० ६ तुमे ध्येयरूपे ध्याने आवो शुभधीर प्रभु करुणा लावो नहीं पार अचळ सुख साधते घडी दोय मळो जो एकान्ते – हे सुख० ७

तपपद पूजा (स्तवन)

तपपदने पूजीने हो प्राणी तप० सर्व मंगळमा पहेलु मंगळ कर्म निकाचित टाळे क्षमा सहित जे आहार निरीहता आतम ऋद्धि निहाळे हो प्रा० त० १ ते भय मुक्ति जाणे जिनवर त्रण चउ ज्ञाने नियमा तोय तप आचरणा न मूके अनंत गुणो तप महिमा हो प्रा०

त० २ पीठ अने महापीठ मुनीसर पूर्व भव महि जिननो साध्वी रुक्मणा तप नावि फळियो मेरु गयो नवि मननो हो प्रा त० ३ अग्यार लाख नें एंशी हजारे पाचशे पाच जिन ऊणा नन्दन ऋषिये मास खमण करी लिधा काम सपुना हो प्रा० त० ४ तप तपिया गुणरत्न सवत्सर खधक क्षमाना दरिया चौद हजार साधुमा अधिका धनो तप गुण भरिया – हो प्रा० त० ५ पद भेद बाहिर तपना प्रकाश्या अभ्यंतर पद् भेद धार भेदे तप तपता निर्मळ सफळ अनेक उमेद हो प्रा० त० ६ कार्नेस्तु एह पदने आराधी माधी आतम काज तीर्थकर पद अनुभव उत्तम सौभाग्य लक्ष्मी महाराज – हो प्रा० त० ७

तपपद पूजा (स्तवन)

दृढप्रहारी हत्या करी कीधा कर्म अघोर,
पण तपना प्रभावथी वाळ्या कर्म कठोर ॥ १ ॥

ढाळ पहेली

तप करिये समता राखी घटमा, तप करवाल कराल ले करमा अडिये कर्म अरि भटमा तप० १ शावत पीवत मोक्ष जे माने ते सरदार बहु जटमा – तप० २ एक अचरिज प्रतिस्रोते तरता आवे भवसायर तटमा – तप० ३ काळ अनादिको कर्म सगतिए जीव पड्यो बहु खटपटमा – तप० ४ तास वियोग करण ए करण जेणे नवि भमिए भवतटमा – तप० ५ होय पुराण ते कर्म निर्जरे एह सम नहीं साधन घटमा – तप० ६ ध्यान तपे सवि कर्म जलाई शिववधु वरिये झटपटमा – तप० ७

ढाळ बीजी

विघ्न टळे तप गुण थकी, तपथी जाय विकार,
प्रशंस्यो तप गुण थकी, वीर धन्नो अणगार ॥ १ ॥

तपस्या करता हो डंका जोर बजाया हो, उजमणो तप केरो करता शासन सोह चढाया हो, वीर्य उल्लास वधे तेणे कारण कर्म निर्जरा पाया तप० १ अड सिद्धि अणिमा लघिमादिक तिम लब्धि अट्ठवीसा हो, विष्णुकुमारादिक परे जगमा पामत जयत जगीशा—तप० २ गौतम अष्टापद गिरि चढिया तापस आहार कराया हो, जे तप कर्म निकाचित तपवे क्षमा सहित मुनिराया—तप० ३ साडा बार वर्ष जिन उत्तम वीरजी भूमि नवि ठया हो, घोर तपे केवळ लह्या तेहना पद्मविजय नमे पाया—तप० ४

आठमनु स्तवन

वीर जिनेश्वर इम उपदिशे साभळो चतुर सुजाण रे। मोहनी नींदमा का पडो, ओळखो धर्मना ठाण रे ॥ १ ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो, परिहरो विषय कषाय रे। बापडा पंच परमादथी का पडा कुमतिमा धाय रे ॥ वी० २ ॥ करी शको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे। सर्व काळे करी नवि शको तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वी० ३ ॥ जूजुआ पर्व पट्ना कह्या फल घणा आगम जोय रे। वचन अनुसार आराधता सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वी० ४ ॥ जीवने आयु परभव तणु, तिथि दिन बंध होय प्राय रे। तेह भवि एह आराधता, प्राणियो सद्गति जाय रे ॥ वी० ५ ॥ तेहने अष्टमी फल तिहा, पूछे गौतम स्वाम रे। भविक जीव जाणवा कारण, कहे वीर प्रभु ताम रे ॥ वी० ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे। बुद्धिना आठ गुण संपजे एहथी आठ

गुण सिद्धि रे ॥ वी० ७ ॥ लाभ होय आठ पडिहारनो¹ आठ पवयण² फल होय रे। नाश आठ करमनो मूळथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वी० ८॥ आदिजिन जन्म दीक्षा तणी, अजितनु जन्म कल्याण रे। च्यवन संभवतणु एह तिथे, अभिनंदन निरवाण रे॥ वी० ९ ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमिया, नेमनो मुक्ति दिन जाण रे। पास जिन एह तिथे सीधला, सातमा जिन च्यवन जाण रे॥ वी० १०॥ एह तिथि साचवी राजियो, दंडवीरज लही मुक्ति रे। कर्म हणवा भणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ ११ ॥ अतीत अनागत काल्ना, जिनतणा केइ कल्याण रे। एह तिथे वळी घणा संयमी, पामशे पद निर्वाण रे ॥ वी० १२॥ धर्मवासित पशु पंखिया, एह तिथे करे उपवास रे। व्रतधारी जीव पोसो करे, जेहने धर्म अभ्यास रे ॥ वी० १३ ॥ भाखियो वीर आठम तणो, भविक हित एह अधिकार रे। जिन मुखे उचरे प्राणिया पामशे भव तणो पार रे ॥ वी० १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहे, टळे कष्टनी कोड रे। सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कान्ति कर जोड रे ॥ वी० १५ ॥

कळश

इम त्रिजग भासन अचल शासन वर्धमान जिनेश्वरु।
बुध प्रेम गुरु पसाय जेथी मधुण्यो अलवेसरु।
जिन गुण प्रसंगे भण्यो रंगे स्तवन ए आठम तणो।
जे भविक भाव सुणे गावे कांति सुख पावे घणो ॥

श्री सिद्धाचलजीनु स्तवन

संघपति भरत नरेसर, शत्रुंजयगिरि आवे रे लोल, अहो शत्रुंजय गिरि आवे रे लोल, सोवन देरासर करी, आगळ पधरावे रे लोल। अहो० ॥ वासव प्रमुख सुर बहु साथे तिहां सोहे रे लोल अहो० ॥

¹ अशोक वृक्षादि आठ प्रातिहार्यो   ² प्रवचन माता

यश इक्ष्वाकु सोहावीओ त्रिभुवन मन मोहे रे लोल । अहो० सघपति० ॥ १ ॥ बाहुबल आदे करी, ब्राह्मी मुनिवर मळिया रे लोल, अहो० । ज्ञानी गणधर जाणीये, नमि विनमि बळीया रे लोल । अहो० । सोमयशा आदि दई, महीधर रथवाळा रे लोल । अहो० । सामंत मंत्री अधिपति मानी मळगगा रे लोल अहो० सघपति० ॥२॥ श्रावक ने वळी श्राविका, वर अणुव्रतधारी रे लोल । अहो० । कनकसेनादिक साधवी, व्रतिनी व्रतधारी रे लोल अहो० । चतुरंग सेनाए परिवर्यो, छत्र चामर धारी रे लोल । अहो० ॥ अढारक दानने वरसता जेम मजल जलधारा रे लोल अहो० सघ० ॥ ३ ॥ साथे सुभद्रादिक बहु, प्रवर पट्टराणी रे लोल । अहो । इद्रमाळ पहेरे तिहां, धन्य धन्य अवतारा रे लाल । अहो० । ओळवगु गिरिराजनी, करे भक्ति अपारा रे लोल । अहो० । शिखर शिखर सिहु काळना, करे जिनविहारा रे लोल ॥ अहो०॥ सघपति० ॥ ४ ॥ गणधर नाभी साथेय छे, बहु मुनि आधारा रे लोल । अहो० । बिंब प्रतिष्ठा ते करे, विधिशु जयकार रे लोल । अहो० । सघपति तिलक सोहावियु, इद्रादिक सारे रे लोल । अहो० । आपी थापे यश घणो, ज्ञान विमल एम भाखे रे लोल । अहो० । सघपति० ॥ ५ ॥

श्री सिद्धाचळजीनु स्तवन

सिद्धाचल शुद्ध सुहाने, अनन्त अनन्त वहावे । पनर भेद सिद्ध जावे, गुण अगुरुलघु नीपजावे रे । विमलाचल वेगे वधावो, जो होवे शिवपुर जावो रे । विम० । ए गिरिराजना गुण गावो रे, विम०॥ १॥ राजा जितारि अभिग्रह लीधो, दिन सातमे अहाराज कीधो, शुक राजाए राज्य ते लीधु शत्रुंजय नाम ते दीधु रे ॥ विम० ॥ २॥ ए गिरि आवे, जिनराजनी पूजा रचावे । शुभंजयमा योगावञ्चक फळ पावे रे ॥ विम० ॥ ३ ॥ विद्या

चारण मुनिवरिया, फल नल लई संचरिया। आकाशे पवने ते चढिया,
देखी हेमगिरी हठा उतरिया रे॥ विम० ४॥ प्रभु देखी आनंद पावे,
जिनराजने शीश नमावे। द्रव्य साथ भावना भावे, पछी इच्छित
स्थानके जावे रे॥ विम० ५॥ ज्ञान दर्शन अनाथी लहिए, श्रावकना
गुण तेहथी लहिए। समारंभ नीरे रहिए, जिन शासन तीर्थ ते कहिए
रे॥ विम०॥ ६॥ सहु तीर्थना ए राजा, सूरज कुंडना जल ताजा।
न्हाता आनंद माना वृक्ष हो हुआ चन्द राजा रे॥ विम०७॥ ए गिरि
भेटण काजे, गुजरातना संघ समाजे। पंथे पंथ विसामा छाजे, गिरि
देखी वधाव्यो वाजे रे॥ विम०८॥ सवत अढारसे सीत्तेर वर्षे,
मागसर वदि तेरस दिवसे भेट्या आदीश्वर उल्लासे, नाण्यु मदस्त
पार उतरशे रे॥ विम०९॥ गिरि देखी लोचन ठरिया, [illegible]
वीर केसरिया। नाम केनर्क वृक्ष ल्हेरिया, शकुनी नमी [illegible]-
या रे॥ विम०१०॥ राय भरतना बिम्ब छाजे, चक्केश्वरी [illegible]
भव त्रीजे शिवपुर जावे, श्री शुभ वीर वचन रस गाव [illegible] ।

नारकीना ढालिया

अतिही निहामणा, फरम जिस्यो खुर धारोजी ॥ ६ ॥ नवीन नर कमा उपज्या, जाणे असुर तिवारोजी, कोप करी आवे तिहा, हाथ धरी हथियारोजी ॥ ७ ॥ वरे कातरणी देहना, करता खडोमडजी, रीव अतीव करे बहु, पामे दु ख प्रचंडजी ॥ ८ ॥

ढाळ २ जी (वैरागनी).

माने काया भानतो रे मारे फासा माय, ऊधे माथे अगन देई ऊचा बाधे पाय रे जिनजी साभळो ॥ कहवा कर्म विपाक रे जिनजी० ॥ १ ॥ वैतरणी तटिनी तणा रे, जळमा नाखे रे पास, करी कुहाडो तरु परे र, छेदे अधिक उल्लास रे ॥ जिन० ॥ २ ॥ ऊचा जोयण पाचसे रे, उछाळे आकाश, श्वान रूप करडे तिहा रे, मृग जिम पाडे पाशे रे ॥ जिन० ३ ॥ पदर भेदे सुर मळी रे, करवत दीए रे कपाल, आरोपी शूळी शिरे रे, भाजे जिम तरु डाळ रे ॥ जिन० ४ ॥ बोळे ताता तेलमा रे, तळी करी काढे रे ताम, वळी भोभरमा मेपवे रे, विरुवा ताम विराम रे ॥ जिन० ५ ॥ खाल उतारे देहनी रे, आमिष दीए रे आहार, बहु अरडाटा पाडता रे तनु वच्चे घाले खार र ॥ जिन० ६ ॥

ढाळ ३ जी राग मारु

तापकरी ते भूमिका र, वनशु शीतळ जाण, आवी बेसे तरुवर छायडे रे, पडता भाज प्राण, चतुर मत राचजो रे ॥ १ ॥ विरुआ विषय विलास, सुख थोडा दुख बहुला जेह्थी रे लहिये नरक निवास ॥ चतुर० २ ॥ कुभी माहे पाक करे देहनो रे, तल जिम घाणीमाथि, पीळी पीलीने रस काढे तेहनो र, महर न आवे ताय

॥ चतुर० ३ ॥ नारी जाय श्रीजी नरकनो रे मन धरता भवभ्रात, पछे परमाधामी सुर मळे रे, जबा काळ कृतात ॥ चतुर० ४ ॥ खाल उतारे तेहनी मातनु रे, खार भरे तस खास, पुरानी परे ते टळवळे रे महेर न आवे तास ॥ चतुर० ५ ॥ नात वचे दिये दश आगळी रे फरी फरी लाग पाय, घणा महता काल गयो घणो रे, हवे सही न जाय ॥ चतुर० ६ ॥ जिहा जाय तिहा ऊठ मारवा रे, कोई न पूछे सार, दु खभर रोव शोर करे घणा रे, निकट नहीं आधार ॥ चतुर० ७ ॥

ढाळ ४ थी

(रे जीव जिन धर्म कीजिये-ए देशी)

परमाधामी सुर कहे, साभळ तु भाई, कीयो दोष अमारडो, निज देख कमाई ॥ पर० १ ॥ पाप कर्म कीधा घणा, वहु भव विणास्या, पीडा न जाणी परतणी, कूडा मुखे भाख्या ॥ पर० २ ॥ चोरी लीधा धन पारका, सेवी पर नार, आरभ काम कीधा घणा, परिग्रह नहीं पार ॥ पर० ३ ॥ निशिभोजन कीधा घणा, वहु जीव सहार, अभक्ष्य अथाणा आचर्या, पातक नही पार ॥ पर० ४ ॥ मातपिता गुरु ओळव्या, कीधो क्रोध अपार, मान माया लोभ मन भर्या, मति हीण गमार ॥ पर० ५ ॥

ढाळ ५ मी

इम कहेता सुर वेदना ए, वळीय करीर तेह तो, शीघ्र कटाला वज्र तणा ए, तिहा पछाडे जेह तो ॥१॥ रूपा वरी तातो तरु ए, मुख मा घाले ताम तो, अग्निवर्णी करी पूतळी ए, आलिंगन दे जाम तो ॥२॥ सयल वदन कीडा भरे ए, जीभ करे शतखड तो, ए फळ निशि भोजन तणा ए, [illegible] तो ॥ ३ ॥ अति ऊनो

आकरो ए, आणी तातो नीर तो, ते घाटे तस आसमा ए, पाने मरे कथीर तो ॥ ४ ॥ थाल अधिक वीहामणा ए ते दुढक सठाण तो, दीसे दीन दयामणा ए, थली निराधार प्राण तो ॥ ५ ॥

ढाळ ६ वी

एणी परे बहु वेदन सही, चित्त चेता रे, वसतो नरक मोझार चतुर चित्त चेतो रे। ज्ञानी विण जाणे नहीं, चित्त चतो रे, कहेता नावे पार चतुर चित्त चेतो रे ॥ १ ॥ दश दृष्टांते दोहिलो चि०, लाध्यो नरभव सार ॥ चतुर० ॥ पाम्या एळे म हारजो चि०, करजो एह विचार ॥ चतुर० २ ॥ सूधा समन आदरा चि०, टाळो विषय विकार चतुर० ॥ पाचे इंद्रिय वश करो चि०, जिम होय छुटक बार ॥ चतुर० ३ ॥ निंदा विकथा परिहरो चि० आराधो निज धर्म ॥ चतुर० ४ ॥ समकित रत्न हैये धरो चि० भाने मिथ्या भम ॥ चतुर० ५ ॥ वीर जिणंद पसाउले चि० अहिपुर नगर मोझार। चतुर० । स्तवन रच्यो रळियामणो चि० परम कृपाल उदार ॥ चतुर० ६ ॥

अथ श्री समकित सित्तरीनु स्तवन

ढाळ १ ली

(ते मुज मिच्छामि दुकड ए देशी)

साभळ रे तु प्राणिया, सद्गुरु उपदेशो, मानव देह दोहिलो लह्यो, उत्तम कुल एसो ॥ सा० १ ॥ देवतत्त्व नवि ओळख्यो गुरुतत्त्व न जाण्यो, धर्मतत्त्व न सद्दह्यो, हियडे ज्ञान न आण्यो सा० २ ॥ मिथ्यात्वी सुर नित्य प्रत्ये, सरखा करि जाण्या, गुरु नवि ओळख्या, वयणेथी वखाण्या ॥ सा० ३ ॥ देव थए

माहे मह्या, पामे रह नारी, काम तण वश ते पड्या, अवगुण अधिकारी ॥ सा० ४ ॥ केइ क्रोधी देवता, वरी साधना वाह्या, केइ कोइथी बीहता हथियार सवाह्या ॥ सा० ५ ॥ सूर नगर जेहनी धणी देवता डरीण, मुद्रा जेहनी एहवी तेहथी शु तरीये ॥ सा० ६ ॥ आठ कर्म माकल जड्या, भमे भवही मोझारो, जन्म मरण भय देखीये, पाम्या नहीं पारो ॥ सा० ७ ॥ देव थई नाटक करे, नाचे जणजण आगे, वेश करी राधाकृष्णनो, घडी भिक्षा मागे ॥ सा० ८ ॥ सुरा करी वाये वासली, पहेरे तन वाघा, भावता भोजन करे एहवा भ्रम लागा ॥ सा० ९ ॥ देखो दैत्य सहारवा, थयो उद्यमवतो, हरि हिरण्यकशिपु मारियो, नरसिंह बलवता ॥ सा० १० ॥ मत्स्य कच्छ पाच अवतार लइ सहु असुर विदार्या, दश अवतारे कृष्णजी, दश दैत्य सहार्या ॥ सा०११॥ माने मूढ मिथ्यामति, एहवा पण देवो, फरी फरी अवतार ए, देखो कर्मनी टेवो ॥ सा० १२ ॥ स्वामी सोइ जेहवा, तेहवो परिवारो, एम जाणीने परिहरो, निजदर्प विचारो ॥ सा १३ ॥

ढाळ २ जी

(ओधव माधवने कहेजो—ए देशी)

जगनायक जिनराजने, दाखविये सही देव, मूकाणा जे कर्मथी, सारे सुरपति सेव ॥ जग०१ ॥ क्रोध मान माया नहीं, नहीं लाभ अज्ञान रति अरति वेदे नहीं, छोड्या मदस्थान ॥ जग०२ ॥ निद्रा शोक चोरी नहीं, नहीं वयण अलीक, मत्सर वध भय प्राणीनो, न करे तहकीक ॥ जग०३ ॥ प्रेम क्रीडा न करे कदी, नहीं नारी प्रसग, हास्यादिक अढार ए, नहीं जेहने अग ॥ जग०४ ॥ पद्मासन पूरी करी, बठा श्री अरिहत, निश्चल लोयण जेहना, नासाग्रे ज रहत ॥ जग०५ ॥ जिन मुद्रा जिनराजनी, दीठे परम उल्लास, समकित थाये निर्मळ

तपे ज्ञान उजास ॥ जग०६ ॥ गति आगति भवि जीवतणी, जाणे लोकालाक, मन पर्याय सवि तणा, केवल ज्ञान आलोक ॥ जग०७ ॥ मूर्ति श्री जिनराजनी, समतानो भंडार, शीतल नयण सोहामणा, नहीं वाक लगार ॥ जग०८ ॥ हमत वदन हरखे हियु देखी श्री जिनराय, सुदर छबी प्रभु देहनी, शोभा वरणी न जाय ॥ जग० ९ ॥ अवरतणी एहवी छबी, किहां एम दिसत, देव तत्त्व ए जाणिये, जिन हर्ष महंत ॥ जग १० ॥

ढाळ ३ जी (जतणीनी देशी)

श्री जिनवर प्रवचन भाख्या, कुगुरु केरा दोषो दाख्या, पास[1] स्थाल्कि पाचेई, पाप श्रमण कह्या साचेई ॥ १ ॥ गृहीना मंदिरथी आणीं, आहार करे भात पाणी, सूव ऊघे निशदीश, प्रमादी विशवा वीश ॥ २ ॥ किरिया न करे किणी वार, पडिक्कमणा साज-सवार, न करे पच्चख्खाण सज्झाय, विकथा करता दिन जाय ॥ ३ ॥ घृत दूध दही अप्रमाण, खाय न करे पचख्खाण, ज्ञान दर्शन ने चारित्र, मूर्खी लीधा सुपवित्र ॥ ४ ॥ सुविहित मुनि सामाचारी, पाळे नहीं ते अणगारी, आहारना दोष बेंताळ, टाळे नहीं तीनही काल ॥ ५ ॥ धमधम धसमसतो चाले, वाचे जळ देह पखाले, अंर्चा रचना वदावे, वस्त्रादिक शोभा बनावे ॥ ६ ॥ परिग्रह वळी झाली राख, वळी वळी अधिकाने भाखे, माठी करणी जे कहिये, ते सघळी इणमे लहिये ॥ ७ ॥ एहवा जे कुगुरु आरंभी, मुनि साधु कहेवाय दंभी, कोई कर्म प्रशसा करिय, भवभवमहमा अवतरीय ॥ ९ ॥ लोहानी नावा तोले, भवसागरमा जे बोळे, जिन हर्ष भलो एहि वाळे, पण कुगुरुनी सगति टाळे ॥ १० ॥

---

[1] रचना – शरीरनी शोभा करे

ढाळ ४ थी

गुण गिरुआ गुरु आदरो, हियडे समति विचारी रे, गुरु गुप-
रीक्षा मोहिली, भूला पड नरनारी रे ॥ गुण० १ ॥ पाच इंद्रिय जे
वश करे, पाच महाव्रत पाळे रे, चार कषाय तजी जेणे पाचे
किरिया टाळे रे ॥ गुण० २ ॥ पाच समितिए समिता रहे, तीन
गुप्ति जे धारे रे, दोष बेतालीस टाळीने, पाणी भात आहारे रे
॥ गुण० ३ ॥ ममता छाडी देहनी, निगभी निर्मोही रे, नव विध
परिग्रह परिहर, चित्तमा चिंते न काई रे ॥ गुण० ॥ धर्म तणा उप
करण धरे, संयम पाळवा कारे रे, भूमि जाइ पगला भरे, लोक
विरोधथी टाळे रे ॥ गुण० ५ ॥ पडिलेहण नित्य त्रिविधे, करे प्रमाद
निवारी रे, पाळे शुद्ध क्रिया कर, इच्छा जोग निवारी रे ॥ गुण० ६ ॥
वस्त्रादिक शुद्ध एषणी, ले देखी सुविशद रे, काळ प्रमाणे तप करे,
दूषण करता डरे रे ॥ गुण० ७ ॥ कुशीलसंग जे कह्या, सन्निधि
निर्मही न राखे रे, दे उपदेश यथास्थिते, सत्य वचन मुख भाखे रे
॥ गुण० ८ ॥ तन मेला मन उजळा, तप करी खीणी देही रे, वचन
वे ठेली करी, विचरे जन निःस्नेही रे ॥ गुण० ९ ॥ एहवा गुरु
जाई करी, आदरिये शुभ भावे रे, बीजुं तत्त्व सुगुरुतणुं, जिनहर्ष
कहावे रे ॥ गुण० १० ॥

ढाळ ५ मी

(कर्म न छूटे रे प्राणिया–ए देशी)

भवसागर तरवा भणी, धम करे हो सारंभ, पत्थर नावे रे बसीने
तरवो समुद्र दुर्लभ ॥ भव० १ ॥ आपे गोकुळ गायना, आपे कन्या रे दान,
आपे क्षेत्र पुण्यारथे, ब्राह्मणने देई मान ॥ भव० २ ॥ लगावे गोळा
बळी, पृथ्वी दानशु प्रेम, गोळा फळशाने मोरिया, आपे हर तिम

हेम ॥ भव० ४ ॥ वळी वखाणे रे वावड़ी कूवा सुन्दर वाव, पुष्करणी करणी भली, सरोवर सरस तलाव ॥ भव०५ ॥ कन्द मूल मूके नहीं, अग्यारसने हो दिन, आरंभ ते दिन अति घणा, धर्म किहा जगदीश ॥ भव० ५ ॥ याग कर होमे तिहां, घोडा नरने रे छाग, होमे जलचर मींडका, धर्म किहा वीतराग ॥ भव०६ ॥ करे सवाय रे नोरता, जीव तणा आरंभ, हण महिष ने बोकडा, जेहथी नरक सुलभ ॥ भव० ७ ॥ सारे सराव ब्राह्मण करे, पूर्वजना रे श्राध, तेही पापे रे कागडा, देखो एह उपाध ॥ भव० ८ ॥ तीर्थ जाय गोदा वरी, गंगा गया प्रयाग, न्हाये अणगल नीरमें, धर्म तणो नहीं लाग ॥ भव० ९ ॥ इत्यादिक करणी करे, भव सुखने रे काज, कहे जिनहर्ष सके नहीं, एथी शिवपुर राज ॥ भव० १० ॥

ढाळ ६ ट्ठी

(रे जाया, तुजविण घडी रे छ मास — ए देशी)

धर्म खरो जिनवर तणोजी, शिवसुखनो दातार, श्री जिनराजे प्रकाशियोजी, जेहना चार प्रकार ॥ भविक जन, ज्ञाने विचारी रे जोय । दुर्गति पडता जीवनेजी, धारे ते धर्म होय ॥ भविक० १ ॥ पच महाव्रत साधुनाजी, दश विध धर्म विचार, हित करीने जिन वरे कह्याजी, श्रावकना व्रत बार ॥ भविक० ॥ २ ॥ पचूंबर चारे महा विगयजी, विष सहु माटी ने हीम, रात्रीभोजन त्रिविधियाजी बहु बीजानो नीम ॥ भविक० ३ ॥ घोलवडा चळी रींगणाजी, अनत काय बत्रीश, अणजाण्या फळ फूलडाजी, सधाणा निश दीश ॥ भविक० ४ ॥ चलित अन्न वासी थयुनी, तुच्छ सहु फल दक्ष, धर्मी नर खाये नहीजी, ए बावीस अभक्ष्य ॥ भविक० ५ ॥ न करै निर्दंभपणेजी घरना आरभ धीर, जीवतणी जयणा घणीजी, न

५

पीए अणगल नीर ॥ भविक० ६ ॥ घृत परे पाणी वापरेजी, धीढे करता पाप, सामायिक व्रत पोषधेजी, टाळे भवना ताप ॥ भविक० ७ ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनीजी, सेवा भक्ति सदैव, धर्म शास्त्र सुणता थकानी, समजे कोमल जीव ॥ भविक० ९ ॥ मास मासने आतरेजी तुश अग्रे ले आहार, कला न पहोंचे सोळमीजी, श्री जिन धर्म विचार ॥ भविक० ॥ १० ॥ जिन धर्म सुखिपुरी दिपेजी, चहु गति भ्रमण मिथ्यात, एम जिनहर्ष प्रकाशिए जी, श्रीजु तत्त्व विख्यात ॥ भविक० ११ ॥

ढाळ ७ मी

(मधुकर आज रहो रे मत चलो—ए देशी)

श्री जिन धर्म आराधियेजी, करी जिन समकित शुद्ध॥ भवियण॥ तप जप किरिया कीधलीजी, लगे पडे विशुद्ध भवियण श्री० १ ॥ कंचन कसी कसी लीजियेजी, नाणु लीजे परीख भ० ॥ देव गुरु धर्म जोईनेजी, आदरिये मुणी शीख ॥ भ० श्री २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनेजी, परिहरिये विष जम, भ० । सुगुरु सुदेव सुधर्मनेजी, ग्रहीए अमृत जेम ॥ भ० श्री० ३॥ मूल धर्म तो जिन कह्योजी, समकित सुरतरु कद, भ० । भवभव सुख संपत्ति थईजी, मम चित्तनु धरी नेह । भ० श्री० ४ ॥ सत्तरमे छत्रीस समेजी, नभ शुदी दशमी दीश, भ० । समकित सित्तरी ए रचीजी, पुर पाटण सुजगीश ॥ भ० श्री ५ ॥ भणजो गुणजो भावजो जी, लेवा अवि चल श्रेय, भ० । शांति हर्ष वाचक तणोजी, कहे जिनहर्ष विनेय ॥ भ० श्री ६ ॥

इति श्री समकित सितरी स्तवन संपूर्ण ॥

डज्झे तेण, अवगुण नीर न मामरे, ओलावीने जेण ॥ २ ॥ सदेशो सज्जन तणो, जीवें मास छमास, दूर देशांतरवासीया, सदेशो सुखवास ॥ ३ ॥

ढाळ बीजी

(सुण जिनवर शत्रुंजय धणीनी ए देशी)

धन्य ते दिन जिन ! जाणीए जी, जिहां तुमशुं संजोग, संपजशे सोभागीयाजी टळशे वेद विजोग, करो जिन ! सेवक जन सभाळ, तुम हो दीन दयाळ करो जिन ! सेवक जन सभाळ, तुमविण कवण कृपाळ करो० १ ॥ अणदीठे अलजो घणोनी, दीठे नयन ठरत, मुज मन केरी प्रीतडीनी, तु आगे जयवत ॥ करो० २ ॥ तिण कारण जिन ! दीनीयनी, निज दरीसण एवत, तुजविण मुज मन टळवळेनी नयणा नीर भरत ॥ करो० ३ ॥ नयणे तुज दरिसण हुवेजी, श्रवणे वयण सुहाय, मन मिलवाने टळवळेजी, कीजे कोडि उपाय ॥ करो० ४ ॥ जिम मन पसरे माहरुजी, तिम जो कर पसरत, तो हु हरखी दुरथीजी, तुम चरणे विल गत ॥ करो० ५ ॥ पुण्यवत ते पशीयानी, पग पग जेह पेखत, करी करी देता प्रदक्षिणा जी, पूरे मननी खत ॥ करो० ६ ॥ तुज दरि सण विण जीवबुजी, ते जीवन मरण समान, अहवा मरण थकी घणुजी, जाणु अधिक सुजाण ॥ करो० ७ ॥ पूज्यो प्रणम्यो मथुण्योनी । तु गायो गुणवत, जेण तु नयणे निरखीयोनी, तस जीवित कळवत ॥ करो० ८ ॥ ते दिन कवही आवशेनी, मुज मन ठारणहार, तुज मुख- चद निहाळताजी, सफल करीश अवतार ॥ करो० ९ ॥

— दुहा —

अवरीया बहु कुगरे, तद रकनेहिं घणेहिं, ते मज्जन किम विसरे, जे अगला गुणेहिं ॥ १ ॥ प्रीति भली पखेरुआ, उडी जेह मिलंत, माणस परवश पापढा रूर रह्या झूरन्त ॥ २ ॥ दीठा मीठा तिहां लगे, इहिहर अवर अनेक, जिहां लगे तुम गुण नवि सुण्या, हियडे धरीय विवेक ॥ ३ ॥

ढाळ त्रीजी

(मदन संवेगी सुंदर आतमाजी - ए देशी)

जिनजी सुणजो हो सुज्ञमन वातडीजी, रातडी रोतां जाय, दिवस गमीजे हो प्रभुजी मूरतांजी, तुम विरहा न खमाय ॥ जिनजी० १ ॥ पूर्व विदेहे हो धन्य ते जनाजी, नित सेवे तुम पाय, अम पुन्ने स्वामी हा जे विछोहडोजी, ते अम पाप पसाय ॥ जिनजी० ॥ परभव परिगल पातिक जे कर्याजी, ते प्रगट्या सवि आज, जणे तुम हु पासु नहिंजी, तुमशु छ मुन काम, तुम हा गरीब निवाज ॥ जिनजी० ३ ॥ प्रवचन वचन विराधन में कर्युजी, न धरी सद्गुरु शीख, के म रमता ऋषि संतापीयाजी, के मांगी ऋषि भीख ॥ जिनजी० ४ ॥ चारित्र लेई हो वेष विराधीयाजी, के में उडी निकुंज, के म बालक मायथी विछोहीयाजी, के में फाडी छीप ॥ जिनजी० ५ ॥ क में वनमें दव धमें दीयाजी, के म गाळ्या गाभ, के में कूडा कामण केळव्याजी, जिणे ब्रटब्रट त्रूटे आभ ॥ जिनजी० ६ ॥ के में गेहिग द्रह शोषावीयाजी, फोडी सरोवर पाळ, भंभण बाळक स्त्री गोवध कीयाजी, पाड्या माळा में जाळ ॥ जिनजी० ७ ॥ इणि परे परे

---

१ वळी अमारे आपनो वियोग ते पापनो प्रसाद छे

२ ऊंडा पाणीवाळा द्रह कुंड

पातक जे कर्योजी, तस फळ पाम्यो आज, जेणे तुम हमथी दूर देशातरेजी, थई वस्या जिनराज ॥ जिनजी० ८ ॥ वचन सुधारस सींची ठारीयेजी, विरह दावानळ दाह, अब थें हमकु दरिसण दीजीयेजी, हम तुम दरिसण चाह ॥ जिनजी० ९ ॥

दुहा

मनह मनोरथ जे करे, ते पूरण असमत्थ, स्वर्गे सुरद्रुम मंजरी, त्यांहि पसारे हत्थ ॥ १ ॥ फिट् हियडा फूटे नहि, हजी नहि तुज लाज, जीव जीवन विछोहडे, जी यातु कुण काज ? ॥ २ ॥ माण सधी माछा भळा, साचा नेह सुजाण, ज्यु जळथी हीय जूजूआ, त्यु ते छडे प्राण ॥ ३ ॥ सहस थदे सदेशडो, लेख लहे लखमूल, अंगो अंग मेळावडो, सुरतरु फूल अमूल ॥ ४ ॥

ढाळ चोथी

(सुत सिद्धारथ भूपनो रे — ए देशी)

अमृत समरे अमर ज्यु रे, जिम रति समरे काम, माधव मन जिम राधिकारे, जिम लखमण श्री रामरे, जिन गुण साभरे, सीमधर जिन राय रे सुगुण न विसरे ॥ १ ॥ सामज समरे सल्लकीरे सारगी सारग, तारापति जिम वारिकारे, जिम मृग राग तरगरे ॥ जिन० २ ॥ जिम गग गगाधरो रे, विधि साविश्री रे सग, जिम गगाजल हसले रे, ईसर गौरी सुरग रे ॥ जिन० ३ ॥ पृथ्वी पाणी पीतडी रे, जिम

१ ब्रह्मा अने सावित्रीनो सग

२ महादेव-पार्वती

चदन ने नाग, जिम रजनीकर रोहिणी रे, जिम दिन दिनकर राग रे ॥ जिन० ४॥ जिम मधुकर मालती रे, जिम मोरा मन मेह, जिम कोकिल कुलकामिनी रे, सरस रसाल सनह रे ॥ जिन०५ ॥ विरही समरे वालहा रे, भोलवती जिन कथ, फागण वाय विगोईया रे, जिम वनराजी वसत रे ॥ जिन०६॥ जिम यदुपति राजामती रे जिम गौतम श्रीवीर, नल दमयति नेहलो रे, सासोसास शरीर रे ॥ जिन०७॥ तिम मुज मन तुजमें रमे रे, प्रीतम प्रेम प्रमाण, स्वामी नाम तुमारडु रे, अहनिश समरीय प्राण रे ॥ जिन०८ ॥ एहवी मुज भोरा तणा रे, भक्ति भलेरी रे भाव करुणाकर कृपा करी रे मुज मनमंदिर आव रे ॥ जिन० ९॥ आवो अति उतावला रे, आतमना रे आधार, करजु भक्ति भलेरडी रे, लेशु भवजल पार रे ॥ जिन० १०॥ सेवक मत विसार जो रे, स्वामी सुख दातार, सेवक सेवा मन धरी रे, करजो सेवक सार रे ॥ जिन० ११ ॥

दुहा

मोर मेह, रवि कमल जिम, चद्रचकोर हसत, तिम दूरेथी अम मनह, तुम समरण विकसत ॥ १ ॥ अणसभार्यां सांभरे, समय समय सौ वार, ते सज्जन किम वीसरे, बहु गुण मणि भडार ॥ २॥ वसणी विगणी सोगुणी, सहस गुणी प्रीत, तुम साधे त्रिभुवनधणी, राखु रुडी रीत ॥ ३ ॥ आगर तठे आणु नहि, अवर अनेरा देव, साहिब जग में में सुण्यो, तुहि देवाधिदेव ॥ ४ ॥ भूतले भला भलेरडा, जे जाणीजे जाण, ते सघलाए तुम पछी, सीमंधर जग भाण ! ॥ ५ ॥

ढाळ पाचमी

(निद्दा रंग आतम द्रव्यनु–ए देशी)

निःसनेही तुमही भये, न्यायी नाथ निरीह, नेह करी कुण निरवहे, जावज्जीव निराहीह ॥ नि ०१ ॥ सज्जन भाजन भोजने, सुगति प्रीत जगाय, नेह करता सोहिलो पण निरवाहो न थाय ॥ नि ० २॥ जगमा विरला जाणीये, सयण अखड सनेह, सपदि आपदि सारिखा, छाडी न दीये छेह ॥ नि ०३ ॥ तुम मोटे हु नानडो, यु दिलमें मत आण, सूरज पकज प्रीतडी, उत्तम ने अहिनाण ॥ नि ०४ ॥ वड तरुवर छाया करे, रायरक समान, तिम तुम हम उपर धरो, परि गल प्रेम समान, ज्यु वाधे हम वान ॥ नि ०५ ॥

दुहा

निःसनेही सुखीया रहे, वेलुकण ज्यु होय,ससनेहा तिल पीलीये, दहीं मथे सव कोय ॥ १ ॥ नेह न कीजे जिहा लगी, तिहा जीवने सुख होय, नेह विरह जव ऊपजे, तब दु ख साले सोय ॥ २ ॥ निर्गुण नेह न कीजीये, कीजे सद्गुण सग, सीमधर जिन सारीखो, राखु अधिको रग ॥ ३ ॥

ढाळ छठी

(मेरे साहिब तुमही हो–ए देशी)

सीमधर जिन विनति, अवधारो मोरी, किंकर कर जोडी करु हुं सेवा तोरी ॥ सी०१ ॥ अम मन प्रेम अखड ए, तमशु जिनराज अवर मलेरा निज घरे, नहि काइ काज ॥ सी०२ ॥ मेह महीधर

मूळथी, कपे काई काळे, अधर महगण पूरीयो, पसे पाताळे ॥सी०३॥ सफल कुलाचल हल्हले, महीमंडल डोले, श्री हरिश्चंद्र नरींद क्युं, जगे जुठु बोले ॥ सी०४ ॥ अमृत विषधारा धमे, सागर मू रेले, सूरज पश्चिम उगमे, गगा दूर मेले ॥ सी०५ ॥ तोंदे हु छोड़ नहि, तुमसु घण नेह, मुज मन एक तुमही हल्यु, गिरुआ गुणगेह ॥ सी०६ ॥ अम सरीखा सेवक घणा, ताहरे भगवंत, पण अम साहिब एक तु तुंहीज अरिहत ॥ सी०७ ॥

दुहा

किं बहु कागलमें लिखु, लख लालच बहु लाभ, मिल्या पछी मालुम हशे, थिर थापण थिर थोभ ॥ १ ॥ किं बहु मीठ बोलडे, जा मन नहि सनेह, जो मन नेह अछेह तो, एक जीव दो देह ॥ २ ॥ किं बहु कागलमें लिखु, घणु घणेरु गुज्झ, सेवा निज पद कमलनी, देजो साहिब मुज्झ ॥ ३ ॥

ढाळ सातमी

(आ छ आ ले लिगलानो कुवर – ए दशी)

जगजीवन जिनराजीया ए, सीमधर सुखकंद, हरखे हियडुं रहमे ए, दीठे दीठ तुम मुखचद, सीमधर साहिब समरीए ए, समय समय सो वार ॥ सी० १ ॥ करसु पोंखी वधामणा ए, जपसु जय जयकार, मगल तूर वजावसु ए, सफल करु अवतार ॥ सी० २ ॥ वारणा करु लूछणा ए, भरी मुक्ताफळ थाल, जब सो नयणे निरखसु ए, साहिब देव दयाल ॥ सी० ३ ॥ एह जो मुज मन चिंतव्युं ए, सफल हाने [illegible]

न इण ससार ॥ ४ ॥ अम प्रणाम अवधारजो ए, केवलकमला कत, संघ सकलनी वदना ए, जिहा विचरे तु जयवत ॥ सी० ५ ॥ इम जिनवर गुण गावता ए, जिव्हा पावन कीध, मनह मनोरथ सवि फल्या ए, नरभव लाहो लीध ॥ ६ ॥ शिरनामे जिनवर तणे ए, सात सुख श्रीकार, इम सीमधर समरणे ए, घर घर जयजय कार ॥ सी० ७ ॥ सवत सोळसे ब्यासीए ए, सुरगुरुवार प्रसग, दीवाळी दिवसे रच्यो ए, कागळ मनने रंग ॥ सी० ८ ॥

तवगच्छ गयण दिणयर सिरि विजयसेण सूरिण ॥ सीसेण संथुणीओ, सहरिस कवि कमल विजयेण ॥ १ ॥ चउतीसाइसय निहि अदु महा पाडिहेर पडिपुन्नो ॥ सुरइअ समवसरणो, तिहु अण जणलोयणानदो ॥ २ ॥ पुक्खलवइ विजये सामी, पुडरिगिणी ए नयरी ए ॥ सीमधर जिणचदो, विहरतो देहि मे भद्द ॥ ३ ॥

आत्मनिंदा गर्भित

श्री सीमधर जिन विनति (स्तवन)

ढाळ पहेली

(जिन जन्माजी, जीण वेळा जननी घेरे – ए देशी)

सुखदायक रे, सुदर गुणमणि आगरा, धुर प्रणमी रे, श्री जिनवर दिग्धसागरा, धर पूरबरे, क्षेत्र विदेह सोहामणुं, तिहा विहरतरे, श्री सीमंधर गुण भणु ॥ १ ॥ गुण भणु जिनवर श्री सीमधर, सोमगुणे शीतळकरा, अति सरल सुदर तपे तेजे, जेम शारद दिनकरा । जसु सरल धनुसय पच काया, कनक छाया जीपती, सवि अग सुदर रवि पुरंदर, देह सोवन दीपती ॥ २ ॥ जिन

१ सोवन वर्णवाळी ५०० धनुष्यना काया

आनन रे, पुनम हिमकर सोहए नित निरगत रे, सुरनरना मन मोहए, जिन सामनी रे, मुन हैडु अति उल्लसे, मुझ मानस रे, अहनिश तुम-पासे वसे ॥ ३ ॥ तुम पास अहनिश वस मानस, दूरथी गुण साभटु, वहु पथ दुर्गम विपम डुगर, पग विन किण परे मळु निननाम निशदिन मुपरे समरी, मीस तुम दिम [illegible] पण मिलन कारण जीव तल्पे, पुण्यविण किम [illegible] ॥ ४ ॥ गुण सायर रे, श्री सीमधर जाणिये, गरिमा गुणे [illegible] आणिये, जिम जलधर रे, सवि सरवर भरे [illegible] तिम जिनवर रे, गिरुआ सहेजे गुणकरे ॥ ५ ॥ गुणकरे जिनवर मेटीने गिरुआ अमित गुण किणी परे भणु, निमी निरमर तुझ सुपन मांदि, ध्यान एक जिनवर तणुं, निनराज आज दयाळ पामी, अगे आनन्द सीमधर, स्वामि हु विनति करु॥ ६ ॥

पाश धरी मृग झाल्या ॥ ५ ॥ हणीय जलचर झुले माळा, तिहा कीधी शुभमति पाळा, रसना रसे जीव विदारी, मदिरा मधु मांस आहारी ॥ ६ ॥ वळी कीधा धर्म कसाई, गूक्या सवि जीव कसाई। बलयंत घणा पशु झाली, गले दिधा छेदन पाली ॥ ७ ॥ चमरी गजराज हणाव्या, गिरिकन्दर कद खणाव्या, पर्वत वनदव पर जाल्या, पोपट पशु पंजर घाल्या ॥ ८ ॥ अतेउर माहि निवासी, रसवाठ कर्या नर त्रासी, पापी तनु जीव विणासी, दीधी घन घरणे फासी ॥ ९ ॥ रम रंगे रमी परदारा, मूकी पर शिर असि धारा, कीधी पर थापण चारी, जपीया पर मन्त्र अघोरी ॥ १० ॥ घण तेल भणी तिल पील्या, बींछी विषधर विष कील्या, जूठी परमारथ भाखी, रिपुनी घणी घात कराबी ॥ ११ ॥ मिलिया मत्री कुगुरु सन्यासी, मान्य कपटी मठवासी, तपसी ऋषिराय विगोया, दाखी गुण अवगुण जोया ॥ १२ ॥ परदोष अजाणता कीधा, अकलंक कलंकी कीधा, वचन छळ कपट विचारी, इम कीधो आतम भारी ॥ १३ ॥ आणी मन कुमति सगाइ, कीधी जन साथ ठगाई, कर्यां भवजल निधि देव! नवि कीधी मैं जिन सेव ॥ १४ ॥ इम कुकर्म कोडी वखाणु, कहता हवे पार न जाणु, हवे साहिब जिनवर मलियो, भवभूरि महाभय टळीयो ॥ १५ ॥ अपराधी तें घणा तार्या, भवसायर पार उतार्या, प्रणमु हवे हु जिन चरणे राखो मुजने तुम शरणे । १६ ॥

ढाळ त्रीजी

(जिनजी मुज पापीने तार ए देशी)

इम जिनवर ! हु विनवु जी, सुण सीमंधर राय, इणिपेरे कुकर्म में कर्यां जी, हवे सेवु तुम पाय रे, जिनजी हेजो शिवसुख सार ॥ १ ॥

---

१ कसाई जेवा २ नपुसक ३ सर्प ४ निवना दांत आदि साधना

तु मुज परम आधार रे – जि० उतारो भवपार रे – जि० देजो० ॥ २ ॥ मषि सायरजल मषी करीजी, सुरतरु लेखिनी सार; भूमि तले सुरगुरु लखेजी, न लहे तुम गुण पार रे – जि० देजो० ॥ ३ ॥ जिम सायरनन्द चकोरनी जिम चन्द्री चातक मेह, मधुकर जिम मालती रमेनी, तिम तुमसु मुज नेह रे – जि० देजो० ॥ ४ ॥ इम गुण निधि जगनन तिलोजी, करुणा रस भंडार, जगदाधार मया धरीनी, करजो सेवक सार रे – जि० देजो० ॥ ५ ॥

कलश

इम सयल गुणधर श्री सीमंधर दुरित तिमिर दिनकर गणो, जसु नामे सपद सुजस सोहग, भविय जन मन रंजणो, जिनराय केवल नाण दिणयर विपद दुःख दोहग हरो, मुनि उदयसागर विनवे इम, सयल सुख मंगल करो ॥ १ ॥

श्री पुण्य प्रकाशनु स्तवन

दुहा

सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीसे जिनराय, सद्गुरु स्वामिनी सरस्वती, प्रेमे प्रणमु पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवन पति त्रिशला तणो, नंदन गुणगंभीर, शासननायक जगजयो, वर्धमान वडवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करी प्रणाम, भविक जीवना हित भणी, पूछे गौतम स्वाम ॥ ३ ॥ मुक्ति मार्ग आराधीए, कहो किण परे अरिहंत, सुधा सरस तव वचन रस, भाखे श्री भगवंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइए, व्रत धरीए गुरु साख, जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥ ५ ॥ विधिशु वली वोसिराविए, पाप-

छेद्या छुद्या आथीयाए ॥ ५ ॥ अळशी ने एरंड, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीयाए, घाली कोलुमाय, पीली शेलडी, कंदमूळ फळ वेचीयाए ॥ ६ ॥ एम एकेंद्रिय जीव, हण्या हणावीया, हणता जे अनुमोदियाए, आ भव परभव जेह, वळीरे भवोभवे, ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए ॥ ७ ॥ कृमी, सरमीया, कीडा, गाडर, गडोला, इयळ, पोरा, अळसीयाए, वाळा, जळो, चूडेल, विचलित रसतणा, वळी अथाणा प्रमुखनाए ॥ ८ ॥ एम बेइंद्रिय जीव, जे मे दुहव्या, ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए; उदेही, जू, लीख, मांकड, मंकोडा, चाचड कीडा कुंथूआए ॥ ९ ॥ गद्धहिया धीमेल, कान खजुरडा, गींगोडा धनेरीयाए, एम तेइंद्रिय जीव, जे में दूहव्या, ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए ॥ १० ॥ माखी, मच्छर, डांस, मसा पतंगीया, कंसारी कोल्यावडाए, ढींकण वींछु, तीड, भमरा भमरीओ, कोता, बग खडमाकडीए ॥ ११ ॥ एम चौरिंद्रिय जीव, जे म दूहव्या, ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए, जळमा नाखी जाळ, जळचर दूहव्या, वनमा मृग संतापीयाए, ॥ १२ ॥ पीडया पंखी जीव, पाडी पासमां, पोपट घाल्या पांजरेए, एम पंचेंद्रिय जीव, जे में दूहव्या, ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए ॥ १३ ॥

ढाळ त्रीजी

(सुण जिनवर शत्रुजा धणीजी-ए देशी)

क्रोध लोभ भय हास्यथीजी बोल्या वचन असत्य, कुड करी धन पारकाजी, लीधा जेह अदत्त रे जिनजी, मिच्छा दुक्कड आज, तुम साखे महाराज रे, जिनजी, देइ सारु काजरे ॥ जिनजी ॥१॥ देव मनुष्य तिर्यंचनाजी मैथुन सेव्या जेह, विषयारस लंपट

१ स्पर्शरसगंधादि बदलायेल होय एवी चीजो

तणेजी, पशु विडंब्यो देह रे ॥ जिनजी० २ ॥ परिग्रहनी ममता करीजी, भवभव मेली आय, जे जिहांनी तिहां रहीजी, कोई न आवी साथ रे ॥ जिनजी० ३ ॥ रयणीभोजन जे कर्यांजी, कीधां भक्ष्य अभक्ष्य, रसना रसनी लालचेजी, पाप कर्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जिनजी० ४ ॥ व्रत लेई विसारियांजी, वळी भांग्यां पच्चक्खाण, कपट हेतु क्रिया करीजी, कीधां आप वखाण रे ॥ जिनजी० ५ ॥ त्रण ढाळ आठे दुहेजी, आलोया अतिचार, शिवगति आराधन तणोजी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जिनजी० ६ ॥

ढाळ चोथी

(साहेलडीनी देशी)

पंच महाव्रत आदरो, साहेलडी रे, अथवा ल्यो व्रत बार तो, यथाशक्ति व्रत आदरी, सा० पाळो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां संभारीए, सा० हैडे धरीय विचार तो, शिवगति आराधन तणो, सा० ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सर्वे खमावीए, सा० योनि चोराशी लाख तो, मन शुद्धे करी खामणां, सा० कोईशुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्वे मित्र करी चिंतवो, सा० कोई न जाणो शत्रु तो, राग द्वेष एम परिहरी, सा० कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहम्मी संघ खमावीए, सा० जे उपनी अप्रीत तो, सज्जन कुटुंब करी खामणा सा०, ए जिन शासननी रीत तो ॥ ५ ॥ खमीए ने खमावीए सा० एह ज धर्मनो सार तो, शिवगति आराधन तणो, सा० ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० धन मूर्च्छा मैथुन तो, क्रोध मान माया तृष्णा, सा० प्रेम द्वेष पैशुन्य

तो ॥ ७॥ निंदा कलह न कीजीए सा० कूडा न दीजे आळ तो, रति अरति मिथ्या तजो सा० मायामोस जजाळ तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिराविए सा० पापस्थानक अढार तो, शिवगति आराधन तणो सा० ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥

ढाळ पांचमी

(श्रावण शुद दिन पचमीए– ए देशी)

जन्म जरा मरणे करीए, ए ससार असार तो, कर्यां कर्म सहु अनुभवे ए, कोई न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनु ए, शरण सिद्ध भगवत तो, शरण धर्म श्री जैननु ए, साधु शरण गुण वत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए, चार शरण चित्त धार तो, शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ भव परभव जे कर्यां ए, पाप कर्म केई लाख तो, आतम साखे निंदीए ए, पडिक्कमिए गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्तावियां ए, जे भाख्यां उत्सूत्र तो, कुमति कदाग्रहने वशे ए, जे उत्थाप्यां सूत्र तो ॥ ५ ॥ घड्यां घडाव्यां जे घणा ए, घरटी हळ हथीयार तो भव भव मेली मूकीयां ए, करता जीव सहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीयां ए, जन्मजन्म परिवार तो, जन्मांतर पहोंत्या पछी ए, कोईए न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ भव परभव जे कर्यां ए, एम अधिकरण अनेक तो, त्रिविधे त्रिविधे वोसिराविए ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुष्कृत निंदा एम करीए, पाप कर्यां परिहार तो, शिवगति आराधन तणो ए, ए छट्ठो अधिकार तो ॥ ९ ॥

धन धन ते दिन माहरो, जीहा कीधो धर्म, दान शीयळ तप भावना, टाळ्या दुष्कर्म ॥ धन० १ ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थनी, जे जे कीधी जात्र जुगते जिनवर पूजीया, वळी पोष्या पात्र ॥ धन० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीया, जिणहर जिन चैत्य, सघ चतुर्विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ धन०३ ॥ पडिक्कमणा सुपरे कर्यां, अनुकंपा दान, साधु सूरि उवज्झायने, दीधा बहु मान ॥ धन० ४ ॥ धर्म कारज अनुमोदिये, एम वारोवार, शिवगति आराधन तणो, ए सातमो प्रकार. ॥ धन० ५ ॥ भाव भलो मन आणीए, चित्त आणी ठाम, समता भावे भाविए, ए आतमराम ॥ धन० ६॥ सुख दु ख कारण जीवने, कोई अवर न होय, कर्म आप जे आचर्यां, भोगवीये सोय, ॥ धन० ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनु काम, छार उपर ते लींपणु, झाखर चित्राम ॥ धन० ८ ॥ भाव भली परे भावीए, ए धर्मनो सार शिवगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार ॥ धन० ९ ॥

ढाळ सातमी

(प्रह उठी बहु ऋषभ देव गुणवत – ए देशी)

हवे अवसर जाणी, करी सलेखन सार, अणसण आदरीए, पच्चखी चारे आहार, ल्लुता सवि मूकी, छाडी ममता अग ए आतम खेले, समता ज्ञान तरग ॥ १ ॥ गति चारे कीधा, आहार अनत नि शक, पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचीयो रक दुलहो ए वळी

१ पोते

[६४

घळी, अणसणनो परिणाम एहथी पामीन, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन्य धन्ना शालिभद्र खंधो मेघकुमार, अणसण आराधी, पाम्या भवनो पार शिवमन्दिर जाशे, करी एक अवतार, आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र नव कार, मनथी नवी मूको, शिवसुख फळ सहकार, ए जपतां जाये, दुर्गति दोष विकार, सुपरे ए समरो, चौद पूर्वना सार ॥ ४ ॥ जन्मांतर जातां जो पामे नवकार, तो पातक गाळी, पामे सुर अवतार, ए नवपद सरीखो, मंत्र न को मसार, इह भव ने पर भवे सुख संपति दातार ॥ ५ ॥ जुओ भीळ भीलडी राजा राणी थाय, नवपद महिमाथी, राजसिंह महाराय, राणी रत्नवती बेहु, पाम्या छे सुरभोग, एक भव पछी लेशे, सिद्धिवधु संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतिने ए वळी, मंत्र फळ्यो तत्काळ, फणीधर फीटीने, प्रगट थई फुलमाळ शिवकुमरे जोगी, सोवन पुरिसो कीध, एम एण मंत्र काज घणाना सिद्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकार, वीर जिणेसर भाख्या आराधन केरो, विधि जेणे चित्तमांही राख्यो तेणे पाप पखाळी, भव भय दूरे नाख्यो, जिन विनय करतां, सुमति अमृत रस चाख्यो ॥ ८ ॥

ढाळ आठमी

(नमो भविभावशुं–ए देशी)

सिद्धारथ राजा कुळतिलो ए, त्रिशलामात मल्हार तो, अवनितळे तमे अवतर्या ए, करवा अम उपगार जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में अपराध कर्या घणाए, कहेतां न लहु पार तो, तुम चरणे आव्या

---

१ स्वर्ग २ नित्य विधिपूर्वक ३ सिद्धिरूपी वहुने मळवा ४ साप मटी ५ सोनानो पुरुष

भणीए, जो तारे तो तार ॥ जयो० २ ॥ आज वधीने आवीया ए, तुम चरणे महाराज नो आव्यान उवेरशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ जयो० ३ ॥ कर्म अलुजण आकरां ए, जन्म मरण जंजाळ सो, हुं छुं एहथी उभग्यो ए, छोडव देव दयाल ॥ जयो० ४ ॥ आज मनोरथ मुज फळ्या ए, नाठा दुःख दंदोल सा, तूठ्या जिन चोवी समो ए, प्रगट्या पुण्य कल्लोल ॥ जयो० ५ ॥ भव भव विनय तुमारडो ए, भाव भक्ति तुम पाय तो देव दया करी दीजीए ए, बोधि बीज सुपसाय ॥ जयो० ६ ॥

कळश

इह तरण तारण सुगतिकारण दुःख निवारण जग जयो, श्री वीर जिनवर, चरण शुणतां, अधिक मन उलट भयो ॥ १ ॥ श्री विजय-देव सूरींद पटधर, तीर्थ जंगम एणी जगे, तपगच्छपति श्री विजय-प्रभसूरि, सूरितेजे झगमगे ॥ २ ॥ श्री हीरविजयसूरि शिष्य वाचक, कीर्तिविजय सुरगुरु समो, तस शिष्य वाचक विनय-विजय थुण्यो जिन चोवीसमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत् ओगण त्रीशे (१७२९) रही रांदेर चोमास ए, विजयदशमी विजयकारण, कियो गुण अभ्यास ए ॥ ४ ॥ नरभव आराधन सिद्धि साधन, सुकृत लील विलास ए, निर्जरा हेते स्तवन रचीयुं, नाम पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥

श्रीमहावीर जिन स्तवन

जंबूद्वीपे अपर विदेहे, ग्रामाधिप नयसार, श्रावरधम आराधी सोहमे, एक पल्य सुरसार रे हमचडी ॥ १ ॥ नाम मरीचि भरत

१ जन्मम्रणनी जंजाळथा कंटाळ्यो २ समूह ३ सूर्य समान तेजथी ४ देवताना गुरु ५ कर्मने जीतवा

तणो सुत, मुनि थयो त्रिदंडी, लाख चोराशी पूर्व आयुरे, ब्रह्मलोके सुर थाईरे, इम० ॥ २ ॥ एंशी लाख पूर्वनु जीवित, कौशिक द्विज सुत थयो देवी, सौधर्मे सुर पुष्यमित्र द्विज, बहोत्तर पूर्व लाख जीवीरे, इम० ॥३॥ सौधर्मे सुर अग्निद्योत द्विज, चोसठ लाख पूर्व आयु ईशाने अग्निभूति द्विज लिंगी, छप्पन पूर्व लाख आयुरे. इम० ॥४॥ सनत्कुमार भारद्वाजे, चुमालीस लाख पूर्व आयु माहेंद्रे सुर तिहां थी बहु भव, अंते त्रिदंडी थायरे, इम० ॥५॥ राजगृहे विश्वभूति नृपति थया, वर्ष कोटिनु आयु, वर्ष सहस्र चारित्र नियाणु करी महाशुक्रे जाय रे, इम० ॥६॥ त्रिपृष्ट नाम हरि पोतनपुरमां, चुमालीश वर्ष लाख आय, सातमी नरके सिंह चतु नरके भवभ्रमण बहु थायरे, इम० ॥ ७ ॥ महाविदेह प्रियमित्र चक्री, कोटि वर्ष तप करतो, शुक्रे सुरवर तिहांथी भरते, छत्रापुरीमां अवतरतो, इम० ॥८॥ नंदने नामे लाख वरसनो, पाळी संयमनो भार, लाख अग्यार ऐंसी सहस ने छ सय पणयाल ससारे, इम० ॥ ९ ॥ मासखमणथी स्थानक साधी, बांधी जिनपद कर्म, प्राणत सुर तिहांथी कुंडनपुर, गर्भ बहु संक्रमे रे इम० ॥ १० ॥ क्षत्रियकुंड पुरी सिद्धारथ, नृप त्रिशलादे माय, हरिलंछन कंचन वनि काय, इम सत्तावीस भव थायरे ॥ इम० ॥ ११ ॥ वर्धमान महावीर श्रमण ए, नाम वणे सुखदाई, ज्ञानविमळथी जस शासन महिमा, अविचल उदय सवाई रे, इम० ॥ १२ ॥

श्री प्रभु महावीर स्वामीनु स्तवन

चौमासी पारणु आवे, करी विनती निज घर जावे, प्रिया पुत्रने वात जणावे, पटकुल जरी पथरावे रे महावीर प्रभु घरे

---

१ नंदन भवमां ११८०६४५ मासखमणोथी तीर्थंकर गोत्र बांध्यु

छावे, जीरण शेठ भावना भावे रे ॥ महावीर० १ ॥ उभी शेरी ए जल छटकावे, जाइ केतकी फूल बिछावे, निज घर तोरण बधावे, मेवा मिठाई थाळ भरावे रे ॥ महावीर० २ ॥ अरिहाने दानज दीजे, देता जे देखीने रीझे, षट्मासी रोग हरीजे, सीझे दायक भव सारे महावीर० ॥ ३ ॥ जिनवरनी सन्मुख जाऊं, मुज मंदिरे ए पधराउं, पारणु भली भांति कराउं जुगते जिनपूजा रचाउं रे ॥ महावीर ० ४ ॥ पछी प्रभुने वळावा जइशुं, घर जोडीने सन्मुख रहीशुं, नमी वंदीने पावन थईशुं, विरति अतिरंगे धरीशुं रे ॥ महावीर० ५ ॥ दया दान क्षमा शील धरशुं, उपदेश सज्जनने करशुं सत्य ज्ञानदशा अनुसरशुं, अनुकंपा लक्षण वरशुं रे ॥ महावीर० ६ ॥ एम जीरण शेठ वदन्ता, परिणामनी धारे चढता, श्रावकनी सीमे ठरता, देव दुंदुभि नाद सुणतारे ॥ महावीर० ७ ॥ करी आयु पूरण शुभ भावे, सुरलोके अच्युत जावे, शाता वेदनी सुख पावे, शुभवीरवचन रस गावेरे ॥ महावीर० ८ ॥

पद्मावती — आराधना

हवे राणी पद्मावती, जीवराशी खमावे, जाणपणु जुगते भलुं, इण वेळा आवे ॥ १ ॥ ते मुज मिच्छामि दुक्कड, अरिहंतनी साख, जे मे जीव विराधीया, चोराशी लाख ॥ ते मुज० २ ॥ सात लाख पृथ्वी तणा, साते अपकाय, सात लाख तेउकायना, साते वली वाय ॥ ते मुज०३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति, चउदेह साधार, बिति चउरिंद्री जीवना बे बे लाख विचार ॥ ते मुज०४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी, चौदह लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी ॥ते मुज०५॥ इह भव पर भवे सेविया, जे पाप अढार, त्रिविध

१ अरिहंतने २ हर्ष पामे ३ हजार श्रीमे भवे मुक्ति जाय

त्रिविध करी परिहर दुर्गतिना दातार ॥ ते मुज० ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद, दोष अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते मुज० ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष, मान माया लोभ में कीया, वळी राग ने द्वेष ॥ ते मुज० ८ ॥ कलह करी जीव दुहव्या, दीधा कूडा कलंक, निंदा कीधी पारकी, रति अरति नि शंक ॥ ते मुज० ९ ॥ चाडी कीधी चोतरे, कीधो थापण मोसो कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ ते मुज० १० ॥ खाटकीने भवे में कीधा, जीव नाना विध घात चडीमारे भवे चरकला, मार्यां दिन रात ॥ ते मुज० ११ ॥ काजी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर, जीव अनेक झब्बे कीया, कीधा पाप अघोर ॥ ते मुज० १२ ॥ माछीने भवे माछला, झाल्या जळवास, धीवर भील कोळी भवे, मृग पाड्या पास ॥ ते मुज० १३ ॥ कोटवाळने भवे में कीया, आकरा कर दंड, बंदीवान मराविया, कोरडा छडी दंड ॥ ते मुज० १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधा नारकी दुःख, छेदन भेदन वेदना, ताडन अति तिक्ख ॥ ते मुज० १५ ॥ कुंभारने भवे में किया, नीभाड पचाव्या तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते मुज० १६ ॥ हाळी भवे हळ खेडिया, फाड्या पृथ्वी पेट, सूड निदान घणा किया, दीधा बळद चपेट ॥ ते मुज० १७ ॥ माळीने भवे रोपीया, नानाविध वृक्ष, मूळ पत्र फळ फूलना, लाग्या पाप ते लक्ष ॥ ते मुज० १८ ॥ अधोवायाने भवे, भर्या अधिका भार, पोठी पूठे कीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥ ते मुज० १९ ॥ छीपाने भवे छेतर्यो, कीधा रंगण पास, अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते मुज० २० ॥ शूरपणे रण झूझता, मार्या माणस वृंद मदिरा मांस माखण भख्या, खाधा मूळ ने कंद ॥ ते मुज० २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलेच्या आरंभ कीधा अति घणा, पोते

१ पारकी २ कसाब ३ गाडां माडे फेरवनार ४ रंगनार



पापज मन्या । ते मुज० २२॥ कर्म अंगार कीया वळी, धर्मे दव दीधा, सम खाया वीतरागना, कूडा कोपन कीधा ॥ ते मुज० २३॥ बिल्ली भवे उंदर लीया, गींरोली हत्यारी, मूढ गमार तणे भवे, में जू लीख मारी ॥ ते मुज० २४॥ भाडभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय जीव, ज्वारी चणा गहु सेकीया, पाडता रीव ॥ ते मुज० २५॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक, रांधण इंधण अग्निना, कीधा पाप उद्रेक ॥ ते मुज० २६॥ विकथा च्यार कीधी वळी, सेव्या पांच प्रमाद, इष्ट वियोग पाड्या घणा, कीया रुदन विखवाद ॥ ते मुज० २७॥ साधु अने श्रावक तणा, व्रत लेइने भाग्या, मूळ अने उत्तर तणा, मुज दूषण लाग्या ॥ ते मुज० २८॥ साप वींछी सिंह चीतरा शूकरा ने समळी, हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबळी ॥ ते मुज० २९॥ सूवावडा दूषण घणा, वळी गर्भ गळाव्या, जीवाणी ढोळ्या घणा, शील व्रत भंजाव्या ॥ ते मुज० ३०॥ भव अनंत भमता थका कीधा देह संबंध, त्रिविध त्रिविध करी वोसिरु, तीणसुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ३१॥ भव अनंत भमता थका, कीधा परिग्रह संबंध, त्रिविध त्रिविध करी वोसिरु, तीणसुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ३२॥ भव अनंत भमता थका, कीधा कुटुंब संबंध त्रिविध त्रिविध करी वोसिरु, तीणसुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ३३॥ इण परे इहभव, परभव कीधा पाप अखंत्र, त्रिविध त्रिविध करी वोसिरु करु जन्म पवित्र ॥ ते मुज० ३४॥ एणि विधे ए आराधना, भविक करशे जेह, समयसुंदर कहे पापथा, वळी छूटशे तेह ॥ ते मुज० ३५॥ राग वयराडी जे सुणे, एह त्रीजी ढाळ, समयसुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाळ ॥ ते मुज० ॥ ३६॥

---

१ काळवा वनावव २ वनमां आग लगाडी ३ सम ४ मूळ गुण उत्तर गुण ५ मूर्छा ६ अनंतरा

श्री अमृतवेलीनी सज्झाय

(स्वामी सीमंधर विनति – ए देशी)

चेतन ! ज्ञान अजुवाळीए, टाळीए मोह संताप रे, चित्त डमडोळतुं वाळीए, पाळीए सहज गुण आपरे, ॥ चे० १ ॥ उपशम अमृतरस पीजीए, कीजीए साधु गुणगान रे, अधम वयणे नवि खीजीए, दीजीए सज्जनने मान रे, ॥ चे० २ ॥ क्रोध अनुबंध नवि राखीए, भाखीए वयण मुख साच रे, समकित – रत्न – रुचि जोडीए, छोडीए कुमति मति काच रे ॥ चे० ३ ॥ शुद्ध परिणामने कारणे, चारना शरण धरे चित्तरे, प्रथम तिहां शरण अरिहंतनुं, जेह जगदीश जगमित्त रे ॥ चे० ४ ॥ जे समोसरणमां राजता, भांजता भविक संदेह रे, धर्मना वचन वरसे सदा, पुष्करावर्त जिम मेह रे, ॥ चे० ५ ॥ शरण बीजुं भजे सिद्धनुं, जे करे कर्म चकचूर रे, भोगवे राज्य शिवनगरनुं, ज्ञान – आनंद भरपूर रे ॥ चे० ६ ॥ साधुनुं शरण त्रीजुं धरे, जेह साधे शिवपंथ रे, मूल उत्तर गुणे जे वर्या, भव तर्या भाव निर्ग्रंथ रे ॥ चे० ७ ॥ शरण चोथुं धरे धर्मनुं, जेहमां वर दया भाव रे, जेह सुखहेतु जिनवर कह्यो, पाप जल तारवा नाव रे, ॥ चे० ८ ॥ चारना शरण ए पडिवजे, वळी भजे भावना शुद्ध रे, दुरित सवि आपणा निंदिये, जेम होय संवर वृद्धि रे ॥ चे० ९ ॥ इहभव परभव आचर्यां, पाप अधिकरण मिथ्यातरे, जे जिन आशातनादिक घणा, निंदिये तेह गुणघात रे ॥ चे० १० ॥ गुरुतणा वचन ते अवगणी, गूंथीया आपमत-जाळ रे, बहुपरे लोकने भोळव्या, निंदिये तेह जंजाळ रे ॥ चे० ११ ॥

१ क्रोध आवे त्यारे क्षमाने आत्मधर्म मानी धारण करवा २ शोभता ३ मूळ गुण–पांच महाव्रत, उत्तर गुण–गोचरी आदिना दोषोनो त्याग ४ दयामूलक श्रेष्ठ धर्म ५ स्वीकारे ६ पाप ७ पापनुं रोकाण ८ पापने लाग्युं ते धर्म कह्यो

जेह हिंसा करी आकरी, जेह बोल्या मृषावाद रे, जेह परधन हरी हरखिया, कीधलो काम उन्माद रे ॥ चे० १२ ॥ जेह धन धान्य मूर्छा धरी, सेविया चार कषाय रे, राग ने द्वेषने वश हुवा, जेह कियो कलह उपाय रे ॥ चे० १३ ॥ जूठ जे आळ परने दिया, जेह कर्यां पिशुनता पाप रे रति अरति निंद मायामृषा, वळिय मिथ्यात्व सताप रे ॥ चे० १४ ॥ पाप जेह अहवा सेविया, तेह निंदिये तिहु काळ रे, सुकृत अनुमोदना कीजिए, जिम होय कर्म विसराळ रे ॥ चे० १५ ॥ विश्व उपगार जे जिन करे, सार जिन नाम सयोग र, ते गुण तास अनुमोदीये, पुण्यअनुबंध शुभ योग रे ॥ चे० १६ ॥ सिद्धनी सिद्धता कर्मना, क्षय थकी उपनी जेह रे जेह आचार आचार्यनो, चरणवन सींचवा मेह रे ॥ चे० १७ ॥ जेह उवज्झायनो गुण भलो, सूत्र सज्झाय परिणाम रे साधुनी जे वळी साधुता, मूळ उत्तर गुण धाम रे ॥ चे० १८ ॥ जेह विरति देश श्रावकतणी, जेह समकित सदाचार रे, समकित दृष्टि सुरनर तणो, तेह अनुमोदिये सार रे ॥ चे० १९ ॥ अन्यमा पण दयादिक गुणो, जेह जिनवचन अनुसार रे सर्व ते चित्त अनुमोदिये, सम कितबीज निरधार रे ॥ चे० २० ॥ पाप नवि तीव्र भावे करे, जेहने नवि भवराग रे, उचित स्थिति जेह सेवे सदा, तेह अनुमोदवा लाग रे. ॥ चे० २१ ॥ थोडलो पण गुण परतणो, साभळी हर्ष मन आण रे, दोष लव पण निज देखता निर्गुण निजात्मा जाण रे ॥ चे० २२ ॥ उचित व्यवहार अवलबने, इम करी स्थिर परिणाम रे भाविये शुद्ध नय भावना, पावनाशयतणु ठाम रे ॥ चे० २३ ॥ देह मन वचन पुद्गल थकी, कर्मथी भिन्न

---

१ ताव कामवासना करी २ भागा नाय ३ तीर्थंकर नाम कर्मनु कारण परोपकार गुण, तेना अनुमोदना करवा ४ चारित्ररूपी वनने ५ शुभ परिणाम ६ धनादिथी

तुन रूप रे, अक्षय अकलंक छे जीवनु, ज्ञान आनंद स्वरूप रे ॥ चे० २४ ॥ कर्मथी कल्पना उपजे पवनथी जीम जलधिवेल रे रूप प्रगटे सहज आपणुं, देखता दृष्टि स्थिर मेल रे. ॥ चे० २५ ॥ धारता धर्मनी धारणा, मारता मोह वड चोर रे, ज्ञानरुचि वेल विस्तारता, वारता कमनु जोर रे ॥ चे० २६ ॥ रागविष दोष उतारता, जारता द्वेष रस शेष रे पूर्व मुनि वचन संभारता, सारता कर्म निःशेष रे ॥ चे० २७ ॥ देखीए मार्ग शिवनगरनो, जे उदासीन परिणाम रे, तेह अणछोडता चालिए, पामिए जिम परमधाम रे ॥ चे० २८ ॥ श्री नयविजय गुरु शिष्यनी, शीखडी अमृत वेल रे, एह जे चतुर नर आदरे, ते लहे सुजस रंगरेल रे ॥ चे० २९ ॥

(निगोदादि – संसार – दुःख – वर्णन – गर्भित)

श्री सीमंधर-जिन विनति

दुहा

अनंत चोवीसी जिन नमु, सिद्ध अनंती क्रोड, केवळनाणी थविर सवि, वंदु बे कर जोड ॥ १ ॥ बे कोडी केवळधरा, विहरमान जिन वीश, सहस युगल कोटी नमु, साधु सर्व निशदीश ॥ २ ॥

आर्या

सकल समीहित करणी, शशीवयणी रायहंस गयगमणी, कविजननी ब्रह्माणी, वयणरस दीजउ मे देवी[1] ॥ ३ ॥

दुहा

श्री ब्रह्माणी शारदा, सरस्वती[1] द्यो सुपसाय,
सीमंधर जिन विनवु, सानिध्य करजो माय[1] ॥ ४ ॥

---

१ वाळती

ढाळ पहेली

(साभळ्नो मुनि सजम रागे – ए देशी)

श्री सीमधर साहिब मेरा चाहू दर्शन तेरा रे, तेरे फरजन है बहुतेरा, तु प्रभु साई हमेरा रे ॥ श्री० १ ॥ श्री श्रेयास नरिंद बिराजे जस महिमा जग गाजेरे, तस कुळ कमळ दिणद समोवड, सत्यकी नदन छाजे रे ॥ श्री० २ ॥ पुष्कलवई विजया वीचे नगरी, अमरा वई सम जाण रे, महाविदेहे तु प्रभु ! उपनो, पुडरिगिणी अहिठाण रे ॥ श्री० ३ ॥ दूर देशातर तु प्रभु ! वसीयो, राणी रुक्मिणी कतरे, मुज सदेह तणा सदोहा, कुण भाने भगवत रे ॥ श्री० ४ ॥ जे चउ गई गति आगति भेदा, जीव अजीव विचार रे, केवळनाणी विना पाण भाखे बहुला ते अधिकार रे ॥ श्री० ५ ॥ भवसमुद्र तारण तु प्रगट्यो, तु जगनधव बापरे, भवोभव जे म पातक कीधा ते आलोउ आप रे ॥ श्री० ६ ॥ हु मूरख मतिहीन न जाणु ज्ञान तणो एक लेश रे, गुरुउपदेश रही बहु साचु, निसुणो राय जिनेश ! रे ॥ श्री० ७ ॥

दुहा

रात्तणा परे रडवड्यो, निधणीयो निरधार, श्री सीमधर साहिबा तुम विण इणे ससार ॥ १ ॥ अनादि निगोदमाहे रुल्यो, अव्यवहारी जीव, काळ अनत तिहा रह्यो, भव अनंत सदव ॥ २ ॥

ढाळ बीजी

(वीर जिणद जगत उपगारी – ए देशी)

श्री सीमधर साहिब मेरा, विनतडी अवधारोजा, नरक निगोद तणा दु ख विरुआ, गिरुआ ! हृदय विचारोजी ॥ श्री० १ ॥ दीनदयाळ ! कृपाळ ! दयानिधि ! करीये काइ उपगारोजी, भीम

भवोदधि दुस्तरमांथी मुजने नाथ[1] उगारोजी, ॥ श्री० २ ॥ पोयणी पान सुकोमळ मेळे, बत्रीस सरया सोयजी, बळवतो नर सोय करीने, मजशु वींधे कोयजी ॥ श्री० ३ ॥ एक पान भेदीने बीजे, जेहवी ते सोय जायजी, वर्धमान जिन गोयमने कहे, असख्य समय तिहा थायजी ॥ श्री० ४ ॥ असख्य समय एक आवली जाणो खुल्लक भव हुवे जेहजी, बे शत छप्पन (२५६) आवलिकाशु, जीवित जीवे तेहजी ॥ श्री० ५ ॥ अल्प आयु एहवा अनुभविया, नाथ निगोद मोझारजी, जन्म मरणना दुःख अनता मे सह्या वारवारजी ॥ श्री० ६ ॥ चुमालीससे आवली साडी छेतालीस झाझेरीनी, सासोसास एक्लेएक थाये, आघी वात घणेरीजी ॥ श्री०७ ॥ सासोसासमा जीव निगोदे, करे सत्तर भव पूराजी साडी चोराणु आवली उपर, अधिको जाणो शूराजी ॥ श्री० ८ ॥ मुहूर्त एकनी बे घडी काची, शास्त्रतणे परिमाणजी, साडत्रीससे तहोंतेर तेहना, श्वासोश्वास वखाणजी ॥ श्री० ९ ॥ ते माहे हुवे जीव निगोदे, भव करे केती वारजी पासठे सहस ने पाच सया वली, छत्रीस वार विचारजी ॥ श्री० १० ॥ एक लाखने तेर हजार एकसो नेवु वारजी, एक दिवसना सासोसासमा केवलीने अधिकार जी ॥ श्री० ११ ॥ छासठ सहस एसी अधिकेरा, ओगणीस लाख भलेराजी, धर्म प्रपची एक दिवसमा, नई कर भव फेरा जी ॥ श्री० १२ ॥ तेत्राश लाख पचाशु सहसा, सात शतक अवधारजी, एक मासना एह उसासा, गणित तणे अनुसारजी ॥ श्री० १३ ॥ पाच क्रोड नव्याशी लक्खा, चारसो त्यासी हजारजी, एटला वार एमरे निगोदीयो, एकण मास मोझारजी ॥ श्री० १४ ॥ चार क्रोडने सातम लक्खा वळी सहस अठयाशजी, चार शतक अधिक

१ कमल   २ निगोदनो   ३ अने कइक अधिक   ४ (६५५३६)
५ ४८ हजार.

सत्याए, श्वासोश्वास विशाळजी ॥ १५ ॥ एक धरसमा सित्तेर कोडी, लाख सत्योत्तर वारना, सहस अठ्यासी आठसे अके एह लीये अवतारनी ॥ श्री० १६ ॥

दुहा

मरणा अवतरणा करी, स्वामी ! काळ अनंत,
परावर्त पुद्गल किया, तेहनो कहुं वृत्तांत ॥ १ ॥
जेमं केकी गिरिवर रहे, मेहा दूरे वास,
तिम विनची ! तुम ओळगु, निसुणो ए अरदास ॥ २ ॥

ढाळ बीजी

(स्वामी सीमंधर विनति--ए देशी)

दश कोडाकोडी सागरे, उत्सर्पिणी एकरे, तिम गणो एह अव सर्पिणी मने धरिय विवेक रे. ॥ १ ॥ सुण सुण स्वामी सीमंधरा धरा भूषण इशरे, चोत्रीस अतिशय परगडा, वाणीगुण जे पात्रीसरे सुण० ॥ २ ॥ वीस कोडाकोडी वेहु मळी, कालचक्र एक थायरे एक पुद्गल परावर्तमा भव अनंत ते जायरे ॥ सुण० ॥ ३ ॥ एह निगो दमा हु वस्यो, प्रभु ! काळ अनंत रे, तेह पुद्गल परावर्तना, कर्या वार अनंतरे ॥ सुण० ॥ ४ ॥ खेपवी अकाम निर्जरा, कर्म चीकणा जेहरे, पुढवी जल जलण वायु थयो, पामीयो तेहना देहरे ॥ सुण० ५ ॥ तेह एकेंद्री कायमा, योनि सात लाख सत्यरे, शीत तापादिक में सह्या, कालचक्र असंख्यरे, ॥ सुण० ६ ॥ अनुक्रमे तिहा थकी नीसरी, थयो काय अनंतरे बत्रीस नाम छे तेहना, कह्या ग्रंथ सिद्धांतरे ॥ सुण० ७ ॥ सूरणकंद पहेलु गणु, वज्रकंद हलद्ररे,

१ निगोदियो २ जन्म ३ मयूरी

अद्रक आर्द्र कचूरखो शतावरी तजो भद्दरे ॥ सुण० ८ ॥ नीली विराली कुमारिका, सतुहीं अमृता जाणरे, लसण ने वस कारे लहा, गाजर लुणी वखाणरे ॥ सुण० ९ ॥ लोढा ते कमळ कदा भिघा, गिरिकर्णिका मालरे, कोमल पत्र ने खरसुआ, तुणा वृक्षनी छालरे, ॥ सुण० १० ॥ थेग ते मोगर जाणजो, नीली मोथ मूढ फोडरे, पत्यक शाक विशेष छे, खाता अति घणी खोडरे ॥ सुण० ११ ॥ पींडु ने अमृत वेलडी सूआ मक्कर अभिलाषरे, उगता विदल अकुरडा, विरुढा इति भाषरे ॥ सुण० १२ ॥ प्रथम समयनो वत्यूलो, गणु तेह सदोषरे, शूरी वालोळी ने आवली, कुमळी करजा सतोष रे ॥ सुणी० १३ ॥ आलुय पिंडालु वळी, घणा जीवनो पिंड रे, अनतकाय बत्रीसना, पद्या नाम प्रचड रे. ॥ सुण० १४ ॥

दुहा

इत्यादिक अनेक छे, अनत कायना भेद, वादर एह निगोदमा, दु पाम्यो निर्वेद ॥ १ ॥ सुई अग्र अनतमे, भागे हु बहु वार, वेचाणो नि सवलो, किणही न कीधी सार ॥ २ ॥ काल अनत तिहा रह्यो, साधारण स्वरूप, चौद लाख योनि भम्यो, जे जे कर्म निरूप ॥ ३ ॥

ढाळ चोथी

(छठ्ठी भावना मन धरो ~ ए देशी)

श्री सीमधर स्वामी ए[1] तिहुअण अतरजामीए, पामीए, जे गति कहु ते आपणी ए ॥ १ ॥ एक शरीरे एक ए, जीव थयो प्रत्येक ए, छेदन दु खनो नावि आव्यो प्रसु ए ॥ २ ॥ छेदन भेदन जे सह्या, ते मे नवि जाए कह्या, निरवह्या, काळ असख्य तिहा वसीए ॥ ३ ॥

---

१ कटाळो

॥ २० ॥ देश अनारज वसियोए, पापतणे रसे रमियोए, धसियाण, विरुआ कर्म भणी घणुंए ॥ २१ ॥ कर्म वळे पाछो वळीयोए, चोवीस दडके वळी रुळीयोए, नवि मळीओए, स्वामी को मुन तारकोए. ॥ २२ ॥

दुहा

उच नीच कुळ अवतर्यो, कीधा मध्यम काम, विरति पाखे हु थयो, न रह्यो भव विश्राम ॥ १ ॥ मानव भव अति दोहिलो, दोहिलो आरज देश, सद्दहणा वळी दोहिली, दोहिलो गुरु उपदेश ॥ २ ॥ मनुष्य तिरि भव अतरे, साते नरक मोझार, गणता काळ असरय हुओ, हु गयो एटली वार. ॥ ३ ॥

ढाळ पांचमी

(राग – केदारो, देशी – अढीआनी)

सीमधर जगदीश, पूरो मनह जगीश शीश नमी रहु ए, आणा नित वहुए ॥ १ ॥ मेरु महीधर धीर, जलनिधी जेम गभीर, धीर वडो सुण्योए, मेयण सुभट हण्योए ॥ २ ॥ तु सेवक आधार, गुण गण रयण भडार, तारक अवतर्योए, जयलच्छी वर्योए ॥ ३ ॥ तु मुज मन तरु कीर, तु मुझ हैडानो हीर कीर्ति तुम तणीए, त्रिभुवन अति घणीए ॥ ४ ॥ जिनजी ! जगविख्यात, सामळ मुज अघ दात, भवे भवे जे हुआए, विवरी जूंजूआए ॥ ५ ॥ पाम्यो आरज देश, उच गोत्र सविशेष, लेश्या नवि रहीए, सामग्री नहिए ॥ ६ ॥ सामग्री वळी लेद्ध, सद्दहणा मन बद्ध बुद्धिनो दरियोए, आदर नवि कर्योए ॥ ७ ॥ न करी त्रिकरण शुद्धि, प्रमादे मन बुद्धि सिद्धि न को रहीए, हार्या भव सहीए ॥ ८ ॥ भणी भणी पण अग, करी

१ काम २ पोपट ३ जुदाजुदा ४ पामी

प्रमाद प्रसग, व्रतभंगे हुओए, नरक निगोदीओए. ॥ ९ ॥ में लाध्यु बहु वार समकितरयण उदार, हारवीयु इस्यु ए, दूषण पाचेशुए, ॥ १० ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म, वेदाते शिवशर्म कर्मे साकळ्योए, तहयु जई मळ्योए. ॥ ११ ॥ अतिशयवंत महंत, दोष रहित भगवत चित्त न सदह्यो ए, एळे भव गयोए. ॥ १३ ॥ पाचे पचा चार, टाळे कुव्यापार, सुगुरु न ओळखयाए, सूते जे लखयाए ॥ १२ ॥ दयामूळ जिनधर्म, नवि जाण्यो तस मर्म, नव तत्त्वादिक ए, हेयादिक त्रिकाए ॥ १४ ॥ गाडरीए प्रवाह धर्म कर्या उच्छाह, वळी वृद्धारकोए, परमाधार्मिकोए. ॥ १५ ॥ नारकीने दु ख देइ, पापे पिंड भरेइ, जलमाणम थयोए, जाळ अतर रह्योए ॥ १६ ॥ पीलाणो तेण ठाम, अडगोलकने नाम, घरटी मध्य करीए, नर द्वीपातरी ए ॥ १७ ॥ दु ख पाम्यो तिहा भीम, कार सवत्सर सीम, परवामा छळेए, भव एम पाळलेए. ॥ १८ ॥ हवे वैमानिक देव, करतो परस्त्री सेव, टेच विषय तणीए, भवतृष्णा मुज घणीए. ॥ १९ ॥ तीन मोह परिणाम, वळी एकद्रिय ठाम, आयुष्य सेरव्यनोए, ते हु ज्पनोए ॥ २० ॥ हु अपराधी देव, ताहरो हु नितमेव, सेवक चित्त धरोए, पडतो उद्धरोए ॥ २१ ॥

ढाळ छठ्ठी

(श्रेणिक राय हु रे अनाथी निर्ग्रंथ-ए देशी)

चार लाख योनि भम्यो, लह्यो सूर अवतार, श्री सीमधर ठाकुरारे, में विलस्यारे तिहा सुख अपार, ठाकुरीआ रे अम तारो, भवसायररे व्हाला पार उतारो. ॥आं०१॥ चाद लाख मनुष्यना, भोगव्या भेद अशेष, लाख

---

१ मुक्तिना सुखने आपणाथी दूर रख्या २ त्रिक–जाणवा जेवा, आदरवा जेवा अने त्यागवा जेवा ३ परमाधामी थराने ४ परमाधामी मरीने ५ भयकर ६ धरपात बाळ

चोरासी हु भम्यो, म फाव्यारे तिहा नवनवा वेश ॥ ठा० २ ॥ दिन जातेरे यौवन गयु, न गळ्यो ते मन्मथ पूर, महिलाने रूपे राचीजे, देखी रात दिवस रह्यो हु झूर ॥ ठा० ३ ॥ अशुभ ध्यान अतर चितव्या, युवतीना भोगविलास, अमृत कीटी विष थयु, श्रीफळ जळरे घनसारज वासे ॥ ठा० ४ ॥ क्रोध मान माया तजी, समभावे भावे मन, तजी कचन कामिनी, महिमडळे रे मुनि ते धन्न धन्न ॥ ठा० ५ ॥ एणी पेरे अनता भव भम्यो, चवीयो वार अनत, सुख दु ख सघळा भोगव्या, भव गणता रे थाक्यो भगवत ॥ ठा० ६ ॥ देव गुरु धर्म ओळख्यो, में सुण्यो प्रवचनसार, छ कायना जीव ओळख्या वळी दुरितनारे अढिठाण अढार ॥ ठा० ७ ॥ गुण सत्तावीश साधुना, श्रावकना एक वीश, ते सघळा में ओळख्या, आणवा खप करु निशदिश ॥ ठा० ८॥ सामाचारी समही, सिद्धात तणे अनुसार, तपगच्छनी किरिया करु, हु तो मानु रे पचागी विचार ॥ ठा० ९ ॥ एणे आरे भरतमा, धर नहि केवळ नाण, पूर्वाचार्य वयणडा, हु तो मानु रे ते अमीय समान ॥ ठा० १० ॥ एणी परे इणभव परभवे, जिनजी विराधी आण, ते नावि मिच्छामि दुक्कड, मासहज्जोरे अपराध सुजाण ॥ ठा० ११ ॥ मिथ्यात्व सघळु परिहरु, हु धरु समकित झाण, तप जप किरिया आदरु, ताहरे रखेरे माहरे तेह प्रमाण ॥ ठा० १३ ॥ हित न कर्यो केहनो कदा, न कर्यो ते दीन उद्धार, दान पुण्य जेणे नवि कर्या वने मालती रे जेम तस अवतार ॥ ठा० १४ ॥ धन कण कचन कामिनी, वळी राजऋद्धि अनेक, हुं नवि इच्छु राजीया तृष्णा आपोरे अविचल पद एक ॥ ठा० १४ ॥

---

१ युवानी गइ छतां कामवासना नहि गई २ नाळीयेरनु पाणी अने कपुर मळवाथी झेर थाय, तम मनुष्यभवमां काम-भोग ए झेर छे घणा भवमां माननारा छे ३ मूळ आगमो, तेना उपर निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि अने टीका ए पचांगी ४ वहन करजो ५ ध्यान ६ तमारा उपर संपूर्ण विश्वास मूकी

ढाळ सातमी

(शत्रुंजय मंडण – ए देशी)

धन धन ए सप्रति, सीमंधर जिनदेव, सुरनर ने किन्नर, सारे अहनिश सेव, गढ त्रण विराजे, १समवसरण सुखगेह, छत्रत्रय शोभित, चामर अंचित देह ॥ १ ॥ अकलंक महाबल, कैरिमल्लतरु जळपूर, जगनायक जगगुरु, जगवच्छल वड़ूर, जगलोचन उदया, जगदीपक जगनाथ, जगतिलक समोवड, ए शिवपुरनो साथ ॥ २ ॥ धन धन नरनारी, जे सेवे तुम पाय, धन धन ते दीहा, २जेणे तुम समरण थाय, धनधन ते जीहा, जे तुम गुण नित्य गाय, जस कुंअर अजवाळ्यु, धन्य ते माय ने ताय ॥ ३ ॥ वडलीनो वासी व्यवहारी शुभ चित्त, गेहेलु कुळदीवो, अमीचंद सुपवित्त, संवेगी सूधो कीधो, त्याग सचित्त, ए स्तवन रच्यु में, भणवा तेह निमित्त ॥ ४ ॥ संवत सत्तरसो, तेरोत्तर शुचि मास, सुदी सातम शुक्रे, स्वातियोग शुभ तास, श्रीविनयप्रभसूरि राज्ये चित्त उल्लास, तयरपाडामांहे, गुणीयो रही चोमास ॥ ५ ॥

कळश

तप गच्छ अंबर अरुण उदयो विजय हीरसूरीश्वरो, निज हस्त दीक्षित, सुपरीक्षित, श्रीगुणविजय कवीश्वरो, तस चरण पङ्कज प्रवर मधुकर, भावविनय बुध सुंदरो सिद्धिविजय कहे स्वामी सप्रति, सकल भवि मंगल करो

---

१ कळि (पांचमा आरा) मां कर्मसहरूपी वृक्षेने उखेडी नाखवा माटे जळना पूर समान २ ते दिवसो धन्य के जेमां तमारु स्मरण थाय

श्री महावीर स्वामीनु स्तवन

वीर कुवरनी वातल्डी केने कहीए, हा रे केने कहीए रे केने कहीए नव मंदिर बेसी रहीए, हा रे सुकुमार शरीर ॥ वीर० १ ॥ बाळ पणाथी लाडको नृप भार्यो, मळी चोसठ इन्द्रे मल्हाव्यो, इन्द्राणी मळी हुलराव्यो गयो रमवा राज ॥ वीर०२ ॥ छोरु उछाछळा लोकना केम रहीए, एनी मावडीने शु कहीए, कहीए तो अदेखा थईए, नाशी आव्या बाळ ॥ वीर०३ ॥ आमलकी क्रीडा विषे विटाणो, मोटो भोरिंग रोपे भराणो, वीरे हाथे झालीने ताण्यो, काढी नाख्यो दूर ॥ वीर०४ ॥ रूप पिशाचनु देवता करी चलियो, सुत पुत्रने लेई उछळीयो, वीरमुष्टी प्रहारे वळीओ, साभळीए एम ॥ वीर०५ ॥ त्रिशला माता गोजमा एम कहेती, सखीओने ओळभा देती, क्षणक्षण प्रभु नामज लेती, तेडाव बाळ ॥ वीर०६ ॥ वाट जोवता वीरजी घेर आव्या, माता त्रिशलाए नवराव्या, खोळे बेसाडी हुलराव्या, आलिंगन देत ॥ वीर० ७ ॥ यौवन वय प्रभु पामता परणावे, पछी संजमशु चीत लावे, उपसर्गनी फोज हठावे, लीधु केवल नाण ॥ वीर०८ ॥ कर्मसूदन तप भाखीयु जिनराजे, त्रण लोकनी ठकुराई छाजे, फल पूजा करी शिवकाजे, भवीने उपगार ॥ वीर०९ ॥ शाता अशाता वेदनी क्षय कीधु, आपे अक्षय पद लीधु, शुभवीरनु काज सीधु, भागे सादि अनत ॥ वीर०१०॥

श्री महावीर स्वामीनु स्तवन

तार हो तार प्रभु मुज सेवक भणी, जगतमा एटलो सुयश लीजे, दास अवगुण भर्यो, जाणी पोता तणो, दयानिधि दीन परे दया कीजे ॥ तार०१ ॥ रागद्वेषे भर्यो मोह वैरी नड्यो, लोकनी रीतिमा घणु रातो, क्रोधवश धमधम्यो शुद्ध गुण नवि रम्यो, भम्यो भव

माहि हुं विषय मातो ॥ तार०२॥ आदर्युं आचरण लोक [illegible] शास्त्र अभ्यास पण काइ कीधो, शुद्ध श्रद्धान वळी आतम अवलंब [illegible] तेहनो कार्य तिणे को न सीधो ॥ तार०३॥ स्वामीदर्शन समो [illegible] लही निमलो जो उपादान ए शुचि न थाशे, दोष को वस्तुनो [illegible] अथम तणो, स्वामी सेवा सहि निकट लाशे ॥ तार०४ ॥ [illegible] ओळगी स्वामी ने जे भजे दरिशण शुद्धता तह पास, ज्ञान [illegible] तप वीर्य उल्लासथी, कर्म जीपी वसे मुक्ति धामे ॥ तार०५ ॥ [illegible] वत्सल महावीर जिनवर सुणी, चित्त प्रभु चरणने [illegible] तारजो बापजी विरुद निज राखवा दासनी सेवना [illegible] तार०६ ॥ विनति मानजो शक्ति ए आपजो, भाव [illegible] भासे, साधी साधक दशा सिद्धता अनुभवि, देवचन्द्र विमल [illegible] प्रकाशे ॥ तार०७ ॥

श्री सीमधर जिन विनति

सुणो सीमधर साहिबाजी शरणागत प्रतिपाल [illegible] तारवानी कर माहरी सभाळ, कृपानिधि सुण मोरी [illegible] हु भवभव तुमचो दास, ताहरो छे विश्वास [illegible] गुणनो राशि छजी, तिलतुष नहि गुणलेश, [illegible] सदानी एहिज मवल क्लेश ॥ कृपा० ३ ॥ [illegible] थेजी करतो किरिआ लेश, ते पण परिजन [illegible] वेश ॥ कृपा० ४ ॥ छद्मा गुणगणा [illegible] आगमवयण जोवतानी न गयो [illegible] रसना रामा ने रमानी ए त्रण पातक [illegible] नानी करता भव थया थूळ ॥ कृपा० [illegible] रीनी दिवस माहे [illegible]

उगार ॥ कृपा० ७ ॥ धूली तणा जेउल परीनी जिम पाउसमा रे
थाल, मोगूला मुसे एम यदेजी तिम प्रत म पर्या आल ॥ कृपा० ८॥
आप अशुध्द परने परुनी दई आलोयण शुध्द, मासाहस पखी
परेजी पाडु फरे मुग्ध ॥ कृपा० ९ ॥ अछता गुण गिमुणी मनेनी
हरखु अति सुविशेष, दोष छता पण साभळीनी तस उपरे धरु
द्वेष ॥ कृपा० १० ॥ परिभव परपरिवादनानी परे परे भाखु रे
आप, निज उत्कर्ष करु घणाजी एहज मुज सताप ॥ कृपा० ११ ॥
निश्चयपथ न जाणीयोनी व्यवहारियो व्यवहार, मदनमात
नि शक्थीनी थाक्यो असदाचार ॥ कृपा० १२ ॥ समय सपयणादि
दापधीनी नावे शुक्लध्यान, सुहणे पण नवि आविओजी निरासम
धर्मध्यान ॥ १३ ॥ आर्त रौद्र वेहु आहोनिशेजी सेयापार रयाम,
मिथ्या राजा निद्रा होये जी तृष्णा लोभ विलास ॥ कृपा० १४ ॥
जिनमत वितथ प्ररुपणानी कीधी स्वारथ बुद्द, आडयपणाना जोर
थीनी न रही कोई शुध्द ॥ कृपा० १५ ॥ हिंसा अलिक अदत्तगुनी
सेव्या त्रिविध कुशील, ममता परिग्रह केरवीनी कीधी भवनी ढील
॥ कृपा० १६ ॥ अक्रिय साधे जे क्रियाजी ते नावे तिल मात्र, मद
अज्ञार टळे जेहथीनी ते नहि नागनी वात ॥ कृपा० १७ ॥
दर्शन पण परस्या घणानी उदर भरणने रे काज, पण तुम तत्व
प्रतीतगुनी न धरु दर्शन नाम ॥ कृपा० १८ ॥ सुविहित गुरुगुडे
लोकनेनी हु वदावु रे आप, आचरणा नहि तेहवीजी ए मोटो
सताप ॥ कृपा० १९ ॥ मिथ्या देव प्रशंसियाजी कीधी तेहनी रे सेव
अज्ञाछदाना वचणनीजी न टल्या मुजने टेव ॥ कृपा २० ॥ कोरे चित्त
चूना परेजी धर्म कथा म कीध, आप पची परवचियाजी एके
काज न सिध्द ॥ कृपा० २१ ॥ रातो रमणी देखीनेजी जिम
जणनाथ्योरे साढ, माड भवैयानी परेजी धर्म देखाडु माड ॥ कृपा०
॥ क्रोध दावानल प्रबळथीनी उगे न समता वेल, मान मही-

श्री सीमधर स्वामीने विनतिरूप

सवासो गाथानु स्तवन

ढाळ पहेली

स्वामी सीमधरा विनति, साभळो माहरी देवरे, ताहरी आग
हु शिर धरु, आदरु ताहरी सेवरे ॥ स्वामी० १॥ कुगुरुना वासना
पाशमा, हरिण पर जे पड्या लोकरे, तेहने शरण तुज विण नहीं,
टळवळे बापडा फोकरे ॥ स्वामी० २॥ ज्ञान दर्शन चरण गुण विना,
जे करावे कुळाचाररे, लूटीया तेणे जन देखता, किहा करे लोक
पोकाररे ॥ स्वामी० ३ ॥ जेह नहि भव तर्या निर्गुणी, तारे
केणी परे तेहरे एम अजाण्या पडे फदमा, पाप बधे रह्या जेहरे
॥ स्वामी० ४ ॥ कामकुभादिक अधिकनु, धर्मनु को नवि मूल्
दोकडे कुगुरु ते दाखवे, शु थयु एह जग सूळरे ॥ स्वामी० ५
अर्थनी देशना जे दीए, ओळवे धर्मना ग्रथरे, परमपदनो प्रग
चोर ते, तेहथी केम वहे पथरे ॥ स्वामी० ६ ॥ विषयरसमा गृ
माचिया, नाचिया कुगुरु मदपूररे, धूमधामे धमाधम चली, ज्ञा
मारग रह्यो दूररे ॥ स्वामी० ७ ॥ कलहकारी कदाग्रह भर्या, थाप
आपणा बोलरे, जिन वचन अन्यथा दाखवे, आज तो वा
ढोलरे ॥ स्वामी० ८ ॥ केई निज दोषने गोपवा, रोपवा केई म
कदरे, धर्मनी देशना पालटे, सत्य भाखे नहीं मदरे ॥ स्वामी० ९
बहु मुखे बोल एम साभळी, नवि धरे लोक विश्वासरे ढूढता ध
ते थया, भमर जेम कमल निवासरे ॥ स्वामी० १० ॥

---

१ खुटा उपदेशने पासरूप पाशमा २ फोगटना ३ कुळाचार :
धार्मिक क्रिया करावे छे ४ आत्माना गुणान ५ कामकुभ, कल्पवृक्ष
तोय धर्म अमूल्य छता तेने कुगुरुओ दोकडे वेचे छे ६ धनादि विष
गृहस्थो रसिक बन्या

ढाळ चौथी

एम ढूंढतारे धर्म सोहामणो, मिलिओ सद्गुरु एक, तेहने साचेरे मारग दाखव्यो, आणि हृदय विवेक श्री सीमंधर साहेब सांभळो ॥ श्री० ११ ॥ परघर जोतांरे धर्म तुम फिरो, निजघर न लहोरे धर्म, जेम नवि जाणेरे मृग कस्तुरीओ, मृगमद परिमल मर्म श्री० १२ ॥ जेम ते भोळोरे मृग सघळी दिशि फिरे, लेवा मृग मद गंध तेम जग ढूंढेरे बाहिर धर्मने, मिथ्या दृष्टिरे अंध ॥ श्री० १३ ॥ जाति अधनोरे दोष न आकरो, जे नवि देखरे अर्थ, मिथ्या दृष्टिरे तेहथी आकरो, मान अर्थ अनर्थ ॥ श्री० १४ ॥ आप प्रशंसेरे परगुण ओळवे, न धरे गुणनारे लेश, ते जिनवाणीरे नवि श्रवणे सुणे, दिये मिथ्या उपदेश ॥ श्री० १५ ॥ ज्ञान प्रकाशेरे मोह तिमिर हरे, जेहने सद्गुरुसूर, ते निज देखेरे सत्ता धर्मनी, चिदानंद भरपूर ॥ श्री० १६ ॥ जेम निर्मलतारे रत्न स्फटिक तणी, तेम ए जीव स्वभाव, ते जिन वीरेरे धर्म प्रकाशीओ, प्रबल कषाय अभाव ॥ श्री० १७ ॥ जेम ते रातेरे फुले रातडु, श्याम फुलथीरे श्याम, पापपुण्यथी रे तेम जग जीवने रागद्वेष परिणाम ॥ श्री० १८ ॥ धर्म नें कहीएरे निश्चे तेहने, जह विभाव वडव्याधि पहेले अंगेरे एणी परे भाखियु, कर्म होय उपाधि ॥ श्री० १९॥ जे ज अशेरे निरुपाधिकपणु, ते ते जाणोरे धर्म, सम्यग्दृष्टिरे गुणठाणा थकी, जाव लहे शिवशर्म ॥ श्री० २० ॥ एम जाणीने रे ज्ञानदशा भजी, रहीए आपस्वरूप, पर परिणतिथीरे धर्म न छांडिए, नवि पडिये भवकूप ॥ श्री० २१ ॥

---

१ पोताना आत्मामां रहेला धर्मने जोई शके छ २ रागद्वेषना अभावे आत्मानी निर्मळता प्रगट थाय छ ३ प्रशस्त रागद्वेष व्यवहारथी धर्म कहेवाय, निश्चयथी नहि, कारण रागद्वेष विभाव ए महाव्याधिरूप छ ४ आचारांग मां ५ मिथ्यात्व अविरति कषाय ने योग ए उपाधिओ ज्यार ज्यारे टळे त्यारे त्यारे धर्म ६ मोक्षसुख ७ आत्मज्ञानमां रमण करवु ८ संसारनी

ढाळ त्रीजी

जिहा लगे आतम द्रव्यनु, लक्षण नवि जाण्यु, तिहा लगे गुण ठाणु भलु, केम आवे ताण्यु, आतम तत्त्व विचारीए ॥ २२ ॥ आतम अज्ञाने करी, जे भव दु ख लहीए, आतमज्ञाने ते टळे, एम मन सद्दहीए ॥ आतम० २३ ॥ ज्ञान दशा जे आकरी तेह चरण विचारो निर्विकल्प उपयोगमा नहीं कर्मनो चारो ॥ आतम० २४ ॥ भगवई अगे भाखीओ, सामायिक अर्थ, सामायिक पण आतमा धरो सूधो अर्थ ॥ आतम० २५ ॥ लोकसार अध्ययनमा, समकित मुनि भाव, मुनिभावज समकित कह्यु, निज शुद्ध स्वभावे ॥ आतम० २६ ॥ कष्ट करो सजम धरो, गाळो निज देह ज्ञान दशा विण जीवने, नहीं दु खनो छेह ॥ आतम० २७ ॥ बाहिर यतना बापडा करता दुहवाए, अतर जतना ज्ञाननी, नवि तेणे थाए ॥ आतम० २८ ॥ राग द्वेष मळ गाळवा, उपशम जल झीलो आतम परिणति आदरी, पर परिणति पीलो ॥ आतम० २९ ॥ हु एहनो ए माहरो, ए हु एणि बुद्धि, चेतन जडता अनुभवे, न विमासो शुद्धि ॥ आतम० ३० ॥ बाहिर दृष्टि देखता, बाहिर मन धावे, अतर दृष्टि देखता अक्षय पद पावे ॥ आतम० ३१ ॥ चरण होय लज्जादिके, नवि मनने भगे त्रीजे अध्ययने कह्यु, एम पहेले अगे ॥ आतम० ३२ ॥ अध्यातम विण जे क्रिया, ते तनुमल तोले, ममकारादिक योगथी,

---

१ धनादिने पोताना मानवाथा कषायने लीधे कर्म बधाय २ 'हु ए धनादि नथी एवी स्वच्छ मान्यताथी ३ श्रद्धा करवी ४ बध ५ आत्मज्ञानी ज मुनि छे अनाज्ञ चारित्र होय छे ६ आत्माना शुद्ध स्वभावरूप निश्चय समकित ज चारित्र कहेवाय छे ७ उग्र विहारादि करवावाळा आत्मज्ञान विना दु ख मात्र पामे छे ८ विचारो ९ लज्जाथी के लोकापवाद थीय चारित्र पळाय छे, । मनना समाधि ए निश्चय नयथी भावचारित्र १० शरीरना मेल बेत्री

एम ज्ञानी बोले ॥ आतम० ३३ ॥ हु कर्ता परभावनो, एम जेम जेम जाणे, तेम तेम अज्ञानी पडे, निज कर्मने घाण ॥ आतम० ३४ ॥ पुद्गल कर्मादिक तणो, कर्ता व्यवहारे, कर्ता चेतन कर्मनो निश्चयनु विचारे ॥ आतम० ३५ ॥ कर्ता शुद्ध स्वभावना, नयशुद्धे कहीए, कर्ता पर परिणामनो, बेऊ किरिया ग्रहीए ॥ आतम० ३६ ॥

ढाळ चोथी

शिष्य कहे जो पर भावनो, अकर्ता कह्यो प्राणी दानहरणादिक किम घटे, कहे सद्गुरु वाणी, शुद्ध नय अर्थ मन धारीए ॥ ३७ ॥ धर्म नवि दीए नवि सुख दीए, परजतुने देतो, आप सत्ता रहे आपमा एम हृदयमा चेतो ॥ शुद्ध० ३८ ॥ जोगवशे ज पुद्गल ग्रह्या, नवि जीवना तेह, तेहथी जीव छे जुजुओ, वली जुजुआ देह ॥ शुद्ध० ३९ ॥ भक्त पानादि पुद्गल प्रते, न दीए छती विनो पोते, दानहरणादि परजतुने, एम नवि घटे जोते ॥ शुद्ध० ४० ॥ दानहरणादिक अवसरे, शुभ अशुभ सकल्पे, दिए हरे तु निज रूपने, मुखे अन्यथा जल्प ॥ शुद्ध० ४१ ॥ अन्यथा वचन अभिमानथी फरी कर्म तु बाधे, ज्ञायक भाव जे एकलो, ग्रहे ते सुख साधे ॥ शुद्ध० ४२ ॥ शुभ अशुभ वस्तु सकल्पथी, धरे जे नव मोया, ते टळ्ये सहज सुख अनुभव, प्रभु आतम राया ॥ शुद्ध० ४३ ॥ परतणी आश विषवेलडी फळे कर्म बहु भाति ज्ञानदहने करी ते दहे, होये एक

१ व्यवहार नयथी छ, निश्चय नयथी नथी २ शुद्ध निश्चयथी ३ मानीए तो जार क्रिया अने अज्ञान क्रिया एम बे क्रिया माना गणाय, अने त सिद्धातविरुद्ध छे ४ अमुके दान आप्यु, अमुके चोरी करी ए केम घटे? ५ पोतामाना धर्म के सुख ६ जुदो ७ आहारादि पुद्गलो पोताना नथी तो केम दीधा केम कहेवाय? ८ शिष्यने ... शुभ भावनाथी ... हरण पोताना स्वरूपने प्रगट करे छे अने ... हु एम कहु छ ११ दीधु कहेनार

जे जाति ॥ शुद्ध० ४४ ॥ राग द्वेष रहित एक जे, दया शुद्ध ते पत्र प्रथम अंगे एम भाखीयु निज शक्ति अनुसारे ॥ शुद्ध० ४५ ॥ एकता ज्ञान निश्चय दया, सुगुरु तेहने भाखे, जेह अविकल्प उपयोगमा निज प्राणने राखे ॥ शुद्ध० ४६ ॥ जेह राखे पर प्राण दया तास व्यवहारे, निज दया विण कही परदया होय कव प्रकारे ॥ शुद्ध० ४७ ॥ लोकविण जेम नगर मेदिनी, जेम ज विण काया, फोक तेम ज्ञान विण परदया जिसी नटतणी माया शुद्ध० ४८ ॥ सय आचारमय प्रवचने भण्यो अनुभय याग, तेह मुनि वमे मोहने, वली अरति शोक ॥ शुद्ध० ४९ ॥ सूत्र अ परावर्तनः सरस शेलडी दाखी, तास रस अनुभव चाखीए, ि एक छे साखी ॥ शुद्ध० ५० ॥ आतमराम अनुभव भजो तजो तणी माया, एह छे सार जिन वचननो, वली एह शिवछाय शुद्ध० ५१ ॥

ढाळ पांचमी

एम निश्चय नय साभळीजी, बोले एक अजाण, आदरशु अमे नेनी, शु कीजे पच्चक्खाण सोभागी जिन सीमंधर सुणो वात ॥ किरिया उत्थापी करीनी, छांडी तेणे लाज, नवि जाणे ते उभ कारण विण नवि काज ॥ सो० ५३ ॥ निश्चय नय अवलंबत नवि जाणे तस मर्म, छांडे जे व्यवहारनेजी, लोपे ते जिनधर्म ॥ ५४ ॥ निश्चय दृष्टि हृदय धरीजी, पाळे जे व्यवहार, पुण्यवंत पामशेजी, भवसमुद्रनो पार ॥ सो० ५५ ॥ तुरगे चढी जेम पामिए वेगे पुरनो पथ मार्ग तेम शिवनो लहेनी, व्यवहारे निर्मथ ॥ सो०

१ एकत्र ज्ञायक भावे रहे तो जीवनु शुद्ध स्वरूप प्रगटे २ निर्विकल्प समा ३ जमान ४ निष्फळ ५ शानशीश ६ पच्चक्खाण आदि क्रिया ७

महेल चढता जेम नहींनी, तेह तुरगनु काम सफळ नहीं निश्चय लहेनी, तेम तनुकिरिया साज ॥ सो० ५७ ॥ निश्चय नवि पामी शकेना, पाळे नवि व्यवहार, पुण्यरहित जे एहवानी, तेहने क्यण आधार ॥ सो० ५८ ॥ हेम परिक्षा जेम हुवेजी, सहत हुताशन ताप, ज्ञान दशा तेम परखीएनी, जिहा बहु किरिया व्याप ॥ सो० ५९ ॥ आलंबन विण जेम पडेनी, पामी विषमी वाट, मुग्ध पडे भव कूपमानी, तेम विण किरिया घाट ॥ सो० ६० ॥ चरित भणी बहु लोकमानी, भरतादिकना जेह, लोपे शुभ व्यवहारनेजी, बोधी हणे निज तेह ॥सो० ६१॥ बहु देल दिसे जीवनानी, व्यवहारे शिवयोग, छींडी ताके पाधरोनी छोडी पथ अयोग ॥ सो० ६२ ॥ आवश्यक माहे भाखीयोनी, एहज अर्थविचार फल संशय पण जाणतानी, जाणीने संसार ॥ सो० ६३ ॥

ढाळ छट्ठी

अवर इस्यो नय सांभळो, एक भेदे व्यवहारोरे, मम द्विविध तस नवि लहे, शुद्ध अशुद्ध विचारोरे ॥ तुज० ६४ ॥ तुज विण गति नहीं जंतुने, तु जगजंतुनो दीवोरे, जीवीए तुज अवलंबने, तु साहेब चिरंजीवोरे ॥ तुज० ६५ ॥ जेह न आगम वारीओ, दीसे अशठ आचारोरे, तेहज बुधबहु मानीओ, शुद्ध कह्यो व्यवहारोरे ॥ तुज० ६६ ॥ जेहमा निजमति कल्पना, जेहथी नवि भव पारोरे अघ परंपरा वाधीयो, तेह अशुद्ध आचारोरे ॥ तुज० ६७ ॥ शिथिल विहारीए आचर्यो, आलंबन जे कूडारे, नियतै वासादिक साधुने

१ शुद्ध निश्चय नय प्राप्त कर्या पछी शारीरिक क्रियानी जरुर नथी २ व्यवहार नयथी मोक्षे गयेला जावो घणा छे ३ भरतादिना दाखला लइ एकला निश्चयथी मोक्ष माने ते धोरिमार्ग रस्तो मूकी गली कुंची शोधे छे, ४ जेमां आगमनो बाध नथी, जे अभिनंदनीय मायो होय तेने शुद्ध व्यवहार कहेवाय ५

ते नवि जाणीए रूडारे ॥ तुन० ६८ ॥ आज न चरण छे आकरु, सहननादिक गोपेरे, एम निज अवगुण ओळखी, कुमति कदाग्रह पोषेरे ॥ तुज० ६९ ॥ उत्तर गुण माहे हीणडा, गुरु कालादिक पाखेरे, मूलगुणे नहीं हीगडा एम पचाशक भाखेरे ॥ तुन० ७० ॥ परिग्रह ग्रहवश लिंगीया, लेइ कुमति रज माथेरे, निजगुण परअनगुण लवे, इन्द्रिय वृषभ नवि नाथेरे ॥ तुन० ७१ ॥ नाण रहित हित परिहरी, निज दर्शनगुण लूपेरे, मुनिजनना गुण सामग्री तेह मनारज रूसेरे ॥ तुन० ७२ ॥ अणुसम दोष जे परतणो मेरु समान जे बोलेरे, जेहशु पापेनी गोठडी, तेहशु हियडशु खोलेरे ॥ तुन० ७३ ॥ सूत्र विरुद्ध जे आचरे, थापे अविधिना चालारे, ते अति निविड मिथ्यामति, बोले उपदेश माळारे ॥ तुन० ७४ ॥ पामर जन पण नवि कहे, महसा जूठ सैंशूकोरे, जूठ कहे मुनि वेषे जे, ते परमारथ चूकोरे ॥ तुन० ७५ ॥ निर्दय हृदय छ कायमा, जे मुनिवेषे प्रवर्तेरे, गृहीयति धर्मथी बाहीरा, ते निर्धनगति वर्तेरे ॥ तुन० ७६ ॥ साधु भगति जिन पूजना, दानादिक शुभकर्मेरे, श्रावकजन कह्यो अति भलो, नहि मुनिवेषे अधर्मेरे ॥ तुज० ७७ ॥ केवळ लिंगधारीतणो, जे व्यवहार अशुद्धोरे आदरीये नविसर्वथा, जाणी धर्मविरुद्धोरे ॥ तुज० ७८ ॥

---

१ तुल्य की २ काळ आदिना बहाने ३ पंच महाव्रतधारीनेज साधु कहेवाय ४ बोले ५ इंद्रियरूपी बळदने नाथ नहीं ६ घट ७ श्रद्धानो नाश करे छे ८ द्वेष करे ९ महा पापी १० गाथा ५०४ ११ घृणा उपजावे तेवु जूठ १२ नथा यतिधर्ममां के श्रावकधर्ममां १३ भीखारी जवा छे १४ मुनिवेष छतां अधर्म करे ते वेषने लजवे छ १५ क्रियारहित वेषधारी साधुनो व्यवहार

ढाळ सातमी

जे मुनिवेष शके नवि छंडी, चरण करण गुण हीणाजी, ते पण मारग मांहे दाख्या, मुनिगुण पक्षे लीनाजी, मृषावाद भवकारण जाणी, मारग शुद्ध प्ररूपेजी, वंदे नवि वदावे मुनिने, आप थई निज रूपेजी ॥ ७९ ॥ मुनिगुणरागे पूरा शूरा, जे जे जयणा पाळेजी, ते तेहथी शुभभाव लहीने, कर्म आपणां टाळेजी, आपहीनता जे मुनि भाखे, मानमाकडे छोडेजी, ए दुर्धरव्रत एहनु दाख्यू, जे नवि फूले फोकटेजी ॥ ८० ॥ प्रथम साधु बीजो वर श्रावक, त्रीजो संवेग पाखीजी, ए त्रणे शिवमारग कहीए, जिहां छे प्रवचन साखीजी शेष त्रणे भव मारग कहीए, कुमत कदाग्रह दरियाजी, गृहीयतिलिंगकुलिंगे लखीए, सकल दोषना दरियाजी ॥ ८१ ॥ जे व्यवहार मुगति मारगमां, गुणठाणाने लेखेजी, अनुक्रमे गुण श्रेणीनु चढवु, तेहज जिनवर देखेजी, जे पण द्रव्यक्रिया प्रति पाळे, ते पण सन्मुख भावेजी, शुक्ल बीजनी चन्द्रकला जेम, पूर्ण भावमां आवेजी, ॥ ८२ ॥ ते कारण लज्जादिकथी पण, शील धरे जे प्राणीजी धन्य तेह कृतपुण्य कृतारथ, महा निशीथे वाणीजी, ए व्यवहार नये मन धारो, निश्चय नय मत दाख्युजी, प्रथम अंगमां वितिगिच्छाए भावचरण नवि भाख्युजी ॥ ८३ ॥

---

१ लज्जाथी २ शुद्ध मार्गने उपदेशनारा, साधुपणानी रुचिवाळा अने आत्मनिंदा करनारा ३ हीना छतां शुद्ध साधुनेय वांदे, पण तेमनी पास पोते वंदावे नहीं ४ सुसाधुना अवलम्बनथी शुभ भावने पामी ५ अहंकारथी भरेला कसायमां पोताना हीनता पोते बोलवी ए कई नानुसुनु काम नथी, माटे तेने भारे व्रत कह्यु छे ६ आवा संविग्न पाक्षिक कहेवाय ७ मुक्तिना मुसाफर. ८ कुमति कदाग्रह भर्या—गृहस्थलिंग ब्राह्मणादि यतिलिंगे निह्नवादि अने केवळ वेषधारी साधु ए त्रण कुलिंगी छे ९ गुणठाणाथी ऊंची गुणश्रेणी चढे तेम व्यवहारथाय छे १० पाळे छे ११ मुक्ति सन्मुख गणाय १२ श्रमथी १३ गाथा ३२ मां कहेल. १४ धर्मना फळनो संदेह रहे तो भाव चारित्र न गणाय

ढाळ आठमी

अवर एक भाखे आचार, दया मात्र शुद्धज व्यवहार, जे बोले तेहन उत्थापे, शुद्ध करु हु मुख इम जंपे ॥ ८४ ॥ जिनपूजादिक शुभ व्यवहार, ते माने आरंभ अपार, नवि जाण उतरता नई, मुनिने जीव दया क्यां गई ॥ ८५ ॥ जो उतरता मुनिने नदी, विधि जोगे नवि हिंसा वदी, तो विधि जोगे जिन पूजना, शिव कारण मत भूलो जना ॥ ८६ ॥ विषयारंभ तणो ज्यां त्याग, तेहथी लहीए भवजल ताग, जिन पूजामां शुभ भावथी विषयारंभ तणो भय नथी ॥ ८७ ॥ सामायिक प्रमुखे शुभ भाव, यद्यपि लहीए भवजल नाव, तो पण जिन पूजा ए सार, जिननो विनय कह्यो उपचार ॥ ८८ ॥ आरंभादिक शंका धरी, जो जिनराज भक्ति परिहरी; दानमान वंदन आदेश, तो तुज सघळो पड्यो कलेश ॥ ८९ ॥ वेषरूपथी दीसे सावद्य, अनुबंधे पूजा निर्वद्य, ते कारण जिन गुण बहु मान, ते अवसरे वर्ते शुभध्यान ॥ ९० ॥ जिनवर पूजा देखी करी, भवियण भावे भवजळ तरी, छकायना रक्षक हो वळी, एह भाव जाणे केवली ॥ ९१ ॥ जळ तरतां जळ उपर यथा, मुनिने दया न होय वृथा, पुष्पादिक उपर तिम जाण, पुष्पादिक पूजाने ठाण ॥ ९२ ॥ तो मुनिने नहीं किम पूजना, एम तु शु चिंते शुभ मना, रोगीने औषध सम एह, निरोगी छे मुनिवर देह ॥ ९३ ॥

---

१ वचनबाणोथी मूर्तिनी भावनाने तोडनार स्थानकवासी आदि. २ बोले ३ विधि मुजब उतरवाथी ४ अंत ५ वगेरेथी ६ शुभभाव रूप नाव ७ जिनपूजा ए जिनेश्वरनो भेद विनय उपचारथी कह्यो छे ८ आदिथी वायु कायादिनी हिंसा थाय छे तेमां स्थानकवासी साधु 'करो' कहे तो महापाप लागे ९ पूजा १० परिणामने लावे उत्तरोत्तर ११ शुभभावथी उपजे छे माटे ते पूजा तारनारी छे १२ पण साची दया छे १३ साची दया पूजा करनारनी होय छे १४ साधु मलिन आरंभथी रहित होय छे

ढाळ नवमी

भावस्तव मुनिने भलेरोजी, द्रव्य भले गृही धार, छठे अध्ययने कह्योजी, महानिशीथ मझार, कुमति जिन पूजा विण कवण आधार ॥ ९४ ॥ धर्मी निद्रा फळ दाखियुंजी, द्रव्यस्तवनुं रे सार, स्वर्ग बारमुं गतिनेजी, एम गतान्तिक चार. ॥ सुणो० ९५ ॥ छठ्ठे अंगे द्रौपदीनी, जिन प्रतिमा पूजेय, सूरियाभपरे भावथीजी, एम जिन वीर कहेय ॥ सुणो० ९६ ॥ नारद आवे नवि थईजी ऊभी तेह सुजाण, ते कारण त श्राविकाजी, भाखे आळ अजाण ॥ सुणो० ९७ ॥ जिनप्रतिमा आगळ कह्योजा, शक्रस्तव तेणे नार, जाणे कुण विण श्राविकाजी, एह हृदय विचार ॥ सुणो० ९८ ॥ पूजे जिनप्रतिमा प्रत्येजी, सूरियाभ सुरराय, वांची पुस्तक रत्ननाजी, लई धर्म व्यवसाय ॥ सुणो० ९९ ॥ रायपसेणी सूत्रमाजी, महोटो एह प्रबंध, एह वचन अणमानताजी, करे करमनो बंध ॥ सुणो० १०० ॥ विजयदेव वक्तव्यतानी, जीवाभिगमेरे एम, जो थिति छे ए सुरतणीजी, तो जिनगुणस्तुति केम ? ॥ सुणो० १०१ ॥ सिद्धारथ राये कर्याजी, याग अनेक प्रकार, कल्पसूत्रे एम भाखियुंजी, ते जिनपूजा सार. ॥ सुणो० १०२ ॥ श्रमणोपासकें ते कह्याजी, पहेले अंग मझार, याग अनेरा नवि करेनी ते जाणो निर्धार ॥ सुणो० १०३ ॥ एम अनेक सूत्रे भण्युंजी, जिनपूजा गृहिकृत्य, जे नवि माने ते सहीजी करशे बहु-भव नृत्य ॥ सुणो० १०४ ॥

---

१ द्रव्यस्तव (पूजा) मां सावद्य (पापबंधक) क्रिया छे अने साधु सर्व पापना त्यागी छे २ श्रावकने द्रव्यपूजा अने भावपूजा बने छे ३ दानादिथी अने द्रव्यपूजाथी गृहस्थने ४ द्रौपदी श्राविका होती कहेनारा अज्ञान छे ५ पूजा करवी ए देवोनी परंपरा छे कहो तो जिनेश्वरनीज पूजा केम करे छे ! ६ यागनो अर्थ जिनपूजाज घटे छे ७ श्रीमहावीर महाराजाना मातापिता ८ गृहस्थने धर्मकृत्य तरीके ९ भवोभव रखडशे

ए. १

ढाळ दशमी

अवर कहे पूजादिक ठामे, पुण्यबंध छे शुभ परिणामे, धर्म इहां नवि कोई दीसे, जेम व्रतपरिणामे मन हीसे ॥ १०५॥ निश्चयधर्म न तेणे जाण्यो, जे शैलेशी अंत वखाण्यो, धर्म अधर्म तणो क्षय कारी, शिवसुख दे जे भवजल तारी ॥ १०६ ॥ तस साधन तुं जे जे देखे, निज निज गुणठाणाने लेखे, तेह धर्म व्यवहारे जाणो, कारज कारण एक प्रमाणो ॥ १०७॥ एवंभूत तणो मत भाख्यो, शुद्ध द्रव्यनय एम वळी दाख्यो, निज स्वभाव परणति ते धर्म, जे विभाव ते भावज कर्म ॥ १०८॥ धर्म शुद्ध उपयोग स्वभावे, पुण्य पाप शुभ अशुभ विभावे, धर्म हेतु व्यवहारजे धर्म, निज स्वभाव परणतिनो मर्म ॥ १०९॥ शुभयोगे द्रव्याश्रव थाय, निज परिणामे न धर्म हणाय, यावत् योग क्रिया नहीं थंभी, तावत जीव छे योगारंभी॥ ११०॥ मलिनारंभ करे जे किरिया, असदारंभ तजीने तरिया, विषयकषायादिकने त्यागे, धर्ममति रहीए शुभमार्गे

---

१ पूजामां २ उत्पन्न थये छे ३ क्षय करनार. ४ निश्चयधर्मनु ५ कार्य कारणना अभेदनी अपेक्षाए व्यवहारधर्म ए धर्म कहेवाय छे व्यवहारधर्म ए निश्चयधर्मनुं कारण छे ६ शुद्ध व्यवहार नय ७ पौद्गलिक भावमां रमण करवु ते विभाव अने पोताना स्वभावमां रमण करवु ते धर्म ८ विभाव परिणाम ते भाव कर्म छे शुभ विभावपरिणाम ते भावपुण्य अने अशुभ विभावपरिणाम ते भावपाप छे ९ जिनपूजादि निज स्वभाव परिणति रूप धर्मनो हेतु होवाथी तेने व्यवहारे धर्म कहवो १० पूजादिमां शुभ योगोथी द्रव्याश्रव थाय छे छतां तेथी शुद्धस्वभाव परिणामरूप धर्मने हानि थती नथी, पुष्टि मळे छे, थती हाय तो जिनपूजादि न करात ११ शुभअशुभ योग थवानाज, तो पछी शुभ योगने शुभ मार्गमां प्रवर्तावनार पूजा केम न करवी! १२ पाप बंधाय तेवा आरंभवाळी क्रिया १३ श्रावको जिनपूजादिथी १४ पूजादि शुभ मार्गे

॥ १११ ॥ स्वर्ग हेतु जो पुण्य कहीने, तो सराग संयम पण लीजे, बहुरागे जे जिनवर पूजे, तस मुनिनी परे पातक धूजे ॥ ११२ ॥ भावस्तव एहथी पामीने, द्रव्यस्तव ए तेणे कहीजे, द्रव्य शब्द छे कारण वाची, भ्रमे म भूलो कर्म निकाची ॥ ११३ ॥

ढाळ अगीयारमी

कुमति एम सकल दूरे करी, धारीए धर्मनी रीतरे, हारीए नवि प्रभु बळे थकी, पामीए जगतमां जीतरे, स्वामी सीमंधरा तु जयो ॥ ११४ ॥ भाव जाणो सकल जंतुना, भव थकी दासने राखरे, बोलिया बोल जे ते गणुं, सफल जो छे तुज साखरे ॥ स्वामी० ११५ ॥ एक छे राग तुज उपरे, तेह मुज शिवतरु कंदरे, नवि गणु तुजपरे अवरने जो मिले सुरनर वृंदरे ॥ स्वामी० ११६ ॥ तुज विना में बहु दुःख सह्यां, तुज मिले ते केम होयरे, मेह विण मोर माचे नहीं, मेह देखी माचे सोयरे ॥ स्वामी० ११७ ॥ मनथकी मिलन में तुज कियो, चरण तुज भेटवा साईरे, कीजिए जतन जिन ए विना, अवर न वांछिए काईरे ॥ स्वामी० ११८ ॥ तुज वचन राग सुख आगळे, नवि गणु सुरनर शर्मरे, कोडि जो कपट कोई दाखवे, नवि तजु तोय तुज धर्मरे ॥ स्वामी० ११९ ॥ तु मुज हृदय

---

१ पूजादि द्रव्यस्तवथी कर्मक्षय नथी, पण पुण्य बंधाथी स्वर्ग मळे छे, तेने न मानो तो स्वर्गनुं कारण सराग संयम केम स्वीकारो छो ?

२ व्यवहार अने निश्चयनुं मर्म समजी ३ तो प्रभुना नामना प्रभावे बळथी कोई कुतर्कवादियोथी हार नहीं थाय ४ मारा कहेवामां आपनी साख छे तो मारा ए बोल सफळ ५ भक्तिरूपी वृक्षनुं मूळ छे ६ देव अने मनुष्योनो समूह ७ महाकष्टो तथा ८ नाचवा केकारवा लागे छे ९ एकाग्र मनथी तमारुं ध्यान कर्यु छे ९ दुराग्रह १० देव के मनुष्यना सुख ११ मारा हृदयरूपी पर्वतमां निःस्पृह सिंह समान तु

पद

बिरथा जनम गुमायो हो मूरख, बिरथा जनम गुमायो रंचक सुखरस वश होय चेतन, अपनो मूल नसायो, पाच मिथ्यात्व धार तु अर्ज हु साच भेद नवि पायो हो ॥ मू० १ ॥ कनककामिनी अरु एहथी, नेह निरतर लायो, ताहुथी तु फिरत सुरानो, कनकबीज मानु खायो ॥ मू० २ ॥ जनम जरा मरणादिक दु खमें, काल अनत गमायो, अरहट घटिका जिम कहो याको, अत अज हु नवि आयो हो ॥ मू० ३ ॥ लख चोराशी पहेर्या चोलना, नव नव रूप बनायो, विन समकित सुधारस चाख्या, गिनती कोऊ न गिनायो हो ॥ मू० ४ ॥ एतिपरे नावि मानत मूरख, ए अचरज चित्त आयो, चिदानद ते धन्य जगतमें, जिणे प्रभुसु मन लायो हो ॥ मू० ५ ॥

पद

विषय वासना त्यागो चेतन, साचे मारग लागोरे, जपतप सजम दानादिक सहु, गिनती एक न आवेरे, इद्रिय सुखमें जब लग ए मन, वक्र तुरग जिम धावे रे ॥ विषय० १ ॥ एक एकके कारण चेतन, बहुत बहुत दु ख पावेरे, ते तो प्रगटपणे जगदीश्वर, इणविध भाव लखावेरे ॥ विषय० २ ॥ मन्मथवश मातग जगतमें, परव शता दु ख पावेरे, रसना लुब्ध होय जब मूरख, जाल पडे पिछतावेरे ॥ विषय० ३ ॥ घ्राण सुवास काज सुन भमरा, सपुट माहे बधावेरे ते सरोज सपुट सयुत फुन, करटी के मुख जावेरे ॥ विषय० ४ ॥ रूप मनोहर देख पतगा, पडत दीपमें जाईरे, देखो याकु दु ख कार णमें नयन भये है सहाईरे ॥ विषय० ५ ॥ श्रोत्रेंद्रिय आसक्त

१ थोडु २ पोतानु खोयु ३ आज पण ४ दारडीयानी जेम ५ धतुराना बीज ६ आटलेपाय ७ हाथणी

मिरगला, छिनमें शीर्ष कटावेरे एकएक आसक्त जीव एम नाना विध दुःख पावेरे ॥ विषय० ६ ॥ पंच प्रबळ वर्ते नित जाकु, ताकु कहा ज्यु कहीएरे, चिदानंद ए वचन सुणीने, निज स्वभावमें रहीएरे ॥ विषय० ७ ॥

पद

कथनी कथे सहु कोई, रहणी अति दुर्लभ होई, शुक रामको नाम वखाणे, नवि परमारथ तस जाणे, यांविध भणी वेद सुणावे, पण अकल कळा नवि पावे ॥ कथनी० १ ॥ षट्त्रीस प्रकारे रसोई, मुख गणता तृप्ति न होई, शिशु नाम नहीं तस लेवे, रसस्वादत सुख अति लेवे ॥ कथनी० २ ॥ बंदीजन कडखा गावे, सुणी शूरा शीश कटावे, जब रुंडमुंडता भासे, सहु आगळ चारण नासे ॥ कथणी० ३ ॥ कहणी तो जगत मजूरी, रहणी है बंदी हजूरी कहेणी साकर सम मीठी, रहेणी अति लागे अनीठी ॥ कथनी० ४ ॥ जब रहणीका घर पावे, कथनी तब गिणती आवे, अब चिदानंद इम जोई, रहणीकी सेज रहे सोई ॥ कथनी० ५ ॥

साधु वंदनी सज्झाय

इंद्रिय दमीयेरे मन संयम धरे चरण करण गुण ज्ञान, बाह्याचरणेरे देखी न राचीये भगवति सूत्र प्रमाण, ते मुनि वंदोरे शुभ समता धरा ॥ १ ॥ वस्त्र न धोवे रे रंगे नवि कदा आचारांग मझार, प्रवचन मतिरे जे मुनि चालता तेहनी जाऊ बलिहार ॥ ते मुनि० २ ॥ जेम तरु फूलेरे भमरो बेसता न करे कांई उपघात, तेम मुनि जावेरे आहार गवेषवा दश वैकालिक वात ॥ ते मुनि ३ ॥ आहार ते

१ रणगीतो सांभळी २ मुनि ना गुणोनी ३ जीते ४ आत्मज्ञान विना

लावी नीरस भोगवे, निम दर माहेरे साप, अनुत्तरोववाइ वन्नो धरणञ्यो नमता जायेरे पाप ॥ ते मुनि० ४ ॥ षटविह भाख्या रे पन्नवणा पदे, बोले मुनि निर्दोष, एहवा मुनिने भावे वदीये, तो होय समकित पोष ॥ ते मुनि० ५ ॥ पहीय प्रमादीरे मुनि न लेवे लीये, जुओ चारण मुनि दोय, लब्धि प्रयुंजीरे जगतीरथ करे तेहनो महिमारे जोय ॥ ते मुनि० ६ ॥ लवण न मूकेरे मर्यादा सही, जीवाभिगम तरग, श्रीजिन वचनेरे ते मुनि वादता वाधे सयम रग ॥ ते मुनि० ७ ॥ निमल हीमेरे सोना तणी परे नवविध मह्ल सुहाय, पुण्य अंकुरा रे दर्शन पालवे अमृत वदेरे पाप ॥ ते मुनि० ८ ॥

क्रोधनी सज्झाय

कडवा फल छे क्रोधना, ज्ञानी एम बोले रीस तणो रस जाणीए हलाहल तोले ॥ क० १ ॥ क्रोधे क्रोड पूर्वतणुं, सयम फल जाय, क्रोधसहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय ॥ क० २ ॥ साधु घणो तपीयो हतो, धरतो मन वैराग, शिष्यना क्रोध थकी थयो चड कोशियो नाग ॥ क० ३ ॥ आग ऊठे जे घर थकी, ते पहेलु घर बाळे, जळनो जाग जो नवि मळे, तो पासेनु घर बाळे ॥ क० ४ ॥ क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवळ नाणी, हाण करे जे हेतनी, जाळवजो एम जाणी ॥ क० ५ ॥ उदयरत्न कहे क्रोधने, काढजो गले साही, काया करजो निर्मळी, उपशम रस नाही ॥ क० ६ ॥

---

१ फूलने पीडा २ स्वाद लीधा वगर ३ अनुत्तरोपपातिक सूत्रमां सर्गोमूर्ति धन्नाभानु वर्णन छे ४ सत्या, मृषा, सत्यामृषा, असत्यामृषा ए चार प्रकारमांथी सत्या अने असत्यामृषा एम बे निर्दोष भाषाओ बोले ५ लब्धिधारी मुनि. ६ लब्धिना प्रयोगथी

माननी सज्झाय

रे जीव मान न कीजीए, माने विनय न आवेरे, विनय विण विद्या नहीं, तो किम समकित पावे रे ॥ रे जीव० १ ॥ समकित विना चारित्र नहीं, चारित्र विण नही मुक्तिरे, मुक्तिना सुख छे शाश्वता, ते केम लहिये जुक्तिरे ॥ रे जीव० २ ॥ विनय वडो संसारमा, जे गुण माहे अधिकारीरे, माने गुण जाये गळी, चित्ते जुओ विचारी रे ॥ रे जीव० ३ ॥ मान कर्युं जो रावणे ते तो रामे मार्योरे, दुर्योधन गर्व करा, अंते सवि हार्यो रे ॥ रे जीव० ४ ॥ सूका लाकडा सारिखो, दुःखदायी ए खोटोरे, उदयरत्न कहे माननें, देजो देशवटोरे ॥ रे जवि० ५ ॥

मायानी सज्झाय

समकितनुं मूळ जाणियेजी, सत्य वचन साक्षात्, साचामा समकित वसेजी, मायामा मिथ्यात्वरे, प्राणी म करो माया लगार ॥ १ ॥ मुख मीठो जूठो मनेजी, कूड कपटनो रे कोट, जीभे तो "जी जी" करेजी, चित्तमा ताके चोटरे ॥ प्राणी० २ ॥ आप गरजे आघो पडेजी, पण न धरे विश्वास, मन न छडे मन तणोजी, ए मायानो पाश रे ॥ प्राणी० ३ ॥ जेहशुं बांधे प्रीतडीजी, तेहशुं रहे प्रतिकूळ, नवि मूके मन आमळोजी ए मायानुं मूळ रे ॥ प्राणी० ४ ॥ तप कीधो माया करीजी, मित्रशु राख्यो रे भेद मल्ली जिनेश्वर जाणजोजी ते पाम्या स्त्रीवेदरे ॥ प्राणी० ५ ॥ उदयरत्न कहे सामळोजी, मूकी मायानी बुद्ध, मुक्तिपुरी जावा तणोजी, ए मारग छे शुद्ध रे ॥ प्राणी० ६ ॥

लोभनी सज्झाय

तमे लक्षण जो जो लोभना रे, लोभे मुनिजन पामे क्षोभनारे लोभे डाह्या मन डोल्या करेरे, लोभे दुर्घट पथ सचरे रे ॥ तमे

१ ॥ तजे लोभ तेहना लेउ भामणारे, वळी पाय नमीने दव खामणारे, लोभे मर्यादा न रहे केहनीरे, तमे संगत मूको तेहनी रे ॥ तमे० २ ॥ लोभे घर मूकी रणमा मरेरे, लोभे उच ते नीचुं आदरेरे, लोभे पाप भणी पगला भरेरे, लोभे अकार्य करता न ओसरे रे ॥ तमे० ३ ॥ लोभे माड़ न रहे निर्मलु रे, लोभे सगपण नासे वेगलुं रे, लोभे न रहे प्रीतिने पावटुंरे, लोभे धन न मळे एकटु रे ॥ तमे० ४ ॥ लोभे पुत्र प्रत्ये पिता हणे रे, लोभे हत्या पातक नवि गणेरे, ते तो दाम तणे लोभे करी रे, उपर मणिधर थाय ते मरी रे ॥ तमे० ५ ॥ जोता लोभनो थोभ दीसे नहीं रे, एवु सूत्र सिद्धांते पणु नहीं रे, लोभे चक्री सुभूम नामे हुओरे, ते तो समुद्र माहे डूबी मूओरे ॥ तमे० ६ ॥ एम जाणी लोभने छडज्योरे, एक धर्मनु ममता मडज्योरे, कवि उदयरत्न भाखे मुदारे, वदु लोभ तजे तेहने सदारे ॥ तमे० ७ ॥

सहजानंदीनी सज्झाय

(बीजी अशरण भावना-ए देशी)

सहजानंदीरे आतमा, सूतो काइ निश्चिंतरे, मोह तणा रणीए भमे, जाग जाग मतिमंतरे, लूंटे जगतना जंतरे, नाखी वाक अत्य रे, नरकावास ठवंत रे, कोइ विरला उगरंतरे ॥ सहजा० १ ॥ रा द्वेष परिणति भजी, माया कपट करायरे, काशकुसुम परे जावरे फोगट जनम गमायरे, माथे भय जमरायरे, श्यो मन गर्व धराय सहु एक मारग जायरे, कोण जग अमर कहायरे ॥ सहजा० २ रावण सरिखारे राजवी, नागा चाल्या विण धागरे, दश माथा र रडवड्या, चांच दिए शिर कागरे, देव गया सवि भागरे, न रा मानतो यागरे, हरि हाथे हण्यो नागरे, जो जो भाईओना रागरे॥सहज रे ॥ केइ चाल्या केइ चालशे, केता चालण हारदे मारग वहेरे

नित्य प्रत्ये, जोता लम्र हजारेरे, देश विदेश सधारेरे, ते नर इण ससारेरे, जाता जम दरवारेरे, न जुग धार कुवारेरे. ॥ सहजा० ४ ॥ नारायणपुरी द्वारिका, वन्ती मेली निराधारे, रोता रणमा ते एकला, नाथ देव आकारारे विशा तरुछाया आवासेरे, जल जल करी गयो सासेरे, बलभद्र सरोवर छासेरे, मुणी पाडव शिववासेरे ॥ सहजा० ५ ॥ गाजी गार्जने बोलता, करता हुकम हेरानरे, पोढ्या अग्निमा एकला, काया राख समानरे ब्रह्मदत्त नरक प्रयाणरे ए ऋद्धि अथिर निदानरे, जेवु पीपळपानरे, म धरो जुठ गुमानरे ॥ सहजा० ६ ॥ चाळेसर विना एक घडी, नवि सहातु लगाररे, ते विना जन्मारो वही गयो, नहीं कागद समाचाररे, नहीं कोई कोईनो ससाररे, स्वार्थीओ परिवाररे, माता मरुदेवी साररे, पहोता मोक्ष मोझाररे, ॥ सहजा० ७ ॥ मात पिता सुत बाधवा, अधिक राग विचाररे, नारी असारी रे चित्तमां, वळे विष देती भरताररे, नृप विन धर्म आधाररे, सज्जन नेह निवाररे ॥ सहजा० ८ ॥ हसी हर्मी देतारे तालीयो, शय्या कुसुमनी साररे, ते नर अते माटी थया, लोक चणे घरबाररे घडता पात्र कुभार रे, एहवु जाणी असाररे, छोड्यो विषय विकाररे, धन्य तेहनो अवताररे ॥ सहजा० ९ ॥ थावच्चासुत शिववर्या, वळी एआची कुमाररे, धिक्‌धिक् विषयारे जीवने, लई वैराग्य रसालरे, मेहली मोह जजाळरे घर रमे केवळ बाळरे, धन्य करकडू भूपालरे ॥ सहजा० १० ॥ श्रीशुभविजय सुगुरु लही, धमरयण धरो टेकरे, वीरवचनरस रेलडी, धारो चतुर विवेकरे, न गमे ते नर भेकरे, धरता धर्मनी टेकरे, भवजल तरीया अनेकरे ॥ सहजा० ११ ॥

अढार नातरानी सज्झाय

(एकवीशनी देशी)

मथुरा नगरी [illegible] वसे, मनहरणीरे,

रूपे, तिण जायोरे, युगल रूप सुत ने सुता, नाम दीधोरे, कुबेरदत्त कुबेरदत्ता ॥१॥ (उथलो) मुद्रालंकृत बेहु बींटी युगल पेटीमा ठवे, एक रात्रि माही नदी प्रवाहे, जमुना जळमा वहा सौरियपुर प्रमाण शेठे, समही व्हेंची करी, एक पुत्र ने पुत्रीय बीजो, राखवा हरखे करी २ बिहु शेठेरे, ओच्छव कीयो अति घणो, कर्मयोगेर, मळ्या विवाह विहुँ तणो मारी पासारे, रमता विहुं मुद्रा मिली, निज वरा जाणीने थइ आकृती ३ (उथलो) आकुळी थई तब भगिनि, विषय विरक्त ते थइ, साध्वी पासे ग्रही संयम, अवधिनाणी सा थई व्यवसाय काजे कुबेरदत्त ए, अनुक्रमे मधुरा गयो वळी कर्म योगे वेश्या भोगे, विलसता अंगज थयो ४ (चाल) निज बंधवे प्रतिबोधवाने साहुणी, वेश्या घरे, आर्याने सा साहुणी, धर्मशास्त्र पारणाने पासे रही, हुलरावरे, बाळकने मा इम कही ५ (उथलो) इम कही पुत्र भत्रीज बंधव, देवर काको पौतरो, इम नातरा छ छ साथे, रुदन करती उच्चरो, पति पिता बंधव जेठ ससरो, पितरिये इणी परे कही, कुबेरदत्त सुभाषयो, षट् नातरा इणी परे लहे ६ (चाल) भोनाईरे, शोक माता सासु वहु वडी मातारे, इणी परे षट् सम्बन्ध लहु, तब भाषरे, साध्वीने वेश्या इस्यु असमंजसरे, तुं भाखे छ विद्यु. ७ (उथलो) किंतु भाव लाज न राखे, साध्वी वेश्याने कहे मनुष माहि ठविय मेल्या, तेह बीतक सब कहे, इम सुणीय गणि लीये संयम, पार पामी भव तणो साध्वी इम उपदेश दीधे उपकार अति घणो ८ (चाल) सुणी प्रभावरे इणी परे सहु संसार एकेकरे, सगपण दश अठ इम कह्या, विहु जननारे गिणता बहुतर थया ९ (उथलो) थया बहुतर इम पहुत्तर, कहे जंबुकुमार समार विषय विकार गिरुआ, ए रतना भंडार ए, तेह सुणी संयम प्रभवो, सुगुण तिणपरे उल्लसे कविराज धीर विमळ सेवक, विमल इम उपदिसे १०

श्रीदेवानदानी सज्झाय

(हो कुंयु जिन मनडुं किम ही न बाझे–ए दशी)

जिनवर रूप देखी मन हरखी, स्तनसें दूध झराया, तब गौतमकुं भया अचभा, प्रश्न करनकु आया हो गौतम ए तो मेरी अवा ॥ १ ॥ तस कूखे तुम काहेको वसीया, कवण कीया एण कर्म तब श्रीविर जिणद एम बोले, एई कीया एणे कर्म ॥ हो गोतम० २ ॥ त्रिसलादे देराणी हुती, देवानदा जेठाणी विषय लोभ करी काइ न जाण्यो, कपट वात मन आणी ॥ हो गौतम० ३ ॥ देराणी की रत्न दावडी, बहुला रत्न चोराया झगडो करता न्याय जब हुवो, तब कछु नाणा पाया ॥ हो गौतम० ४ ॥ ऐसा श्राप दीया देराणी, तुज सतान मुज होजो, कर्म आगळ काइ न चाले, इद्र चक्रवर्ति जोजो ॥ हो गौतम० ५ ॥ भरतराय जब ऋषभने पूछे, एहमा कोइ जिणदा, मरीचि पुत्र त्रिदडी तेरो, चोविसमो जिणदा ॥ हो गौतम० ६ ॥ कुलनो गर्व कियो में गौतम, भरतराय जब वद्या, मन वचन कायाए करीने, हरख्यो अति आनदा ॥ हो गौतम० ७ ॥ कर्म सजोगे भिक्षुक कुळ पाम्या, जन्म न होवे कबहू, इद्र अवध जोता अपहर्यो, देव मुनगम बाहे ॥ हो गौतम० ८ ॥ ब्यासी दिवस तिहा कने वसिया, हरिण-गमषि जब आया, सिद्धारथ त्रिशला देराणी, तस कूखे छटकाय ॥ हो गौतम० ९ ॥ सिद्धारथ त्रिशला देराणी, अच्युत देव लोक जाशे, बीजे अंगे आचारागे, ते सूत्रे कहेवाशे ॥ हो गौतम० १० ॥ ऋषभदत्तने देवानदा, लेशे सजम भार, तब गौतम ए मुक्ते जाशे, भगवति सूत्र विचारा ॥ हो गौतम० ११ ॥ तप गच्छ श्रीहीरविजय सूरि, दीयो मनोरथ वाणी, सफळचद प्रभु गौतम पूछे, उलट मनमा आणी ॥ हो गौतम० १२ ॥

श्री मेतारज मुनिनी सज्झाय

(मन मोहन जिनजी मीठी ताहरी वाण – ए देशी)

सयम गुणना आगरुजी, पचमहाव्रत धार मासखमणने पार णेजी, राजग्रही नगरी मझार, मेतारज मुनिवर, धनधन तुम अव तार ॥१॥ सोनीने घेर आवीयाजी, मेतारज ऋषीराय, जवला घडतो उठीयोनी, वंदे मुनिना पाय ॥ मतारज० २ ॥ आज फळ्यो घर आगणोजी, विण काळे सहकार, ल्यो भिक्षा छे सूझतीनी, मोदक तणो ए आहार ॥ मेतारज० ३॥ क्रौंच जीव जवला चर्योनी, वहोरी चाल्या ऋषिराज, सोनी मन शका थईजी, साधु तणा ए काज ॥ मेतारज० ॥ ४ ॥ रीस करी ऋषिने कहेजी, धो मुज जवला आज वाधर शीशे बांधीया जी, तडके राख्या मुनिराज ॥ मेतारज० ५ ॥ फटफट फुटे हाडकाजी, तदवद तूटे चाम, सोनीडे परिसह कर्योजी, साधु राख्यो मन ठाम ॥ मेतारज० ६ ॥ एहवा पण मोटा जतिजी मन न आणे रोष, आतम निंदे आप णोजी, सोनीनो श्यो दोष ॥ मेतारज० ७ ॥ गज सुकुमाल सता पियाजी, बाधी माटीनी पाळ, खेर अगारा शिरे धर्योनी, मुगते गया तत्काल ॥ मेतारज० ८ ॥ वाघण शरीर वळुरीयुजी, साधु सुकोमल सार, केवळ लही मुगत गयाजी, एम अरणिक अणगार॥ मेतारज० ९ ॥ पापी पालके पीलियाजी, खधक सूरिना शिष्य, अवड चेला पाचशेजी, नमो नमो ते मुनि शिष्य ॥ मेतारज० १०॥ एहवा पुरुष सभारताजी, मेतारज ऋषिराय, अतगड हुआ केव ळीनी, वदे मुनिना पाय ॥ मेतारज ० ११ ॥ भारी काष्ठनी स्त्रीए तिहानी, नाखी नारवी तेणी वार, धबके पखी जागीयोनी, जवला पाढ्या तिणे सार ॥ मेतारज ० १२ ॥ देखी जवला वींटमाजी, मनमा लाज्यो सोनार, ओघो मुहपत्ति साधुनानी, लेई थयो अणगार ॥ मेतारज ०१३॥ आतम तार्यो आपणोजी, थिर करी मन वच काय, रगे भणेजी, साधु तणी ए सज्झाय ॥ मेतारज ०१४ ॥

श्रीखधक मुनिनी सज्झाय

नमो नमो खधक महामुनि, खधक क्षमाभडाररे, उग्र विहारे मुनि विचरता, चारित्र खड्गनी धाररे ॥ नमो नमो ०१ ॥ समीत गुप्तिने धारतो, जितशत्रु राजानो नदरे, धारणी उदरे जन्मीयो दर्शन परमानदर. ॥ नमो ०२ ॥ धर्मघोष मुनि देशना, पामीयो तेणे प्रतिबोधरे, अनुमति लेई मात तातनी, कर्मशु युद्ध थई योद्धोरे ॥ नमो०३ ॥ छठ्ठ अठ्ठम आदि घणा, दुक्कर तपे तनु शोषेरे रातदिवस परिसह सहे, तो पण मने नही रोषरे ॥ नमो०४ ॥ दव दीधा खीजडा देहमा, चालता खडखडे हाडरे, तो पण तप तपेरे आकरा, जाणतो अथिर ससाररे ॥ नमो०५ ॥ एक समे भगिनीपुरी प्रत्ये, आवीया साधुजी सोयरे, गोखे बेठी चिंते बेनडी, ए मुज बधव होयरे. ॥ नमो०६ ॥ बेनने बधव साभर्यो, उलट्यो विरह अपाररे, छाती लागी छे फाटवा, नयणे वहे नीरधाररे ॥ नमो०७ ॥ राय चिंते मनमा इस्यू ए कोई नारीनो जाररे, सेवकने कहे साधुनी, लावोनी खाल उताररे ॥ नमो ०८ ॥

ढाळ बीजी

रायसेवक कहे साधुने, म्हाळडी जीवथी हणगुरे, अम ठाकुरनी एह छे आणा, ते अमे आन करगुरे, अहो अहो साधुजी समता धर्या ॥ १ ॥ मुनिवर मनमाही आनंद्या, परिसह आव्यो जाणीरे, खपावानो अवसर आवो, फरी नहि आवे प्राणीरे ॥ अहो० २ ॥ ए तो वळी सखाई मिळ्यो, भाइ थकी भलेरोरे, प्राणी कायरपणु परिहरजे, जिम न थाय भव फेरोरे ॥ अहो० ३ ॥ राय सेवकने मुनिवर कहे, कठण फरस मुज कायारे, बाधा रखे तुम हाथे थाये, कहो तिम रहीए भायारे ॥ अहो० ४ ॥ चार शरणा चतुर करीने, भव चरमावर्तेरे, शुक्ल ध्याननु ध्यान लगायु,

चोसिरावतरे ॥ अहो० ५ ॥ चड चड चामडी तेह उतारे, मुनि समतारस झीलेरे, क्षपक श्रेणी आरोहण करीने, करम कठणने पीलेरे ॥ अहो० ६ ॥ चोथुं ध्यान धरता अते, केवल लई मुनि सिध्यारे, अजर अमर पद मुनिवर पाम्या, कारज सघळा सिध्यारे ॥ अहो० ७ ॥ हवे मुहपत्ति लोही खरडी, पखीडे आमिष जाणीरे, राजद्वारे लेई नाखी, सेवके लीधी ताणीरे ॥ अहो० ८ ॥ सेवक मुखथी वातज जाणी, देखे मुहपत्ति दीठीरे, निश्चे भाई हणीओ जाणी, हैये ऊठी अगीठीरे ॥ अहो०९ ॥ विरह विलाप करे रायराणी, साधुनी समता वखाणेरे, अथिर ससार स्वरूप तव जाणी, सजम ले रायराणीरे ॥ अहो ०१० ॥ आलोई पातक सवि छडी, करम कठिनने निर्धारे, तप दुःकर करी काया गाली, शिवसुख ल्हे आनदांरे. ॥ अहो ०११॥ भवियण एहवा मुनिवर पदो, मानव भव फळ लीनेरे, करजोडी मुनि मोहन विनवे, सेवक सुखिया कीनेरे ॥ अहो० १२ ॥

महोपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजीकृत आठ योगदृष्टि विचार

ढाळ पहेली–मित्रा दृष्टि विचार

शिवसुख कारण उपदिशी, योगतणी अड दिट्ठीरे, ते गुण थुणी जिन वीरनो, करशु धर्मनी पुट्ठीरे, वीर जिणेसर देशना ॥ १ ॥ सघन अघन दिन रयणीमा, बाल विकल अनेरारे अरथ जोये जिम जूजूआ, ओघ नजरे तिम फेरारे ॥ वीर०२ ॥ दर्शन जे हुआ जूजूआ, ते ओघ नजरने फेरेरे भेद थिरादिक दृष्टिमा, समकित दृष्टिने हरेरे ॥ वीर० ३ ॥ दर्शन सकलना नय ग्रहे, आप रहे निज भावेरे, हितकरी जनने सजीवनी, चारो तेह चरावेरे ॥ वीर० ४ ॥ दृष्टि [illegible] मुक्तिप्रयाण न भाँजेरे रयणी शयन जिम श्रम [illegible] तेम छाजेरे ॥ वीर०५ ॥ एह प्रसगथी में कह्यु, [illegible], जिहा मित्रा तिहा बोध जे, ते तृण अगनिस्यो [illegible] ॥ व्रत पण यम इहा सपजे, खेद नहि शुभ

कार्नेरे द्वेष नहि थयो अधरचयु, एह गुण थगे विरानेरे. ॥ वीर०७ ॥ योगना बीज इहां महे जिनवर शुद्ध प्रणामोरे, भावाचारज सेवना, भवउद्वेग सुठामेरे, ॥ वीर०८ ॥ द्रव्य अभिग्रह पालवा, औषध प्रमुखने दानेरे, आदर आगम आदरी, लिखनादिक बहु मानेरे ॥ वीर०९ ॥ लेखन पूजन आपवु, श्रुतवाचना उद्ग्राहोरे, भाव विस्तार सज्झायथी चिंतन भावन चाहोरे ॥ वीर०१० ॥ बीज कथा भली सांभळी, रोमांचित हुए देहरे, एह अवंचक योगथी, लहिये धरम सनेहरे ॥ वीर०११ ॥ सद्गुरु योग वंदन क्रिया, तेहथी फल होय जेहोरे, योग क्रिया फळ भेदथी, त्रिविध अवंचक एहोरे. ॥ वीर०१२ ॥ चाहे चकोर ते चन्द्रने, मधुकर मालती भोगीरे तिम भवि सहज गुणे होय, उत्तम निमित्त संयोगीरे. ॥ वीर०१३ ॥ एह अवंचक योग तो, प्रगटे चरमावर्तेरे साधुने सिद्धदशा समु बीजनुं चित्त प्रवर्तेरे ॥ वीर०१४ ॥ करण अपूरवना निकटथी, ज पहेलु गुणठाणुरे, मुख्यपणे ते इहां होय, सुजस विलासनु टाणुरे. ॥ वीर०१५ ॥

ढाळ बीजी–तारादृष्टि विचार

(मन मोहन मेरे–ए देशी)

दर्शन तारा दृष्टिमां, मन मोहन मेरे, गोमय अग्निसमान, मन मोहन मेरे ॥ शौच संतोष ने तप भलां मन० सज्झाय ईश्वर ध्यान मन० १ ॥ नियम पंच इहां संपजे मन० नहि क्रिया उद्वेग मन० ॥ जिज्ञासा गुण तत्त्वनी मन० पण नहि हठ टेक मन० २ ॥ एह दृष्टि होय वरतता मन० योगकथा बहु प्रेम मन० ॥ अनुचित तेह न आचरे, मन० वाळ्यो वळे जिम हेम मन० ३ ॥ विनय अधिक गुणीनो करे मन०, देखे निज गुण हाण मन० त्रास धरे भवभय थकी मन० भव माने दुःखखाण ॥ मन० ४ ॥ शास्त्र घणा मति थोडली, मन० शिष्ट कहे ते प्रमाण मन०, सुजश लहे एह भावथी मन० न करे जूठडफाण ॥ मन० ५ ॥

ढाळ त्रीजी-बलादृष्टि विचार

(प्रथम गोवालिया तणे भवेजी-ए देश।)

त्रीजी दृष्टि बला कहीजी, काष्ठ अगनिसम बोध, क्षेप नहि आसन सधेजी, श्रवण समीहा शोधरे जिनजी! धन धन तुज उपदेश ॥ १ ॥ तरुण सुखी स्त्री परिवर्योजी, जिम चाहे सुर गीत, सांभळवा तिम तत्त्वनेजी ए दृष्टि सुविनितरे ॥ जि० ध० २ ॥ सेर ए बोध प्रवाहनीजी ए विण श्रुत थलकूप, श्रवण समीहा ते किसीजी? शयित सुणे जिम भूपरे ॥ जि० ध० ३ ॥ मन रीझे तनु उल्लसेजी, रीझे बूझे एक तान, ते इच्छा विणु गुणकथाजी, बहेरा आगळ गानरे ॥ जिन० ध० ४ ॥ विघन इहां प्राये नहिजी, धर्म हेतुमांहे होय, अनाचार परि हारथीजी, सुजश महोदय होयरे ॥ जि० ध० ५ ॥

ढाळ चोथी — दीप्रादृष्टि विचार

(झांझरीया मुनिवर धन धन तुम अवतार-ए देशी)

योगदृष्टि चोथी कहीजी, दीप्रा तिहां न उत्थान, प्राणायाम ते भावथीजी, दीप प्रभा सम ज्ञान ॥ मनमोहन जिनजी! मीठी ताहरी वाण ॥ १ ॥ बाह्य भाव रेचक इहांजी, पूरक अंतर भाव, कुंभक थिरता गुणे करीजी, प्राणायाम स्वभाव ॥ मन० २ ॥ धर्म अर्थे इहां प्राणनेजी, छांडे पण नहि धर्म, प्राण अर्थ संकट पडेजी, जुओ ए दृष्टिनो मर्म ॥ मन० ३ ॥ तत्त्वश्रवण मधुरोदकेजी, इहां होय बीज प्ररोह, खार उदक सम भव त्यजेजी, गुरुभक्ति अद्रोह ॥ म० ४॥ सूक्ष्मबोध तो पण इहांजी, समकित विण नवि होय, वेद्य संवेद्य पदे कह्योजी, ते न अवेद्ये जोय ॥ मन० ५ ॥ वेद्यबंध शिवहेतु छे जी, संवेदन तस नाण, नय-निक्षेपे अति भलुंजी, वेद्य संवेद्य प्रमाण ॥ मन० ६ ॥ ते ते पद मांहि-विभेदथीजी, छेही पाप-प्रवृत्ति, तप्त लोह पद धृति समीजी, तिहां होय अंते निवृत्ति

॥ मन० ७ ॥ एह थकी विपरीत छे जी, पद जे अवेद्य सवेद्य, भव अभिनंदी जीवनेनी, ते होय वज्र अभेद्य ॥ मन० ८ ॥ लोभी कृपण दयामणोजी, मायी मच्छर ठाण भय अभिनंदी भय भर्योनी, अफळ आरंभ अयाण ॥ मन० ९ ॥ एह्वा अवगुणवंतनुंजी, पद जे अवेद्य कठोर, साधु संग आगम तणोजी, ते जीते घरि जोर ॥ मन० १० ॥ ते जीते सहजे टळेजी, विषम कुतर्क प्रकार दूर निकट हाथी हणेनी, जिम ए बठर विचार ॥ मन० ११ ॥ हुं पाम्यो संशय नहींजी, मूरख करे ए विचार, आलमुं आ गुरुशिष्यनानी ते तो वचन प्रकार ॥ मन० १२ ॥ धीजे ते पति आवबुंजी, आप मते अनुमान, आगम ने अनुमानथीनी, साचु लहे सुज्ञान ॥ मन० १३ ॥ नहीं सर्वज्ञ जूजूआजी, तेहना जे वळी दास, भक्ति देवनी पण कहीनी, चित्र अचित्र प्रकाश ॥ मन० १४ ॥ देव संसारी अनेक छे जी, तेहनी भक्ति विचित्र, एक राग पर द्वेषथीजी, एक मुक्तिनी अचित्र ॥ मन० १५ ॥ इंद्रियार्थ गत बुद्धि छे जी, ज्ञान छे आगम हेत, असमोह शुभ कृति गुणेनी, तेणे फलभेद संकेत ॥ मन० १६ ॥ आदर क्रिया-रति घणीजी, विघ्न टळे मिळे लच्छि जिज्ञासा बुध- सेवनानी, शुभ कृति चिन्ह प्रत्यच्छि ॥ मन० १७ ॥ बुद्धि क्रिया भवफल दिएजी, ज्ञान क्रिया शिव अंग, असमोह क्रिया दिएनी, शीघ्र मुक्ति फळ चंग ॥ मन० १८ ॥ पुद्गल रचना कारमीनी, तिहां जस चित्त न लीन एक मार्ग ते शिव तणोजी, भेद लहे जग दीन ॥ मन० १९ ॥ शिष्य भणी जिन देशनाजी, कहे जन परिणति भिन्न कहे मुनिनी नय देशनानी, परमारथथी अभिन्न ॥ मन० २० ॥ शब्द भेद झगडो किश्योनी, परमारथ जो एक। कहो गंगा कहो सुरनदीजी, वस्तु फिरे नहीं छेक ॥ मन० २१ ॥ धर्म क्षमादिक पण मिटेनी, प्रगटे धर्म संन्यास, तो झगडा झाँटा तणोजी, मुनिने कवण अभ्यास ? ॥ मन० २२ ॥ अभिनिवेश सघळो त्यजीजी, चार लही जेणे दृष्टि। ते लहेशे हवे पाचमीनी, सुजश अमृत घन वृष्टि ॥ मन० २३ ॥

ढाळ पाचमी–स्थिरा दृष्टि विचार

(धन धन सप्रति साचो राजा–ए देशी)

दृष्टि थिरा माँहि दर्शन नित्ये, रत्नप्रभा सम जाणोरे, भ्रांति नहीं वळी बोध ते सूक्ष्म, प्रत्याहार वखाणोरे ॥ १ ॥ ए गुण वीरतणो न विसारु सभारु दिनरातरे, पशु टाळी सुररूप करे जे, समकितने अवदातरे ॥ ए गुण० २ ॥ बाल धूलि घर लीलासरिखी, भव–चेष्टा इहा भासेरे, ऋद्धि वृद्धि घटमा सवि प्रगटे, अष्ट महासिद्धि पासेरे ॥ ए गुण० ३ ॥ विषय विकारे न इंद्रिय जोडे, ते इहा प्रत्याहारोरे, केवल ज्योति ते तत्त्व प्रकाशे, शेष उपाय असारोरे ॥ ए गुण० ४ ॥ शीतल चदनथी पण उपन्यो, अग्नि दहे जिम वननेरे, धर्मेजनित पण भोग इहा तिम, लागे अनिष्ट ते मननेरे ॥ ए गुण० ५ ॥ अंशे होय इहा अविनाशी, पुद्गल जाळ तमासीरे, चिदानदघन सुजस विलासी, किम होय जगनो आशीरे ॥ ए गुण० ६ ॥

ढाळ छट्ठी–कांता दृष्टि विचार

(भोळीडा हसारे विषय न राचीए–ए देशी)

अचपल रोग रहित निष्ठुर नहि, अल्प होय दोय नीति, गध ते सारोरे कांति प्रसन्नता, सुस्वर प्रथम प्रवृत्ति । धन धन शासन श्री जिनवरतणु ॥ १ ॥ धीर प्रभावीरे आगळे योगथी, मित्रादिक युत चित्त, लाभ इष्टनोरे द्वद्व अधृष्यता, जनप्रियता होय नित्य ॥ धन० २ ॥ नाश दोषनोरे तृप्ति परम लहे, समता उचित सयोग, नाश वयरनोरे बुद्धि ऋतभरा ए निष्पन्न योग ॥ धन० ३ ॥ चिन्ह योगनारे जे पर ग्रथमा, योगाचारय दिठ्ठ, पचम दृष्टि थकी सवि जोडीए, एहवा तेह गरिठ्ठ ॥ धन० ४ ॥ छट्ठी दिठ्ठीरे हवे कांता कहु, तिहा ताराभ–प्रकाश, तत्त्वमीमासारे दृढ होय धारणा, नहीं अन्य श्रुतवास ॥ धन० ॥ मन महिलानुरे वहाला उपरे, बीजा काम करत, तिम श्रुत

इहा, वासकने न गवेंषेजी, आमगे वर्जित थळी एहमा, किरिया निजगुण लेखेजी, शिक्षाथी निम रतन नियोजन, दृष्टि भिन्न विम वहोजी, ताम नियोग करण अपूर्वे, लहे मुनि केवलगेहाजी ॥ २ ॥ क्षीण दोप सर्वज्ञ महामुनि, सर्वलधिफ्लभोगेजी, पर उपगार करी शिव सुख ते, पामे योग अयोगजी, सर्व शत्रु क्षय, सर्व व्याधिलय, पूरण सर्व समीहानी, सर्व अरथ योगे सुख तेहथी, अनत गुणह निरीहानी ॥ ३ ॥ ए अडदिट्ठी कही संक्षेपे, योगशास्त्र सकेतेजी कुलयोगीने प्रवृत्त चक्र जे, तेह तणे हित हेतेजी, योगी कुळे जाया तस धर्मे अनुगत ते कुळ-योगीनी, अद्वेपी गुरुदेव द्विजप्रिय, दयावत उपयोगीनी ॥ ४ ॥ सुश्रूपादिक अड गुण सपूरण, "प्रवृत्तचक्र" ते कहीयेजी, यमद्वय लाभी परदुग अर्थी, आद्य अवचक लहीयेनी चार अहिंसादिक यम इच्छा, प्रवृत्ति थिर सिद्धि नामजी, शुद्ध रुचे पाळे अतिचारह, टाळे फळपरिणामेनी ॥ ५ ॥ कुळयोगीने प्रवृत्त चक्रने, श्रवण शुद्धि पक्षपातनी, योगदृष्टि ग्रथे हित होवे, तेणे कही ए वातनी, शुद्ध भाव ने सूनी किरिया, बेहुमा अंतर केतोनी ? झलहलतो सूरज ने खजुओ, तास तेजमा जतोजी ॥ ६ ॥ गुह्य भाव ए तेहने कहीये, जेहशु अतर भाजेनी, जेहशु चित्त पटतर होवे, तेहशु गुह्य न छाजेजी, योग्य अयोग्य विभाग अलहतो, कहेशे मोटी वातोजी, खमशे ते पडित परिपदमा मुष्टिप्रहारने लातोनी ॥ ७ ॥ सभा नव गुण श्रोता गुण अवगुण, नदी सूत्रे दीसेजी, ते जाणी ए ग्रथ योग्यने, देनो सगुण जगीसेजी, लोक पूरजो निज निज इच्छा, योग भावगुणरयणेजी, श्रीनयविजय विबुधपय सेवक, वाचक जसने वयणेनी ॥ ८ ॥

•

सुबाहुकुमरनी सज्झाय

हवे सुबाहु कुमर इस वीनवे अमे लेशु सजम भार माडी मारिरे, मा ! मे वीरप्रभुनी वाणी सांभळी, तेणे मैं जाण्यो अस्थिर संसार माडी हवे हु नही रहुरे संसारमा ॥१॥ हारे जाया तुज विणा सूना मन्दिर मालिया जाया तुज विण सूनो संसार, जाया मोरारे, माणेक मोती ने मुद्रिका काइ, ऋद्धि तणो नही पार जाया तुज विना घडीय न नीसरे ॥२॥ हारे माजी तन धन जोबन कारमु, कारमो कुटुंब परिवार, माडी० कारमा सगपणमा कुण रहे मे तो जाण्यो अथिर संसार माडी० हवे० ॥ ३ ॥ हारे जाया सजमपथ घणो आकरो, जाया व्रत छे खांडानी धार, जाया मोरारे, बावीस परिसह जीतवा, जाया रहेवुनी वनवास जा० तुज० ॥ हारे माजी वनमा ते रहे छे मरगला तणी कुण करे छ संभाळ माडी० वन मृगनी परे चालशु एम एकलडा निरधार मा० हवे० ॥५॥ हारे जाया नायाले शीत बहु पडे जाया उनाळे लू थाय जाया वरसादो अति दोहीलो, काइ घडीय वरसशो जाय जा० तु० ॥६॥ हारे माजी नरक निगोदमा हु भम्यो अनंत अनती हो वार मा० छेदन भेदन में सह्या वेदना नावे पार मा० ह० ॥ ७ ॥ हारे जाया पांचसे पांचसे नारीओ रूप अप्सरा समान जाया० उचा ते कुलनी उपनी रेहवा पांचस आवास जा० तु० ॥ ८॥ हारे माजी घरमा जो निकले एक नागणी सुखे नावे निद्रा लगार मा० तो पांचश नागणियोमा वस रहु माय मारु आकुल व्याकुल थाय मा० ह० ॥ ९॥ हारे जाया एटला दिवस हु तो जाणती रमाडीश वहुरोना बाळ जा० दिवस अचारो आवीयो तू ले छे सजमभार जा० तु० ॥ १० ॥ हारे माजी मुसाफर आव्यो कोइ परुणलो, करी भेगो थाय न थाय मा० इम माणस भव पामवो दोहीलो धर्मविना दुर्गतिमा जाय माडी० ह० ॥ ११ ॥ हवे पांचसो वहुरो एम वीनवे तेमा वडेरी करे जवाब

वालम मोरारे, स्वामी तमे तो सजम लेवा सचर्या स्वामी अमने करण आधार, वालम विना केम रही शकु ॥ १२ ॥ हारे माजी मातपिता ने भाई बेनडी नारी कुटुंब परिवार मा० अतसमय थळगा रहे एक धर्मज तारणहार मा० ह० ॥ १३ ॥ हारे मार्जी काची ते काया कारमी सडीपडी विणसी जाय मा० जीवडो जायनें काया पडि रहे मृवा पछी बळी करे राग मा० ह० ॥ १४ ॥ हवे धारणी माता रही चीनवे आ पुत्र नही रहे समार भविकजनरे एक दिवसनु राज भोगवी सजम लीधु वीर स्वामी पास भ० सोभागी कुवरे सजम आदर्यु ॥ १५ ॥ तप जप करी काया शोषवी आराधी गया देवलोक भ० पदर भव पूरा करी महाविदेह जाशे मोक्ष भ० सो० ॥ १६ ॥ हारे माजी विपाक सूत्रमा भाखीयु चीना सूत्र मोझार भ० प्रथम अध्ययने ए कह्यु सूत्र विपाकमा अधिकार भ० सो० ॥ १७ ॥

एलाची कुमरनी सज्झाय

नाम एलापुत्र जाणीये धनदत्त शेठनो पुत्र नटवी देखीने मोहियो नवि राख्यु घरनु सूत्र ॥ १ ॥ कर्म न छूटेरे प्राणिया, पूरव नेह विकार, निजकुल छडी रे नट थयो नाणी शरम लगार कर्म० ॥ २ ॥ मातपिता कहे पुत्रने नट नवि थइयेरे जात पुत्र परणावुरे पदमणी सुख विलसो सघात क० ॥ ३ ॥ कहेण न मान्युरे तातनु पूरव कर्म विशेष नट थइ शीखीयोरे नाचवा न मीटे लख्यारे लेख क० ४ एक पुर आव्योरे नाचवा उचो वश विशेष, तिहा राय जोवाने आवियो मळिया लोक अनेक क० ॥ ५ ॥ ढोल वजावेरे नटवी गावे किन्नर साद, पायतळे घूघरा घमघमे गाजे अबर नाद क० ॥ ६ ॥ दोय पगे पहेरीरे पावडी वश चढ्यो गजगेल, नोधारो थइ नाचतो खेले नवनवा खेल कर्म० ॥ ७ ॥ नटवी रभारे सारिखी नयणे देखेरे

जाग, जो अतेउरमा ए रहे जन्म मरण सुन ताम क० ॥ ८ ॥ तव तिहा चिंतेरे भूपति लुब्यो नटवीनी साथ जो नट पडेरे नाचतो तो नटवी करु मुज हाथ क० ॥ ९ ॥ कर्म वशेरे हु नट थयो नाचु हुँ निराधार मन नवि मानर रायनु तो कोण करवो विचार क० ॥ १० ॥ दान न आपरे भूपति नटे जाणी ते वात हु धन वांछु छु रायनु राय वांछे मुज घात क० ॥ ११ ॥ दान लहु जो हु रायनु तो मुज जीवित सार एम मन माहे ते चिंतवी चढियो चोथीरे वार क० ॥ १२ ॥ थालभरी शुद्ध मोदके पद्मिनी उभी छे वार ल्यो ल्यो कहे छे लेता नथी धनधन मुनिअवतार क० ॥ १३ ॥ एम तिहा मुनिवर वहोरता नटे पेख्या महाभाग धिगधिग् विषयारे जीवने एम नट पाम्यो वेराग क० ॥ १४ ॥ सवर भावेरे केवली थयो ते कर्म खपाय केवळ महिमारे सुर करे लब्धिविजय गुण गाय कम० ॥ १५ ॥

धन्नाजीनी सज्झाय

शीयाळामा शीत घणोरे धन्ना उनाळे लू वाय चोमासे चळ थाय त्यारे धन्ना ए दुःख सह्यु न जाय हु तो वारीरे धनजी आज नही ऐसो काळ ॥ १ ॥ वनमा तो रेहवु एकलुरे ध० कोण करे तारी सार सुरा परीसह दोहिलोरे ध० मत कर एसी वात हो धनजी मत लीयो संयम भार ध० ॥ २ ॥ वनमा तो मृग एकलोरे माता कोण करे तेहनी सार करणी तो जैसी आपकी रे माता कोण बेटा कोण वाप हो जननी हुं लइश संयम भार ॥ ३ ॥ पच महाव्रत पालवारे ध० पाचे मेरु समान वावीस परीसह जीतवारे ध० संयम खाडानी धाररे ध० मत लीयो संयम भार ॥ ४ ॥ नीर विनानी नदी किशीरे ध० चन्द्र विना केसी रात पियु विना केसी कामिनीरे ध० वदन कमळ विलखाय हो ध० मत० ॥ ५ ॥ दीपक विना मंदिर कीश्यारे ध० कान विना केसो राग नयन विना कीश्यु निरखवुरे ध० पुत्र विना

परिवार हो ध० मत० ॥ ६ ॥ तु मज अंधा लाकडीरे धन्ना सो कोई टेकोरे होय, जो कोइ लाकडी तोडशरे ध० अंधो होशे खुवार हो ध० मत० ॥ ७ ॥ रत्न जडितको पींजरोरे माता पोपट जाणे छे बन्ध कामभोग ससारनारे माता ज्ञानीने मन फन्द हो ज० हु० ॥८॥ आयु तो पचनभर्यारे ध० रात परवत जेम सार सगर पच्चीसी खीरे ध० नहीं सयमकी बात हो ध० मत० ॥ ९ ॥ नित्य उठी घोटले फीरतार ध० नित्य बागमें जाय एसी सुधा परमाणरे ध० चमर ढोळाया जायरे ध० मत० ॥ १० ॥ चोडी पालखिये पोढतोरे ध० नित्य नइ सुखी माण एतो बत्रीश नामिनीरे ध० उभी करे अरदास हो ध० मत० ॥ ११ ॥ नारय सकारा हु गयोरे माता काने आयो राग मुनीश्वरनी वाणी सुणीरे माता आ ससार असार हो ज० हु० ॥ १२ ॥ हाथमे लेणो पातरोरे धन्ना घरघर मागवी भीख कोइ गाळ दइ काढशेरे धन्ना कोई देशे शीख हो ध० म० ॥ १३ ॥ तज दिया मन्दिर माळियारे माता तज दियो सब ससार तज दीनी घरकी नारियारे माता छोड चल्यो परिवार हो ज० हु० ॥ १४ ॥ जूठा ते मन्दिर माळियारे माता जूटा सब ससार जीवता छूटे काळजुरे माता मुवा नरके लेइ जाय हो ज० हु ॥ १५ ॥ रात्री भोजन छोड देवो धन्ना परनारी पच्चक्खाण परधनशु दूरा रहोरे धन्ना एहज सयमभार हो ध० म० ॥ १६ ॥ मातपिता छोडो नहींरे ध० मत घर एसीरे वात एह बत्रीश कामिनिरे ध० एसा हगी आप हो ध० म० ॥ १७ ॥ कर्म तणा दुःख म सह्यारे माता कोइ न जाणे भेद रागद्वेषके पूठडेरे माता बाध्या घर विरोध हो ज० हु० ॥ १८ ॥ साधुपणामें सुख घणोरे माता नहीं दु खनो लवलेश मनशे सोई खावशेरे माता सोइ साधु उद्देश ज० हु० ॥ १९ ॥ एकला उठी जायशेरे माता कोइ न राखणहार एक जीवके कारणेरे माता क्यु करे एवो विलापरे ज० हु० ॥ २० ॥ न कोई धन्नो मर गयोरे माता न कोई गयो परदेश जाया सोइ आथमेरे माता फूल्या सोही करमाय हो ज० हु० ॥ २१ ॥ काळ ओचितो मारशेरे माता कोण छोडावणहार कर्म काट मुक्त

गयारे माता देवलोक ससार हो ज० हु० ॥ २२ ॥ जे जेसी करणी करेरे माता तेणे तेसा फळ होय दयाधर्म सयमविनारे माता शिवसुख पामे न कोय हो ज० हु० ॥ २३ ॥

कार्तिकशेठनी सज्झाय

पुर हत्थिणाउर वासीयो, कार्तिक शेठ प्रसिद्धरे मुनिसुव्रत जिन देशना, साभळीने प्रतिबुद्धरे । धन्य लघुकर्मी जीवडा, जे करे धर्मनी वृद्धिरे, इन्द्रादिक पदवी लही, अन्ते पामे सिद्धिरे ॥ धन्य० २ ॥ तस वेरागे वेरागिया अठुत्तर हेजाररे पच महाव्रत आदरी, साथे लीनो सयम माररे ॥ धन्य० ३ ॥ चाद पूरव अभ्यासी करी मास सलेखना कीधरे, प्रथम सर्ग सुरपति हुओ, इक भवे होवे सिद्धरे ॥ धन्य० ४ ॥ शक्रभवे जन वादवा आयो वीरने तामरे, एह वृत्तात गोतम भणी कह्यो विशाळा भामरे ॥ धन्य ५ ॥ भगवति शतक अढारमे, जोई एह सज्झायरे, पर उपकार भणी कहे मानविजय उवझायरे ॥ धन्य० ६ ॥

आठ मदनी सज्झाय

मद आठ महामुनि वारीये, जे दुर्गतिना दातारोरे, श्रीवीर जिनेसर उपदिसे, भाखे सोहम गणधारोरे ॥ हानी जातिनो मद पहेलो कह्यो, पूर्वे हरिकेशीए कीधोरे ॥ मद० १ ॥ चडाळ तणे कुळ उपन्यो, तपथी सवि कारज सिध्योरे ॥ मद० २ ॥ हानी कुलमद बीजो दाखीयो, मरीचि भवे कीधो प्राणीरे, कोडाकोडी सागर भवमा भम्यो मद नकरो एम मन जाणीरे ॥ मद० ३ ॥ हानी बलमदथी दुःख पामीया, श्रेणिक वसुभूति जीवोरे, जई भोगव्या दुःख नरक तणा, मुखे पाडता नित रीवोरे ॥ मद० ४ ॥ हानी सनत्

१ एक हजार आठ साथे दीक्षा लाधा २ हाल ते सौधर्मेंद्र छे ते ३ बूम

कुमार नरेसरु, सुर आगळ रूप वखाण्युरे, रोमरोम काया वगडी गई, मद चोथानु ए दाणु रे ॥ मद० ५ ॥ हाजी मुनिवर संयम पाळता, तपनो मद मनमा आण्योरे थयो कुरगडू ऋषि राजीया, पामीया तपनो अंतरायेरे ॥ मद० ६ ॥ हाजी देश दशाणनो धणी राय दशाणभद्र अभिमानीरे, इद्रनी ऋद्धि देखी बूझीयो, ससार तजी थयो ज्ञानीरे॥ मद० ७ ॥ हाजी स्थूलिभद्रे विद्यानो कीयो, मद सात मो जे दु खदाईरे, श्रुतपूर्ण अर्थ न पामीया, जुओ मानतणी अधिकाईरे ॥ मद० ८ ॥ राय सुभूम षट्खडनो धणी, लाभनो मद कीधो अपाररे, हयगय रथ सब सायर गया, गयो सातमी नरक मझाररे ॥मद० ९॥ इम तन धन जोबन राज्यनो, म धरो मन मा अहकारोरे, ए अथिर असत्य सवि कारमुं, विणसे क्षणमा बहु वारोरे ॥ मद० १० ॥ मद आठ निवारो व्रतधारी पालो सयम सुखकारीरे, कहे मानविजय ते पामशे, अविचळ पदवी नर- नारीरे ॥ मद० ११ ॥

इरियावहीनी सज्झाय

गुरु सन्मुख रही विनयविवेके, इरियावहि पडिकमियेजी, आ भव परभव पातक हणीये, गुणश्रेणिए चढिये, श्रुत अनुसरियेजी, तरीए आ ससार, पातिक हरिए जी, सद्गुरुने आधार, पार उतरीयेजी,॥ १ ॥ पद अक्षरना अर्थ सुणिने, जाणे त मस्तक डोलेजी, मिच्छामि दुक्कड निर्युक्ते, भद्रबाहु गुरु बोले ॥ श्रुत० २ ॥ पुढवी अप् तेउ वाउ साधारण, तस थावर बादर सूक्ष्मजी, प्रत्येक तरु विगले न्द्रिय पज्जत्ता अपजत्त अडवीस ॥श्रुत० ३॥ हवे पचेन्द्रि जल थल खेचर, उरपरी भुजपरी दीसेजी गर्भ समूर्च्छिम दस पजत्ता, अप जत्ता ए वीस ॥श्रुत० ४॥ नारकी साते पज्ज अपज्ज, चौद भेदे मन धारोजी कमभूमि अकमभूमिना, पदर त्रीश विचारो ॥ श्रुत० ५॥

१ धूम

मोर, मच्छगळागल न्याय छे जारे निर्भय नहीं कोई ठौररे जिवडा ए० ४॥ कर्मे नाटक माडियेजीरे, जिवडो नाचणहार, नवा नवा रू-पाइमाजी रे, खेले विविध प्रकाररे॥ जिवडा ए०५॥ चौरासी चौगान माजीरे, रूपरगना ठाठ, तमासा क्षण लोकनाजीरे, बाजीगरना पाठरे ॥ जिवडा ए० ६ ॥ बहोत गइ थोडी रहीजी रे, परभव भातु रे बाध, समतासुखनी वेल्हीनी रे, धर्म रत्न पद साररे ॥ जिवडा ए० ७॥

श्री जबूस्वामीनी सज्झाय

(रे जीव जिन धर्म कीजिये — ए देशी)

सरसती सामीणी विनवु, सद्गुरु लागुजी पाय। गुणरे गाऊं जबूस्वामीना, हरख धरी मनमाय । धन धन धन जबूस्वामी ने ॥ १ ॥ संजम पथ स्वामी दोहिलो, व्रत छे खाडानी धार। वलु समान जे कोळिया, ते केम चाव्या जाय ध० ॥ २ ॥ पाये अल्वाणु स्वामी चालवु दिनकर तपेरे निलाड। मध्यान्हे करवी गोचरी, लेवो सूझतो आहार ॥ ३ ॥ कोडि नवाणु सोवन ताहरे, ताहरे छे आठज नार। भोग वेळा रे जोग कांई लीयो, भोगवा भोग ससार ध० ॥ ४ ॥ रामे सीताने वियोगडे, बहुत कियोरे समाम । छतीरे नारी पियु का तजो, का तजो धन ने माल ध०॥५ ॥परणीने पियुनी शुं परिहरो, हाथ मेल्यानो सबध। पछी करशो स्वामी ओरतो, जेम कियो मेघ मुणींद ध० ॥ ६ ॥ रत्नकचोळे जीमता, काचलडे व्यव हार। पलग तळाइए पोढता, सथारो दुखकार ध० ॥ ७ ॥ शीयाळे शीतळ ढळे, उनाळे लू वाय। वरसादो घणो दोहिलो, अति सुकुमाल तुम काय ध ॥ ८ ॥ पखी मेळावें मौ मोले, परभाते ऊडी जाय। जे जे-वी करणी करे, ते तेहवी गति जाय ध० ॥ ९ ॥ जबू कहे नारी प्रते, अमे लेशु सजम भार। साचो स्नेह करी लेखवो, तो संजम ल्यो अम साथ धन० ॥ १० ॥ तेणे समे प्रभवोजी आवीयो,

पाचशे चोर सगाथ। तेने जबू कुमरे घूझव्यो घूझवी आठेय नार ध०
॥ ११ ॥ ससरा सासूने घूझव्या, घूझव्या माय ने ताय। सुधर्मा स्वामी
पासे आवीया, लीधो सजम सुखदाय धन ०॥ १२ ॥ पाचशे सत्ता
वीसशु, विचरे मनने उल्लास। कर्म खपावी थया केवली, छेद्या
भव फेरा पाश ध० ॥ १३ ॥ सवत सत्तर छासठे, कडुपर नगर मोझार
माग्य विमळ सूरि इम भणे, जबू नामे जयकार ध० ॥ १४ ॥

श्री जबू स्वामीनी सज्झाय

राजग्रही नगरी वसे, ऋपभदत्त व्यवहारीरे तस सुत जबकुमर
नमु बालपणे ब्रह्मचारीरे ॥१॥ जबू कहे जननी सुणो, स्वामी सुधर्मा
आव्या रे, दीक्षा लेशु ते कने, अनुमति द्यो मोरी माय रे ज० ॥ २ ॥
माय कहे सुणो बेटडा, वात विचारी कीनेरे, तरुणपणे
तरुणी वरी, छांडी केम छूटीनेरे ॥ जबू० ३ ॥ आगे अरणिक मुनि
वरा, फरी पाछा घेर आव्यारे, नाटकणी नेहे करी, आपाढभूति
भोळायारे ॥ माय० ४ ॥ वेश्या वश पडिया पछी, नदीपेण नगी
नोरे, आर्द्र देशनो पाटवी, आर्द्रकुमार का कीनोरे ॥ माय० ५ ॥
सहम वरस सजम लीयो, तोय न पार पायारे, कुडकने करमे करी
पछे घणु पस्तायारे ॥ माय० ६ ॥ मुनिवर रहनेमिजी नेमि
जिनेसर भाई रे, राजीमती देखी करी, विपयतणी मति आई रे
॥ माय० ७ ॥ दीक्षा छे वत्स दोहिली, पाळवी खाडानी धाररे,
सरसनीरस अन्न जीमवु, सूवु डाभ सथाररे ॥ माय० ८ ॥ दीक्षा
छे वरम दोहिली, कहयु अमारु कीनेरे, परणो पनोता पदमणी,
पूरो मनोरथ भाईरे ॥ माय० ९ ॥ जबू कहे जननी सुणो, धन धन्नो
अणगारोरे, मेघ मुनीसर मोटको, शालिभद्र सभारोरे ॥ जबू० १० ॥
गजसुकुमाल गुणे भर्या, आतम साधन कीनोरे, पण्मासी तप
पारणे ढढणे केवळ लीनोरे ॥ जबू० ११ ॥ दशार्णभद्र सजम लही
इद्रने ... प्रसन्नचद केवल लही.

आणदोरे ॥ जबू० १२ ॥ एम अनेक मुनिवर हुआ, कहेता पार न पायेरे, अनुमति द्यो मोग मायजी, क्षण लाखेणो जायेरे ॥ जबू० १३ ॥ पाचसे ने सत्तावीसे, जबू कुमार परिवरीओरे, पच महाव्रत उच्चरी, भवजल सागर तरीओरे ॥ जबू० १४ ॥ जबू चरमन केवली, तास तणा गुण गायारे, पडित ललित विजय तणो, हेतविजय सुपसायारे ॥ जबू० १५ ॥

श्री समकितनी सज्झाय

समकित नवी लह्युरे ए तो रुल्यो चतुर्गति माय। त्रस थावरकी करुणा कीनी, जीव न एक विराध्यो। तीन काल सामायिक करता शुद्ध उपयोग न साध्यो ॥ सम० १ ॥ जूठ बोलवा को व्रत लीनो चोरीको पण त्यागी, व्यवहारादिक निपुण भयो पण अतर्दृष्टि न जागी ॥ सम० २ ॥ ऊर्ध्व बाहु करी ऊंधे लटके, भस्म लगा धूम घटके, जटाजूट शिर मुडे जूठो, विणश्रद्धा भव भटके ॥ सम० ३ ॥ निज पर नारी त्यागज करके, ब्रह्मचर्य व्रत लीधो स्वर्गादिक याको फल पायो निज कारज नवि सिध्यो ॥ सम० ४ ॥ बाह्यक्रिया सब त्याग परिग्रह, द्रव्य लिंग धर लीनो "देवचद्र" कहे याविध तो हम, बहुत बार कर लीनो ॥ सम० ५ ॥

ढढण ऋषिनी सज्झाय

ढढण ऋषिजीने वदना हु वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हु वारी लाल अभिग्रह लीधो आकरो हु० १लब्धे लेशु आहार रे ॥ हु० ढ० १ ॥ दिनप्रति जावे गोचरी हु०, न मिले शुध्द आहार रे हु०, न लीये मूल २असूझतो हु० ३पिंजर हुओ गातरे ॥ हु० ढ० २ ॥ हरि पूछे श्री नेमने हु० चाद महस अणगार रे हु०। उत्कृष्टो कोण एहमा हु० मुनी

१ मोक्षना इच्छा जिनाशु चरित्र २ पोतानीज लब्धियी ३ हाडपिंजर

कहो कृपाल रे ॥ हुं० ह० ३ ॥ दरण आपीने दाखियो हुं० श्री गुरु नेम जिणंदरे, हुं० । मन ऊमाह्ये वांदवा हुं०, मय आवश्यक वंदरे हुं० ॥ ह० ४ ॥ नहिआरे मुनिवर मन्या हुं० वारे श्री कृष्ण नरिंदरे हुं० किन्ही मिथ्यात्वी देखी । हुं०, आप्यो भाव विशेषरे हुं०, ॥ ह० ५ ॥ आवा मुज घर साधुजी हुं०, ल्यो मोदक छे मुज्य रे हुं० । ऋषिनी हेतु आविया हुं०, प्रभुनी पास विशुद्ध रे हुं० ॥ ह० ६ ॥ मुज लब्धे मोदक लिन्या हुं०, कहो मुज ? कृपाल र हुं० ॥ लब्धि नहीं ताहरी हुं०, श्रीपतिलब्धि नंदलाल र हुं० ॥ तो मुज ? लेवा नहीं हुं०, चाल्यो परठण चतोर हुं०, ॥ ह० ७ ॥ ईंट निभाडे चाड्यो हुं०, चूर्यो कर्म समानरे हुं०, ॥ ह० ८ ॥ आवी शुभी भावना हुं०, पाम्या केवलज्ञानरे हुं० ढंढण ऋषि मुज गया हुं०, धर्म जिनहर्ष सुजान रे हुं० वारी लाल ढंढण ० ९ ॥

अरणिक मुनिनी सज्झाय

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाझे शीशोजी; पाय अडवाण वेलु परजले, तन सुकुमार मुनीशोजी ॥ अर० १ ॥ मुख करमाणु रे मालती फूल ज्युं, ऊभा गोखनी हेठोजी, खरे बपोरे रे दीठा एकला, मोहे मानिनी हेठोजी ॥ अर० २ ॥ वयणरंगीले र नयणे वींधीयो, ऋषि थंभ्यो तेणे ठामोजी, दासीने कहे जा रे उतावळी ऋषि तेडी घर आण जी ॥ अर० ३ ॥ पावन कीजे रे ऋषि घर आंगणु, वोहरो मोदक सारजी, नवयौवनरस काया कां दहो, सफल करो अवतारोजी ॥ अर० ४ ॥ चंद्रवदनीए चारित्रथी चूकव्यो, सुख विलसे दिन रातोजी, बेठा गोखे र रमता सोगठे, तव दीठी निज मातो जी ॥ अर० ५ ॥ अरणिक अरणिक करती मा फर, गलिए गलिए बजारोजी, कहो कोणे दीठो मारो अरणीलो, पूछे लोक हजारोजी ॥ अर० ६ ॥ ५ कायर हु रे मारी

चारित्र खाडानी धारोजी, धिक् धिक् विषयारे माहरा जीवने, मे कीधो अविचारोजी ॥ अर० ७ ॥ गोखथी उतरी रे जननिने पाय पडयो, मनशु लाज्यो अपारोजी, वत्स तुज न घटे रे चारित्रथी चूक्वु जेहथी शिवसुख सारोजी ॥ अर० ८ ॥ एम समजावी रे पाछो वाळीयो, आण्यो गुरुनी पासेजी, सद्गुरु दीये रे शीख भली परे, वैरागे मन वासोजी ॥ अर० ९ ॥ अग्निधखती रे शीला ऊपरे, अरणिक अणसण कीधोजी, रूपविजय कहे धन्य ते मुनिवरु, जेणे मनवांछित लीधोजी, अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ १० ॥

आपस्वभावनी सज्झाय

आपस्वभावमेंरे अवधू[1] सदा मगनमें रहना, जगतजीव है कर्माधीना अचरज कछुअ न लीना ॥ आ० १ ॥ तु नहीं केरा कोई नहीं तेरा क्या करे मेरा मेरा तेरा है सो तेरी पासे, अवर सब अनेरा ॥ आ० २ ॥ वपु विनाशी तु अविनाशी, अब है इनका विलासी, वपुसग जब दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ३ ॥ राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा, जब तुम इनको दूर करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥ आ० ४ ॥ परकी आशा सदा निराशा, ए है जगजनपासा, ते काटनकु करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥ आ० ५ ॥ कबहीक काजी, कबहीक पाजी, कबहीक हुआ अपभ्राजी, कबहीक जगमें कीर्ति गाजी, सब पुद्गलकी बाजी ॥ आ० ६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी ज्ञानध्यान मनोहारी, कर्म कलंकको दूर निवारी जीव वरे शिवनारी ॥ आ० ७ ॥

श्रीरहनेमीनी सज्झाय

काउसग्ग ध्याने मुनि रहनेमी नामे, रह्या छे गुफामा शुभ परिणामेरे देवरिया मुनिवर[1] ध्यानमा रहेजो, ध्यान थकी होय भवनो पाररे ॥ दे० १ ॥ वरसादे भीना चीवर मोकळा करवा, राजुल आव्या छे

---

[1] वैरागी

तेणे ठामरे ॥ दे० ॥ रूपे रहीर वले वर्नित बाळा, देखी लोलायो तेणे कामरे ॥ दे० ॥ निउ शोभाणु जाणी राजुल भाखे, रागो स्थिर मन गुणना धामरे॥ देव० २ ॥ जादव कुळमा जिननी 'नेम' नगीनो वमन करी छे मुनने तेणेरे ॥ दे० २ ॥ बधव तेहना तुमे 'शिवादेवी' जाया, एवडो पटतर कारण कणेरे ॥ देव० ३ ॥ परदारा सेवी प्राणी नरकमा जाय, दुर्लभबोधि होय प्रायरे ॥ दे० ॥ मायवी साथे चूकी पाप जे थाये, तेहनो छुटकारो कदीय न थायरे ॥ देव० ४ ॥ अशुचि कायारे मलमूत्रनी क्यारी, तमने केम लागी एवडी प्यारीरे ॥ दे० ॥ हूरे सयमी तुमे महाव्रतधारी, कामे महाव्रत जाशो हारीरे ॥ देव० ॥ ५ ॥ भोगवम्या जे मुनि मनथी न इच्छे, नाग अगधनकुलनी जेमरे, दे० ॥ धिक् कुळ नीच थई नेहथी निहाळे न रहे सयमनी शोभा एमरे ॥ दे० ६ ॥ एवा रसीला राजुल वयण सुणीने, बूझ्या रहनेमी प्रभुनी पासरे ॥ दे० ॥ पाप आलाई फरी सयम लीधु, अनुक्रमे पाम्या शिव आवासरे ॥ देव० ७ ॥ धन्य धन्य जे नरनारी शीयळ व्रत पाळे, समुद्र तर्या सम व्रत छ एहरे ॥ देव० ॥ "रूप" कहे तेहना नामथी होवे, अम मन निर्मल सुदर देहरे ॥ देव० १२ ॥

श्रीअइमुत्तामुनिनी सज्झाय

वीरजिणद वादीने गौतम गोचरीये सचरीया पोलासपुर नगरीमा मुनिवर घरघर आगण फरीया, आवो आम पधारो पूज्य, अमघर वहोरण वेळा ॥ इणे अवसरे अइमुत्ते रमता, मलगमता मुनि दीठा, कचनवरणी काया देखी, मनमा लाग्या मीठा ॥ आवा० १ ॥ बोले कुमर अमीरस वाणी, एह कहो अभिरामे, खरे बपोरे पाय अलवाणे, भमवु ते किणकामे ॥ आवा० ३ ॥ सांभळ राजकुमार सोभागी, शुद्ध गवेषणा कीजे, निर्दूषण ने निरतिचारी, भावे भिक्षा लीजे ॥ आवा० ८ ॥ आवो आज अमारे मदिर, कहेशो ते विधि करशु, जे

१ आग्या २ शुद्ध गोचरीनी तपास

जोइये ते जुगति करीने, भावे भिक्षा घरजु ॥ आधा० ५ ॥ एम फही घर तेडी चाल्यो, आव्यो मन आणंदे । अइमुत्ताजु गौतम देखी, "श्रीदेवी" पय वंदे ॥ आधा० ६ ॥ आज अमारे रत्नचिंतामणि, मेह अमीरस वूठ्या, ये अम आगण सुरतरु फळीयो, अम पर गौतम तूठ्या ॥ आधा० ७ ॥ रे बाळुडा बहु बुद्धिवता, गौतम गणधर आव्या, थाळ भरी मीठा मोदक, भावसहित वहोराव्या ॥ आधा० ८ ॥ पय प्रणमी अइमुत्तो पूछे, किहा वसो किरपाळ, वीर समीपे वसीए सुणीने, साथे चल्यो सुकुमाळ ॥ आधा० ९ ॥ कुमर कहे एह भाजन आपो, भार घणो तुम पासे, गौतम कहे अमे एहने दइए, चारित्र ले जे प्रभु पासे ॥ आधा० १० ॥ चारित्र लेइश हु प्रभुनी पासे, झोळी दियो मुज हाथे, गौतम पूछे अनुमति केहनी, माए मोकल्या अणसाथे ॥ आधा० ११ ॥ वीर वादी जिनवाणी सुणीने, आव्या घर उल्लासे, अनुमति आपो माता मुजने, दीक्षा लऊ हु प्रभुपासे ॥ आधा० १२ ॥ श्रीदेवी कहे सुण नानडीया, सयमनी शी वातो, शु जाणे तु बाल पणामा, आगमना अवदातो ॥ आधा० १३ ॥ विनय करीने मात-पिताने, कहे कुमर कुळभानु जे जाणु ते हु नवि जाणु, नवि जाणु ते जाणु ॥ आधा० १४ ॥ एक दिवसनु राज्य करीने, माय मनोरथ पूरे सयम लीधो वीर जिन पासे, दुर्गति करवा दूरे ॥ आधा० १५ ॥ स्थविर साथे ठडीले पहोंत्या, नीर वहतो दीठो पाळ बाधीने पहयो मेल्यो, कौतुक लाग्यो मीठो ॥ आधा० १६ ॥ न्हानु सरोवर न्हानु भाजन, नाव कर्यु अइमुत्ते, रढियाळी रमत देखीने, वाल्क्रीडा करी रमते ॥ आधा० १७ ॥ मधुरे वचने मुनीसर बोल्या, नावा तरती जोई; रमता देखी ऋषीसर बोले, हिंसा जीवनी होई ॥ आधा० १८ ॥ बोलावी कहे मुनि बाळकने, ए आपण नवि कीजे, छकाय जीव विराधना करता, दुर्गतिना फळ लीजे ॥ आधा० १९ ॥ लाज घणी मनमाहे उपनी, समवसरण बिच आया इरियावहीने तिहा पडिक-

१ हानु पानु

सता, ध्यान शुक्ल मन ध्याया ॥ आधा० २० ॥ स्थविर जई भगवतने पूछे, भव केटला एह करशे, चरम शरीरी छे अइमुत्तो, इण भव मुक्ति वरशे ॥ आधा० २१ ॥ पच आचार शुद्ध मनथी पाळी, अग अग्यार मुख कीधा गुणरत्न संवत्सर तप कीधो, अतगड केवली सिध्या ॥ आधा० २२ ॥ अतगड भगवती मध्ये, एह कह्यो अधिकार, रत्नसागर कहे एह मुनि धन्, अइमुत्तो अणगार ॥ आधा० २३ ॥

कृष्ण महाराजानी सज्झाय

नगरी द्वारकामा नेमि जिनेसर विचरता प्रभु आये । कृष्ण नरेसर वधाई सुणीने जीत निशान बनाये हो प्रभुजी ! नहि जाउ नरकगेहे ॥ नहि जाउ नहि जाउ नहि जाउ प्रभुजी ! नहि जाउ नरकगेहे ॥ १ ॥ अढार सहस्र साधुजीने विधिशु वाद्या अधिके हरखे, पछी नेमि जिनेसर केरा ऊभा मुखडा निरखे हो प्रभु० ॥ २ ॥ नेमि कहे तुमे चार नियारी त्रण तणा दुःख रहिया, कृष्ण कहे हु फरी फरी वादु, हर्ष धरी मन हैया हो प्र० ॥ ३ ॥ नेमि कहे एह टाळ्या न टळे, सो बात एक बात, कृष्ण कहे मारा बाळ ब्रह्मचारी नेमि जिनेसर भ्रात हो प्र० ॥ ४ ॥ मोटा राजानी चाकरी करता राक सेवक बहु रळशे, सुरतरु सरखा अफळ जशे त्यारे विष वेलडी किम फळशे ? हो प्र० ॥ ५ ॥ पेटे आव्यो तेह ओरग बेठे पुत्र कपुत्रज जायो, भलो भूडो पण जादव कुळनो तुम बधव कहवायो हो प्र० ॥ ६ ॥ छप्पन क्रोड जादवनो रे साहेबो कृष्णज नरके जाशे, नेमि जिनेसर केरोरे बाधव जगमा अपजश थाशे हो प्र० ॥ ७ ॥ शुद्ध समकितनी पारख करीने बोल्या केवलनाणी नेमि जिनेसर दियो रे दिलासो खरो रुपैयो जाणी हो प्र० ॥ ८ ॥ नेमि कहे तुमे चिंता न करशो तुम पदवी अम सरखी, आवती चोवीशीमा होशो तीर्थंकर हरि पावे मन हरखी हो प्र० ॥ ९ ॥

---

१ केवळज्ञान पामी अतमुहूर्तमा सिद्ध थया

कुळ अजवाज्यु नेमजी समुद्रविजय सुतदीयो, इद्र कहे शिवा देवीना नन्दन क्रोड दिवाली जीयो हो प्र० ॥ १० ॥

नागीला भवदत्तनी सज्झाय

भवदेव भाई घेर आवीयारे प्रतिबोधवा मुनिरायरे, हाथमा ते दीधु घृततु पातरु रे भाइ मने आवेरो थळाय रे, नवी रे परण्या ते गोरी नागीला रे ॥ १ ॥ इम कही गुरुजी पासे आवीया रे गुरुनी पूछे दीक्षानो काइ भाव रे, लाजे नाकारो तेणे नवि कर्योरे दीक्षा लीधी भाईनी पास रे नवा० ॥ २ ॥ वार वर्ष सजममा रह्या रे हुये धरता नागीलानु ध्यान रे, हु मूरख आ शु कर्यु रे नागीला तनी जीवन प्राण रे नवी० ॥ ३ ॥ मात-पिता ल्हने नही रे एकली अबळा नार रे तास उपर करुणा करी रे हवे तनी करवी सभाळ रे नवी० ॥ ४ ॥ शशिवयणी मृगलोयणी रे वलवलती मेली घरनी नार रे, सोळ वरसनी सा सुदरी रे सुदर तनु सुकुमार रे नवी० ॥ ५ ॥ उमर कोमळ व्रत जे करे रे हरखे मही कर माही रे पाम्या ते शुभमती जेहनी रे हु तो पडियो दुख अजाळ रे नवी० ॥ ६ ॥ भवदेव भागे चित्ते आवीया रे अणआळखी पूछे घरनी नार रे, कोइक दिठी ते गोरी नागीला रे अमे लीये व्रत छोडणहार रे नवी० ॥ ७ ॥ नारी कहे सुणो साधुजी रे वम्यो न लिये कोइ आहार रे, हस्ती चडीने खर पर कोण चढे रे तमे छो काइ ज्ञानना भडार रे नवी० ॥ ८ ॥ एडकीण वम्यो आहार जे करे रे ते नवि मानव आचार रे, जे तमे घर घरणी तजयारे हवे तेनी करो शी सभाळ रे नवी० ॥ ९ ॥ धन्य बाहुबळ धन्य शालीभद्रनी रे धन्य धन्य मेघ कुमार रे, स्त्री तजीने सयम लेने लियो रे धन्य धन्य तेह अणगार रे नवी ॥ १० ॥ देवकी सुलसा सुत सागरु रे नेम तणी सुणी वाणी रे, बत्रीश बत्रीश प्रिया तजी रे परिहर्या भोग विलास रे नवी० ॥ ११ ॥ अकुश वश गज आणीयो रे राजुल मति रहनेम रे, वचन अकुशे तिहा वारीयो रे नागीला



भवदेव तेम रे नवी० ॥ १२ ॥ नारी ते नरकनी खाण छे रे नरकनी देवणहार रे ते तमे तजो मुनिराजनी रे जिम पामो भवजळ पार रे नवी० ॥ १३ ॥ नागीलाए नाथने समजावीया रे पछी लीधो संजम भार रे, कर्म खपावी मुगते गया रे हुवा हुवा शिव भरतार रे नवी० ॥ १४ ॥ पाचम भवे जंबूस्वामीनी रे परण्या परण्या पद्मिनी नार रे, क्रोड नवाणु कंचन लावाया रे कल्पसूत्र मांही अधिकाररे नवी० ॥ १५ ॥ प्रभव साथे चोर पांचशे रे पद्मिनी आठ नार रे कर्म खपावी मुगते गया रे समयसुंदर सुखकार रे नवी० ॥ १६ ॥

श्रीसिद्धभगवाननी स्तवन – सज्झाय

श्रीगौतमस्वामी पृच्छा करे, विनय करी शीश नमाय हो प्रभुजी अविचल स्थानक में सुण्यो, कृपा करी मोय बताय हो प्रभुजी शिवपुर नगर सोहामणो ॥ आठ करम अळगा करी, सार्यां आतम काम हो प्रभुजी छूट्या ससारना दुःख थकी, तेहने रहेवानो कुण ठाम हो प्रभुजी शिवपुर० ॥ २ ॥ वीर कहे ऊर्ध्व लोकमा, मुक्तिशिला तस ठाम हो गौतम! सरग छव्वीसा ऊपरे, तेहना बारज नाम हो ॥ गौ० शि० ॥ ३ ॥ लाख पिस्तालीश जोजननी लांबी पहोळी जाण हो गौ० ॥ आठ जोजन जाडी ए छेडे, पातळी अत्यंत वखाण हो ॥ गौ० शि० ४ ॥ उज्वल हार मोती तणो, गाय दूध शंख वखाण हो गौ० ॥ तेनाथी ऊजली अती घणी समचोरस संस्थान हो ॥ गौ० शि० ५ ॥ अर्जुन सोनामय दीपती, घठारी मठारी जाण हो गौ० ॥ स्फटिकरत्नथी निर्मली सुआळी अत्यंत वखाण हो ॥ गौ० शि० ६ ॥ सिद्धशिला ओळगी आघे गया अधर रह्या विराज हो गौ० ॥ अलोकेसु जई अड्या, सार्यां आतम काज हो ॥ गौ० शि० ७ ॥ जिहां जन्म नहीं, मरण नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो गौ० ॥ शत्रु नहीं मित्र नहीं नहीं संजोग विजोग हो ॥ गौ० शि० ८ ॥ भूख नहीं तृषा नहीं, नहीं हर्ष नहीं शोक हो गौ० ॥ कर्म नहीं काया नहीं, नहीं विषयारसभोग हो ॥ गौ० शि० ९ ॥ शब्द रूप रस गंध नहीं, नहीं फरस नहीं वेद हो गौ० ॥ बोले नहीं चाले नहीं, मौन

ज्या नहीं खेद हो ॥ गौ० शि० १० ॥ गाम नगर एके नहीं, नहीं घरती नहीं उज्जड हो गौ०॥ काल सुकाळ वरते नहीं, नहीं रातदिवस तिथि वार हो ॥ गौ० शि० ११ ॥ राजा नहीं प्रजा नहीं, नहीं ठाकोर नहीं दास हो, गौ० ॥ मुक्तिमें गुरुचेला नहीं, नहीं लघुवडाई तास हो ॥ गौ० शि० १२ ॥ अनुपम सुखमें झीली रह्या, अरूपी ज्योति प्रकाश हो गौ० ॥ सघळाने सुख सारीखो, सहुने अविचळ वास हो ॥ गौ० शि० १३ ॥ अनत सिद्ध मुक्ते गया, फेर अनता जाय हो गौ० ॥ ओर जगा रुधे नहि, ज्योतमे ज्योत समाय हो ॥ गौ० शि० १४ ॥ फेवळज्ञानसहित छे, केवळ दरिसण पासहो, गौ० ॥ ग्यायक समकिते दीपता, कदीय न होवे उदास हो ॥ गौ० शि० १५ ॥ सिद्धिस्वरूप जे कोई ओळखे, आणी मन वैरागहो गौ० ॥ शिवरमणी वेगे वरे, "नय" कहे सुख अथाग हो ॥ गौ० शि० १६ ॥

वैराग्यनी सज्झाय

मरण न छूटे रे प्राणिया, करता कोटि उपाय रे, सुरनर असुर विद्याधरा, सहु एक मारग जायरे ॥ मरण न० १ ॥ इंद्र चंद्र रवि हलीमली, गणपति कामकुमार रे, सुरगुरु सुरवैद्य सारिखा, पहोंच्या जमदरबार रे ॥ मरण न० २ ॥ मंत्र जंत्र मणि औषधि, विद्या हुन्नर हजार रे, चतुराई करे रे चोकमा, जमडा लूटे बजार रे ॥ मरण न० ३ ॥ गर्व करी नर गाजता, करता विविध तोफान रे, माथे मेरु उपाडता पहोंच्या ते जइ श्मशान रे ॥ मरण न० ४ ॥ कपडा घरेणा उतारशे, बाधी ठाठरीमाय रे, खोखली हाडकी आगळे, रोता रोता सहु जाय रे ॥ मरण न० ५ ॥ काया माया सहु कारमी, कारमो सहु घरबार रे, रक्ने राय छे कारमो, कारमो सकळ ससार रे ॥ मरण न० ६ ॥ भीडी मूठी लई अवतर्यो, मरता खाली छे हाथ रे जावडा जोने तु जगतमा, कोई न आवे छे साथ रे ॥ मरण न० ७ ॥ नाना

१ भयंकर

मोटा सहु सचर्या, कोई नहि स्थिर वासरे, नामरूप सहु नावे रह "धर्मरत्न" अविनाश रे ॥ मरण न० ८॥

श्री उत्तराध्ययनना दशमा अध्ययननी सज्झाय

समवसरण सिंहासनेनी, वीरजी करे रे वखाण दशमे उत्तरा ध्ययनमेनी, दिये उपदेश सुजाण, समयमें गोयम म कर प्रमाद ॥ वीरजिनेश्वर शीखवेनी, परिहर मद विखवाद ॥ समय० १॥ जिम तरु पंडुर पादडानी, पडता न लागेजी वार, तिम ए मानुष जीवडोनी, स्थिर न रहे संसार॥ समय० २॥ डाभ अणी जल ऊसनो जी रे, क्षण एक रहे जलबिन्द, तिम ए चपल जीवडोनी, न रहे इन्द्र नरींद ॥ समय० ३॥ सूक्ष्म निगोद भमी करीजी रे, राशि चढ्यो व्यवहार, लाख चोराशी जीवयोनिमानी, लाध्यो नर भव सार ॥ समय० ४॥ शरीर जरांए जर्जर्युनी, शिरपर पलियाँरे केश, इन्द्रियबल हीणा पड्यानी, पग पग पेखे क्लेश ॥ समय० ५॥ भवसायर तरवा भणीनी, चारित्र प्रवहण मूल, तप जप संयम आकरानी, मोक्षनगर छे दूर ॥ समय० ६॥ इम निसुणी प्रभू देशनानी, गणधर थया सावधान, पापपडल पाछा पड्यानी, पाम्या केवलज्ञान ॥ समय० ७॥ गौतमना गुण गावताजी घर संपत्तिनी कोड, "वाचक श्रीरूप" इम भणेजी, वंदू बे कर जोड ॥ समय० ८॥

श्री चौद गुणस्थानकनी सज्झाय

ढाळ १ ली

(सिद्धारथना रे नंदन[1] वीनवु — देशी)

भवियण जाणोरे गुणठाणा भला, जिम हुए आतमशुद्धि जेहथी

---

१ पाको २ वृद्धावस्था ३ घोळा थया ४ जहाज

जागे रे रुचि प्रवचनतणी, तेहने साची रे बुद्धि ॥ भ० १ ॥ यथि नहीं होवेरे न्याय तत्त्वनी, ते पहेलुं गुणठाण, नाम मिथ्यात्व अभिविष सारीखुं उन्मारग अप्रमाण ॥ भ० २ ॥ खीर खाइ घृत बहु भोजन करी, वमता जेहवो रे स्वाद, समकित वमता रे तेहवो जाणीये, सास्वादन अविवाद ॥ भ० ३ ॥ उदासीनता रे न जिन शासने, अंतर्मुहूर्त प्रमाण, मिश्र कहीजे रे ते दधि गुडपरे, जाति विशेष विनाण ॥ भ० ४ ॥ विरति न आवे रे तस अविरति बळे जाणे साचो रे भाव, तस गुणठाणुं रे चोथुं जाणिये, समकित सहज स्वभाव ॥ भ० ५ ॥ भेद विचारी रे द्वादश व्रत तणा, जे एकविध भग, सद्गुरु पासे लेइ निर्वहे, देशविरति तेह चंग ॥ भ० ६ ॥ पंच महाव्रत दुर्धर जे धरे, धर्म प्रमादिक मार, तेह छठुं रे गुणठाणुं वसु, नाम प्रमत्त उदार ॥ भ० ७ ॥ होय असंगी रे गी निजगुणे, लीनो जे मुनि ध्यान तेहने भाख्युं रे सूत्रे सातमुं अप्रमत्त गुणठाण ॥ भ० ८ ॥ स्थितिरसघात ने गुणश्रेणी जिहां गुणसंक्रमस्थितिबंध तेह अपूर्वकरण छे आठमुं, गुणठाणुं शुभ संध ॥ भ० ९ ॥ जेहमां वर्त्यारे नाना जीवने अध्यवसाय समान ते अनिवृत्तिकरण नवमुं भलुं, गुणठाणुं अनिदान ॥ भ० १० ॥ चरम किट्टिगत लोभ तणा अणु वेदत शुभ अध्यवसाय कहिये दशमे गुणठाणे रह्या, मुनि सूक्ष्मसंपराय ॥ भ० ११ ॥ प्रकृति मोहनी रे जिहां सवि उपशमें, भस्मपिहित जेम आग, तेह उपशान्तमोह अग्यारमुं, गुणठाणुं शिवमार्ग ॥ भ० १२ ॥ जिम ओल्हवीये रे अग्नि जळे करी, तिम खपिये जेह मोह, ते गुणठाणुं रे जाणो बारमुं क्षीणमोह थिर सोह ॥ भ० १३ ॥ केवलनाणी रे जाणी जगस्थिति, दीये उपदेश रसाळ तेह सयोगी केवली तेरमुं, गुणठाणुं सुविशाळ ॥ भ० १४ ॥ तिम अयोगी गुणठाणुं चौदमुं, ह्रस्वाक्षर पंच मान, जेह आरोही रे शिवपद पामीये, सुख जस कुशल निदान ॥ भ० १५ ॥

ढाल २ जी

(अरिहंत पद ध्यातो थको — ए देशी)

होय मिथ्यात अभव्यने, सवन अनादि अनंतो रे वह अनादि सांत छे प्राणी भव्यने उतारे, श्री जिनवचन विचारिये १॥ आवली पद सासायणा, चोथुं अयर (सागर) तेत्रीशारे, मनुज जन्माधिक सुरभवे, इम भाखे जगदीशा रे ॥ श्री जि० २ ॥ पूरव कोडी छे पांचमुं तेरमुं देशोन उजारे ५ाल अयर गुणगणानो, अंतर्मुहूर्त सहुना रे ॥ श्री जिन० ३ ॥ साधु छठे ओ सातम, मळी रहे पूरव कोडी रे, अगिय५ चध्ये होय केवली, कठिन करम दल मोडी रे ॥ श्री जिन० ४ ॥ ते कहना व्यवहारमा, केइक तेह पदवावर, निश्चयथी गुणठाणा पद, अंतरगति पलटायरे ॥ श्री जिन० ५ ॥ गतिक्रिया अधिगम थकी, अछतो पण गुण आवेरे, छतो हाय ते थिर रहे, जो जिनवचन सुहावे रे ॥ श्री जि० ६ ॥ जे गुरुवारण उपासते, इम गुणठाण विचारे र, सहथी लहे 'नम' सपदा, निश्चयने व्यवहारे रे ॥ श्री जि० ७ ॥

श्री नवकार मंत्रनी सज्झाय

(आज जिराउल सुन वात मिथ्यां मवे — ए देशी)

समर जीव एक नवकार तिन दिनमु, अयर पाइ आठ पपाल टाले, पर्ण अडसठ नवकारना नव पद, संपदा आठ अरिहंत भाख ॥ समर० १ ॥ आदि अगर नवकारना स्मरणथी, सात सागर टली जाय दूरा, एक पद उच्चरे दुरित दुरगछा हरे, सागर आयु पचास पूरा ॥ समर० २ ॥ सर्व पद उच्चारता पांचसे सागर, सहस चोपन नवकारवाली, स्नेह मन मवरी हर्षभर हेज धरी, लाख नव जापथी दुर्गति टाली ॥ म० ३ ॥ लाख एक जाप जन पुण्ये पूरा जपे, पदवी पामे अरिहंत केरी, अशोक वृक्ष सठे चार पर्षदा मळ, गहगहे

दुदुंभि नाद भेरी ॥ समर० ४ ॥ अष्ट वली अष्ट सय अष्ट सहसा वली, अष्ट लाख जपे अष्ट कोडी, "कीर्ति विमल" कहे मुक्तिलीला लहे, आपणा कर्म आठ विछोडी ॥ समर० ५ ॥

श्री दश दृष्टांतनी सज्झाय

(प्रभु तुज शासन अति भलु—ए देशी)

दश दृष्टांते दोहिलो, मानव तणो अवतार रे, पच प्रमादने परिहरी, भरीये सुकृत भडार रे ॥ दश० १ ॥ भोजन पासा धान जुआ रयण सुपन विचार रे, चक्र कच्छप वळी धूसरु, तिम परमाणुओ सार रे ॥ दश० २ ॥ ए दश सक्षेपे कहु, सुणजो सहु नर नार रे, चक्रवर्ती तूठो विप्रने, घरघर एक आहार रे ॥ दश० ३ ॥ पहेलो जम्यो चक्री घरे, दोहिलो बीजी वार रे। देवी पासा आलीया, पुण जीते उदार रे॥ दश० ॥ ४ ॥ धान ते सघला भलिया, ढग मेरु समान रे, डोकरी केम करे जूजूआ, होय चतुर सुजाण रे ॥ दश० ५ ॥ एक शत आठ हास थामले, एक शत आठ थभोरे, तेह निरतर जीपता, होय अति हि अचभो रे ॥ दश० ६ ॥ रयण घणा घर शेठने, करतो कोडी जतन रे बेटे ते वच्या जूजूआ, केम मेळा रतन रे ॥ दश० ७ ॥ सुपन बेहु सरखु लहे, मुखमा पेठो चद रे राज लहे एक रोटलो, समरे सोम योगींदरे ॥ दश० ८ ॥ चक्र ते अवट-सवल फरे, ऊपर पूतळी जोई रे, नीची दृष्टि वींधे बाणशु, किम ष्णी फेरे होई रे ॥ दश० ९ ॥ अध कूपमाही काचबो, ऊपर सेवाल्वृद रे, अवकाश लही दीठो चदलो, फरी किम देखे चद रे ॥ दश० १० ॥ पूर्व समुद्रे धूसर, समिला पश्चिम पेसरे, दोय सयोग मळे दोहिलो, तिम मानव भव देसरे ॥ दश० ११ ॥ रयण तणा परमाणुआ, देवे कीधा भूर रे मेरु चढी वायु वर्शाए, गया दह दिशि दूर रे ॥ दश० १२ ॥ ते सघळा परमाणुआ, किम एकठा थाय रे, तिम मानव जन्म दुल्लहा, फरी फरी केम अवाय रे ॥ दश० १३ ॥

सद्गुरु वचन सेवा करी, पामे भव तणो पारोरे, रत्न विजय सत्य विनय तणो, "वृद्धि विजय" जयकारोरे ॥ दश० १४ ॥

दृष्टिरागनी सज्झाय (राग-प्रभाती)

दृष्टिरागे नवि लागीये, वली जागिये चित्ते, मागिये शीख ज्ञानी तणी, हठ भागिये नित्ते ॥ दृष्टि० १ ॥ जे छता दोष देखे नहि, जिहा जिहा अति रागी; दोष अछता पण दाखवे, जिहाथी रुचि भागी ॥ दृष्टि० २ ॥ दृष्टिराग चले चित्तथी, फरे नेत्र विकराले, पूर्व उपकार न सांभरे, पडे अधिक जंजाले ॥ दृष्टि० ३ ॥ वीर जिन जब हुता विचरता, तब मगली पुत्तो "जिन" करी जड जने आदर्यो, इहा मोह अति धुत्तो ॥ दृष्टि० ४ ॥ ऋद्धि भडार रमणी तजी, भजी स्वमते दृष्टि रागी, दृष्टि रागे जमालि लह्यो, नवि भवजल ताग ॥ दृष्टि० ५ ॥ वली आचार्य सावद्य जे, हुओ अनत ससारो, दृष्टिराग स्वमते थयो, "महा निशीथ" विचारो ॥ दृष्टि० ६ ॥ हुए जिनधर्म आशातना, अनाण्यु कहे रंगे, मद्गु आगले जिनवरे, वद्यु भगवई अंगे ॥ दृष्टि० ७ ॥ भ्रामना नट ने मूर्खनो, मिल्यो जेहवो जोगो, दृष्टिराग मिल्यो ते हवो, कथक सेवक लोगो ॥ दृष्टि० ८ ॥ आपण गोठडी मीठडी, हठीने मन लागे, ज्ञानी वचन रढीयामणा, कटुक वीर जेवा थागे ॥ दृष्टि० ९ ॥ दृष्टि रागे भ्रम ऊपजे, वधे ज्ञान गुणरागे, एहमा एक तुमे आदरो, भलो होय जे आगे ॥ दृष्टि० १० ॥ दृष्टि रागी कदा मत हुनो, सदा सुगुरु अनुसरजो, वाचक "जस विजय" कहे, हित शीख मन धरजो ॥ दृष्टि० ११ ॥

मिथ्यात्वशल्य पापस्थानकनी सज्झाय

(वीर जिणद जगत उपगारी-ए देशी)

अढारम जे पापनु थानक, ते मिथ्यात्व प[illegible] [illegible]रथी

पण ते एम भारी होय तुलाए जो धर्तीयेजी ॥ कष्ट करो परे परे दमो अप्पा, धर्म अर्थ धन सर्चोजी, पण मिथ्यात्व छते ते जूठु, तिणे तेहथी तुमे विरमोजी ॥ १ ॥ किरिया करतो त्यजतो परिजन, दुख सहतो मन रीझेजी, अध न जीपे परनी सेना, तिम मिथ्यात्वा न सीझेजी, वीरसेन सूरसेन दृष्टाते, समकितनी निर्युक्तेजी, जोईने भली परे मन भावो, एह अर्थवर युक्तेजी ॥ २ ॥ धम्मे अधम्म अधम्मे धम्मह, सन्ना मग्ग उमग्गाजी, उन्मार्गे मार्गनी सन्ना, साधु असाधु सलिंगाजी । असाधुमा साधुनी मति जीवे, अजीव अजीव जीव वेदोजी, मुत्ते अमुत्त अमुत्ते मुत्तह, सन्ना ए देश भेदोजी ॥ ३॥ अभिग्रहिक निज निजमते अभिग्रह अनभिग्रहिक सहु सरिखाजी, अभिनिवेशी जाणतो कहे जुठु करे न तत्त्व परिक्खाजी । सशय ते जिन वचननी शका, अव्यक्ते अनाभोगाजी, ए पण पाच भेद छे विश्रुत, जाणे समजु लोगाजी ॥ ४ ॥ लोक लोकोत्तर भेद ए षड्विध देव गुरु वळी पर्वजी शक्ते तिहा लौकिक तण आदर करता प्रथम निगर्वजा । लोकोत्तर देव माने नियाणे, जे गुरुलक्षणहीनाजी पर्वे निष्ठे इहलोकने काजे, माने गुरुपदलीनाजी ॥ ५ ॥ एम एकवीश मिथ्यात्व त्यजे जे, भजे चरण गुरु केरोजी, सजे न पापे रजे न राचे मत्सर द्रोह अनेराजी । समकितधारी श्रुत आचारी, तेहनी जगबलिहारीजी, शासन समकितने आराधे, तेहनी करो मनोहारीजी ॥ ६ ॥ मिथ्यात्व ते जग परम रोग छे, वळीय महा अंधकारोजी परम शत्रुने परम शास्त्र ते, परम नरक सचारोजी । परम दोहग ने परम दरिद्रता, परम सकट ते कहिएजी परम कंतार परम दुर्भिक्ष ते, ते छाडे सुख लहिएजी ॥७॥ जे मिथ्यात्व लवलेश न राखे सूधो मारग भाखेजी, ते समकित सुरतरु फल चाखे रहे वळी अणीए आखेजी । महोटाई शी होय गुण पाखे, गुण प्रभु समकित दाखेजी, श्रीनयविनय विबुध पयसेवक, " वाचक जस " इम भाखेजी ॥ ८ ॥

एकादशीनी सज्झाय

आज मारे एकादशीरे नणदल मौन करी मुख रहीये, पूछ्यानो पडुत्तर पाछो, केहने काइ न कहिए ॥ आज० १ ॥ मारो नणदोई तुजने वाहलो, मुजने तारो वीरा धूमाडानी बाचका भरता, हाथ न आवे हीरो ॥ आज० २ ॥ घरनो धंधो घणो कर्यो पण, एक न आव्यो आडो। परभव जातां पालव झाले, ते मुजने देखाडो ॥ आज० ३ ॥ मागशर शुदि अगिआरस मोटी नेवु जिनना निरखो। दोडसो कल्याणक मोटा, पोथी जोइजोइ हरखो ॥ आज० ४ ॥ सुव्रत शेठ थयो शुद्ध श्रावक, मौन धरी मुख रहीयो, पावक पुर सघरो परजाल्यो, तेहनो काइ न दहीयो ॥ आज० ५ ॥ आठ पहोर पोसह ते करीय, ध्यान प्रभुनु धरीये मन वच काया जो वश करीये, तो भवसागर तरीये ॥ आज० ६ ॥ ईर्यासमिती भाषा न बोले, आडु अवळु पेखे, पडिक्कमणासु प्रेम न राखे, कहो केम लागे लेखे ॥ आज० ७ ॥ कर उपर तो माला फरती, जीव फिरे वनमांही चित्तडु तो चिहु दिशि डोले, इणे भजने सुख नाहीं ॥ आज० ८ ॥ पोषधशाळे भेगा थइने, चार कथा वळी मांडे, काइक पाप मिटावण आवे, बारगणु वली वांधे ॥ आज० ९ ॥ एक उठती आळस मोडे, बीजी उंघे बेठी, नदीआमांथी काइक निसरती, जई दरियामां पेठी ॥ आज० १० ॥ बाई बाई नणद भोजाई, न्हानी म्होटी वहुने, सासु सहियर माने माशी, शीखामण छे सहुने ॥ आज० ११ ॥ "उदय रतन वाचक" उपदेशे जे नर नारी रहेशे, पोसह मांहे प्रेम धरीने, अविचल लीला लहेशे ॥ आज० १२ ॥

विनय सेठनी सज्झाय

शुक्लपक्ष विजया व्रत लीनो, [illegible]
श्रावक पण्य प्रभावक, विनय शेठ

चढी प्रिय मंदिर, हैये हर्ष और हुलसाणी, त्रण दिवस मुन व्रत-तणा ते, शेठ बोले मधुरी वाणी ॥ ध० २॥ वचन सुणीने तो नीर ढलिया, वदन कमल थे बिलकाणी प्रेम धरी पदमणीने पूछे थ केम थाय बिलखाणी ॥ ध० ३ ॥ शुकृपक्ष व्रत गुरुमुख लीनो, थें परणोजी दुजी नारी। दुजी नारी मारे बेन बराबर, धन धीरज तारी है राणी ॥ ध० ४॥ हैये हार शणगार सजी सज श्याम घटा हिय हुलसाणी वर्षाकाल अति घणो गरजे, चिंहु धारा हो बरसे पाणी ॥ ध० ५ ॥ एकज शय्या ने दोनु प्रबल तो, पण मन रस्या हुलमानी, पट्‌रस भास द्वादश सवत्सर, सरम समज हिय हुलसानी ॥ ध० ६ ॥ मन वच काया अखंडित निर्मल, शील पाली साचो जाणी। विमल केवली करी प्रशंसा, ए दोनु उत्तम प्राणी ॥ ध० ७॥ प्रगट हुवा सयम व्रत लीनो, मोह कर्म किया धूलधानी, "रतनचद" कर जोडी विनवे, केवल लहि गया निर्वाणी ॥ ध० ८ ॥

महोपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजी वाचक विरचित समकितना सडसठ बोल्नी सज्झाय

सुकृतवली कादबिनी, समरी सरसती मात, समकित सडसठ बोल्नी, कहीशु मधुरी वात ॥ १ ॥ समकित दायक गुरु तणो, प्रत्यु-पकार न थाय, भवकोडाकोडी करी, करता सव उपाय ॥ २ ॥ दानादिक किरिया न दिये, समकित विण शिवशर्म, ते माटे समकित घडु, जाणो प्रवचन मर्म ॥ ३ ॥ दर्शन मोह विनाशथी, जे निर्मल गुणठाण । ते निश्चय समकित कह्यु, तेहना ए अहिठाण ॥ ४ ॥

ढाळ पहेली

चउ सद्दहणा तिलिंग छे, दशविध विनय विचारोरे, त्रण शुद्धि पण दूषण, आठ प्रभावक धारोरे ॥ ५ ॥

हरिगीत छद

प्रभावक अड पच भूषण, पच लक्षण जाणिये, षट् जयणा षट्

आगार भावना, छविहा मन आणिये, पद् ठाण समकित तणा, सडसठ भेद एह उदार ए, एहनो तत्त्वविचार करता, लहीजे भव पार ए ॥ ६ ॥

ढाळ

चउविह सद्दहणा तिहा, जीवादिक परमत्थोरे प्रवचन माही जे भाखिया, लीजे तेहनो अत्थोरे ॥ ७ ॥

हरिगीत छंद

तेहनो अर्थ विचार करिये, प्रथम सद्दहणा खरी, बीजी सद्दहणा तेहना जे जाण मुनिजन जोहरी, सवेग रग तरग झीले, मार्ग शुद्ध भाखे सदा, तेहनी सेवा कीजिये जिम, पीजिये समतासुधा ॥ ८ ॥ समकित जेणे ग्रही वम्यु, निह्नवने अहाछन्दारे, पासत्था ने कुशीलिया, वेपविडवक मदारे ॥ ९ ॥

ढाळ बीजी

(जबूद्वीपना भरतमारे-ए देशी)

त्रण लिंग समकित तणारे, पहेलु श्रुत अभिलाष । जेहथी श्रोता रस लहे रे, जेहवो साकर द्राखरे, प्राणी धरीए समकित रग, जिम लहिए सुख अभग रे ॥ प्राणी० १० ॥ तरुण सुखी स्त्री परिवर्योरे, चतुर सुणे सुरगीत । तेहथी रागे अति घणोरे, धर्म सुण्यानी रीत रे ॥ प्राणी० ११ ॥ भूख्यो अटवी उतर्योरे, जिम द्विज घेवर चग । इच्छे तिम जे धर्मने रे, तेहज बीजु लिंग रे ॥ प्राणी० १२ ॥ वैयावच्च गुरुदेवनुरे, त्रीजु लिंग उदार । विद्यासाधक परे करे रे, आळस नविय लगार रे ॥ प्राणी० १३ ॥

ढाळ त्रीजी

[समकितनु मूळ जाणियेजी — ए देशी]

अरिहंत ते जिन विचरताजी, कर्म खपी हुआ सिद्ध, चेइय जिन पडिमा कहीजी सूत्र सिद्धांत प्रसिद्ध, चतुर नर समजो विनय प्रकार, जिम लहिये समकित सार ॥ चतुरनर० १४ ॥ धर्म क्षमा दिक भाखियोजी, साधु तेहना रे गेह आचारज आचारनाजी, दायक नायक जेह ॥ चतुर० १५ ॥ उपाध्याय ते शिष्यनेजी, सूत्र भणावणहार, प्रवचन संघ वखाणिये जी, दरिसन समकित सार ॥ चतुर० १६ ॥ भक्ति बाह्य प्रतिपत्तिथीजी, हृदय प्रेम बहुमान, गुणथुति अवगुण ढांकवाजी, आशातनानी हाण ॥ चतुर० १७ ॥ पाच भेदे ए दश तणोजी, विनय करे अनुकूळ । सींचे तेह सुधा रसेजी, धर्मवृक्षनु मूळ ॥ चतुर० १८ ॥

ढाळ चोथी

त्रण शुद्धि समकित तणीरे, तिहां पहेली मन शुद्धीरे, श्री जिन ने जिनमत विनारे, जूठ सकळ ए बुद्धिरे । चतुर विचारो चित्तमारे ॥ १९ ॥ जिनभगते जे नवि थयुरे, ते बीजाथी केम थायरे, एवु जे मुखे भाखीये रे, ते वचनशुद्धि कहेवायरे ॥ चतुर० २० ॥ छेद्यो भेद्यो वेदना रे, जे सहेतो अनेक प्रकाररे । जिन विण पर सुर नवि नमे रे, तेहनी क्रियाशुद्धि उदार रे ॥ चतुर० २१ ॥

ढाळ पचमी

[कडवा फल छे क्रोधना-ए देशी]

समकित दूषण परिहरो, जेहमा पहेली छे शंका, ते जिनवचन मा मत करो, जेहने सम नृप रंका समकित दूषण परिहरो ॥ २२ ॥ कंखा कुमतनी वाछना, बीजु दूषण त्यजीए, पामी सुरतरु परगडो,

किम बाऊल भजिये ॥ समकित० २३ ॥ संशय धर्मना फलतणो, वितिगिच्छा नामे, त्रीजुं दूषण परिहरी, निज शुभ परिणामे ॥ समकित० २४ ॥ मिथ्यामति गुणवर्णनो, टाळो चोथो दोष, उन्मारगी थुणतां हुवे, उन्मारग पोष ॥ समकित० २६ ॥ पांचमो दोष मिथ्यामति, परिचय नवि कीजे, इम शुभ मति अरविंदनी, भली वासना लीजे ॥ समकित० २७ ॥

टाळ छठी

[अभिनंदन जिन दरिसण तरसीए—ए देशी]

आठ प्रभावक प्रवचनना कह्या, पावयणी धुरि जाण, वर्तमान जे श्रुतना अर्थनो, पार लहे गुणखाण । धन धन शासन मंडन मुनिवरा ॥ २७ ॥ धर्मकथी ते बीजो जाणीये, नंदिषेण परे जेह, निज उपदेशे रे रंजे लोकने, भंजे हृदय संदेह ॥ धन० २८ ॥ वादी त्रीजोरे तर्क निपुण भण्यो, मल्लवादी परे जेह । राजद्वारे जयकमला वरे गाजतो जिम मेह ॥ धन० २९ ॥ भद्रबाहु परे जे निमित्त कहे, पर मत जीपण काज, तेह निमित्ती रे चोथो जाणिये, श्रीजिनशासन राज ॥ धन० ३१ ॥ तप गुण ओपे रे रोपे धर्मने, गोपे नवि जिन आण । आश्रव लोपे रे नवि कोपे कदा, पंचम तपसी ते जाण ॥ धन० ३१ ॥ छट्ठा विद्या रे मंत्र तणो बळी, जिम श्रीवयर मुणिंद सिद्ध सातमो रे अंजन योगथी, जिम कालिक मुनिचंद ॥ धन० ३२ ॥ काव्यसुधारस मधुर अर्थभर्या, धर्महेतु करे जेह, सिद्धसेन परे राजा रीझवे अट्ठम वरकवि तेह ॥ धन० ३३ ॥ जब नवि होवे प्रभावक एहवा, तब विधि पूर्व अनेक, जात्रापूजादिक करणी करे, तेह प्रभावक छेक ॥ धन० ३४ ॥

ढाळ सातमी (सतीय सुभद्रानी देशी)

सोहे समकित जेहथी सखी, जिम आभरणे देह, भूषण पाच ते मन वस्या, मवि मन वस्या तेहमां नहि संदेह ॥ मुज समकित रंग अचल होजो ॥ ३५ ॥ पहेलु कुशलपणु तिहां सखी, वदन ने पच्चक्खाण, किरियानो विधि अति घणो, सखि, अति घणो आचरे तेह सुजाण ॥ मुज० ३६ ॥ बीजु तीरथ सेवना सखी, तीरथ तारे जेह, ते गीतार्थ मुनिवरा, सखि तेहशु कीजे नेह ॥ मुज० ३७॥ भक्ति करे गुरुदेवनी सखि त्रीजु भूषण होय, किणहि चलाव्यो नवि चले, सखि चोथु ए भूषण जोय ॥ मुज० ३८ ॥ जिन शासन अनुमोदना सखी जेहथी बहुजन हुत, कीजे तेह प्रभावना, सखी पाचमु भूषण खंत ॥ मुज० ३९ ॥

ढाल आठमी (धर्म जिनेश्वर गाउ रंगशु — ए देशी)

लक्षण पाच कह्या समकित तणा, धुर उपशम अनुकूल, अपराधीशु पण नवि चित्त थकी, चिंतवीए प्रतिकूल सुगुणनर ! श्रीजिन भाषित वचन विचारिए ॥ ४० ॥ सुरनर सुख जे दुःख करि लेखवे, वछे शिवसुख एक बीजु लक्षण ते अंगीकरे, सार संवेगशु टेक ॥ सु० श्रीजिन० ४१ ॥ नारक चारक सम भव ऊभग्यो, तारक जाणीने धर्म, चाहे निकलवु रे निर्वेद छे तेह, त्रीजु लक्षण मर्म सु० श्रीजिन० ४२ ॥ द्रव्य थकी दुखियानी जे दया, धर्महिणानीरे भाव; चोथु लक्षण अनुकंपा कही, निजशक्ते मन लाव ॥ सु० श्रीजिन० ४३॥ जे जिन भाख्यु ते नवि अन्यथा, एहवो जे दृढरंग, ते आस्तिकता लक्षण पाचमु, करे कुमतिनो ए भंग ॥ सु० श्रीजिन० ४४ ॥

ढाळ नवमी (त्रीजे भव वर स्थानक तप करी—ए देशी)

परतीर्थी परना सुर तेणे, चैत्य ग्रह्या वली जेह, वदन प्रमुख तिहा नवि करवु, ते जयणा षट् भेदरे ॥ भविका, समकित यतना कीजे

॥ ४६ ॥ वंदन ते करयोजन कहिये, नमन ते शीश नमाव्ये ! दान इष्ट अन्नादिक देवु, गौरव भक्ति देखाव्ये रे ॥ भविका० ४७ ॥ अनुप्रदान ते तेहने कहिये, वारवार ज दान, दोष कुपात्रे पात्रमतिए, नहि अनुकम्पा मानेरे॥ भ० न० ४८॥अण बोलाये ज बोलवु ते कहिये आलाप वारवार आलाप जे करवो, त कहिये संलाप रे। भ० स० ४९॥ ए जयणाथी समकित दीपे, वळी दीपे व्यवहार, एहमा पण कारणथी जयणा, तेहना अनेक प्रकार रे ॥ भ० स० ५० ॥

ढाल दशमी (ललनानी देशी)

शुद्ध धर्मथी नवि चळे, अतिदृढ गुण आधार, ललना तो पण जे नहि एहवा, तेहने ए आगार, ललना ॥ ५१ ॥ बोल्यु तहेवुं पाळीए, दंतीदंत सम साच ललना सज्जन ने दुर्जन तणा, कच्छप कोटिने तोल, ललना ॥ ५२ ॥ राजा नगरादिक धणी, तस शासन अभियोग, ललना तेहथी कार्तिक शेठ पर, नहि मिथ्यात्व संयोग, ललना ॥ ५३ ॥ मळो जननो गण कह्यो, बल चोरादिक जाण, ललना क्षेत्रपालादिक देवता, तातादिक गुरुठाण, ललना ॥ ५४ ॥ वृत्ति दुर्लभ आजीविका ते भीषण कांतार, ललना, ते देने दूषण नहि, करता अन्य आचार, ललना ॥ ५५ ॥

ढाल अग्यारमी (जिन जन्म्याजी जिण वेळा जननी घरे — ए देशी)

भावीजे रे समकित जेहथी रुअडुं ते भावनारे भावो करी मन परवडुं। जो समकितरे ताजुं साजुं मूलरे, तो व्रततरुरे दीए शिव फल अनुकूल रे ॥ ५६ ॥

हरिगीत छन्द

अनुकूल मूल रसाल समकित, तेह विण मति अंध रे, जे करे किरिया गर्व भरिया तेहने ... [illegible]

सुणो बीजी भावना, कारणु समकित धर्मपुरनु, ऐहवी ते भावना ॥ ५७॥

ढाल

त्रीजी भावना रे, समकित पीठ जो दृढ सही, तो मोटो रे धर्म प्रासाद डगे नहीं। पाये खोटे रे, मोटो मंडाण न शोभिये, तिण कारण रे समकितशु चित्त शोभीए ॥ ५८॥

हरिगीत छंद

शोभिए चित्त नित एम भावी, चौथी भावना भाविए, समकि निधान समस्त गुणनु, एहवु मन ल वेए, ते विना छूटा रत सरिखा, मूल उत्तर गुणसवे। किम रहे ताके जेह हरवा, चोर जो भवोभवे ॥ ५९ ॥

ढाल

भावो पंचमीरे, भावना शमदम सार रे। पृथ्वी परे समकित तस आधार रे। छट्ठी भावनारे, समकित भाजन जो मळे श्रुतशीलनेरे, तो रसते हमाथी नवि ढळे ॥ ६० ॥

हरिगीत छंद

नवि ढळे समकित भावना रस अमिय सम संवरतणो, प भावना ए कही एहमा करो आदर अति घणो। इम भावना परमा जलनिधि होय नतु हल्लोल ए, घन पवन पुण्य प्रमाण प्रग चिदानन्द कल्लोल ए॥ ६१ ॥

हरिगीत छंद

ठरे जिहां समकित ते थानक, तेहना षट्विध कहिएरे, तिहां पहेलुं थानक छे चेतन लक्षण आतम लहिएरे। खीरनीरपरे पुद्गलमिश्रित, पण एहथी छे अलगोरे, अनुभव हंसचंचु जो लागे, तो नवि दीसे वलगोरे ॥ ६२ ॥ बीजुं थानक नित्य आतमा, जे अनुभूत संभारे रे, बालकने स्तनपानवासना, पूरव भव अनुसारे रे। देव मनुज नरकादिक तेहना, छे अनित्य पर्यायरे, द्रव्य थकी अविचलित अखंडित, निजगुण आतमराय रे ॥ ६३ ॥ त्रीजुं थानक चेतन कर्ता, कर्म तणे छे योगे रे कुंभकार जिम कुंभ तणो जग, दंडादिक संयोग रे। निश्चयथी निजगुण ना कर्ता, अनुपचरित व्यवहार रे, द्रव्य कर्मनो नगरादिकनो, ते उपचार प्रकार रे ॥ ६४ ॥ चोथुं थानक चेतन भोक्ता, पुण्यपाप-फल केरो रे, व्यवहारे निश्चय नय दृष्टे, भुंजे निजगुण नेरो रे, पांचमुं थानक छे परमपद, अचल अनंत सुखवासोरे, आधिव्याधि तनमन थी लहिए, तस अभावे सुख खासो रे ॥ ६५ ॥ छट्ठुं थानक मोक्ष तणो छे, संजम ज्ञान उपायोरे, जो सहेजे लहिए तो सघळे, कारण निष्फळ थायरे। कहे ज्ञाननय ज्ञानज साधु, ते विण जूठी किरियारे, न लहे रूपुं रूपुं जाणी छीप भणी जे फिरियारे ॥ ६६ ॥ कहे क्रियानय किरिया विण जे, ज्ञान तेह शुं करशे रे, जळ पेसी कर पद न हलावे, तारु ते किम तरशे रे। दूषण भूषण छे इहां बहुलां, नय एकेकने वादेरे, सिद्धांती ते बेहु नय साधे, ज्ञानवंत अप्रमादे रे ॥ ६७ ॥ इणिपरे सडसठ बोल विचारी, जे समकित आराधे रे, राग द्वेष टाळी मन वाळी, ते शमसुख अवगाहे रे। जेहनुं मन समकितमां निश्चल, कोइ नहि तस तोले रे, श्रीनयविजय विबुध पयसेवक, "वाचक जस" इम बोले रे ॥ ६८ ॥

समकितनी सज्झाय

समकितना पच भेद्य, सुणजो सज्जन लोक रे, गुणिया समकितदर्शने, जेम रवि उदये कोक रे, सेवो आगम सेवधी ॥ १ ॥ करण अपूर्व अगोचर, हणिया चोर महत्तरे, आनंदित पर आतमा पामे समकित सत रे ॥ सेवा० २ ॥ शमादिक रुचि सरधनी, त्रिविध समकित सार रे, शमसवेगादिक गुणा, लक्षणथी व्यवहार रे ॥सेवा० ३॥ नाए अनादि प्राणिया क्षय उपशम धुर भाव रे, निर्मल पुंज उदय करी, शीतल जल छटकाव रे ॥ सेवो० ४ ॥ अंतरकरण प्रथम समे, उपशम समकित भाव रे धुर पामे परम पयडीए करार क्षजने भाव रे ॥ सेवो० ५ ॥ अथवा उपशमश्रेणिओ, भव चक्रे फरे चार रे समकित उपशम सार ए, पामे तेटली वार रे ॥सेवो० ६॥ मधुर वदता आस्वादन, सास्वादन गुणठाण रे, पडतो पामिये श्रेणीथी, आवली षट् परिमाण रे ॥ सेवो० ७ ॥ त्रीजा पुंज चरम समे, जे परमाणु शेष रे, एक समय स्थिति वेदता, वेदक समकित लेश रे ॥ सेवो० ८ ॥ बद्धायु भजे सातमे, क्षयथी क्षायक वत रे, त्रण चार भव अतर, पामे सुख अनत रे ॥ सेवो० ९ ॥ क्षायोपशम सागर छासठ्ठी, वार असख्य विचार रे, अंतर्मुहूर्त उपशमे, सास्वादन पच वार रे ॥ सेवो० १० ॥ एक वार वेदक क्षायको, अबधक भव पार रे, श्री शुभवीर आलिंगया, शिवसुदरी हुशियार रे ॥ सेवो० ११ ॥

सोळ स्वप्ननी सज्झाय

सुपन देखी पेहले, भांगी छे कल्पवृक्षनी डाळ रे, राजा संजम लेशे नहि, दुःषम पंचम काळ रे, चद्रगुप्त राजा सुणो ॥ १ ॥ अकाले सूरज आथमे, तेनो कयो विस्तार रे, जन्म्यो ते पचम काळमां, तेने केवळ नावे होशे रे। चद्र० ॥ २ ॥ त्रीजे चद्रमा चारणी,

तेनो श्यो विस्तार रे, समाचारी जुई जुई हने, धोरे वाट धर्म होशे रे चद्र० ॥ ३ ॥ मृतमेतादि दीठा नाचता, पांचा सुपनो विस्तार रे, कुदेव कुगुरु कुधर्मनी मान्यता घणी होश रे चंद्र० ॥ ४ ॥ नाग दीठो बार फणो तेनो श्यो विस्तार र, वरस थोडामां आवरे, होशे धार दुकाळ रे । चद्र० ॥ ५ ॥ देवविमान छट्ठे वर्ळ्यां, तेनो श्यो विस्तार रे, विद्या ते जंघाचारणी लब्धि त विच्छेद होशे रे चंद्र० ॥ ६ ॥ उग्यु ते उकरडा मध्ये, सातमे कमल विमास रे एम नहीं से सर्व वर्णीया जुदा जुदा मन होश रे ॥ चद्र० ७ ॥ थापना थापनी आपआपनी, घणी विराधना थाशे रे, उत्कृष्ट होशे नेत्र धर्म नो, धवे मिथ्यात्व घार अपार रे ॥ चद्र० ८ ॥ सूका सरोवर दीठा सात जिन, दक्षिण दिशे होटा पाणी रे सात दिश धार होशे नहि, दक्षिण दिशे धर्म होशे रे ॥ चद्र० ९ ॥ सोनानी थाळी मध्ये धूतरवो खावे खीर रे, ऊच तणी रे लक्ष्मी नीच तण घेर होशे रे ॥ चद्र० १० ॥ हाथी माथे चडा रे वांदरो तेनो श्यो विस्तार रे म्लेच्छ राजा ऊचा होश, असली हिन्दु हेठा हाय रे ॥ चद्र० ११ ॥ समुद्रे मर्यादा मूकी धारसे, तेनो श्यो विस्तार रे । शिष्य-चेला ने पुत्र-पुत्रीओ, नहि राखे मर्यादा लगार र ॥ चद्र० १२ ॥ रथधुंवर वाछडा जोडीये, तेनो श्यो विस्तार रे, नाना ने जाण धर्म छाडीने, राजा नीच धर्म आदरशे रे ॥ चद्र० १३ ॥ रत्न झांखर दीठ चौदमे, तेनो श्यो विस्तार र, भरत क्षेत्रमां साधु साधवी, तेना हेत मेळावो थोडा होश रे ॥ चद्र० १४ ॥ महाखवे जूत्या वाछरडा तेनो श्यो विस्तार रे बालक धर्म करशे सदा, वुड्ढा प्रमादी थावा रहेशे रे । चद्र० १५ ॥ हाथी लडे छे मावत विना, तेनो श्यो विस्तार रे, वरस थोडा न आवरे, माग्या नहि वरसे मेह र ॥ चंद्र० १६ ॥ व्यवहार सूत्रनी चूलिका मध्ये, "भद्रबाहु" एम भाखे रे, सोळ सुपनो अर्थ ए, सांभळो राय सुधीर रे ॥ चद्र० १७ ॥

श्री स्थूलिभद्रजीनी सज्झाय

वेष जोईने स्वामी आपनो, लागी मारा अंगमां लायजी, अणधार्युं स्वामी आ शुं कर्युं, राग सुंदर थायजी, यौवन रे पूरव प्रेमने भोगव्या ॥ १ ॥ आवी रे स्वामी हाथ सो, माया हेत नहीं नाथजी, केसरी केद दीधो मने, पण छोडुं नहि साथजी ॥ यौवन रे० २ ॥ योग सुणी कुसुमलणो, दीधो संजम भावजी, मात पिता परिवार सहु, छूटा आठ प्रकारजी, नथी रे धूतारे मने भोगव्यो ॥ ३ ॥ तुं जाणीने बोल्या सुनि, थयो साधुना वेषजी, आव्यो गुरुनी आज्ञा लईने, देवा सौ उपदेशजी ॥ नथी० ४ ॥ काउ मयारे भेगा रही, दीधो सुख अपारजी, अमने योग केवा आवीया, जोग धरीने अवतारजी, जोग रे स्वामीनी अहीं नहीं रहे ॥ ५ ॥ कपट करीने मने छोडया, आव्या तमे निर्धारजी, पण छोडुं नहि कदी नाथजी, नथी नारी गमारजी ॥ जोग रे० ६ ॥ छोड्यां मात पिता वळी, छोड्यो सहु परिवारजी, ऋद्धि सिद्धि रे में सहु तजी, मानी सघळु असारजी । छेटी रहीने पर बात तु ॥ ७ ॥ जोग धर्यो अमे साधुनो छोड्यो सघळो प्यारजी मात समान गणुं तने, सत्य कहुं निर्धारजी । छेटी० ८ ॥ बार वरसनी प्रीतडी, पळमां तूटी न जायजी, परतावो पाछळथी थाय, कहुं लागी ते पायजी । जोग रे० ॥ ९ ॥ नारी चरित्र जोई नाथजी, तुरत छोडशो जोगजी, माटे भेतो प्रथम तमे, पछी हसशे लोकजी । जोग रे० ॥ १० ॥ चाडा जोईने मारा सुंदरी, कशुं नहीं लगारजी, कामशास्त्र म कहो कर्यो, जाणी पाप अपारजी । छेटी रहीने गमे ते करो ॥ ११ ॥ छेटी रहीने गमे ते करो, मारा माटे उपायजी, पण तारा साधु जोऊं नहि, शाने करे तुं हायजी ॥ छेटी० ॥ १२ ॥ माटी पकडे छे जाळमां, जाळमाथी जेम मीनजी, तेम मारा नेसना पाणथी, करीश हुं तमने आधीनजी ॥ जोग रे० १३ ॥ ढोंग करया तनी दई प्रीते महो

मुज हायजी, फाळजु थपाय छे माहरु, यचनो मुर्णाने नाथजी। जोग रे० १४॥ बार वरस तुम आगळे, रह्यो तुम थायामनी, विविध सुख में भोगव्या, कीधो भोग विलासनी॥ आशा तन र हवे माहरी ॥१५॥ त्यारे हतो अज्ञान हु हतो पामनो अपनी, पण हवे ते रस में तज्यो, सुणी शास्त्रना प्रवचनी। आशा० १६॥ ज्ञानी-मुनि ने ऋषियो, मोटा विद्वान भूपनी ते पण दास बनी गया, जोई नारीनु रूपजी॥ जोग रे० १७॥ साधुपणु स्वामी नहि रहे, मिथ्या बदु नहीं टेननी, नेरी र नाटारम माहरो त्यजशो साधुनो वेशनी ॥ जोग १० १८॥ विविध भूषणो धारीने, मनी हठी शणगारनी प्राण वाहा नामे ताहरो, घूरी घूरी अवारनी॥ आशा० १९॥ तो पण साधु जोड नहीं, गणु विष समानजी, सूर्य उगे पश्चिम धनी, तो पण छोडु न माननी॥ आशा० २०॥ भिन्नभिन्न नाटक में कर्या, स्वामी आपनी पामजी तो पण साधु जोई तमे, पूरी नहीं मननी आशनी॥ हाय र महो हवे माहरो॥ २१॥ हाथ जोडी हवे विनवु, प्यारा प्राण जीवननी, बार वरसनी प्रीतडी, याद करो तुम मननी॥ हाय रे० २२॥ चेत चत रे कोश्यासुंदरी, नु कहु वारवारजी, आ ससार असार छे, नथी सार लगारजी॥ सार्थक करो हवे देहनु॥ २३॥ जन्म धरी आ ससारमा, नहीं आचर्या धर्मनी, विविधविध वैभव भोगव्या, कीधा घणा कुकर्मजी॥ सार्थक० २४॥ ते सहु भोगववु पडे, मूआ पछी तमामनी, अधर्मी प्राणीने मन नहीं, शरणु कोईनुं ठामनी॥ सार्थक० २५॥ भिक्षुरूपी आ ससारमा, मानव भील रूप धारजी। जवाळ जाळ ऊपर धगडगे, कालरूपी मच्छीमारजी॥ सार्थक० २६॥ विषयरस वहाला गणी, कीधा भोग विलासनी, धर्मना कार्य कर्या नहीं, राखी भोगनी आशनी॥ उद्धार करो मुनि माहरो॥ २७॥ मत चूकावया

छड करी मुनि आपनी, थनी छेक अज्ञान जी ॥ उद्धार० २८॥ श्रेय करो रे मुनि माहरूं बतावीने शुभ ज्ञानी, धन्य छ आपने, दीना मेरु समानजी ॥ उद्धार० २९॥ बा बरस सुख भोगव्यां, लाभ्यां रूप दिदारजी, तोय हुं तृप्त थई नहीं धिक् धिक् मुज धिक्कारजी ॥ उद्धार० ३० ॥ छोडी मोह मसारनो, धारो शीयळ व्रत धारजी, तो सुखशांति सदा मळे, आवे भवनो पारजी ॥ साधक० ३१ ॥ धन्य छे मुनिवर आपने, धन्य शकडाल तातजी, धन्य सभूति विजय मुनि, धन्य लाछलदे मातजी॥ मुक्ति वरी रे मोहजालथी ॥ ३२ ॥ आज्ञा दीओ रे हवे मुजने, जाऊं मुज गुरु पासनी, चोमासुं पूर्ण थया पछी, साधु छइ आवासनी ॥ कही रीते शीयळ व्रत पाळ्यो ॥ ३३ ॥ दर्शन आपना मुजने, करवा अमृतपाननी, सूरि "इन्द" कहे स्थूलिभद्रजी, धन्या सिंह समाननी, धन्य छे मुनिवर आपने ॥ ३४ ॥

श्री मृगापुत्रनी सज्झाय

(दोहा)

प्रणमी पास जिणंदने, समरी सरसती माय, जिन गुरु चरण नमी करी, भणशुं महामुनिराय ॥ १ ॥ राज ऋद्धि लीला परिहरी, लीधो संयमभार, तेह मृगापुत्र गाइशुं, सुणजो सहु नरनार ॥ २ ॥ संक्षेपे करी वर्णवुं, सूत्रे छे विस्तार भणतां सुणतां ध्यावतां, लहिये भवनो पार ॥ ३ ॥ भोगी नरमां भमरलो, ऋषियोमां शिर दार तस गुण वर्णवतां थकां, छूटे कर्म अपार ॥ ४ ॥

ढाळ

सुग्रीव नगर सोहामणुंजी, बलभद्र तिहां राय, तस घर घरणी मृगावतीनी, तस नंदन युवराय हो माडी क्षण लाखेणी रे जाय ॥ १ ॥ बलश्री नामे भलोजी, मृगापुत्र प्रसिद्ध ...

करीजी, गुनतिलक सम दीप ॥ हो माडी० ३ ॥ भली गली पहिरा दयोजी, यौवन वय अब आय, सुन्दर नारि परणावांजी, पराभव तिन माय ॥ हो माडी० ३ ॥ सब यव रूपे मानिनीजी, परण्या बचीन नार, देव विषय सुख भोगवेजी, नाटकना धणकार ॥ हो माडी० ४ ॥ रत्नजडित मोहलनाजी, अन्मुत रूपा आव म, देवगण्डुकनी परेजी विलसे मनविलास ॥ हो माडी० ॥ ५ ॥ एक दिन बेठा माळियेजी, मात ने परिवार मारग पग दशे छत्रोजी, दीठा श्रीअणगार ॥ हो माडी० ६ ॥ मुनि देखी मन मांभर्याजी, वसीयो मन वैराग, उपर्यो तामन दुमयोजी, जागी ते पाव लाग ॥ हो माडी० ७ ॥ पाय लागी बीनवेजी, सुणसुण मोरी माय, मह्यानी दर नाखियाजी, तन चातदिमाय ॥ हो माडी० ८ ॥ दुःखी पाणी ठेडमांजी भाषी हे दावराय, जन्म मरण दुःख भोगव्याजी, तेम धनपतिमाय ॥ हो माडी० ९ ॥ विगलेंद्रि तिर्यचमाजी, मनुष्य देव मोझार, धर्म विहूणा आतमाजी, रडवडीयो संसार ॥ हो माडी० १० ॥ मात नरके हूं भम्योजी, अनंती बार, छेदाभेदन त्यां सह्यांजी, कहतां न आवे पार ॥ हो माडी० ११ ॥ मायरनी जन्मी पणीजी, में पीधां स्तन पान, तृप्ति न पाम्यो आतमाजी, अधिक अ राख्या मान ॥ हो माडी० १२ ॥ चारित्र चिंतामणि सयोजी, अपीए मोरी मात, ता पर यौवन थरमांजी, क्षणक्षण त्रूटे आय ॥ हो माडी० १३ ॥ मात अनुमति आपीयेजी, लेइशुं संयम भार, पद रवा सुख सांभळ्याजी, करशुं वेहला सार ॥ हो माडी० १४ ॥ वयण सुणी बेटा तणाजी, जननी धरणी ढळंत, चिंत धर्यु सब आरेखी, नयणे नीर झरंत रे जाया, सुखविण घडीरे ए माम ॥ १५ ॥ वळती माता इम भणेजी, सुण सुण मोरा रे पुत्र, मन मोहन तुं वालहोजी, कांई भाग परसूत्र रे जाया० ॥ १६ ॥ म्होटा मंदिर माळियांजी, शा सभोपद साय, तुज विण सह अळ-

खामणाजी, रातदिवस केम जाय रे जाया० ॥ १७॥ नव मस वाश उदरे धर्योनी, जन्म तणा दु:ख दीठ, कनककचोळे पोषि योजी, हवे हु थई अनीठ रे जाया० ॥ १८॥ यौवन वय नार तणाजी, भोगवो बहोळा रे भोग, यौवन वय वीत्या पछीजी आदरजो तप योग रे जाया० ॥ १९॥ पक्ष्यो अषाढी जिम हाथि योजी, मृगलो पडीयो रे पास, पक्षी पडीयो पाजरेजी, तेम दुख भरवास रे जाया० ॥ २०॥ घरघर भिक्षा मागवीजी, सर निरस होय आहार, चारित्र छे वत्स दोहिलुजी, जेवी खाडा धार रे जाया० ॥ २१॥ पच महाव्रत पाळवाजी, पाळवा प आचार, दोष बेंताळीश टाळीनेजी, लेवो सझतो आहार रे जाया ॥ २२॥ मीण दाते लोहमय चणाजा, किम चावीश कुमार, बे कोठीया समीवडोजी, जिने भाख्यो सयम भार र जाया० ॥ २३ पलग तळाइये पोढतोजी, करवो भूमि सथार, कनक कचोळा छो वाजी पाचलीण व्यवहार रे जाया० ॥ २४॥ मस्तके लो करावयाजी, तु सुकुमार अपार, बावीस परिसह जीतवा करवा ऊग्र विहार रे जाया० ॥ २५॥ पाय अलवाणे चालवु शीयाळे शीत वाय चोमासु वत्स दोहिलुजी, ऊनाळे लु वाय जाया० ॥ २६॥ गगा सायर आदे करीनी, उपमा देखाडी रे म दुक्कर चारित्र दाखियुनी, कायर पुरुषने थाय रे जाया० ॥ २७ कुमर भणे सुण मावडीजी, सयम सुखभडार, चौद राज न बणाजी, फेरा टाळणहार रे जाया० ॥ २८॥ अनुमति तो द सरी जी, कुण करशे तुज सार, रोग जब आवी लागशेजी, औषध उपचार रे जाया० ॥ २९॥ वनमा रहे छे मृगलाजी, करे तेहनी सार, वनमृगनी परे विचरशु जी, एकलडा निर हो माडी० ॥ ३०॥ अनुमति आपे मावडीजी, आव्या घ मोझार, पच महाव्रत आदर्याजी, पाळे सयम भार॥ मुनीश्वर बन तुम अवतार ॥ ३१॥ मृगापुत्र ऋषि रानियोजी, पद्द

गोवाल ए समो नहि वैरागियेजी, जेणे टाळ्यो आतम साल॥ ॥ मुनी० ३२॥ भण्यो अध्ययन ओगणीशमेंनी, मृगापुत्र अधिकार, तप-जपकिया शुद्ध करीनी, आराधी पचाचार ॥ मुनि० ३३॥ संयम दुक्कर पाळियुजी, करी एक मास संथार कर्म खपावी केवळ लहीनी, पहोंच्या मुक्ति मझार॥ मुनि० ३४॥

श्री चंदनबालानी सज्झाय

बालकुवारी चंदनबाला, बोले बोल रसाला रे रूप अनुपम नयण विशाला, गुण गगानल माळा रे॥ बाल० १॥ शेठ धनावह मंदिर आणी, बेटीनी परें जाणी रे, अणाय अदेखाई मनमां आणी, तस घरणी दुह्वाणी रे॥ बाल० २॥ मूला कुमति तणी छे कूंडी, बाला मस्तक मूंडी रे, बेडी जडी ने ओड मति ऊडी, ढालु देखी भूंडी रे॥ बाल० ३॥ आयो शेठ त्रण दिन जतें, दिवस धणेरा वहते रे, अडद बाकुला देइ एकांते, सुपडा खूण रहाते रे॥ बाल० ४॥ पांच दिन ऊणो छमासी, अभिग्रह वीर अभ्यासी रे, आव्या आगणे योगविलासी, देखी कुंवरी उल्लासी रे॥ बाल० ५॥ एक पग उंबरा बाहेर राखी, नयण आसुडा नाखी रे, बाकुला पडिला भ्या मन माखी, मुक्ति तणी अभिलाषी रे॥ बाल० ६॥ साडी बार कोडीय सिद्धि वृष्टि सोनैयानी कीधी रे, अनुक्रमे संयम कमला लीधी, मृगावतीने दीक्षा दीधी रे॥ बाल० ७॥ एक दिन वीर को शाखी आव्या, चंद्र सूरज मन भाया रे मूळ विमाने वांदवा आव्या, तेज अधिक तस पाया रे॥ बाल० ८॥ ऊठी स्थानक आपणे चाली, जाणु वे जण वहेली रे, म ए वाणी जावे न मेली, आवी गुरुणी भेली रे॥ बाल० ९॥ घोर घपट अंधारे आई, रही पगे लगाइ खमाई रे, केवल लइ निज कर्म खपाई, गुरुणीये खबर न पाइ रे॥ बाल० १०॥ हाथ ऊंचो लइ चंदना जगाई, आवे नाग ऊभाई रे ।तें अंधारे खबर किम पाई, केवळ ज्ञान उपाई रे॥ बाल०

११ ॥ में ए थीवी माठी करणी, ज्ञानीनी आशातना कीनीरे, चढी ने पगे लागी गुरुणी, तुहीज तारण तरणी रे ॥ चाल० १२ ॥ गुरुणी चेली कर्म विछोडी, पहोंची मुक्तिमुं जोडी रे, विजय कवि पंडितनी जोडी, शिष्य "कुंवर" कहे कर जोडी ॥ चाल० १३ ॥

३३ द्वारिका नगरीनी सज्झाय

(दोहा)

दोनु बधव आरडे, दुख धरता मनमाय, बळती देखी द्वारिका, कीजे कवण उपाय ॥ १ ॥ रत्नभींत सुवर्ण तणी, तेह बळे तत्काळ, सुवर्णथंभा कांगरा, जाणे बळे पराळ ॥ २ ॥

ढाल

बळती द्वारिका देखीने रे, भाई थया घणा दिलगीर, हैडुं ते लागु फाटवारे, भाई नयणे वछूटया नीर रे । माधव एम बोले ॥ १ ॥ बे बंधव मळीने तिहांरे, भाई वात करे करुणाय, दुःख साले द्वारिका तणुरे, भाई कीजे कवण उपाय रे ॥ मा० ॥ २ ॥ किहां रे द्वारिकानी साह्यबीरे, भाई किहां गजदळना ठाठ, सज्जन ते गेलो किहांरे, भाई क्षणमां हुआ घणा घाट रे ॥ मा० ३ ॥ हाथी घोडा रथ बळेरे, भाई बेंतालीस बेंतालीस लाख, अडतालीस करोड पाळा हता रे, भाई क्षणमा हुय गया राख ॥ मा० ४ ॥ हळधर ने हरिजी कहे रे भाई, धिक् कायरपणुं मोय, नयरी बळे मुज देखतारे, भाई मुज जोर न चाले कोय रे ॥ मा० ५ ॥ नगर बळे मुज देखतारे, भाई राखी न शकु रे जेम, इंद्रधनुष में चडावीयुंरे, भाई ए बळ भाग्यु केम रे ॥ मा० ६ ॥ जिण दिशे जोता हता रे, भाई सेवक सहस अनेक, हाथ जोडी ऊभा सहुरे, भाई आज न दीसे एकरे ॥ मा० ७ ॥ मोटा मोटा राजवी, भाई शरण

रहेता आही; उलटो शरणो ताकियो रे, भाई वेरण येन्ा आही रे ॥ मा० ८ ॥ बादल वीज तणी परे रे, भाई ऋद्धि बदलाए सोय, इण दोहिलीमें आपणोरे, भाई सगो न दीसे कोय रे ॥ माधव० ९ ॥ महल उपकरण आयुध घटेरे, भाई घटे सहु परिवार, आ आपदा पूरी पडीरे भाइ कीजे कवण विचार रे ॥ मा० १० ॥ वळता हलधर इम कहेरे, भाइ प्रगट्या पूर्वना पाप, बीजु तो सघळु रह्यु रे, भाई माही बळे माय ने बापरे ॥ मा० ११ ॥ दोनु बंधव माही धसयारे, भाई नगरीमा चाल्या जाय, रथ जोडी तेणे समेरे, भाई माही घाल्या माय ने तायरे ॥ मा० १२ ॥ दोनु बंधव जूतियारे, भाइ आन्या पोतने माय दोनु बंधव बाहर नीकल्यारे, भाई दरवाजो पडयाँ आयरे ॥ मा० १३ ॥ पाछुं वाळी जुए तिहारे, भाइ घणा थया दिलगीर, छाती ते लागी फाटवारे, भाई नयणे वछूटया नीररे ॥ मा० १४ ॥ हलधरने हरिजी कहेरे, भाई सांभळ बंधव वात, किणी दिशे आपणे जाइशुरे, भाई ते दिशा मने बतावरे ॥ मा० १५ ॥ वचन सुणी बंधव तणारे, भाइ हलधर बोले एह पांडव भाई कुंती तणारे, भाई अम चालो तेह घेर रे ॥ मा० १६ ॥ वचण सुणी हलधर तणा रे, भाई माधव बोले एम, देशवटो दइ काढियारे, भाई ते घर जाशु केमरे ॥ मा० १७ ॥ वळता हलधर एम कहेरे, भाइ देखी होशे दिलगीर, ते केम अवगुण आणशेरे, भाई गिरुआ गुण गंभीर रे ॥ मा० १८ ॥ तें तेहना कारज कीधारे, भाई घातकी खंडमा जाय द्रौपदी सोंपी आणीने रे, भाइ ते केम भूलशे भाय रे ॥ मा० १९ ॥ अहंकारी शिर टोहशो रे, भाइ एहवी संपदा पाय, ते नर पाछा चालिया रे, भाई आपदा पडी बहु आयरे ॥ मा० २० ॥ पाटव मथुरा प्रगटी निहारे, भाई अभिसूण समुद्रतीर, ते नगरी भणी चालियारे, भाइ बंधव बेहु सुधीर रे ॥ मा० २१ ॥ जे नर शय्याए पोढतारे, भाइ ते नर पाळा होय, कर जोडी विनय विजय भणेरे, भाई भव पार उतारो मोय ॥ मा० २२ ॥

श्रीधन्नाजीनी सज्झाय

वीर बत्तीश कामिनीरे धन्ना,धुर ऊभी पस्ताय, रवि आथमतो एम कहेरे, धन्ना वदन कमल विल्लाय, धन्ना हु तो वारीरे धन्ना, आन नहीं एसो काळ ॥ १ ॥ तु मुज अधा लाकडीरे, धन्ना तु मुज प्राण आधार,तुन विना जग सूनो पडयोरे धन्ना भावे ए जाणम जाण ॥ध०२॥ तन धन जोबन कारमोरे, माता आ रे ससार असार, अनुमति दियो मुज मातजीरे, हु लइश सयम भार हो जननी ॥ हु० ३ ॥ पच महाव्रत पाळवारे धन्ना, पाचे ए मेरु समान, बावीश परिसह जीतवारे धन्ना, सजम खाडानी धार ॥ धन्ना हु० ४ ॥ रत्न जडि-तनो पाजरोरे माता, पोपट जाणे छे बध, कामभोग ससारनारे माता, ज्ञानी जाणे छे फद हो जननी हु० ॥ ५ ॥ तुन रूप सरीखी कामिनीरे धन्ना, लक्षणे बत्रीश नार, पाच इद्रियना सुख परिहरे रे धन्ना, फरी पस्तावे शो वार ॥ हु वारी० ६ ॥ धन जोवन माया स्थिर नहीं रहे माता, जेवु आवे एवु जाय, ए सौ चचळ जीवडा रे माता, जेवा पीपलकेरा पान हो जननी हु० ७ ॥ घरे बेठा धर्म कीजीए रे धन्ना दान, शीयल, तप, भाव, सजम मारग दोहिलोरे धन्ना, मत कर एवडो उन्माद ॥धन्ना हु० ८ ॥ रमणीमु राची रह्यो रे माता, नहींरे गण्यो नवकार मन पस्तायो नहि कर्येरे माता, गयोरे जन्मारो हार हो जननी हु० ॥ ९ ॥ रमणीशु राचु नहींरे माता, माहरी मति भरपूर जे रमणीशु राची रह्यारे माता, ते दुर्गति जाशे हजूर हो जननी हु० १० ॥ तु सुकुमाळ सोहामणोरे, धन्ना, तुज माताजीने सोच, सोच कीधो मोरी मातजीरे हु तो करीश कर्मनो लोच ॥ हो जननी हु० ११ ॥ दीपक विना मदिर किशोरे धन्ना, विणपुत्र परिवार, वीरविहूणी बहेनडीरे धन्ना, झूरे वार तेहवार रे धन्ना हु० ॥ १२ ॥ चद्र विना केसी चादनीरे धन्ना, तारा विना केसी रात, कथ विना केसी कामिनीरे धन्ना, झूरे बारे मास ॥ धन्ना हु० ॥ १३ ॥

शोभा कारमीजी, विणसता नहि वार, देवतणे वचने प्रतिबूझियोजी, चक्री सनतकुमार ॥ स० ६ ॥ सूरज राहुग्रहणे समजीओजी, श्रीवीरधिर राय, करकडू प्रतिवूझ्यो देखीनेजी, वृषभ जरा कुल काय ॥ स० ७ ॥ जिहा लगी धूआ धवलरा रहजी, जलपरपोटो जोय, आउगु अथिर तिम मनुष्यनुजी, गर्व मकरशो कोई ॥ जे ज्ञान मा सम होय ॥ स० ८ ॥ अतुल बल सुखर जिनवर जिस्याजी, चक्री हरिबल जोडी, न रह्या एणे जुग कोइ थिर थईजी, सुरनर-भूपति कोडी ॥ स० ९ ॥

बीजी अशरण भाव

पलपल छीजे आउगु, अजलिजल ज्यु एह, चलते साथे सबगो, लेई शके तो लेह ॥ १ ॥ छे अचिन्त्य गलशु मही, समय सिंचाणो आवी, शरण नहीं जिन वयण विण, तिणे हुवे अशरण भावि ॥२॥

ढाल बीजी (सामेरी राम भगो हरि उठोरे—ए देशी)

बीजी अशरण भावना, भावो हृदय मझाररे, धर्म विना पर भव जता, पावे न लहीश पाररे ॥ जाइश नरक द्वाररे, तिहा तुझ कोण आधाररे ॥ १ ॥ टाल सुरगी रे प्राणिया, मुकने मोह जनाळरे, मिथ्या मति सवि टालरे, माया आल पपालरे ॥ टा० २ ॥ मात पिता सुत कामिनी, भाई भगिनी सहायरे में में करतो रे अज परे, कर्म ग्रह्यो जीव जायरे ॥ तिहा आडो को नवि थायरे, दुख ना लिये वहेंचायरे ॥ टा० ३ ॥ नन्दनी सोवन डुगरी, आसर नाथी को काजरे, चक्री सुभूम ते जलधिमा, हार्यो छ खड राजरे । बूड्यो चरम जहाज र, देव गया सवि भागरे, लोभे गई तस लाजरे । टा० ४ ॥ द्वीपायन दही द्वारिका, बलवत गोविंद रामरे राखी न शक्यारे रानवी, मात पिता सुत धामरे । तिहा रह्या जिन

नामरे, शरण कियो नेमि स्वामरे, व्रत लेई अभिरामरे, पोहोता शिवपुर ठामरे । शा० ॥ ५ ॥ नित्य मित्र सम देहडी, सयणां पर्व सहायरे, त्रिवर धर्म उगारशे, त्रिम ते धर्मनिक भामरे । राख्यो सद्धी उपायरे, मसोन्यो यशो रायरे, ठान्या शेठ्गा अवायरे ॥ शा० ६ ॥ जन्मजरामरणादिक, वैरी लाग्या छे केडरे, अरिहंत शरणु तु आदरी, भवभयण दुःख फेडरे । शिवसुन्दरी घर तेडरे, विनयवल-रस रेडरे, सींच सुकृत सुर पेडरे । शा० ॥ ७ ॥

त्रीजी संसार भावना

चावल शुन धरईयाँ चार देव्यो जम धाड, सयम शरणुं समदग्गु, धारकणकपार टाड ॥ १ ॥ इण शरण सुखिया थया, श्री *अनाथी अणगार, शरण उह्या विण जीवडा, इणी परे रुले संसार ॥ २ ॥*

ढाल त्रीजी (राग–मारुणी)

त्रीजी भावना इणी परे भाविये रे, एह स्वरूप संसार, कर्मवशे जीव नाच नवनव रंगशुं रे, ए ए विविध प्रकार ॥ १ ॥ चेतन चेतियेरे, लही मानव अवतार, सब नाटकथी आ हुओ ऊभगोरे, सो छोडो विषय विकार ॥ चे० २ ॥ कबही भू-जल-जलण-निल-तरुमा भम्योरे, कबही नरक निगोद, बितिचउरिन्द्रियमाहे केई दिन वस्योरे, कबहीक देव विनोद ॥ चे० ३ ॥ कीडा पतंग हरि मातंगपणु भज्योरे, कबही नृप दिपाल, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य कहा-वयोरे, हाये शूद्र चंडाल ॥ चे० ४ ॥ एम चोराशी चौटे रमतां रंगशुं, करी करी नवनव वेष, रूप कुरूप धनी निर्द्धन्य सोभागीयोरे, दुभागी दरवेश ॥ चे० ५ ॥ द्रव्य क्षेत्र सूक्ष्म ने बादर भेदशुंरे, कालभाव पण एम, अनंतानंत पुद्गल परावर्तन कर्यारे, करो पद्मश्री एम ॥ चे० ६ ॥ भाई-बहेन-नारी तातपणु भज्यारे, मात पिता होय

शोभा कारमीनी, विणसता नहि वार, देवतणे वचने प्रतिबूझियोजी, चक्री सनतकुमार ॥ स० ६ ॥ सूरज राहुग्रहणे समनीओनी, श्रावस्तिधर राय, करकडू प्रतिबूझ्यो देखीनेजी, वृषभ जरा कुल थाय ॥ स० ७ ॥ किहां लगी धूआ धवलरा रहजी, जलपरपोटो जोय, आउखु अथिर तिम मनुष्यतनुजी, गर्व मकरशो कोई ॥ जे ज्ञान मा सरु होय ॥ स० ८ ॥ अतुल बल सुरधर जिनवर जिस्यानी, चक्री हरिचक्र जोडी, न रह्या ज्णे जुग कोई थिर थईजी, सुरनर-भूपति पोढी ॥ स० ९ ॥

बीजी अशरण भा-

पलपल छीजे आउखु, अजलिजल ज्युं एह, चलते साथे सबले, लेई शके सो ऐह ॥ १ ॥ छे अचिन्त्य गलशु मही, समय सिंचाणो आवी, शरण नहीं जिन वयण विण, तिणे हुवे अशरण भावि ॥२॥

ढाल बीजी (सामेरी राम भगो हरि उठोरे–ए देशी)

बीजी अशरण भावना, भावो हृदय मझार रे, धर्म विना पर भय जवा, पापे न लहीश पाररे ॥ जाइश नरक द्वाररे, तिहा तुझ कोण आधाररे ॥ १ ॥ लाल सुरगी रे प्राणिया, मुक्ने मोह जजालरे, मिथ्या मति सवि टालरे, माया आल पपालरे ॥ ला० २ ॥ मात पिता सुत कामिनी, भाई भगिनी सहायरे में में करतो रे अन परे, कर्मे ग्रह्यो जीव जायरे ॥ तिहां आडो को नवि थायरे, दुःख ना लिये वहेंचायरे ॥ ला० ३ ॥ नन्दनी सोवन डुगरी, आसर नावी को काजरे, चर्मी सुभूम ते जलधिमा, हार्यो छ खड राजरे । बूड्यो चरम जहाज रे, देव गया सवि भागरे, छोभे गई तस लाजरे। ला० ४ ॥ द्वीपायन दही द्वारिका, बलवत गोविंद रामरे, राखी न शक्यारे राजवा, मात पिता सुत धामरे। तिहा राख्या जिन

नामरे, शरण कियो नेमि स्वामरे, व्रत लई अभिरामरे, पोहोंता शिवपुर ठामरे। ला० ॥ ५ ॥ नित्य मित्र सम देहडी, सयणा पर्व सहायरे, जिनवर धर्म उगारने, निम ते वर्शनेत भायरे। राग्यो मत्री उपायरे, सतोम्यो वळी रायरे, टाळ्या तेहना अपायरे ॥ ला० ६॥ जन्मजरामरणादिका, वैरी लाग्या छे केडरे, अरिहंत शरणु तु आदरी, भवभ्रमण दु ख फेडरे। शिवसुन्दरी घर तेडरे, नेहनवल रस रेडरे, सींच सुकृत सुर पेडर। ला० ॥ ७ ॥

त्रीजी ससार भावना

यावचा सुत थरद्यों जोर देखी जम धाड, सयम शरणु समदृसु, धनकणकचन छाड ॥ १ ॥ इण शरण सुखिया थया, श्री अनाथी अणगार, शरण ग्रह्या विण जीवडा, इणी परे रुळे ससार ॥ २ ॥

ढाल त्रीजी (राग–मारणी)

त्रीजी भावना एणी परे भावियेरे, एह स्वरूप ससार कर्मवशे जीव नाचे नवनव रगशुरे, ए ए विविध प्रकार ॥ १ ॥ चेतन चेतियेरे, लही मानव अवतार, भव नाटकथी जो हुओ ऊभगोरे, तो छोडो विषय विकार ॥ चे० २ ॥ कबही भू–जल–जलना–निल–तरुमा भम्योरे, कबही नरक निगोद, बितिचौरिन्द्रिमाहे केई दिन वस्योरे, कबहीक देव विनोद ॥ चे० ३ ॥ कीडी पतग हरि मातगपणु भजेरे, कबही सर्प शियाल, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य कहावतोरे, होवे शूद्र चडाल ॥ चे० ४ ॥ लाख चोरासी चौटे रमता रगशुरे, करी करी नवनव वेष, रूप कुरूप धनी निर्द्रव्य सौभागीयोरे, दुर्भागी दरवेश ॥ चे० ५ ॥ द्रव्य क्षेत्र सूक्ष्म ने बादर भेदशुरे, कालभाव पण एम, अनतानत पुद्गल परावर्तन कर्यारे, कह्यो पन्नवणा एम ॥ चे० ६ ॥ भाई–बहेन–नारी तातपणु भनेरे, मात पिता होय

पुत्र, तेहीज नारी वैरी मे थली वालहोरे, एह ससार सूत्र ॥ चे० ४
भुवनभानु निज भाव्या चरित्र मुणी घणारे समज्या चतुर सुजाण, धर्म निवर थश मूकी मोह विटवणारे, मल्या मुक्ति जिनभाण ॥ चे० ५ ॥

चोथी एकत्व भावना

इम भवभव जे दुःख महा, ते जाणे जगनाथ, भयभजन भावठहरण, न मिल्यो अविहड साथ ॥ तेणे कारण जीव एकलो, छोडी राग गल पाश, सवि ससारी जीवशु, धर चित्त भाव उदास ॥

ढाळ ४ थी

[राग–गोडी सुगत कीजे हो साधु पिसासहो–ए देशी]
चोथी भावना भवियण चित्त धरो, चेतन तु एकाकीरे, आव्यो तिम जाइश परभव थकी, इहा मूकी सवि बाकीरे । मम कर ममत समता आदरो ॥ १ ॥ आणी चित्त विवेकीरे, स्वार्थिया स्वजन सहु मल्या, सुखदुःख सहशे तु एकोरे ॥ मम० २॥ वित्त वहेचण आवे सहुए मल्या, विपत्ति समये जाये नाशीरे, दव बलतो देखी दश दिशे पूले, जिम पशु तरुवासीरे ॥ मम० ३ ॥ षट् खड नव निधि चौद रतन धणी, चोसठ सहस सुनारीरे छेडो छोडीरे चाल्य एकला, हार्यो जेम जुगारीरे ॥ मम० ४ ॥ त्रिभुवन कटक विरू धरावतो, करतो गर्व गुमानरे, श्रागा विण नागा त सहु चाल्या रावण सरीखा राजानरे ॥ मम० ५ ॥ माल रहे घर स्त्री विश्रामणा जेतवना लगे लोकरे चय लगे कायारे आखर एकलो, प्राणी भवे परलोकेरे ॥ मम० ६ ॥ नित्य कलहो बहु मेळे दगियो, बहुपे खटपट थायरे, वलयनी परे विहरीश एकलो, एम बूझे नमिराय रे ॥ मम० ७ ॥

पाचमी अन्यत्व भावना

भवसायर बहु दुख जल, जनम मरण तरग, ममता ततु तेणे मह्यो, चेतन चतुर मातग ॥ १ ॥ चाहे जो छोडण भणी, तो भज भगवत महत, दूर करे पर बधने, जिम जलथी जलकत ॥२॥

ढाल ५ मी

[कपूर हुए अति ऊजलो ए राग]

पाचमी भावना भावीयेरे, जीव अन्यत्व विचार, आपस्वार्थीयो सहुरे, मळियो तुन परिवार ॥ १ ॥ सवेगी सुदर, बूझ मा मूक्ष गमार, तहारु को नही इण ससार, तु नही केहनो ए निर्धार ॥ स० २ ॥ पथसिरे पथी मल्यारे, कीजे किणशु प्रेम, रात वसे प्रह ऊठ चलेरे, नेह निवाहे केम ॥ स० ३ ॥ जिम मेळो तीरथे मलेरे, जनतन वणजती चाह कै तोटो कै फायदोरे, लेई लेई निज घर जाय ॥ स० ४ ॥ जिहा कारज जेहनो सरेरे, तिहा ते दाखे नेह सूरीस्तानी परेरे, छटकी देखाडे छेह ॥ स० ५ ॥ चुलणी अगन मारवारे, कूडु करी जतुगेह, भरत बाहुबळी झूझीयार, जोजो निजना नेह ॥ स० ६ ॥ श्रेणिक पुत्रे बाधीयोरे, लीधु वहेंची राज्य, दुख दीधु बहु तातनेरे, देखो सुतना काज ॥ स० ७ ॥ इण भावना शिवपद लहेरे, श्रीमरुदेवी माय, वीर शिष्य केवल लह्युरे, श्री गोतम गणराय ॥ सवेगी० ५ ॥

छट्ठी अशुचि भावना

मोह वशे मन मत्रवी इद्रिय मल्या कलाल, प्रमाद मदिरा पायके, बाध्या जीव भूपाल ॥ १ ॥ कर्म जनीर जडी करी सुख्त माल सवि लीध, अशुभ विरस दुर्गंधमय, तनगोत हरे तस दीध ॥ २ ॥

ढाल ६ ठी राग—सिंधु सामेरी

छट्ठी भावना मन धरो, जेम अशुचि भरी ए कायारे, शी माया रे, माडे फाना पिंडशु ए ॥ १ ॥ नगर खाळ परे नित्यु वहे, मल-मूत्र भडाररे, तिम शरीरे, नर नव द्वादश नारीना ए ॥ २ ॥ देखी दुगध दूरथी तु मुह मचकोडे मायोरे नवि जाणे तिण पुद्गल निज तनु भर्यु ए ॥ ३ ॥ मास रुधिर मेदा रसे, अस्थि मज्जा नर बीजेरे, तु रीझे रे, रूप देखी देखी आपणु ए ॥ ४ ॥ कृमिवालादिक कोथळी, मोहरायनी पेटी रे, ए पेटीरे, पर जडी घणा रोगनी ए ॥ ५ ॥ नव मास गर्भावास रह्यो, कृमि पं मळमा वसियेरे, तु रसियेरे, उधे माथे एम रह्यो ए ॥ ६ ॥ कनक कुमरी भोजन भरी, तिहा देखी दुर्गंध बूझ्यारे, अति जूझ्यारे, मो मित्र निजकर्मशु ए ॥ ७ ॥

सातमी आश्रव भावना

तन छिल्लर इन्द्रिय मच्छा, विषय करण जवाल पाप फल पाणी भर्यु, आश्रव वहे गढनाल ॥ १ ॥ निर्मळ पक्ष सहे सुगति, नाण विनाण रसाल, शु बगनी परे पकजल, चूथे चह मराल ॥ २ ॥

ढाल ७ मी (राग – घोरणी)

आश्रव भावना सातमीरे, समजो सुगुरु समीप, औधादि तुमे काई फरोरे, पामी श्रीजिनदीपो रे ॥ १ ॥ सुणसुण प्राणी परिहर आश्रव पचारे दशमे अगे कह्या, जहना दुष्ट प्रपचो ॥ सुण० ॥ २ ॥ हॉरे जे हिंसा करे रे, ते लहे कटुक विपाक, प हर्सें गोत्रासनारे, जो जो अग विपाको रे ॥ सुण० ३ ॥ मिर षयणे वसु पड्यो रे, मडिक पर धन लेइ, इण अवस्रे स

बोलया रे, इन्द्रादिक सुर केई रे ॥ सुण० ४ ॥ महा आरंभ परिग्रहे रे, प्रधान्त नरय पहुत्त, सेव्या इन्द्रियपशु भवेरे, पाचे दुर्गति दुतोरे ॥ सुण० ५ ॥ छिद्र सहित नावा जले रे, बूडे नीर भराय तिम हिंसादिक आस्रव रे, पाप पिंड भरायारे ॥ सुण० ॥ अविरति लागे एकेन्द्रियारे, पापस्थान अढार, लागे पाचे ही क्रियारे, पचम अग विचारा रे ॥ सुण० ७ ॥ कटुक क्रिया थानक फळया रे, बोल्या तीन रे अग पहेला द्वितृ कर्मफेरे, विरुओ तास प्रसगो रे ॥ सुण० ८ ॥ मृग पतंग अलि माछलो रे, करी एक विषय प्रपच, दुखिया ते तिम सुख छदरे जस परवश एह पचार ॥ सुण० ९ ॥ हास्य-निद्रा-विषयादिकमें रे, नरक निगोद रे जात, पूरवधर श्रुत हारियारे, अवरानी शी वातारे ॥ सुण० १० ॥

जीव हित चिंतवेजी, वैर न करे जग मित्त, सत्य वयण मुखे भाखियेजी, परिहर परनु वित्त ॥ स० ५ ॥ काम कटक भेदण भणीजा, धर तु शील सन्नाह नवविध परिग्रह मुकताजी, लहिये सुख अथाह ॥ स० ६ ॥ दव मणुअ उपसर्गशुजी निश्चल होइ सुधीर; बावीस परिसह जीतियेजी, जिम जीत्या श्रीवीर ॥ स० ७ ॥

नवमी निर्जरा भावना

दढ प्रहारी दढ ध्यान धरी, गुणनिधि गज सुकुमाल, मेतारज मद भमो, सुकोशल सुकुमाल ॥ १ ॥ एम अनेक मुनिवर तर्या, उपशम सवर भाव, कठिन कर्म मवि निर्जर्या, तिण निजर प्रस्ताव ॥२॥

ढाळ ९ मी (राग–गोडी)

नवमी निर्जर भावना चित्त चेतोरे, आदरो व्रत पच्चखाण, चतुर चित्त चेतोरे, पाप आलोवो गुरु कने चित्त०, धरिये विनय सुजाण ॥ च० १ ॥ वयावच्च बहु विध करो, चित्त०, दुर्बल बाल गिलान ॥ च० ॥ आचारज वाचक तणो, चि० शिष्य साधर्मिक जाण ॥ च० २ ॥ तपसी कुल गण सघनो, चि०, थविर प्रवर्तक वृद्ध ॥ च० ॥ चैत्य भक्ति बहु निर्जरा, चि०, दशमे अग प्रसिद्ध ॥ च० ३ ॥ उभय टक आवश्यक करो, चि० सुन्दर करी सज्झाय च० ॥ पोसह सामायक करो चि० नित्य प्रत्ये नियम निभाय ॥ च० ४ ॥ कर्मसूदन कनकावली, चि० सिंहनिक्रीडित दोय ॥ च० ॥ श्रीगुणरयणसंवत्सरु, चि०, साधु पडिमा दश दोय । च० ५ ॥ श्रुत आराधन साचवो, चि० योगवहन उपधान । च० । शुक्ल ध्यान सुधु धरो चि०, श्री आंबिल वर्धमान । च० ६ ॥ चौद सहस अणगारमा चि०, धन धन्नो अणगार । च० । स्वय मुख वीर प्रशसी-ओ, चि० रधक मेघ कुमार ॥ च० ७ ॥

दशमी लोकस्वरूप भावना

मन दारु तन नालि करी, ध्यानानल सळगाव, कर्म कटक भेदन भणी गाढा ज्ञान चलाव ॥ १ ॥ मोहराय मारी करी, ऊंचो चढी अवलोय, त्रिभुवन मंडप माडणी, निम परमानन्द होय ॥ २ ॥

ढाल १० मी (राग–गोडी)

दशमी लोक स्वरूपरे, भावना भावीये, निपुणी गुरु उपदेशथी ए ॥ १ ॥ उर्ध्व पुरुष आकार रे पग पहोळा करी, कर दोय कटिए राखिये ए ॥ २ ॥ इण आकारे लोकरे, पुद्गलपूरीओ, निम काजलनी कूपली ए ॥ ३ ॥ धर्माधर्माकाश रे, देश प्रदेश ए, जीव अनंते पूरीयो ए ॥ ४ ॥ सात राज देशोन रे, ऊर्ध्व तिरिय मळी, अधो लोक सात साधिक ए ॥ ५ ॥ चौद राज त्रस नाडीरे, त्रस जीवा लय, एक राजु दीर्घ विस्तरे ए ॥ ६ ॥ ऊर्ध्व सुरालय सार रे, निरय भुवन नीचे, नाभी नर तिरि दा सुरा ए ॥ ७ ॥ द्वीप समुद्र असंख्येरे, प्रभु सुख सामळी, राय ऋषि शिव समजीओ ए ॥ ८ ॥ लाखी पोहोळी पणयाल रे, लख जोयण लही, सिद्धशिला शिर ऊजळी ए ॥ ९ ॥ ऊंचा धनु सय तीनरे, तेत्रीश माधिके सिद्ध योजन ने छेहडे ए ॥ १० ॥ अजर अमर निकलंकरे, नाणदंसणमय, ते जीवा मन गहगहे ए ॥ ११ ॥

अग्यारमी बोधि दुर्लभ भावना

वार अनंती फरसियो, छाळी वाटक न्याय, नाण विना नवि साभरे, लोक भ्रमण भडवाय ॥ १ ॥ रत्नत्रय विहु भुवनमें, दुलहा जाणी दयाळ । बोधिरयण काने चतुर, आगम साणी सभाळ ॥ २ ॥

ढाल ११ मी (राग – खमाती)

दश दृष्टांते दोहिलेरे, लीधो मनुष्य जमारो रे, दुल्लहो अनर भूल ज्यु रे, आरज घर अवतारो रे ॥ मोरा जीवन रे, बोधि भावना अग्यारमीरे, लावो हृदय मोझारो रे ॥ मोरा० १ ॥ उत्तम कुल तिहां दोहिलो रे, सद्गुरु धर्म मयोगोरे, पांचे इन्द्रिय पर वडारे, दुल्लहो देह निरोगोरे ॥ मोरा० २ ॥ सांभळ्यु सिद्धांत सुरे, दोहिलु तस चित्त धरयु रे, सूधी सद्दहणा दोहीली रे, दुक्कर अंगे करयु रे, ॥ मोरा० ३ ॥ सामग्री सघळी लहीरे, मूढ सुधा मम हारो रे। चिन्तामणि देवे दियो रे, हार्यो जेम गमारो रे ॥ मोरा० ४ ॥ लोह खीलकने कारणे रे, कुण यान जलधिमा फोडेरे, गुण कारण कोण नवलखारे, हार हैयानो तोडे रे ॥ मोरा० ५ ॥ बोधि रयण उवेखीने रे, कोण विपयार्थे दोडे रे, काकर मणि समोवड करे रे, गज वेचे खर होडे रे ॥ मोरा० ६ ॥ गीत सुणी नटणी कने रे, क्षुल्लके चित्त विचार्यु रे, कुमरादिक पण समझिया रे, बोधिरयण सभायु रे ॥ मोरा० ७ ॥

बारमी धर्मतत्त्व भावना

परिहर हरिहर देव सवि, सेव सदा अरिहंत। दोष रहित गुरु गुणधरा सुविहित साधु महंत ॥ १ ॥ कुमति कदाग्रह मूक तू, श्रुत चारित्र विचार। भवजल तारण पोत सम, धर्म हैयामां धार ॥ २ ॥

ढाल १२ मी. (राग – डुगरियानीं देशी)

धन धन धर्म जगत हितकरु, भाख्यो भलो जिन देवरे इह सुखदायको, जीवडा जनम लगी सेव रे ॥ धन० १ ॥ भावना सरस सुर वेलडी रोप तु हृदय आरामरे, सुकृत तरु

लहिअ वहु पसरर्ती, सफळ फळशे अभिराम रे ॥ धन० २ ॥ क्षेत्र शुद्ध करी करुणा रसे, काटी मिथ्यात्वादिक साल रे, गुप्ति तिहु गुप्ति वर्डी करी, नीर तु सुमतिनी वाल रे ॥ धन० ३ ॥ सींचजे सुगुरु वचनामृते, कुमति कथेर तजी संगरे, क्रोध मानादिक सूकरा, वानरो वारि अनगरे ॥ धन० ४ ॥ सेवता एहने षेचरी, पनर सय तीन अणगार रे, गौतम शिष्य शिवपुर गया, भावता देव गुरु सार रे ॥ ध० ५ ॥ शुक परिव्राजक सीधलो, अर्जुन माळी शिववासरे, राय परदेशी जे पापीयो, कापीयो ताम दु ख पासरे ॥ धन० ६ ॥ दु पम समय दुप्पसह लगे, अविचल शासन एहरे भावनु भवियण जे मने, तेह शुभ मति गुण गेहरे ॥ धन० ७ ॥

(दोहा)

तप गच्छपति विनयदेव गुरु, विजयसिंह मुनिराय, शुद्ध-धर्मदायक सदा, प्रणमु एहना पाय ॥ १ ॥

ढाळ १३ मी (राग – धनाश्री)

तुमें भावोरे, भवि इणी परे भावना भावो, तनमन वयण धर्म लय लावो, जिम सुख संपद पावो रे ॥ भवि० १ ॥ ललना लोचन चित्त न डोलावो, धन कारण काइ धावो, प्रभुगु तारो तार मिलावो, जो होय शिवपुर जावो रे ॥ काइ गभावास न आवो रे ॥ भवि० २ ॥ जबूनी परे जीव जगावो, विषय थकी विरमावो, ए हित शीख अमारी मानी, जग जश पडह वजावोरे ॥ भवि० ३ ॥ श्रीजशसोम विबुध वैरागी, जग जस चिंहु खड व्यावो तास शिष्य कहे भावना भणता, घरघर होय वधावो रे ॥ भवि० ४ ॥

दोहा

भोजन नभ गुण वरस शुचि, सित तेरस गुरुवार, भक्ति हेतु भावना भणी, जेसलमेर मोझार ॥

अग्यार पडिमानी सज्झाय

सातमे अंगे भाखियोजीरे, जगगुरु वीर जिणंद, श्रावक तप पडिमा तणोजी रे, वहेवा कर्म निकंद। संवेगी श्रावक वहे पडिमा अग्यार। आनन्द कामदेवनी परे जी रे, पामे भवनो पार॥ संवेगी० १॥ समकित पाले निर्मलोजी, शंका न आणे रे चित्त, ए पडिमा एक मासनी जी रे, करे एकांतरे नित्य॥ संवेगी० २॥ दोय उपवासे पारणु जी रे, वार व्रत उच्चार, ए पडिमा दोय मासनीनी, न लगाडे अतिचार॥ संवेगी० ३॥ त्रण टंक सामायिक करे जी रे, तप करया त्रण मास त्रण उपवासे पारणु जी रे, त्रण अंग उल्लास॥ संवेगी० ४॥ आठ पहोर पोसह करे जी रे, आठम चौदश जाण चार उपवासे पारणु जी रे, चार मास परिमाण॥ संवेगी० ५॥ ब्रह्मव्रत पाले दिवसनो जी रे, रात करे परिमाण, पांच उपवासे पारणु जी, पंचमी पंच मास जाण॥ संवेगी० ६॥ ब्रह्मव्रत पाले सर्वथा जी रे न करे सचित्त अणगार, छ उपवासे पारणु जी रे, मोह त्याग छ मास॥ संवेगी० ७॥ सातमीए सचित्त सहु तजे जी रे, अशनादिक आहार, सात उपवासे पारणु जी रे सात मास निर्धार॥ संवेगी० ८॥ आठमी कही आठ मासनी जी रे, न करे आप आरंभ, आठ उपवासे पारणु जी रे, राखे चित्तमां थंभ॥ संवेगी० ९॥ नवमीए न करे न करावियें जी रे, आरंभनी काइ वात नव उपवासे पारणु जी रे, नव मास विख्यात॥ संवेगी० १०॥ दशमी कही दश मासनी जी रे, उद्दिष्टसावि परिहार, क्षुरमुंडित राखे शिखा जी रे, दश उपवासे

आहार ॥ सवेगी० ११ ॥ अनुमति लिए परिवारनी जी रे, विचरतो मुनिवर जेम, ग्यारह उपवासे पारणु जी रे, मास अग्यार नियम॥ स० १२ ॥ आठम चउदश पूनम जी रे, पाणी काउसग्ग रात लाग न वाळे धोतियेनी नीर न धोवे गात्र ॥ सवेगी० १३ ॥ पडिमा तप एणी परे वहे जी रे, पच वरस छ मास; कहे "जिन हर्ष" सोहिलो रहे जी रे, वेग शिवपुर वास ॥ सवेगी० १४ ॥

श्रीसिद्धाचलजीनु स्तवन

सघपति भरत नरेसरु, शत्रुजय गिरि आवे रे लोल, अहो शत्रुजय गिरि आवे रे लोल, मोघन देरासर मली, आगळ पधरावे रे लोल । अहो० ॥ वासव प्रमुख सुरा घहु साथे तिहा सोहेरे लोल अहो० ॥ घश इक्ष्वाकु सोहावीओ त्रिभुवन मन मोहेरे लोल॥ अहो सघपति० ॥ १ ॥ बाहुबल आदे कुगे, क्रोड मुनिवर मलिया रे लोल, अहो० । ज्ञानी गणधर जाणीय, नमि विनेमि बठीया रे लोल । अहो० । सोमयशा आदि दह, महीधर रथवाळारे लोल । अहो० । सामत मत्री, अधिपति, मानी मठराळा रे लोल । अहो० सघ० ॥ श्रावक ने वळी श्राविका, वर अणुव्रतधारीरे लो० । अहो० । कनकमेनादिक माधवी, व्रतिनी तधारी रे लो० । अहो० । चतुरग सेनाए परिवर्या, छत्रचामरधारी रे लो० । अहो० ॥ अढळक दानने वरसता जेम सजल जलधारा रे लो० । अहो० सघ० ॥ ३ ॥ साथे सुभद्रादिक बहु, प्रवर पट्टराणीरे लाल । अहो० । इद्रमाळ पहेरे तिहा, धन्य धन्य अवतारा रे लो० । अहो० । ओळखगु गिरिराजनी, करे भक्ति अपारा रे लो० अहो० । शिखर-शिखर तिहु फरसना, करे निर्विहारा रे लो० । अहो० सघ० ॥ ४ ॥ गणधर नाभि साथेज छे बहु मुनि आधारा रे लो० ॥ अहो बहु

बिंब प्रतिष्ठा ते करे विधिशुं जयकार रे हो० अहो विधि० संघपति तिलक सोहावीयुं इन्द्रादिक सारे रे हो० अहो० इ० ॥ १ आपी थापे जग घणो ज्ञाननिमल इम भाखे रे गो अहो ज्ञान० ॥ ५ ॥

अध्यात्मिक पद

हो प्रीतमजी ! प्रीत की रीत अनित्य तजी चित्त धारीये हे वालमजी, वचन तणो अति उंडो मर्म विचारिये । तुमे कुमति के घर जाओ छो, निज कुल म खोट लगाओ छो धिक् ! एठ जगतकी खाओ छो, हो प्रीतमजी ॥ १ ॥ तुमे त्यागी अमी विष पीयो छो, कुगतिनो मारग लीयो छे, ए तो काज अजुगतो कीयो छे, हो प्रीतमजी० ॥ २ ॥ ए तो मोहरायकी चेटी छे, शिवसंपत्ति एहथी छेटी छे, ए तो सानरसें गलपेटी छे हो प्रीतमजी० ॥ ३ ॥ एक शंका मेरे मन आवी छे, ए किण विध तुम चित्त भावी छे, ए तो डाकण जगमें चावी छे हो प्रीतमजी० ॥ ४ ॥ मधु शुद्धि तुमारी खाई छे, करी कामण मति भरमाई छे, तुमे पुण्य जोगे ए पाई छे हो प्रीतमजी० ॥ ५ ॥ गत्त कावल खोयो, अनुपम भव बिरथा नवि खोवो, अब खोल नयण परगट जोवो हो प्रीतमजी० ॥ ६ ॥ इण विध सुमति बहु समजावे, गुण अवगुण सहु कही बतलावे सुणी चिदानंद निज घरे आवे, हो प्रीतमजी० ॥ ७ ॥

---

१ सुबुद्धि आत्माने प्रीतमजी कही जणावे छे २ बीजाओए छोडला अने मळमूत्रादिना परमाणुओ आरोगे अहार पाणी रूपे ग्रहण करवा होये ३ कुमति मोहराजानी दासी छ ४ आपणा थकी बाकर जेवी ५ आत्मा विभाव-मांथी स्वभावमां आवे

माननी सज्झाय

लघुता मेरे मन मानी लहे गुरुगम ज्ञान निशानी, मद आठ जनों जे धारे, दुर्गति गये विचारे, तुम देखो जगतमें प्राणी, दुःख लहत अधिक अभिमानी, लघु० ॥ १ ॥ शशि सूरज बडे कहावे ते राहुके वशमे जावे, तारागण लघुता धारी, स्वर्भानुभीति निवारी लघु० ॥ २ ॥ छोटी अति जोयणगंधी, लहे खट रस स्वाद सुगंधी, करटी मोटाई धारे, वह छार शीश निज डारे लघु० ॥ ३ ॥ जब बालचंद होइ आवे, तब सहु जग देखण धावे, पूनम दिन बडा कहावे, तब क्षीणकला होय जावे ल० ॥ ४ ॥ गुरुवाई मनमे वेदे, उपश्रवण नासिका छेदे अगमाहे लघु कहावे ते कारण चरण पुजावे लघु० ॥ ५ ॥ शिशु राज धाममें जावे, सखी हिलमिल गोद खिलावे, होय बडा जान नही पावे, जावे तो शीश कटावे ल० ६ अंतरमद भाव वहावे, तब त्रिभुवन नाथ कहावे, अब चिदानन्द ए गावे, करणी कोइ विरला पावे ल० ७ ॥

श्री विजयहीरसूरीश्वरजीनी सज्झाय

बे कर जोडी रे विनवु सारदा लागुजी पाय, वाणी आपोनी निर्मळी गाश्यु तपगच्छराय। तें मन मोह्यु रे हीरजी ॥ १ ॥ अकबर कागळ मोकले हीरजी वाचीने जोय, तुज मळ्या मन अलजो घणो विलंब न कीजेजी कोय तें मन० ॥ २ ॥ अकबर करे जी विनति टोडरमल लागेजी पाय, पूज्यजी चोमासु इहां करो, होशे धर्म सवाय तें मन० ॥ ३ ॥ तेजी घोडाजी आवे घणा, पायक सख्या नही पार, महाजन आवेजी अति घणा थानसिंह शाह उदार तें० ॥ ४ ॥ आमारी पोळ रळियामणी, वीचमें चौमुख चार, तणिया-तोरण बांधिया, हिरजी आवणहार, तें मन० ॥ ५ ॥ किण बाई व्होराया लाडुआ, किण बाई व्होराया पूत, शिवचंद व्होराया लाडुआ,

नाथीबाई व्होरावा पूत तें मन० ॥ ६ ॥ धनवाई धन कीकुओ, धन शाह साही रे पूत, धनवाई नाथीरो जीविओ, हिरजी सरिखा सपूत, तें मन० ॥ ७ ॥ सामी मेलुजी पालखी, मोतीडे नवसर हार, एक चोमासु पूज्य इहां करो, होशे धर्मरो लाभ ते मन० ॥ ८ ॥ लाख टकानोजी घूगरो, झवस्यो भाजम राव, झवके गुरुजी जागिया, पुस्तक जमणेजी हात तें मन० ॥ ९ ॥ गलिया गलियाँयी गोरडी, भरभर मोत्योंका थाल, पद्मिनी चालीजी पूजवा, हाथे सोवन थाल तें मन० ॥ १० ॥ कपडो केशरियो सामटो, ओघो अधिको बणाय चश्रा झवकेनी सुमती, पदम झलकेनी पाय तें मन० ॥ ११ ॥ पींपलपान खरे खरे, जाणे पाणीरी रेल, में थाने अणिहारे ओळख्या, हीरजी मोहनवेल तें मन० ॥ १२ ॥ परमन थायजी मीठवा, परमन थयाजी थम, द्राखबीजोरा मीलवा, रत्ने जडियाची थम, तें मन० ॥ १३ ॥ पहेलु चोमासु आगरे, बीजु लाहोर माय, त्रीजुं चोमासु मेडते, चोथु जालोर माय तें० ॥ १४ ॥ डामर सरोवर छोडीया छोड्या पहीना बान, छोड्या पखीने मृगला अकबर देवे बहुमान् तें० ॥ १५ ॥ शत्रुजो मुगति कीयो, मरती रासीजी गाय, जजियो लोकारो छोडावियो, हिरजी तुम पसाय तें० ॥ १६ ॥ तपगच्छनायक राजीयो श्री विजयसेनसूरीन्द, तास शिष्य भणते भणे, होजो मुज आनद तें० ॥ १७ ॥

श्री मद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत

कुमती–मद–गालन श्री वीरस्तुतिरूप दोढसो गाथानु हुंडीनुं स्तवन.

ढाळ १ ली

(ए छिंडी किहा राखी, अथवा भविका ! सिद्धचक्र पद वदो ए देशी)

प्रणमी श्रीगुरुना पयपकज, थुणश्युं वीर जिणंद, ठवण निक्षेप प्रमाण पचांगी परखी लहो आणंदरे, जिनजी ! तुज आणा शिर वहिए तुज शासन नय शुद्ध प्ररूपण,–गुणथी शिवसुख लहिएरे, जिनजी ! तुज आणा शिर वहिए ॥ १ ॥ श्रीअनुयोगदुवारे भाख्या, चार निक्षेपा सार, चार सत्य दश सत्या भाख्या ठाणांगे निरधाररे, जिनजी० ॥ २ ॥ जास ध्यान किरियामांहि आवे, तेह सत्य करी जाणु श्रीआवश्यक सूत्र प्रमाणे, विगते तेह वखाणुंरे, जिनजी० ॥ ३ ॥ चोवीसत्थयमांहि निक्षेपा, नाम द्रव्य दोय भावु, काउस्सग्ग आलावे ठवणा, भाव ते सघळे ल्यावु रे, जिनजी० ॥ ४ ॥ पुस्तक–लिखित सकल जिम आगम, तिम आवश्यक एह, भगवई नांदि सारे सम्मत, तेहमां नहीं संदेहरे जिनजी० ॥ ५ ॥ मूल आवश्यक जे घरघरतु वहेशे ते अज्ञानी पुस्तक–अर्थ–परंपर आव्युं, माने तेहज ज्ञानीरे, जिनजी० ॥ ६ ॥ बंभीलिपि श्री गणधर देव प्रणमी भगवई आदे, ज्ञानतणी ते ठवणा अथवा द्रव्यश्रुत अविवादेरे जिनजी० ॥ ७ ॥ भेद अढारना बंभी लिपिना समवायांगे दीठा, शुद्ध अरथ मरडी भव बहुला, भमशे कुमती धीठार जिनजी० ॥ ८ ॥ बंभीलिपि नो तेहनो कर्ता, तो लेखक पण आवे, गुरुआणा विण अरथ करे जे तेहनो बोल न भावेरे जिनजी० ॥ ९ ॥ जिनवाणी पण द्रव्य–श्रुत छे, नंदिसूत्रने लेखे, जिम ते तिम बंभीलिपि नमिये भाव ते द्रव्यविशेषे रे, जिनजी० ॥ १० ॥ जिम अजीव संयमनु साधन, ज्ञानादिकनु तेम, शुद्ध भाव आरोपे विधिशुं, तेहने सघळे खेम रे जिनजी० ॥ ११ ॥ शुद्ध भाव जेहनो छे तेहना, चार निक्षेपा साचा, जेहमां भाव अशुद्ध छे तेहना, एक काचे सवि काचारे, जिनजी० ॥ १२ ॥ दशवैकालिके दूषण दाख्युं, नारीचित्रने ठामे तो किम जिन प्रतिमा देखीने, गुण नवि होय परिणामेरे ? जिनजी० ॥ १३ ॥ रुचकद्वीपे एक डगले जाता, पडिमा नमिय आणंदे, आवता एक डगले नंदीसरे, बीजे इहां जिन वंदेरे जिनजी० ॥ १४ ॥ त्रिजी गति ए भगवई भाखी

जघाचारण केरी, पडगवन नदन इहा पडिमा, उपरि नमे घणेरीरे जिनजी० ॥ १५ ॥ विद्याचारण त एक डगले मानुषोत्तरे जाय, बीजे नदीसरे जिनप्रतिमा प्रणमी प्रमुदित थाय रे जिनजी० ॥ १६ ॥ तिहांथी पडिमा वदण कारण, एक डगले इहा आवे, ऊर्ध्वपणे जाता बे डगला, आवता एक स्वभावेरे जिनजी० ॥ १७ ॥ शतक (इक-) वीशमे नवम उद्देशे प्रतिमा मुनिवर वदी, इम देखी जे अवळा भाखे, तस मति कुमति फदीरे, जिनजी० ॥ १८ ॥ आलोयणतु ठाण कह्यु जे तेह प्रमाद गति केरो, तीरथ गति जे जात्र विचाले, रहे ते खेद घणेरोरे, जिनजी० ॥ १९ ॥ करी गोचरी जिम आलोए दशवैकालिक साखे, तिम ए ठाम प्रमाद आलोए, नहीं दोष ते पाखरे जिनजी० ॥ २० ॥ कहे कोई ए कहेवा मात्रज कोई न गयो नवि जाशे नहीं तो लवणशिखा माहि जाता, किम आराधक थाशेरे जिनजी० ॥ २१ ॥ सत्तर सहस जोयण जइ उचा, चारण तीर्च्छा चाले, समवायांगे प्रगट पाठ ए, शु कुमति ! भ्रम घालेरे ? जिनजी० ॥ २२ ॥ 'चैत्य' शब्दनो ज्ञान अरथ ते, कहो करवो गुण हेते ज्ञान एक ने चैत्य घणा छे, मूले जड सकेतेरे जिनजी० ॥ २३ ॥ रुचकादिकना चैत्य नम्या ते, सासय पडिमा कहिए, जेह इहाना तेह अशाश्वत, विहुमा भेद न लहिएरे जिनजी० ॥ २४ ॥ जे उपर साहिब ! तुज करुणा, शुद्ध अरथ तेह भाखे, तुज आगमनो शुद्ध प्ररूपक, सुजस अमियरस चाखेरे, जिनजी० ॥ २५ ॥

ढाळ २

महाविदेह क्षेत्र सोहामणु — ए देशी ।

तुज आणा मुज मन वसी, जिहा जिनप्रतिमा सुविचार, लालरे, रायपसेणी सूत्रमा सूरिआभ तणो अधिकार लालरे, तुज० ॥ १ ॥ ते सुर अभिनव उपन्यो, पूछे सामानिक देव, लालरे, 'शु मुज

पूरव ने पछी, हितकारी कहा सवसेव, लालरे, तुज० ॥ २ ॥ ते कहे "एह विमानमा, जिनपडिमादाढा जेह, लालरे, तेहनी तुमे पूजा करो, पूवपच्छाहित एह" लालरे, तु० ॥ ३ ॥ पूरव पच्छा शब्दथी, नित्य करणी जाणे सोय लालरे, समकितदृष्टि सद्दहे ते द्रव्यथकी किम होय ? लालरे, तुज० ॥ ४ ॥ द्रव्य थकी जे पूजिया, प्रहरण कोशादि अनेक, लालरे, तेहज बिहु जूदा कह्या, ए तो साचो भाव विवेक लालरे, तुज० ॥ ५ ॥ चक्ररयण निणनाणनी, पूजा जे भरते कीध, लालरे जिम तिहा तिम अन्तर इहा, समकित दृष्टि सुप्रसिद्ध, लालरे तु० ॥ ६ ॥ पहिले भव पूरव कहे, ज्ञाता दर्दुरसबध, लालरे, पच्छा कडुअ विपय कह्या, पछी मृगापुत्र प्रबध, लालरे तु० ॥ ७ ॥ आगमेसीभद्दा कह्या, गडठिईकल्लाणा देव, लालरे तस पूरव पच्छा कहे, चिहु काले हित जिनसेव लालरे तु० ॥ ८ ॥ जस पूरव पच्छा नहीं मध्ये पण तस सदेह लालरे, इम पहेले अगे वली, सूधो अर्थ ते एह, लालरे तु० ॥ ९ ॥ पच्छा पेच्चा शब्दनो, जे फेर कहे ते दुट्ठ, लालरे, शब्द तणी रचना घणी, पण अर्थ एक छे पुट्ठ लालरे तुज० ॥ १० ॥ वाचीं पुस्तक रत्नना, हवे लेइ धरम व्यवसाय लालरे, सिद्धायतने ते गयो, जिहा देवछदानो ठाय, लालरे, तुज० ॥ ११ ॥ जिन प्रतिमा देखी करी करे शिर प्रणाम शुभ चीत लालरे, पुप्फमाल्यचूर्णे करी, वस्त्राभरणे वली पूज लालरे तुज० ॥ १२ ॥ फूलपगर आगे करी, आलेखे मगल आठ लालरे, धूप देइ काव्य स्तवी, करे शक्रस्तवनो पाठ, लालरे तुज० ॥ १३ ॥ जेहना स्वमुखे जिन कहे, भवसिद्धि प्रमुख छ बोल, लालरे, तास भगति जिनपूजना, नवि माने तेह निटोल, लालरे तुज० ॥ १४ ॥ प्रभु आगळ नाटक कर्युं, भगति सूरियाभे सार, लालरे, भगतितणा फल शुभ

व्ययन [illegible] तुज० ॥ १५ ॥ अणउपासे

देव दे [illegible] लालरे, आराधकता तेणे थई

इन्द्रनी युक्ति लालरे तुज० ॥ १६ ॥ भक्ति जीतधर्मे करी, लीये दाढा अवर जिन अग, लालरे, पूजा रचे सुर त्रण ते, कहे जबूपन्नत्ती चग, लालरे, तुज० ॥ १७ ॥ शतक दशमे अग पाचमे, उद्देशे छठ्ठे इद, लालरे, दाढ तणी आशातना, टाळे ते विनय अमद, लालरे तुज० ॥ १८ ॥ समकितद्दष्टी सुर तणी, आशातना करतो जेह, लालरे, दुर्लभबोधी ते हुशे, ठाणागे भाख्यु एह लालरे तुज० ॥ १९ ॥ तेहने जस बोल्ये कह्यु, वळी सुलभबोधिता थाय, लालरे, तेणे पूजादिक तेहना, करणी शिवहेतु कहाय, लालरे तुज० ॥ २० ॥ तप सयम तरुसम कह्या, फळसम ते शिव सुरशर्म, लालरे, सुरकरणी माने नहीं, नवि जाण्यो तेणे ए मर्म, लालरे, तुज० ॥ २१ ॥ दशवैकालिके नर थकी, सुर अधिक विवेक जणाय, लालरे, द्रव्यस्तव तो तेणे कर्यो, माने तस सुजस गवाय, लालरे तुज० ॥ २२ ॥

ढाळ ३ जी

(ऋषभनो वश रयणायरु—ए देशी)

शासन ताहरु अति भलुं, जगि नहीं कोई तस सरिखु रे, तिमतिम राग घणो वधे, जिमजिम जुगतिशु परखुं रे ॥ १ ॥ शासन ताहरु अति भलु ॥ अरिहत अने तेहना, चैत्य नमु न अनेरारे, अवड ने तस शिष्यना, वचन उववाइ घणेरारे शासन० ॥ २ ॥ 'चैत्य' शब्द तणो अरथ ते, "प्रतिमा" नहि कोइ बीजोरे, जेह देशी गुण चेतिजे, तेहज चैत्य पतीजोरे शासन० ॥ ३ ॥ इमज आलावे आणदने जिन प्रतिमा नति दीसेरे, सप्तम अगना अर्थयी, ते नमता मन हीसेरे शासन० ॥ ४ ॥ परतीर्थी सुर तेहनी, प्रतिमानी नति वारीरे, तेणे मुनि जिन प्रतिमा तणी, वदननीति निरधारीरे शासन० ॥ ५ ॥ परतीर्थीए जे परिग्रह्या, मुनि ते तो परतीर्थीरे, त्रण शरण माहि

चत्य से, कहे प्रतिमा शिवअर्थरे शासन० ॥ ६ ॥ ' दांत किंतु प्रतिमा प्रति ' ? एम कहे जे दुष्ट हैयेरे उत्तर तास ममय तणो, शैली छे सूत्र केरीरे. शासन० ॥ ७ ॥ दशविध यइविध जिम कह्यु, वैयावच जइनोगेरे, दशमे ते अगे तथा इहां, जोईजे नय उपयोगेरे शासन० ॥ ८ ॥ साधुने जिन प्रतिमा तणु, वैयावच्च तिहां बोल्युरे, तेह अरथ थकी कुमतिनु हियडु काइ न खोल्युरे शासन० ॥ ९ ॥ सघ तणी जिम थापना, वैयावच्च जस वादोरे जाणीअे जिन प्रतिमा तणु, तिम इहा वचण वियादो रे' शासन० ॥ १० ॥ इम सवि श्रावक साधुने वंदननो अधिकारोरे, सूत्रे कह्यो प्रतिमा तणा, हवे वह पूजाविचारो रे शासन० ॥ ११ ॥ याग अनेक वर्या कह्या, श्री सिद्धारथ राने रे, ते जिनपूजना सन्ममा पगुना याग न छाने रे शासन० ॥ १२ ॥ श्री जिन पासने तीरथे श्रमणोपासक तेहा रे, प्रथम अगे वखो तेहने, श्रीजिनपूजानो नेहा रे शासन० ॥ १३ ॥ श्रेणिक महाबल प्रमुखना, इम अधिकार अनेका रे, छट्ठे अगे वळी द्रौपदी, पूजे प्रगट विवेको रे शासन० ॥ १४ ॥ नारद देखीने नवि थइ, ऊभी तेह सुजाण रे जाणीअे तेणे ते श्राविका, अक्षर अेहज प्रमाण रे शासन० ॥ १५ ॥ आविल अन्तर छट्ठनु, उपसर्ग तप सीधु रे किम नावि कहिने ते श्राविका ? धर्म कारज सीधु रे शास० ॥ १६ ॥ राजकन्या कही श्राविका, न कही इम ने मूळे रे, राजीमती कही तहवी, तिहा सन्देह ते सूते रे शासन० ॥ १७ ॥ हरि पारे कर्म नियाणनुं, इह भवे भोग न नासे रे, समकित लेह परण्या पछी, कहे ते गुन विमासे रे, शासन० ॥ १८ ॥ जिनघर जेणे कराविचु ? तिहां प्रतिमा ने पइट्ठा रे, तेहनी पूजा ते कुण करे ? अंम परगे ते गरिट्ठा रे शासन० ॥ १९ ॥ वर नवि माग्यो पूजता शक्रस्तवे शिव मागे रे, भक्ति समी सूरियाभने,

१ अहे २ वादा ३ पथागेग

विरति विशेषथी जाणे रे शासन० ॥ २० ॥ धर्म, विनय, अरिहन्तनो, इम बे लोगस्सयारो रे, सभवे सर्व ते जाणिओ, समकित शुद्ध आचारो रे, शासन० ॥ २१ ॥ आणन्दनो विधि नवि कह्यो, रायप्रदेशीने पाठे रे, सभव सर्व न मानशे, वींटाणे तेह आठे रे शासन० ॥ २२ ॥ पडिकमणादिक क्रम नहीं, पाठ सप्तम अंगे रे, पढम अनुयोगथी प्रकरणे सर्व कह्यु विधि रगे रे शासन० ॥ २३ ॥ किहा ओक ओक देशज ग्रहे, किहा ओक ग्रह ते अशेपो रे किहा ओक क्रम उत्क्रम ग्रहे, ओ श्रुतशैली विशेपो रे शासन० ॥ २४ ॥ शासननी जे प्रभावना, ते समकितनो आचारो र, श्रीजिनपूजाओ जे करे, ते लहे सुजश भडारो रे शासन० ॥ २५ ॥

ढाळ चोथी

(झाझरीया मुनिवर ! धन धन तुम अवतार–ए देशी)

कोइ कहे जिन पूजताजी जे षट्काय आरभ, ते किम श्रावक आचरेजी ? समकितमा थिरथभ, सुखदायक ! तोरी आणा मुज सुप्रमाण ॥ १ ॥ तेहने कहीए जतना भक्ति किरियामा नहि दोप, पडिकमणे मुनिदानविहारे, नहीं तो होय तस पोष, सुख० ॥२॥ साहमीवच्छल पक्खियपोसह, भगवइ अग प्रसिद्ध, धरनिर्वाह चरण लिए तेहना, ज्ञातामाहि हरि कीध सुख० ॥ ३ ॥ कूणिक राय उदायन कीधा, वदनमह सुविवेक, "ण्हायाकयवलिकम्मा" कहिया, तुगिय श्राद्ध अनेक सुख० ॥ ४ ॥ समकितसवरनी ते किरिया, तिम जिनपूजा उदार, हिंसा होय तो अर्थदडमा, कहे नहीं ? तेह विचार सुख० ॥ ५ ॥ नाग-भूत-जक्षादिक हेते, पूजाहिंसा रे उक्त, सूयगडागमा नवि जिनहेते, बोले जे होय जुत्त सुख० ॥ ६ ॥ जिहा हिंसा तिहा नहीं जिन-आणा, तो किम साधु विहार ? कर्म-बध नहीं जयणाभावे, ए छे शुभ व्यवहार सुख० ॥ ७ ॥ प्रथम

ढाल पांचमी

माहरी सहिरे समाणी — ए देशी

मासयपडिमा अइसय माने, सिद्धायतन विमानेरे, धन धन जिन वाणी ॥ प्रभु ! ते भाखी अंगउवंगे धरणवगु तिम रंगेरे धन० ॥ १ ॥ कचनमय करपदतल सोहे भविजनना मन मोहे रे, धन० अकरतनमय नव मासोहा लोहिताक्षमध्ये रेहा रे धन० ॥ २ ॥ गात्रयष्टि कचनमय सारी, नाभि ते कचनक्यारी रे धन० रिट्ठरत्तन रोमराजि विराजे, चुन्चुक कचन छाजे रे, धन० ॥ ३ ॥ श्रीवच्छ ते तपनीय विशाला, होठ ते लाल प्रवाला रे, धन० दत फटिकमय श्रीह दयालु, यजी तपनीयनु तालु रे धन० ॥ ४ ॥ कनकनासिका विहा सुविशेषा, लोहिताक्षनी रेखा रे, धन० लोहिताक्षरचित सुविशाला, नयन अक रतनाला रे, धन० ॥ ५ ॥ आच्छिपत्ति ममूहावलि कीजी, रिट्ठरतनमय नीकी रे, धन० श्रवण निलाडवटी गुणशाला, कचन झाकझमाला रे, धन० ॥ ६ ॥ वज्ररतनमय अतिहि मोहाणी शीशघडी सुखखाणी रे धन० केशभूमि तपनीय निवेशा, रिट्ठरतनमय केशा रे, धन० ॥ ७ ॥ पूठे छत्र धरे प्रत्येके, प्रतिमा एक विवेके रे, धन०, दोय पासे दोय चामर ढाले, लीलाए जिनने उवारे रे, धन० ॥ ८ ॥ नागभूतयक्ष ने कुडधारा, आगे दोय उदारा रे, धन० ते पडिमा जिन पडिमा आगे, मानु सेवा मागे रे, धन० ॥ ९ ॥ घट कलश भृगार आयसा, थाळ पाइ सुपइट्ठारे, धन० मणगुलिया वायकरग प्रचहा, चिंता रयणकरडा र धन० ॥ १० ॥ हय गय नर किन्नर किंपुरिसा, कठ उरग वृष सरीसारे, रयणपुज वळी फूल चगेरी, माल्य ने चूर्ण अनेरी रे धन० ॥ ११ ॥ गध वस्त्र आभरण चगेरी, सरसव पुंजणी केरी रे, धन० इम पुप्फादिक पडल वखाण्या, आगे सिंहासन जाण्या रे धन० ॥१२॥ छत्र ने चामर आगे समुग्गा,

तेल कुसुमूत जुगारे, धन० भरिया पत्र (पात्र) चोपग सुविलासे तगर ग्लाशुचि वासे रे, धन० ॥ १३ ॥ वळी हरताल ने मनसिल अंजन, मधि सुगध मनरंजन रे धन० ध्वजा एक शत आठ ए पूरा, साधन सर्व सनूरा रे, धन० ॥ १४ ॥ सुर ए पूजासाधन साथे, जिन पूजे निज हाथे रे, धन० सिद्धायतने आप विमाने, धूमादिक बहु माने रे, धन० ॥ १५ ॥ एह अपूर्व दरिसण दीठु, सुरतरु फलथी मीठु रे धन० ए समारसमुद्रे नावा, तारणतरणमहावा रे, धन० ॥ १६ ॥ इम विस्मय भवभवे गुणरागे, हीले तेह अभागे रे, धन० राचे माचे ने वलि नाचे, धरमध्यान मन माचे रे, धन० ॥ १७ ॥ थेइ थेइ करता फेरे भमरी, हर्षे प्रभुगुण समरी रे धन० योग निरालंबन लय आणी, वश करता शिवराणी रे, धन० ॥ १८ ॥ इम नंदीश्वर प्रमुख अनेरा, शाश्वतचैत्य भलेरा रे, धन० तिहां जिन पूजी ते अनुमाने, जन्म सफल निज माने रे, धन० ॥ १९ ॥ कल्याणक अट्ठाई करती, तिथि चउमासी मरखी रे, धन० तेह निमित्ते सुर जिन अर्चे, नित्य भक्ति पण विरचे रे, धन० ॥ २० ॥ भाव अक्षय भावे जे भळियो, ते नवि जाए टळियो रे धन० परि ग्रावु नवि होय निषेधे, हुओ हेमरस वेधे रे, धन० ॥ २१ ॥ एके जललवे जलधि भराये, तो ते अक्षय थाये रे धन० आपभाव जिन गुणमाही आणे, तिम ते अक्षय प्रमाणे रे, धन० ॥ २२ ॥ अपुणरुत्त अहसय वहवृत्ते, इम सुर भावे चित्ते रे, धन० इम जिन पूजी जे गुण गावे, सुजस लील ते पावे रे, धन० ॥ २३ ॥

ढाल छट्ठी

मोरीडा हसा रे ! विषय न राचिजे–ए देशी

समकित सूधुरे तेहने जाणीए, जे माने सुत्र आण, सूत्र ते वाचे रे योग वही करी, करे पचागी प्रमाण, समकित० ॥ १ ॥ उद्देशादिक नहीं चउनाणना, छे सुअनाणना तेह, श्री अनुयोगदुवार

धरीये योगशु नेह, समकित० ॥ २ ॥ उद्देशादिक क्रम विण जे भणे, आशाते तेह नाण, नाणावरणी रे बांधे तेहथी, भगवई अंग प्रमाण समकित० ॥ ३ ॥ श्री नन्दि अनुयोगदुवारमां, उत्तराध्ययनेरे योग, काल-ग्रहणनोरे विधि सघळो कह्यो, धरिये ते उपयोग समकित० ॥ ४ ॥ ठाणे बीजे रे वळी दशमे कह्यु, योग वहे जेह साध, आगमेसिभद्रा ते संपजे, तरे संसार अगाध समकित० ॥ ५ ॥ योग वहीने रे साधु श्रुत भणे, श्रावक ते उपधान तपउपधाने रे श्रुतपरिग्रह कह्या, नन्दिजे तेह निदान समकित० ॥ ६ ॥ इरियादिकना रे पद उपधान छे, तेणे आवश्यक शुद्ध, गृही सामायिक आदि श्रुत भणे, दीक्षा लेई अशुद्ध समकित० ॥ ७ ॥ सूत्र भण्या कोइ श्रावक नवि कह्या, लद्धट्ठा कह्या तेह, प्रथम नाण ने पछी दया कही, तिहां सचित गुण रेह समकित० ॥ ८ ॥ नवमे अध्ययनेरे बीजा अंगमां, परमाहिं दोष न दिट्ठ वळिय चौदमेरे कह्यु शिक्षा लहे, ग्रन्थ तजे ते गरिट्ठ समकित० ॥ ९ ॥ सप्तम अंगेरे अपढिया सवरी, दाख्या श्राद्ध अनेक, नवि आचारधरादिक ते कह्या, मोटो एह विवेक समकित० ॥ १० ॥ उत्तराध्ययनेरे कोविद जे कह्यो, श्रावक पालित चंप, ते प्रवचन निर्ग्रंथवचन थकी, अरथ विवेक अकम्प समकित० ॥ ११ ॥ सूत्रे दीधु रे सूत्र ते साधुने, सुरनरने वळी अत्थ, सत्तरद्वारे रे बीजे इम कह्यु, अंग दशमे समरत्थ समकित० ॥ १२ ॥ वळिय विगय पडिबद्धने वाचना, श्री ठाणांगे निषिद्ध, नवि य मनोरथ श्रुत भणवा तणो, श्रावकने सुप्रसिद्ध. समकित० ॥ १३ ॥ वाचना देतारे गृहीने साधुने, प्रायश्चित्त चउमास, कह्यु निशीथेरे तो शु एवडी करवी हुंस निरास ? समकित० ॥ १४ ॥ वजिय असज्झाइ गुरुवाचना, लेई योग गुणवंत, जे अनुयोग विविध साचो लहे, करे ते कर्मनो अन्त समकित० ॥ १५ ॥ सूत्र अथ पहिलो बीजो कह्यो, निर्जुत्तीए रे मीस, निरवशेष त्रीजो अंग पंचमे, इम कहे तु जगदीश ! समकित० ॥ १६ ॥ सूत्र-निजुत्तिरे बिहु भेदे कहे, बीजु अनुयोगद्वार, चूडा

कपटीरे जे माने नही, तेहने कवण आधार? समकित० ॥ १७ ॥ वद्ध ते सूत्रेरे अर्थ निकाचिया, निजुत्तिअे अपार, उपविमान गणनादिक किहां ल्हे? ते विण मार्ग विचार समकित० ॥ १८॥ जो निर्युक्ति गइ कुमति कहे, सूत्र गया नहीं केम? जेह वाचनाए आव्यु ते सवे, माने तो होय खेम समकित० ॥ १९॥ अधा आगेरे दर्पण दाखवो, बहिरा आगेरे गीत, मूर्ख आगेरे कहेवु युक्तिनु ए सवि अेकज रीत समकित० ॥ २०॥ मारग-अरथी पण जे जीव छे, भद्रक अतिहि विनीत, तेहने ए हितशीख सोहामणी, वळी जे सुनय अधीत समकित० ॥ २१ ॥ प्रवचनसारेरे एम ए भाखीया, विगते अर्थविचार, तुज आगमनी रे शाहिय परम्परा, लहिये जगत्रयकार समकित० ॥ २२ ॥ गुण तुज सघळारे प्रभु! कोण गणी शके? आणागुण लव एक, इम मे थुणता रे समकित दृढ कर्यु, राखी आगमटेक समकित० ॥ २३ ॥ आणा ताहरी रे जो मैं शिर धरी, तो शु कुमतिनु जोर? तिहां नवि पसरे रे बळ विषधर तणु किंगार जिहा मोर समकित० ॥२४॥ पवित्र करीने रे जीहा तुज गुणे, शिर धरीए तुज आण, दिलथी कदिय रे प्रभु न विसारीअे, लहीए सुजस कल्याण समकित० ॥ २५ ॥

ढाळ सातमी

राग धनाश्री

वर्तमान शासननो स्वामी चामीकरसम देहोजी, वीर जिनेश्वर में इम थुणिओ, मन धरी धर्मसनेहोजी एह स्तवन जे भणशे गणशे, तस घर मंगलमालाजी, समकितमाण होशे घट तेहने, परगट झाकझमालाजी ॥ १ ॥ अरथ एहना छे अति सूक्ष्म, ते धारो गुरुपासेजी, गुरुनी सेवा करता लहीए अनुभव निज अभ्यासेजी, जेह बहुश्रुत गुरु गीतारथ, आगमना अनुसारीजी. तेहने पूछी मैंडळ

टाळो, ए हितशीख छे मारीनी ॥ २ ॥ इदलपुरमा रहिय चोमासु, धर्मध्यान सुख पायार्जा, सवत सत्तर तेत्रीशा वरसे, विजयदशमी मन भायाजी, श्रीविजयप्रभसूरि सधाया विजयरतन युवरायानी, तस राजे भविजनहित काजे, इम में जिनगुण गायाजी ॥ ३ ॥ श्री कल्याणविजय वरवाचक, तपगच्छगयणदिणींदाजी, तास शिष्य श्री लाभविजयबुध, भविजनकैरवचदाजी, तास शिष्य श्रीजीत विजय बुध श्रीनयविजयमुणींदाजी वाचक जसविजये तस शिष्ये थुणिया वीरजिणींदाजी ॥ ४ ॥ दोसी मूलासुत सुविवेकी, दोसी मेघा हते जी, एह तवन में कीधु सुदर श्रुतअक्षर सकेतेजी, ए जिनगुणसुरतरुनो परिमल, अनुभव तो ते लहशेजी, भमर परि जे अरथी होइने, गुरुआणा शिर वहशे जी ॥ ५ ॥

इति श्री समस्त पंडित शिरोमणि महोपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजी विरचित कुमति–मदगालन दोडसो गाथानु श्रीमहावीर जिनस्तुति रूप हुंडीनु स्तवन सपूर्ण

श्रीयशोविजयजी उपाध्याय विरचित सिद्धांतविचाररहस्यगर्भित

साडा त्रणसो गाथानु श्री सीमधरजिन स्तवन

ढाळ पहेली

(ए छींडी किहा राखी ? ए देशी)

श्रीसीमधर साहिब आगे, वीनतडी एक कीजे, मारग शुद्ध मया करी मुजने मोहनमूरति दीजे रे, जिनजी ! वीनतडी अवधारो ! ॥ १ ॥ चाले सूत्र विरुद्धाचारे, भाखे सूत्र विरुद्ध, एक कहे अम मारग राखु, ते किम माबु शुद्धरे ? जिनजी० ॥ २ ॥ आलबन कूडा देखाडी मुग्धलोकने पाडे, आणाभंग तिलक ते काळु थापे आप

भार वहे जे तावडे भमतो, खमतो गाढ प्रहारो रे, जिनजी० ॥ १६ ॥ लहे पापानुबंधी पापे, बलहरणी जन भिक्षा, पूरवभव व्रतखंडन फळ ए, पचवस्तुनी शिक्षा रे, जिनजी० ॥ १७ ॥ कोइ कहे 'अमे लिंगे तरशु जैनलिंग छे वारु', ते मिथ्या, नवि गुण विणुं तरिये, भुज विण न तरे तारु रे, जिनजी० ॥ १८ ॥ फूंटलिंग जिम प्रगट विडंबक, जाणी नमता दोष, निद्धधस जाणीने नमता, तिमज कह्यो तस पोष रे, जिनजी० ॥ १९ ॥ शिष्य कहे 'जिम जिम प्रतिमाने, जिनवर थापी नमिये, साधुवेष थापी अति सुंदर, तिम असाधुने नमिये रे जिनजी० ॥ २० ॥ भद्रबाहु गुरु बोले 'प्रतिमा, गुणवती नहि दुष्ट, लिंगमांहे बे वातां दीसे, ते तु मान अदुष्टरे, जिनजी० ॥ २१ ॥ कोइ कहे 'जिन आगे मागी, मुक्तिमार्ग अमे लेशु, निर्गुणने पण साहिब तारे, तस भक्ते गहगहिशु रे,' जिनजी० ॥ २२ ॥ पामी बोध न पाळे मूरख, मांगे बोध विचाले, लहिये तेह कहो कुण मूले ? बोल्यु उपदेशमाले रे, जिनजी० ॥ २३ ॥ आणा पाळे साहेब तूसे, सकल आपदा कापे, आणाकारी जे जन मागे, तस जस लीला आपे रे, जिनजी० ॥ २४ ॥

ढाळ बीजी

(आदर जीव क्षमागुण आदर—अे देशी अथवा राग आसाउरी उपशम आणो—अे देशी)

कोइ कहे 'अमे गुरुथी तरशु, जिम नावाथी लोहा रे,' ते मिथ्या न लहे सहवासे, काचपाचनी सोहा रे ॥ १ ॥ श्री सीमंधर साहिब ! सुणजो भरतक्षेत्रनी वातो रे, लहु देव ! केवल

४ मावशाधुपणा विनानी गोचरी पापानुबंधी पापना उदयवाळी अहकनी माफे बलहरणी भिक्षा कहेवाय, अने ते पूर्वभवमां चारित्रनी विराधनानुं फळ छे ५ जैनसाधुवेशमात्रथी गुणहीन तरी न शके ६ गुणहीन साधुवेशधारी ७ सहवास मात्रथी काच रत्न न बने

रति इणे युगे, हु तो तुज गुणरातो रे श्रीसी० ॥ २ ॥ कोइ कहे 'जे गच्छथी न टळ्या, ते निरगुण पण साधुरे नाति माहे निरगुण पण गणीये, जस नही नातिबाधोरे श्रीसी० ॥ ३ ॥ गुण अवगुण इम मरिखा करतो, ते जिनशासनवैरी रे निरगुण जो निजछन्दे चाले, तो गच्छ थाये स्वैरी रे श्रीसी० ॥ ४ ॥ निरगुणनो गुरु पक्ष करे जे, तस गच्छ त्यजवो दाख्यो रे, ते जिनवरमारगनो घातक, गच्छाचारें भाख्यो रे, श्रीसी० ॥ ५ ॥ विषमकाळमा निरगुणगच्छे, कारणथी जो वसिये रे, द्रव्य थकी व्यवहारे चलिये, भावे नवि उल्लसिये रे, श्रीसी० ॥ ६ ॥ जिम कुवृष्टिथी नगर लोकने, घेला देखी राजा रे; मत्री सहित घेला होइ बेठा, पण मनमाहे ताजा रे, श्रीसी० ॥ ७ ॥ इम उपदेशपदे जे भाख्यु, तिहा मारग अनुसारी रे, जाणीने भावे आदरीये, कल्पभाष्य निरधारी रे, श्रीसी० ॥ ८ ॥ ज्ञानादिकगुणवन्त परस्पर, उपगार आदरवो रे, पचवस्तुमा गच्छ सुगुणने, अवर वह्यो ते त्यजवो रे श्रीसी० ॥ ९ ॥ जे निरगुण गुणरत्नाकरने, आप सरीखा दाखे रे समकितसार रहित ते जाणो, धर्मदासगणी भाखे रे श्रीसी० ॥१०॥ कोइ कहे 'जे बकुशकुशीला, मूलोत्तरपडिसेवी रे, भगवइ अगे भाख्या तेथी, अ ते वात नवि लेवी रे श्रीसी० ॥ ११ ॥ ते मिथ्या निकारणसेवा, चरणघातिनी भाखी रे, मुनिने तेहने सम्भवमात्रे, सत्तमठाणु साखीरे श्रीसी० ॥ १२ ॥ पडिसेवावचने ते जाणो अतिचारबहुलाइ रे, भावबहुं उताये ते टाळे, पंचवस्तु मुनि ध्याई रे श्रीसी ॥ १३ ॥ सहमा दोष लगे ते छूटे, सयतने ततकाळे रे

८ साधु कहेवाय ९ निगुण पण न्यातमा गणाय १० मूलोत्तरगुणना अमुक दोषाना सेवन मात्रथी बकुशकुशीलपणु नष्ट थतु नथी एम कोइ कहे ते मिथ्या छे कारण, निष्कारण दोष सेवनार चारित्रनो घातक छे ११ प्रतिसेवा एटले अतिचारनी बहुलता, अने ते टळे भावबहुलताए.

परिछत्ते आउट्टिये कीधु, प्रथम अगनी भालें रे श्रीसी ॥ १४ ॥ पायच्छित्तादिक भाव न राखे, दोष करी नि[१३]शूको रे, निद्धधम सेढीथी[१४] हेठो, ते मारगथी चूको रे श्रीसी० ॥ १५ ॥ कोइ कहे 'जे पातिक कीधा, पडिक्कमतां छूटीने रे,' ते मिथ्या, फल पडिक्कमणानु अपुणकैरणथी लीजे रे, श्रीसी० ॥ १६ ॥ मिथ्यादुक्कड देइ पातिक, ते भावे जे सेवे रे, आवश्यक साखे ते परगट, मायामोसने सेवे रे, श्रीसी० ॥ १७ ॥ मूलंपदे पडिक्कमणु भाख्यु, पापतणु अणकरवु रे, शक्ति भावतणे अभ्यासे, ते जस अर्थ वरवु रे श्रीसी० ॥ १८ ॥

ढाळ ત્રીજી

(तुंगीयागिरि शिखर सोहे – ए देशी)

देव! तुज सिद्धांत मीठो, एक मने धरिये, दुष्ट आलंबन निहाळी, कहो किम तरिये? ॥ देव० १ ॥ दुष्ट आलंबन धरे जे, भग्न-परिणामी तेह आवश्यके भाख्या, त्यजे मुनि नामी ॥ देव० २ ॥ नियतवासविहार चेइय,–भक्तिनो धंधा, मूढ अज्जालंभ थापे, विगयपडिबंधो, ॥ देव० ३ ॥ कहे उग्रविहारभागा, संगम आयरिओ, नियतवास भजे बहुश्रुत, मुणिओ गुणदरिओ, ॥ देव० ४ ॥ न जाणे ते खीणजंघा,–बलथिविर तेहो, गोचरीना भाग

---

१२ जाणीने संवेगे दोषो प्रायश्चित्तथी दूर थाय १३ पापनी दरकार न राखनार निरपेक्ष १४ संयम श्रेणिथी पडे १५ तेवा पापो फरी न करवाथी प्रतिक्रमणनु फळ पामे १६ मिथ्यादुष्कृतथी दोषो दूर करीशु ए भावनाए तेज पापो फरी करे ते मायायुक्त मृषावाद गणाय १७ वास्तविक रीत १८ पतितपरिणामी १९ साध्वीए लावी आपेलां आहारादि ले २० संगमाचार्य जेवा बहुश्रुत पण नियतवास सेवे छे इत्यादि दृष्टांत आपनारो एम नथी जाणता के ते वृद्ध होवाथी तेमनु जंघाबल क्षीण हतु तेथी ते ॥ नियतवास सेवता छता गोचरीना स्थाननो नियम करता

म्यी, बहु रह्यो जेहो, ॥ देव० ५ ॥ चैत्यपूजा मुक्तिमारग, ॥घुने फेरवी निज धीधी यथर मुनिवर, चैत्यवास ठवी, ॥ देव० ॥ तीर्थउन्नति अन्यशासन-मलिनता टाळे, पूर्व अयचित पुष्प महिमा वेद नवि जाणे ॥ देव० ७ ॥ चैत्यपूजा करत संयत देखे रोह थयो, शुभ मन पण मार्गनाशी, महानिशीथे नथ ॥ देव० ८ ॥ पुष्ट कारण विना मुनि नवि, द्रव्य अधिकारी चैत्यपूजाय न ामे, फल अनधिकारी, ॥ देव० ९ ॥ आर्य अर्णिकापुत्त अर्था,-लाभथी ागा यह निजलाभे अनूपा, गोचरी भागा ॥ देव० १० ॥ न जाणे ातशिष्य अवमे थिविर वरहाणो सुगुणपरिगतमयतीहत, देहदिधि हीणो ॥ देव० ११ ॥ विगय लेवी नित्य मूके लष्टपुष्ट थणे, अन्यथा किम दोष लहना, उल्लायन न गणे ? ॥ देव० १२ ॥ उल्लायनराजापितनु नवि, शीत उष्ण सह तेह ध्ननमा विगय सवे पुत न लहे ? ॥ देव० १३ ॥ लाख आलम्बन भरीआ, जन असयतने तह जनमा काइ हवे धरे तेह मने ? ॥ देव० १४ ॥ शिथिल आलम्बन गहे, मुनि मन सवेगी, ममताम्बन गुरुस गुण, तीनसवेगी, देव० १५ ॥

---

२१ वज्रस्वामीनी जेम करवा कह्यें एम काइ कर्, त एम नथी जाणतो के तेओए जिनशासननी उन्नति अने अन्यशासनने प्रभावहीन करवा माट पुष्पो लाव्या, ते पण पैसाना लोभी एकत्र करी गयेला २२ पूजारी २३ द्रव्यपूजानो २४ पोते लावेल आहारथी अनूप अर्णिकापुत्र आचार्य पुष्पचूला साध्वीए लावेल आहारादि लेता, एम कहेनारा नथी जाणता के दुष्कालवशात् तेओ बलहीन, वृद्ध अने शिष्यरहित हता, माट साध्वीए लावेल आहार लेता, ते पण गुणवान्, परिचित साध्वीए विधिपूर्वक लावेलज आहारादि लेता २५ गोकुलमाथी विगय लेनार उदयन पुष्टालम्बन ले छे आ बात उदयननु आलम्बन लेनार शु नथी जाणतो ?

ढाळ चोथी

(प्रभु पासनु मुखडू जोवा, भवभवना पातिक खोवा—ओ देशी)

सुणजो सीमन्धर स्वामी ! वळी ओक कहु शिर नामी, मारग करताने प्रेरे, दुर्जन जे दूषण हेरे ॥ १ ॥ कहे " निज सारे व्रत पाळो, पण धर्मदेशना टाळो, जनमेळ्यानु शुं काम ? बहु बोल्यु निंदाठाम " ॥ २ ॥ इम कहेता मारग गोपे, खोटु दूषण आरोपे, जे निर्भय मारग बोले, ते कहो द्वीपने तोले ॥ ३ ॥ अज्ञानी गारवरसिया, जे जन छे कुमते ग्रसिया, तेहनो कुण टाळणहार ? विण धर्मदेशना सार ॥ ४ ॥ गीतारथ जयणावंत, भवभीरु जेह महंत, तस वयणे लोके तरिये, जिम प्रवहणथी भरदरीये ॥ ५ ॥ बीजा तो बोला बोले (बोले), शु कीजे निर्गुण टोळे ? भाषाकुशीलनो लेखो, जन ! महानिशीथे देखो ॥ ६ ॥ जनमेलननी नही ईहा, मुनि भाखे मार्गे निरीहा जो बहुजन सुणवा आवे, तो लाभ धरमनो पावे, ॥ ७ ॥ तेहने जो मार्ग न भाखे, तो, अतराय फळ चाखे, मुनि शक्ति छता नवि गोपे, वारे तेहने श्रुत कोपे ॥ ८ ॥ नवि निंदा मारग कहेता, समपरिणामे गहगहता, मुनि आर्द्रचरित सनरंगे, जोई लीजे बीजे अंगे ॥ ९ ॥ कोइ भाखे ' नवि समजावो, श्रावकने गूढा भावो, ' ते जूठ कह्या लट्ठा, श्रावक सूत्रे गहियट्ठा, ॥ १० ॥ कहे कोइ ' नवि सी जोडा ?, श्रुतमा नहीं कांइ खोडी ते मिथ्या

---

२५ जनना मळानु. २६ गारवयिर अने उत्सूत्रप्ररूपकना २७ अगीतार्थोनो उपदेश वचनव्यापार मात्र छे, भव्य जीवोने तारक नथी, एवा निर्गुणना टोळाने भाषाकुशील कह्या छे २८ मुक्तिमार्ग २९ आर्द्रकुमारे उपदेश आपीने हस्तीभक्त तापसोने तार्या ३० श्रावकने गूढ वातो न समजाववी कहेनार जूठा छे, कारण शास्त्रमा श्रावकोने पण सूत्रना अर्थना जाणनारा अने धारनारा कह्या छे ३१ नवा ग्रंथो बनाववी नवु शु उमेर्यु ? जूनोमा शो कइ खामी छे नहीं ! एम कहनारे जाणवु जोइए के नवा ग्रंथोनी रचना शास्त्ररूपी दरियामा प्रवेश करवा नावसमान छे

वद्धत भावा, श्रुतनलधि प्रवेशे नावा ॥ ११ ॥ पूरवसूरिए कीधी, तेणे जो नवि करवी सिद्धी, तो सर्वे कीधो धम, नवि करवो जोयो मर्म ॥ १२ ॥ पुरवेंयुघने बहुमाने, निज शक्ति मारगज्ञाने, गुरुकुलवासमाने जोडी, कुगति ओहमा नहीं खोडी ॥ १३ ॥ इम श्रुतनो नहीं वच्छेद, ओ तो ओकदेशनो भेद, ओ अर्थ सुणी उन्मादे, भवी वरत श्रुतअभ्यासे ॥ १४ ॥ इहां दयण ओक पदाय, जे सहुने पीडा थाय तो पणे अे नवि छोडीने, जो सज्जनने सुख दीजे ॥ १५ ॥ ते पुण्ये हासे तोष, तेहने पण इम नहि दोष उनमता हियडे होसी, जोइ दीने पढेला थीसी ॥ १६ ॥ कहे कोइक जुदी रीते, मुनिभिक्षा माने भीते ते जूठु शुभमति हेहे, मुनि अनरायथी वीहे ॥ १७ ॥ ज जन छे अतिपरिणामी, वली जेह नहि परिणामी तेहने निश्चे समजावे, गुरु कल्पवचन मन भावे ॥ १८ ॥ गछवयण गण गुण सूरा, जे काढे पयमा पूरा तुम सेवामा जो रहीये, तो प्रभु ! जशलीला लहीये ॥ १९ ॥

---

१२ पूर्वाचार्योंनी रचनानु समर्थन करवामा न आवे तो, धम ना पहेला पूर्वाचार्योए कथा छेन, परंतु अल्पबुद्धिवाला आपण जेवाने एनु रहस्य समजाय नहीं माटे नवीन ग्रथरचना उपकारक नीवडे छे १५ नवी ग्रथरचना करतां पूर्वपुरुषोनु बहुमान थाय ने स्वशक्तिना मुनिमार्गनु ज्ञान करावयामां सदुपयोग थाय, माटे स्थविरकल्पीओनु नवीन ग्रथनु निर्माण युक्तियुक्त छे १४ नवीन ग्रथरचनाथी श्रुतनो उच्छेद थतो नथी, परतु दुर्गम विषयोनो विस्तार छे, के जे विस्तारने जाणी भव्यात्माओ श्रुतना अभ्यासमां प्रवृत्ति करे १५ नवीन ग्रथरचनाथी १६ ग्रथरचना १७ शिथिलाचारीने मळती भिक्षा अन्यायथी नवीन ग्रथो रचाय छे एवो आक्षेप न कराय, कारण ग्रथ कारो तो तेम करवामा अनराय (पाप) माने छे

ढाळ पांचमी

(राग रामग्री — मंत्री कहे एक राजसभामां — ए देशी)

विषमकाळने जोरे कइ, उठ्या जड मलधारी रे, गुरु गच्छ छांड मारग लोपी, कहे अमे उग्रविहारी रे ॥ १ ॥ श्री जिन ! तु आलंबन जगने, तुज विण कवण आधारो रे भगतलोकने कुमतिजलधिथी बांहि ग्रहीने तारो रे, श्रीजिन ! तु आलंबन जगने, ॥ २ ॥ गीतारथ विण भूला भमता, कष्ट करे अभिमाने रे, प्रां गठी लगे नवि आव्या, ते खूता अज्ञाने रे, श्रीजिन० ॥ ३ ॥ ते कहे गुरु गच्छगीतारथ, प्रतिबंधे शु कीजे रे ? दर्शन - ज्ञान चारित आदरिये, आपेआप तरीजे रे श्रीजिन० ॥ ४ ॥ नवि जाणे प्रथम अगमा, आदि गुरुकुलवासो रे कह्यो नते विण चरण विचारे पचाशकनय वासो रे श्रीजिन० ॥ ५ ॥ नित्ये गुरुकुलवासे यम उत्तराध्ययने भाख्यु रे तेहने अपमाने वली तेहमां पापश्रमणपद दाख्यु रे, श्रीजिन० ॥ ६ ॥ दशवैकालिक गुरुशुश्रूषा, तम निश्राय दाख्या रे, आवतिमा ग्रहसम सद्गुरु मुनिकुलमच्छसम भाख्य श्रीजिन० ॥ ७ ॥ गुरुदृष्टि अनुसारे रहेता, लहे प्रवाह प्रवादे रे पण अव तिहा मन धरिये, बहुगुण सुगुरु प्रसादे रे, श्रीजिन० ॥ ८ विनय वधे गुरु पासे वसता, जे जिनशासनमूळ रे, दर्श निर्मल उचितप्रवृत्ति, शुभरागे अनुकूळे रे, श्रीजिन० ॥ ९ ॥ वेर वच्चे पातिक छूटे, सताविगुणशक्ति रे हित उपदेशे सुविहि सगे, ब्रह्मचर्यनी गुप्ति रे, श्रीजिन० ॥ १० ॥ मन बाधे मृदुबुद्धि के मारगभेद न होवे रे, बहु गुण जाणे ए अधिकारे, धर्मरयण जोव रे, श्रीजिन० ॥ ११ ॥ नाणतणो समागी होवे, थिरमन दर्श

१८ गच्छमा गुरुना आधीन रहेवु फरजियात शा माटे ? ज्ञानदर्श चारित्रथी तरी जवाशे एम कहेनारा नथी जाणता के आचारांगमां प्र गुरुकुलवासने कह्यो छे

चरित्ते रे, न त्यजे गुरु यहे ” सुप भाख्यु आवश्यकनिर्युक्तिरे श्रीजिन० ॥ १२ ॥ मार्तप्रेते जिम याण हणता, पग अणफरसी मवरारे गुरु छाटी आहारतणो तप, करता तिम मुनि नवरारे श्रीजिन० ॥ १३ ॥ गुरुकुलवासे ज्ञानादिक गुण, वाचयमने वाधे रे, तो आहारतणो पण दूषण, तप करता नावे याधेरे, श्री जिन० ॥ १४ ॥ धमरतन उपदेशवशान्ति, जाणी गुरु आदरयो रे गच्छ वहो तेहनो परिहारो, ते पण नित अनुसरयोरे श्रीजिन० ॥ १५ ॥ सारण वारण प्रमुख लहीने, मुक्तिमारग आराधे रे, गुभवीर्य तिहां सुविहितकिरियां देखादेखे वाधे रे श्रीजिन० ॥ १६ ॥ जलधि तणो सक्षोभ असहता, जेम नीसरता मीनोरे, गच्छसारणादिक अण सहता, तिम मुनि दुखिया दीनोरे, श्रीजिन० ॥१७॥ वाक नर्मदातट जिम मूकी मृगतृष्णानल जाता रे, दुःख पाम्या तिम गच्छ तजीने, आपमति मुनि थाता रे श्रीजिन० ॥ १८ ॥ पाली विना जिम पाणी न रहे, जीव विना जिम काया रे, गीतारथ विण तिम मुनि न रहे, जठ कहुनी मायारे, श्रीजिन० ॥ १९ ॥ अघ प्रते जिम निर्मल लोचन, मारगमा लेइ जायरे तिम गीतारथ मूरख मुनिने, दढ आलंबन थायरे श्रीजिन० ॥ २० ॥ समभावी गीतारथ नाणी, आगम माहे लहियेरे आतमअरथी सुभमति सज्जन, कहो ते विण किम रहियेरे श्रीजिन० ॥ २१ ॥ लोचन आलंबन जिनशासन, गीतारथ छे मेढी रे, ते विण मुनि चढती सयमनी, आरोहे किम मेढी रे, श्रीजिन० ॥ २२ ॥ गीतारथने मारग पूछी, छाडीजे उन्मादो रे, पाले किरिया ते तुज भक्ति, पामे जग जशवादोरे, श्रीजिन० ॥ २३ ॥

---

३९ दोषरहित आहारनो तप करे छे ते "गुरुने वाणथी हणजा पण रखे एमना पगे स्पर्श करी आशातना करता" एवु कहेनारना जेवा छे ४० साधुना ज्ञानादिगुणो वधे छे

ढाळ छठ्ठी

[साभळ रे तु सजनी मोरी, रामुहानी अथवा हितशिक्षाऊनी शीनी देशीं]

प्रथम ज्ञान ने पछी अहिंसा, दशवैकालिक साखी रे, ज्ञानवंत ते कारण भजिये, तुज आणा मन राखी रे, साहिब सुणजो रे ॥ १ ॥ द्रव्य क्षेत्र ने काल न जाणे, भाव पुरुष पडिसेवे रे, नवि उत्सर्ग लहे अपवादह, अगीतारथ नितमेव रे, साहिब० ॥ २ ॥ सचित्त अचित्त मिश्र नवि जाणे, कल्प अकल्प विचार रे योग्य न जाणे भिन्न भिन्न ठामे, द्रव्य यथास्थित सार रे साहेब० ॥ ३ ॥ क्षेत्र न जाणे तेह यथास्थित, जनपद अध्वविशेष रे, सुभिक्ष दुर्भिक्ष कल्प नवि जाणे, कालविचार अशेष रे साहिब० ॥ ४ ॥ भावहिंट्ठ गिलाण न जाणे, गाढ अगाढह कल्प र, समर्थो असमर्थो जन न लहे, वस्तु अवस्तु अनल्प रे साहिब० ॥ ५ ॥ जे आउट्टी प्रमादे दर्पे पडिसेवा वळि कल्प रे, नवि जाणे ते तास यथास्थित, पायच्छित्त विकल्परे, साहिब० ॥ ६ ॥ नयण रहित जिम अनिपुण देशे, पथ नष्ट निम सत्थ रे, जाणे हु ठामे पहुचावु, पण नहि तेह समत्थ रे साहिब० ॥ ७ ॥ अगीतारथ तिम जाणे गर्वे, हु चरवु सवि गच्छ रे, पण तस पासे गुणगणमासे, होई गलागर्लैमच्छ रे साहिब० ॥ ८ ॥ पच्छित्ते अतिमात्र दिओ जे, अपच्छित्ते पच्छित्त रे आसा यण तस सूवे बोली, आसायण मिच्छत्त रे, साहिब० ॥ ९ ॥ तपसी अबहुश्रुत विचरतो, करी क्षोपनी श्रेणी रे, नवि जाणे रे कारण तेहने, किम वाधे गुणश्रेणिरे ? साहिब० ॥ १० ॥ मार्ग मार जाणे निम पथी, अल्ही तास विसम रे क्रियाचारमात्र ते जाणे

४१ गीतो सेवनारनो आशय न समजनार अगीतार्थ मुनि ४२ निरोगी ४३ अभिमानपूर्वक ४४ अगीतार्थ पासे रहेनारा साधुओना गुणोनो नाश

पामे मूढ किमेन रे साहिब० ॥ ११ ॥ भेद लह्या विण जाण परिणति, मुनि मननी गत बोध रे, जिणराता जिणताता थाता, अत उपाड विराध रे साहिब० ॥ १२ ॥ पत्थरसम पामर आदरता मणिसम बुध जन छोडेरे, भेद लह्या विण आगमथितिनो, त पामे बहु खोडेरे साहिब० ॥ १३ ॥ ज्ञानमगति भाखि अणलहता, ज्ञानतणो उपचार रे, आरासारे गारग लोप चरणकरणनो मार रे साहिब० ॥ १४ ॥ चक्रवर्ती तेहन दे शिक्षा उदासीन जे मार रे, गुरुवचन तेहने ते बोले, अग धरे आचार रे साहिब० ॥ १५ ॥ असमरिया हो तो तुम जाणो, नही तो स्या तुम बोलरे ? अेम भारखी जात्या दिय दूषण, काढ तेह विटालरे साहिब० ॥ १६ ॥ पामत्थादिक दूषण काढा, छीले ज्ञानी तेह रे यथाछन्दता विण गुरु भाण्या, नवि नाण निन रेह रे साहिब० ॥ १७ ॥ ज्ञानीथी तिम अलगा रहेता, हस थकी जिम काक रे, भेद विनयना वाचन भाख्या, न लहे तस परिपाक रे साहिब० ॥ १८ ॥ सर्व उद्यमे पण तस बहु फल, पडे कष्ट अज्ञाण रे मुत्र अभिप्रतणे अनुसार, उपदेशमाला वाणे रे, साहिब० ॥ १९ ॥ ते तो ऋजु भावे एकाकी, आले तेहने जुत्त रे बीम्य कुवासन जे अनुयासन, देशाराधक उत्तरे साहिब० ॥ २० ॥ अज्ञानी गुरुतणे नियोगे अथवा शुभपरिणाम रे धम्मपयडी साखे सुदृष्टि कहिये अेहनो ठाम र साहिब० ॥ २१ ॥ ते तो हठथी गुरुने छाडी भग्नचरणपरिणाम रे, सर्व उद्यमे पण तस निश्चय, काइ न आव ठाम रे. साहिब० ॥ २२ ॥ आणारुचि विण चरण निषेधे, पचाशक हरिभद्र रे, व्यवहारे तो थोडु लेखे, जेह संथारे भद्र रे, साहिब० ॥ २३ ॥ शिष्य कहे 'जो गुरु अज्ञानी, भजता गुणनिधि जाणीरे, जो सुवासना तो किम त्यजता, तेने अवगुण जाणीरे ? साहिब० ॥ २४ ॥ गुरु बोले 'शुभ वासन कहिये, पक्षरणिज्ञत्वभाव

४५ वचन ४६ छोडवा लायक + स्वाकारे ४७ भद्रिक जीवा

रे, त आयत्तपणे छे आर्दो, जस मन मद्रक भावरे. साहिब० ॥२५॥ सूधु मानी सूधु थात्ता, चउभगी आचार रे, गुरु कहुणे तेहमा फउ जाणी, पहीये सुजश अपार रे साहिब० ॥ २६ ॥

ढाळ सातमी

(राजगीतानी अथवा सुरति महिनानी – देशी)

कोई कहे 'गुरुगच्छ गीतारथ सारथ शुद्ध, मातु पण नवि दीस जोता कोई विशुद्ध; निपुणसहाय विना कह्यो सूत्रे एक विहार, तेहथी एकाकी रहेता नही दोप लगार ॥ १ ॥ अणदेखता आपमा ते सवि गुणनो योग, किम जाणे परमा व्रतगुणनो मूलवियोग ? छेद दोष ताइ नवि कह्या प्रवचने मुनि दुःशील, दोपलवे पण थिरपरिणामी बकुशकुशील ॥ २ ॥ ज्ञानादिक गुण गुरुआदिक माहे जोय, सर्वे प्रकारे निगुण नवि आदरवो होय, ते छाडे गीतारथ जे जाणे विधि सघ, ग्लानौपधदृष्टाते मूढ धरे मन गध ॥ ३ ॥ ते कारण गीतारथने छे एक विहार, अगीतारथने सर्वे प्रकारे ते नहि सार पाप वरजतो काम असजतो भाख्यो जेह, उत्तराध्ययने गीतारथ एकाकी तेह ॥ ४ ॥ पाप तणु परिवजन ने वलि काम असग, अज्ञानीने नवि हुए ते नावि जाणे भग, अज्ञानी शु करशे शु लहशे शुभ पाप; दशवैकालिक वयणे पचारकआलाप ॥ ५ ॥ एकविहारे देखे आचारे सवाद, बहु श्रावाधिक दूषण वळी अज्ञान प्रमाद वळि विशेषे वार्यो छे अव्यक्त विहार, परोपोतदृष्टाते जाणो प्रवचनसार ॥ ६ ॥ एकाकीने स्त्रीरिपुश्वानतणो उपघात, भिक्षानी नवी शुद्धि महा

---

४८ छेद प्रायश्चित्त सुधी मुनि दुःशील न गणाय ४९ कमरोगना गुण हीन चिकित्सक जाणी गीतार्थ गुरुना त्याग करे, त्यारे अगीतार्थ अभिमानथ त्याग करे. ५० अव्यक्त (अगीतार्थ) ने समुद्रमा पर्तीन वहाणनी जे गीतार्थनी निश्रा कही छे

व्रतनो पण घात, एकाकी स्वच्छन्दपणे नवि पामे धर्म, नवि पामे प्रच्छन्नचिह्न विण ते प्रवचन मर्म ॥ ७ ॥ सुमति गुप्ति पण न धरे एकाकी निःशंक, भाव परावर्त धरे आलंबन सपंक, ज्ञान जूदा थाता थविरकल्पना भेद, डोहलाए मन लोकना थाए धर्मउच्छेद ॥८॥ टोळे पण जो मोळे अवप्रवाह निपात आणा विण नवि सघ ते आखतणो संघात ता गीतारथ उद्धरे निम हरि जलधी वेद, अगीतारथ नवि जाणे त मवि विधिनो भेद ॥ ९ ॥ कारणथी एकाकी पणु पण भाख्यु ताम, विषमकाळमा तो पण रुडो मेळो धाम, पंचकल्पभाष्ये भण्यु आतमरक्षण एम, शालि एरडतणे इम भागे लहिए खेम ॥ १० ॥ एकाकी पासत्थो स्वच्छंदो गतयोग, ठाणवासी वसन्नो बहु दूषण संयोग, गच्छवासी अणुयोगी गुरुसेवी वळी होय, अनियतवासी आउत्तो बहुगुण इम जोय ॥ ११ ॥ दोषहानि गुणवृद्धि जयणा भाखे सूरि, ते शुभपरिवारे हुइ विघन टळे सवि दूरि, देव पके जो आगणे तुम करुणा सुरवेली, शुभपरिवारे लहिये तो सुम जस रगरेली ॥ १२ ॥

ढाळ आठमी

(प्रभु ! चित्त धरीने अवधारो मुझ वात, अथवा झाझरीया मुनिवर ! धनधन — ए देशी)

कोइ कहे सिद्धान्तमाथी, धर्म अहिंसारे सार, आदरिए ते एक लीनी त्यजिये बहु उपचार, मन मोहन जिनजी ! तुम वयणे मुज

---

१ कारणसर अगीतार्थने पण एकाकीपणु जो के कह्यु छे तो पण उत्तम काळमा तो समुदायमान रहेवु योग्य गण्यु छे ... चोखानु अने एरंडना बीजनु उपरना ठाठरथी रक्षण थाय छे, जेम छालथी जूदा पडेला चोखा अने एरंडने असह्य दुःखो सहवा पडे छे, मा- ... रहेवानी अनिवार्यता पंचकल्पभाष्यमा जणावी छे।

रंग, मन० ॥ १ ॥ नवि जाणे ते सर्वे स्यजीने, अेक अहिंसा रंग, केवल लौकिक नीति होवे, लोकोत्तर पथभंग मन० ॥ २ ॥ वनमा वसतो बालतपस्वी, गुरुनिश्रा विण साध, अेक अहिंसाए ते राचे, न लहे मर्म अगाध मन० ॥ ३ ॥ जीवादिक जिम बालतपस्वी अणजाणतो मूढ, गुरुलघुभाव तथा अणलहे तो, गुरुवर्जित मुनि गूढ मन० ॥ ४ ॥ भवमोचक परिणाम सरीखो, तेहनो शुभ उद्देश, आणारहितपणे जाणीजे, जोह पद उपदेश मन० ॥ ५ ॥ अेक वचन झालीने छाडे बीजा लौकिक नीति सकल वचन निज ठामे जोडे, अे लोकोत्तर नीति मन० ॥ ६ ॥ जिनशासन छे अेक क्रियामा, अन्यक्रिया सम्बन्ध, तिम भाषी जे त्रिविध अहिंसा, हेतु स्वरुप-अनुबन्ध मन० ॥ ७ ॥ हेतु अहिंसा जयणारूपे, जन्तु अघातस्वरूप, फलरूपे जे तेह परिणामे, ते अनुबन्धस्वरूप मन० ॥ ८ ॥ हेतु स्वरूप अहिंसा आपे शुभफल विण अनुबन्ध, दृढअज्ञान थकी ते आपे, हिंसानो अनुबन्ध मन० ॥ ९ ॥ निह्नव प्रमुख तणी जिन किरिया, जेह अहिंसारूप, सुरदुरगति देइ ते पाडे, दुत्तर भवजलकूप मन० ॥ १० ॥ दुर्बल नग्न मास उपवासी, जो छे मायारंग, तो पण गरभ अनंता लेशे, बोले बीजु अंग, मन० ॥ ११ ॥ निंदित आचारे जिनशासन, जेहने हीले लोक, माया पहिली तस अज्ञाने, सर्व अहिंसा फोक मन० ॥ १२ ॥ स्वरूपथी निरवद्य तथा जे, छे किरिया सावद्य ज्ञानशक्तिथी तेह अहिंसा, दिशे अनुबंधे सद्य, मन० ॥ १३ ॥ जिनपूजा अपवादपदादिक, शीलव्रतादिक जेम, पुण्य अनुत्तर मुनिये आपी, दिअे शिवपद बहु अेम मन० ॥ १४ ॥ अेह भेद विण अेक अहिंसा, नवि होवे थिर थंभ, यावत् योगक्रिया छे तावत्, बोल्यो छे आरंभ मन० ॥ १५ ॥ लागे पण लगवे नहि हिंसा मुनि* अे मायावाणी, शुभकिरिया लागी ज आवे,

*२ दुःख तरी शकाय

तेमा तो नहि हाणी, मन० ॥१६॥ हिंसा मात्र विना जो मुनिने होय अहिंसकभाव, सू म अेकेंद्रियने होय तो ते शुद्ध स्वभाव म०॥१७॥ भावे जेह अहिंसा माने, ते सवि जोडे ठाम, उत्सर्गे अपवादे वाणी, जिननी जाणे जाम मन० ॥ १८ ॥ कोइ कहे उत्सर्ग आणा छांडी छे अपवाद, ते मिथ्या अणपामे अर्थे, साधारण विधिवाद मन० ॥ १९ ॥ मुख्यपणे जिम भाखे आणा तिम तस कारण तेह, कार्ये इच्छतो कारण इच्छे, अे छे शुभमति रेह मन० ॥ २० ॥ कल्पे वचन बहु अपवाद, ते आणानु रे मूल मिश्रपक्ष तो मुनिने, न घटे, तेह नही अनुकूल मन० ॥ २१ ॥ अपुनर्बंधकथी मांडीने जाव चरम गुणठाण भावअपेक्षाये जिन आणा, मारग भाखे जाण मन० ॥ २२ ॥ अेक अहिंसामा जे आणा, भाखे पूरव सूरि ते अेकांत माते नवि महिये, तिहा नयविधि छे भूरि मन० ॥ २३ ॥ आतमभावहिंसनथी हिंसा, सघळा अे पापस्थान, तेह थकी विपरीत अहिंसा, तास विरहनु ध्यान मन० ॥ २४ ॥ तस उपाय जे जे आगममा, बहुविध छे व्यवहार, ते नि शेष अहिंसा कहिये, कारण फळ उपचार, म० ॥ २५ ॥ जीव अजीव विषय छे हिंसा, नैगमनय मतजुत्त सग्रह व्यवहारे षट्काये, प्रतिजीवे ऋजुसुत्त मन० ॥ २६ ॥ आतमरूप शब्दनय तीने, माने अेम अहिंस, शोपवृत्ति जोइने लहिये, सुरा जश लील प्रशंस, मन० ॥ २७ ॥

ढाळ नवमी

(हमीरानी, चैत्री पूनम अनुक्रमे अथवा देश मनोहर माळवो—ए देशी)

कांइक सूत्रने आदरे, अर्थ न माने सार, जिनजी ! आपमते अवळु करे भूल्या तेह गमार, जिनजी ! तुज वयणे मन राखीये ॥ १ ॥ प्रतिमा लोपे पापीआ योग अने उपधान, ! गुरुनो शिर धरे, मायावी अज्ञान जिनजी ! ॥ २

तेहनी नवी, केता कहिये नेय ! जिनजी ! नित्य सूटे छे साधता, गुरु विण तेहनी टेव, जिनजी ! ॥ ३ ॥ वृत्तिप्रमुख जोइ करी, भाखे आगम आप, जिनजी ! तेहज सूदा ओळवे, जिम कुपुत्र निज बाप, जिनजी ! ॥ ४ ॥ इत्यादिक अणमानता, सूत्र विराधे दीन, जिनजी ! सूत्र-अरथ-तदुभय थकी, प्रत्यनीक कह्या तीन ! जिनजी ॥ ५ ॥ अक्षर अर्थज पकलो, जो आदरता एम, जिनजी ! भगवइ अंगे भाखियो त्रिविध अर्थ तो केम ? जिनजी ! ॥ ६ ॥ सूत्र अरथ पहेलो बीजो, निज्जुत्ती य मीस जिनजी ! निरवशेष त्रीजो वळी, इम भाखे जगदीश जिनजी ! ॥ ७ ॥ छाया नर चाले चले, रहे थिरी तस जेम, जिनजी ! सूत्रअरथ चाले चले, रहे थिती तस तेम, जिनजी ! ॥ ८ ॥ अर्थ कहे विधि धारणा, उभय सूत्र निज माण जिनजी ! तिम प्रमाण सामान्यथी नवि प्रमाण अप्रमाण जिनजी• ॥ ९ ॥ अधपगु जिम बे मळे, चाले इच्छित ठाण जिनजी ! सूत्रअरथ तिम जाणीए कल्प भाष्यनी वाण जिनजी ! ॥ १० ॥ विधि-उद्यम-भय-वर्णना, उत्सर्ग-अपवाद, जिनजी ! तदुभय अर्थ जाणीये, सूत्रभेद अविवाद जिनजी ! ॥ ११ ॥ ए भेद जाण्या विना करतामोह रहत जिनजी ! भग तर प्रमुखे करी, भाख्यु भगवइतन्त्र जिनजी ! ॥ १२ ॥ परि वोसिरिय चारी करी, लेपन अगन अशोक, जिनजी ! कारणथी अति आदर्या, पचकल्प उपदेश जिनजी ! ॥ १३ ॥ वर्षागमन निवारिओ कारणे भाख्यु तेह, जिनजी ! ठाणांगे श्रमणी तणु, अवलम्बादिक जेह. जिनजी ! ॥ १४ ॥ आधाकर्मादिक नही, बन्ध तणो एकन्त जिनजी ! सूयगडे ते किम घटे, विण वृत्यादिक तन्त ? जिनजी ! ॥ १५ ॥ विहरमान गणधर पिता, जिननमकादिक तेह, जिनजी ! क्रम थकी आवश्यक तणो, सूत्र मात्र नही तेह जिनजी ! ॥ १६ ॥ अर्थ विना किम पामिए, भाव सकल अविबद्ध जिनजी ! गुरुमुख वाणी

---

५३ धारी आहार.

धरता, होवे सर्व सुयद्ध जिनजी ! ॥ १७ ॥ सुत्तक अर्थ परम्परा, मर्यादा जेहने हाथ, जिनजी ! ते सुविहित अणमानता, किम रहेशे निज आथ ? जिनजी ! ॥ १८ ॥ सद्गुरु पासे शीखता अर्थमांहि न विरोध, जिनजी ! हेतुवाद आगम प्रते, जाण नहु सुबोध, जिनजी ! ॥ १९ ॥ अर्थे मतभेदादिक, जह विरोध गणंत, जिनजी ! ते सुत्र पण दरखो, जे नोडा एकन्त, जिनजी ! ॥ २० ॥ सद्दहता जाणे नहीं वीर कहे इम कल्प जिनजी ! सद्दहता पण जाणजो, प्रथम अग छे जल्प, जिनजी ॥ २१ ॥ ऋषभकूट अहनोवणे जम्बूपन्नत्ति मार जिनजी ! यार यठी पाठान्तरे, मत कहे विस्तार, जिनजी ! ॥ २२ ॥ सत्तावन मय सहिने, मनजाणी समवाय, जिनजी ! आठ मया हाला कहे, ए ता अवर उपाय, जिनजी ! ॥ २३ ॥ उत्तराध्ययने गिति कही, अ तमुहूत जघन्य, जिनजी ! वेदनीयनी बार त पन्नवणामा अन्य, जिनजी ! ॥ २४ ॥ अनुयोगद्वारे कह्या, जघन निक्षेपा चार, जिनजी ! जीवादिक तो नवि घटे, द्रव्यभेद आधार, जिनजी ! ॥ २५ ॥ इम बहु वचन नयन्तरे, कोइ वाचनाभेद जिनजी ! इम अर्थ पण जाणीये, नवि धरीये मन खेद, जिनजी ! ॥ २६ ॥ अर्थकारथी आगमा, अधिका गुममति कुण ? जिनजी ! ताळ अमियतणे नहीं, आवे कहिये लूण ? जिनजी ! ॥ २७ ॥ सनासरीखु सूत्र छे, सत्रीसरीखो अर्थ जिनजी ! ग्रहमा त्ये हीलीओ, दिये ससार अनर्थ, जिनजी ! ॥ २८ ॥ ज समतोले आचरे, सूत्र अर्थनु प्रीति, जिनजी ! त तुझ करणाये वरे, सुयशा निमलनीति, जिनजी ! ॥ २९ ॥

ढाळ दशमी

(आप छदे छबिला छटाये, अथवा जीव - जीवन ! प्रभु विहा गयारे - ए देशी)

ज्ञान विना जे जीवनेरे किरियामा छ सेपर, नर्मस्य छ तेहथीरे, नही उमसुग सन्तोषरे ॥ १ ॥ प्रभु ! तुझ वाणी मीठ

तेहनी नवी, केती कहिये भेद ! जिनजी ! नित्य छूटे छे साधता, गुरु विण तेहनी टेव, जिनजी ! ॥ ३ ॥ वृत्तिप्रमुख जोइ करी, आणे आगम आप जिनजी ! तेहज मूढा ओळवे, जिम कुपुत्र निज बाप, जिनजी ! ॥ ४ ॥ वृत्त्यादिक अणमानता, सूत्र विराधे दीन, जिनजी ! सूत्र-अरथ-तदुभय थकी, प्रत्यनीक कह्या तीन ! जिनजी ॥ ५ ॥ अक्षर अर्थज पकडतो, जो आदरतां भ्रम, जिनजी ! भगवइ अंग भाखियो त्रिविध अर्थ तो क्रम ? जिनजी ! ॥ ६ ॥ सूत्र अरथ पहेलो बीजो, निज्जुत्ती य मीस जिनजी ! निरवशेष त्रीजो वळी, इम भाख्यं जगदीश जिनजी ! ॥ ७ ॥ छाया नर चाले चले, रहे थिती तन जेम, जिनजी ! सूत्रअरथ चाले चले, रहे थिरता तस तेम, जिनजी ! ॥ ८ ॥ अर्थ कहे विधि वारणा, उभय सत्र जिम काण जिनजी ! तिम प्रमाण सामान्यथी नवि प्रमाण अप्रमाण जिनजी ! ॥ ९ ॥ अधपंगु जिम बे मळे, चाले इच्छित ठाण जिनजी ! सत्रअरथ तिम जाणीए कल्प भाष्यनी वाण जिनजी ! ॥ १० ॥ विधि-उद्यम-भय-वर्णना, उत्सर्गह-अपवाद, जिनजी ! तदुभय अर्थे जाणिये, सूत्रभेद अविवाद जिनजी ! ॥ ११ ॥ षड् भेद जाण्या विना कष्टमोह हुंडत, जिनजी ! भगवंतर प्रमुखे करी, भाख्यु भगवइतंत जिनजी ! ॥ १२ ॥ परिवासित चारी करी, देखन अशन अशेष जिनजी ! कारणथी अति आदर्यो, पंचकल्प उपदेश जिनजी ! ॥ १३ ॥ वर्षागमन निवारियो कारणे भाख्यु तेह, जिनजी ! ठाणांगे श्रमणी तणु, अवलम्बादिक जेह जिनजी ! ॥ १४ ॥ आधाकर्मादिक नही, बन्ध तणो एकान्त जिनजी ! सूयगडे ते किम घटे, विण वृत्त्यादिक तन्त ? जिनजी ! ॥ १५ ॥ विहरमान गणधर पिता, शिक्षनकादिक जेह जिनजी ! क्रम वळी आवश्यक तणो, सूत्र मात्र नही तेह जिनजी ! ॥ १६ ॥ अर्थ विना किम पामिए भाव सकल अनिबद्ध जिनजी ! गुरुमुख वाणी

---

५३ वासी आहार.

वारता, होवे सर्वे सुवद्ध जिनजी ! ॥ १७ ॥ पुस्तक अर्थ परम्परा, सघळी जइने हाथ, जिनजी ! ते सुविहित अणमानता, किम रहेशे निज आथ? जिनजी ! ॥ १८ ॥ सद्गुरु पासे शीखता अर्थमांहि न विरोध जिनजी! हेतुवाद आगम प्रते, जाण जेह सुबोध, जिनजी!॥१९॥ अर्थे मतभेदादिके, जेह विरोध गणन्त, जिनजी ! ते सूत्रे पण देखशे, जो जोता एकन्त, जिनजी ! ॥ २० ॥ सहरता जाणे नहीं, वीर कहे इम कल्प, जिनजी ! सहरता पण नाणनो, प्रथम अंग छे जल्प, जिनजी ॥ २१ ॥ रूपभरूट अइचायणो, जंबूपन्नत्ति सार जिनजी ! धार बत्ती पाठान्तरे, मळ कहे विस्तार, जिनजी! ॥ २२ ॥ सत्तावन मय सहिते, मननाणी समवाय, जिनजी ! आठ मया होता कहे, ए तो अवर उपाय, जिनजी! ॥ २३ ॥ उत्तराध्ययने थिति कही, अन्तर्मुहूर्त जघन्य, जिनजी ! वेदनीयनी बार त, पन्नवणामा अन्य, जिनजी ! ॥ २४ ॥ अनुयोगद्वारे कह्या, जघन निक्षेपा चार, जिनजी! जीवादिक तो नवि घटे, द्रव्यभेद आधार, जिनजी ! ॥ २५ ॥ इम बहु वचन नयान्तरे, कोइ वाचनाभेद, जिनजी ! इम अर्थ पण जाणीये, नवि धरीये मन खेद, जिनजी ! ॥ २६ ॥ अर्थेरारथी आजना, अधिका शुभमति कुण ? जिनजी ! तोले अमियतणे नही, आवे कहिये लूण? जिनजी ! ॥ २७ ॥ राजासरीखु सूत्र छे, मन्त्रीसरीखो अर्थ, जिनजी ! एहमा एके हीलीओ, दिये संसार अनर्थ, जिनजी ! ॥ २८ ॥ जे समतोले आचरे, सूत्र अर्थशु प्रीति, जिनजी ! त तुझ करणाये वरे, सुजश निमळनीति, जिनजी ! ॥ २९ ॥

ढाळ दशमी

(आप छदे छबिला छलावरे, अथवा जीव – जीवन ! प्रभु किहा गयारे – ए देशी)

ज्ञान विना जे जीवनेरे किरियामा छे दोपरे, कर्मबन्ध छे तेहथीरे, नही [illegible]

हीरे, मुझ मन सहेज सुहायरे, अमीयसमी मन धारतोरे, पापताप सवि जायरे प्रभु ! तुझ वाणी मीठडीरे ॥ २ ॥ लोकपति किरिया करेरे, मनमेटे अज्ञाणरे, भव – इच्छाना जोरथीरे, विण शिवसुख विज्ञाणरे प्रभु० ॥ ३ ॥ कामकुम्भसम धर्मथीरे, मूल करी इम तुच्छरे, जनरंजन येवड लहेरे, न लहे शिवतरगुच्छरे. प्रभु० ॥ ४ ॥ करुणा न करे हीननीरे, विण पणिहाण सनेहरे, द्वेष धरन्ता तेहथीरे, हेठा आवे तेहरे. प्रभु० ॥ ५ ॥ अेक काजमा नवि धरेरे, विण प्रवृत्ति थिर भावरे, जिहांतिहां मोढु घालतारे, धारे ढोरस्वभावरे, प्रभु० ॥ ६ ॥ विना विघनजय साधुनेरे, नवि अविछिन्न प्रयाणरे, किरियाथी शिवपुरा होयरे, किम जाणे अज्ञाणरे ? प्रभु० ॥ ७ ॥ शीततापसुख विघन छेरे, बाधिर अन्तर व्याधिरे, मिथ्यादर्शन अेहनीरे, मात्रा मृदुमध्याधिरे प्रभु० ॥८॥ आसन अशनजयादिकेरे, गुरुयोगे जय तामरे विघनजोर अे नवि टळेरे विगर ज्ञान अभ्यासरे, प्रभु० ॥ ९ ॥ विनय अधिकगुण साधुनोरे, मध्यमनो उपगाररे सिद्धि विना होवे नहिरे कृपा हीननी साररे, प्रभु० ॥ १० ॥ विण विनियोग न सम्भवेरे, परने धर्म योगरे, तेह विना जनमान्तरेरे, नहि सततिसयोगरे, प्रभु० ॥ ११ ॥ किरियामा खेदे करीरे, दृढता मननी नाहिरे, मुख्यहेतु ते धर्मनो जिम पाणी कृषिमाहिरे प्रभु० ॥ १२ ॥ नेठा पण जे उपजेरे, किरियामा उद्वेगरे, योग-द्वेषथी ते क्रियारे, राजवेठ सम वेगरे प्रभु० ॥ १३ ॥ भ्रमथी अेह न साभरेरे, थाइ अकृत – कृत – कानरे तेहथी शुभक्रिया धर्मीरे, अर्थविरोधी अकाजरे प्रभु० ॥ १४ ॥ शान्तवाहिता विण हूअेरे, जे योगे उत्थानरे, त्यागयोग छे तेहथीरे, अणछडातु ध्यानरे प्रभु० ॥ १५ ॥ विचे विचे बीजा कामनारे, जाओ मन ते खेपरे ऊखणता जिम शालिनुरे, फळ नहीं तिहा निर्लेपरे, प्रभु० ॥ १६ ॥ अेकने ठामे रागथीरे, किरियामा आसगरे, तेहज गुणठाणे थितिरे,

देहथी फल नही चगरे. प्रमु० ॥ १७ ॥ माही किरिया अवगणीरे, बीजे ठामे हर्षरे, इष्ट अर्थमा जाणियेरे, अगारानो वर्षरे, प्रमु० ॥ १८ ॥ रोग होओ ममजण विनारे, पीडा भगस्वरुपरे, शुद्धक्रिया उच्छेदथीरे, तेह वन्ध्यफलरूपरे प्रमु० ॥ १९ ॥ मानहानिथी दुःख दीओरे अग विना जिम भोगरे, शान्तोदात्तपणा विनारे, तिम किरियानो योगरे प्रमु० ॥ २० ॥ शान्त ते क्षाय अभावथीरे, जे उन्मत्त गम्भीररे, किरियादोष टही त्यजेरे ते सुख नशभर धीररे प्रमु० ॥ २१ ॥

ढाळ अगियारमी

(दूहा, अथवा मूरती महीनानी देशी)

अेकवीस गुण परिणामे, जास चित्त नितमेव धरमरतननी योग्यता, तास कहे तूं देव ! ॥ १ ॥ १ क्षुद्र नहि २ वळी रूपनिधि ३ सोम्म ४ जनप्रियन धन्य, ५ क्रूर नहीं ६ भीरु वळी ६ असठ ८ सार दक्खिन्न ॥ २ ॥ ९ लज्जालुओ १० दयालुओ ११ सोम दिट्ठि मज्झत्थ, १२ गुणरागी १३ सत्कथ १४ सुपक्ख १५ दीर्घ दर्शी अत्थ ॥ ३ ॥ १६ विशेषज्ञ १७ वृद्धानुगत १८ विनयवत १९ कृतनाण, २० परहितकारी २१ लब्धलक्ष, गुण अेकवीस प्रमाण ॥ ४ ॥ क्षुद्र नहीं ते जेह मने, अतिगभीर उदार, न करे जन उतावळो, निजपरनो उपगार ॥ ५ ॥ गुभसघयणी रूपनिधि, पूरण अग उपग, ते समरथ सहजे धरे धर्म प्रभावन चग ॥ ६ ॥ पापकर्मे वरते नहीं, प्रकृति सौम्य जगमित्त सेवनीक होवे सुखे, परने प्रशमनिमित्त ॥ ७ ॥ जनविरुद्ध सेवे नहीं, जनप्रिय धर्मे सूर, मलिनभाव मनथी त्यजी, करी शके अक्रूर ॥ ८ ॥ इहपर लोक अपायथी, बीहे भीरु जेह, अपयशथी वळी धर्मनो, अधिकारी

---

५८ तुच्छवृत्ति

छे तेह ॥ ९ ॥ अशठ न वचे पर प्रते, लहे कीर्ति विश्वास, भाव सार उद्यम करे, धर्म ठाम ते खास ॥ १० ॥ निजकार्य छाडी करी, करे अन्य उपकार, सुदक्खिण्ण जन सर्वने, उपादेय व्यवहार ॥ ११ ॥ अंगीकृत न त्यजे त्यजे, लज्जालुओ अकाज, धरे दयालु धर्मनी, दयामूलनी लाज ॥ १२ ॥ धर्म मर्म अवितथ लहे सोमदिट्ठि मज्झत्थ, गुणसयोग करे सदा, वर्जे दोष अणत्थ ॥ १३ ॥ गुणरागी गुण समहे, दूसे न गुण अनत, उवेखे निर्गुण सदा, वहुमाने गुणवत ॥ १४ ॥ अशुभकथा कलुषित मति, नासे रतन विवेक, धर्मार्थी सत्कथ हुओ, धर्मनिदान विवेक ॥ १५ ॥ धर्मशील अनुकूळ यश, सदाचार परिवार, धर्म सुपक्ख विघन रहित, करी शके ते सार ॥ १६ ॥ मांडे सवि परिणामहित, दीर्घ दर्शी काम, लहे दोष गुण वस्तुना, विशेषज्ञ गुणधाम ॥ १७ ॥ वृद्धानुगत सुसगते, होवे परिणतवुद्धि, विनयवत नियमा करे, ज्ञानादिकनी शुद्धि ॥ १८ ॥ गुण जोडे गुरु आदरे, तत्त्ववुद्धि कृतजाण, परहितकारी पर प्रते थापे मार्गे सुजाण ॥ १९ ॥ शीघ्रे लहे सुखे सकल, लद्धलक्ख शुभ काज, इम अेकवीस गुणे वर्यो, लहे धर्मनु राज ॥ २० ॥ पूरण गुण उत्तम कह्या, मध्यम पादे हीन, अर्द्धहीन जघन्य जन, अपर दरिद्री दीन ॥ २१ ॥ अरजे वरजी पापने, अेह धर्म सामान्य, प्रभु तुझ भक्ति जश लहे, तेह होअे जनमान्य ॥ २२ ॥

ढाळ बारमी

चौपाइनी देशी

अेकवीस गुण जेणे लह्या, जे निज मर्यादामा रह्या, तेह भावश्रावक्त लहे, तस लक्षण अे तु प्रभु[१] कहे ॥ १ ॥ कृतव्रतकर्मा शीलाधार, गुणवन्तोने ऋजु व्यवहार गुरुसेवी ने प्रवचनदक्ष,

---

१९ सत्कथा करनार.

श्रावकभावे ओ प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ श्रवण जाणणा ग्रहण उदार, पडिसेवा ओ चार प्रकार, प्रथम भेदना मन धारीये, अर्थ तास इम अवधारीये ॥ ३ ॥ बहुमाणे निसुणे गीयत्थ, पासे भंगादिक बहु अत्थ, जाण गुरु पासे व्रत ग्रहे, पाले उपसर्गादिक सहे ॥ ४ ॥ सेवे आयतना उद्देश, परगृह तजे अणुभट वेस वचन विकार त्यजे शिशुलील, मधुर भणे ओ षट्विध शील ॥ ५ ॥ आयतने सेवे गणपोष, परगृहगमने वाधे दोष, उद्भटवेष न शोभा लाग, वचन विकारे जागे राग ॥ ६ ॥ मोहतणो शिशुलीला लिंग अनर्थ दंड अछे ओ चंग, कठिन वचननु जल्पन जेह, धर्मीने नाहि सम्मत तेह ॥ ७ ॥ उद्यम करे सदा सज्झाय, करण विनयमां सर्व उपाय, अनभिनिवेशी रुचि जिनआण, धरे पंच गुण एह प्रमाण ॥ ८ ॥ सज्झाये धारे वैराग, तप नियमादिक करणे राग विनय प्रयुंजे गुणनिधि तणो, तिम मन वाधे आदर घणो ॥ ९ ॥ अनभिनिवेशी अवितथ गणे, गीतारथ भाषित जे सुणे, सद्दहणाये सुणवा चाह, समकितनो मोटो उत्साह ॥ १० ॥ अवितथकथन अवचकक्रिया, पातिकप्रकटन मैत्रीप्रिया बोधबीज सद्भावे सार, चार भेद ओ ऋजु व्यवहार ॥ ११ ॥ गुरुसेवी चउविह सेवणा, कारण सम्पादन भावना, सेवे अवसरे गुरुने तेह, ध्यानयोगनो न करे छेह ॥ १२ ॥ तिहां प्रवर्तावे पर प्रतें, गुरु गुण भाषे निज पर छतें सम्पादे ओषधमुख वळी, गुरुभावे चाले अविचली ॥ १३ ॥ सूत्र अर्थ उत्सग्गववाय भावे व्यवहारे सोपाय, निपुणपणुं पाम्यो छे जेह, प्रवचनदक्ष कहीजे तेह ॥ १४ ॥ उचित सूत्र गुरु पासे भणे, अर्थ सुतीर्थे तेहनो सुणे, विषयविभाग लहे अविवाद, वळी उत्सर्ग तथा अपवाद ॥ १५ ॥ पक्षपात विधि माहे धरे, देशकालमुख जिम अनुसरे जाणे गीतारथ व्यवहार, तिम सवि प्रवचन कुशल उदार ॥ १६ ॥ किरियागत जे षड्विध लिंग, भाखे तु जिनराज अभंग ओ विधि श्रावक जे आचरे, सुखनालीला ते आदरे ॥ १७ ॥

ढाळ तेरमी

(छट्ठी भावना मन धरो–ए-देशी)

भावश्रावकना भाविए, हवे सत्तर भावगत तेहोरे, नेहोरे, प्रभु तुझ वचने अविचल होजो ए ॥ १ ॥ इत्थी चचल चित्तथी, जे वाट नरकनी मोटीरे, खोटीरे, छाडे ए गुण धुरी गणो ए ॥ २ ॥ इंद्रियचपल तुरंगने, जे रुंधे ज्ञाननी रासे रे, पासेरे, ते बीजो गुण श्रावक धरे ए ॥ ३ ॥ क्लेशतणु कारण घणु, जे अर्थ असारज जाणेरे, आणेरे, ते त्रीजो गुण सनिधि ए ॥ ४ ॥ भवविडबनामय अछे, वळी दु खरूपी दु ख हेतो रे, चेतोरे, इम चोथो गुण अगीकरे ए ॥ ५ ॥ क्षीणसुख विषय विषोपमा, इम जाणी नवि बहु ईहेरे, बीहेरे, तेहथी पचम गुण धर्यो ए ॥ ६ ॥ तीव्रारभ त्यजे सदा, गुण छट्ठानो सभागीरे, रागी रे निरारभजननो घणु ए ॥ ७ ॥ माने सत्तम गुण धर्यो, जन पाससदृश गृहवासोरे, अभ्यासोरे मोह जीतवानो करे ए ॥ ८ ॥ अट्ठम दसण गुण भर्यो, बहु भाते करे गुरु भक्तिरे, शक्तिरे, निज सद्दहणानी फोरवे ए ॥ ९ ॥ लोकसज्ञा सवि परिहरे, जाणे गाडरियो प्रवाहोरे, ल्हाहोरे, इम नवमा गुणनो सपजे ए ॥ १० ॥ आगमने आगळ करे, ते विण कुण मारग साखीरे, भाखीरे, इम किरिया दशमा गुण थकी ए ॥ ११ ॥ आप अबाधाये करे, दानादिक चार शक्तिरे व्यक्तिरे, इम आवे गुण इग्यारमो ए ॥ १२ ॥ चिंतामणि सरिखो लही, नवि मुग्ध हस्यो पण लाजेरे, गाजेरे, निज धर्मे ए गुण बारमो ए ॥ १३ ॥ धन-भवनादिकभावमा, जे नवि रागी नवि द्वेषीरे, समपेखीरे, ते विल्से गुण तेरमो ए ॥ १४ ॥ रागद्वेष मध्यस्थनो समगुण चउदमे न बाधेरे साधेरे, ते हठ छाडी मारग भले ए ॥ १५ ॥ क्षणभगुरता भावतो, गुण पन्नरमे सेवतोरे, सतोरे, न धनादि सगति करे ए ॥ १६ ॥ भावविरति मेवे मने, भोगादिक पर अनुरोधेरे, बोधेरे, इम उल्लमे गुण सोल्मे ए ॥ १७ ॥ आन का ए छाहिसु इम वेश्या परे

तिसमेहोरे, गेहोरे, पर माने गुण सत्तरमे ए ॥ १८ ॥ ए गुणवृंदे जे भर्या, ते श्रावक कहिये भावरे, पावरे, मुनरापुर तुम भक्तिथी ए ॥ १९ ॥

ढाळ चौदमी

ते भाव साधुपणु लहे, जे भावश्रावक सार, तेहना लक्षण सात छे मखि जाणे हो तु गुणभंडार साहिबनी ! माची ताहरी वाणी ॥ १ ॥ किरिया मारगअनुसारिणी १ श्रद्धा प्रवर अविरुद्ध २ ऋजुभावे पन्नवणिज्जता ३, किरियामा हो नित्ये अप्रमाद ४ सा० ॥ २ ॥ निजशक्ति – सारु पालनी, आरंभ ५ गुण अनुराग ६ आराधना गुरु आणनी ७, जेहथी लहिये हो भवजलताग सा० ॥ ३ ॥ मार्गे ते समयनी थिति तथा, संविग्नबुधनी नीति, बे दोय अनुसारे क्रिया, जे पाळे हो ते न लहे भीति, सा० ॥ ४ ॥ सूत्रे भण्यु पण अन्यथा, बहुगुण जाण, संविग्नविबुधे आचर्युं, थाइ थोमे हो थाडा दिप्रमाण, सा० ॥ ५ ॥ कल्पनु धरवु झोळिका, मानने दयरक्षदान, तिथि पजूसणनी पालटी, भोजनविधि हो इत्यादि प्रमाण, सा० ॥ ६ ॥ व्यवहार पाचे भाखिया, अनुक्रमे जेह प्रधान आन तो तेहमा जीत छे, ते त्यजिये हो किम विगर निदान ? सा० ॥ ७ ॥ श्रावकममत्व अशुद्ध थकी, उपकरण वसति आहार, सुखशीलपन जे आचरे, नवि धरिये हो ते चित्त लगार, सा० ॥ ८ ॥ विधि सेवनाअवितृप्ति शुभदेशन खलितविशुद्धि, श्रद्धा धर्म इच्छा घणी, षडभेदे हो इम जाणे सुबुद्धि, सा० ॥ ९ ॥ दृढ राग छे शुभ भोज्यमा, तिम सेवताये विरुद्ध, आपदामाहे रस जाणने, तिम मुनिने हो चरणे ते शुद्ध, सा० ॥ १० ॥ जिम तृप्ति जग पामे नहि, धनहीन लेतो रत्न तप – विनय – वैयावच्च प्रमुख तिम, करतो

हो मुनिवर बहु यत्न सा०॥ ११ ॥ गुरुनी अनुज्ञा लेइने, जाणतो पात्र कुपात्र, तिम देशना शुद्ध दिओ, तिम दीपे हो निज संयमगात्र सा० ॥ १२ ॥ जे कदाचित् लागे व्रते, अतिचार पंकलव, आलोयणे ते शोधता, मुनि धरे हो श्रद्धा निःशंक, सा० ॥ १३ ॥ श्रद्धा थकी जे सवै लहे, गंभीर आगमभाव, गुरुवचने पत्रवणिज्ज ते, आराधक हो होवे सरल स्वभाव सा० ॥ १४ ॥ षट्कायघात प्रमत्तने, पडिलेहणादिक योग, जाणी प्रमादी नवि हुओ, किरियामा हो मुनि शुभसयोग सा० ॥ १५ ॥ जिम गुरु आर्यमहागिरि, तिम उजमे बलवंत, बल अविषय नवि उजमे, शिवभूति हो जिम गुरु हीलंत सा० ॥ १६ ॥ गुणवंतनी संगति करे, चित्त धरत गुण अनुराग, गुणलेश पण परनो थुणे, निज देखे हो अवगुण बहुभाग सा० ॥ १७ ॥ गुरुचरणसेवारत होई, आराधतो गुरुआण आचार सर्वना मूल गुरु, ते जाणे हो ते चतुर सुजाण सा० ॥ १८ ॥ ओ सात गुण लक्षण कर्या, जे भावसाधु उदार, ते वरे सुयशजशसम्पदा तुज चरणे हो जस भक्ति अपार सा० ॥ १९ ॥

ढाळ पन्नरमी

(आज मारे एकादशीरे नणदल ! मौन करी मुख रहिए–ए देशी)

धन ते मुनिवरा रे, जे चाले समभावे, भवसायर लीलाए उतरे, संयमकिरियानावे धन० ॥ १ ॥ भोगपंक त्यजी उपर बेठा, पंकज परे जे न्यारा, सिंहपरे निजविक्रम–शूरा, त्रिभुवनजन आधारा धन० ॥२॥ ज्ञानवन्त ज्ञानीशु मिलता, तनमन वचने साचा, द्रव्यभाव सुधा जे भाखे, साची जिनना वाचा, धन० ॥ ३ ॥ मूलउत्तर गुण संग्रह करता, त्यजता भिक्षादोषो, पग पग व्रतदूषण परिहरता, करता संयमपोषो धन० ॥ ४ ॥ मोह प्रते हणता नित्य आगम, भणता सद्गुरु पासे, दूषमकाले पण गुणवन्ता, वर्ते शुभ अभ्यासे धन०

॥५॥ ऊठदु गुणठाणु भव अडवी, उल्लंघण जेणे लहिउ, तस सोभाग सकल मुख एके, किम करि जाए कहिउ? धन० ॥ ६ ॥ गुणठाणानी परिणति जेहनी, न छिपे भवजजाले रहे झेलडी ढाकी राखी, केतो काळ पराळे धन० ॥ ७ ॥ तेहवा गुण धरवा अणधीरा, जो पण सूधु भाखी, जिनशासन शोभावे ते पण, सूधा सवेगपाखी, धन० ॥ ८ ॥ सद्दहणा अनुमोदन कारण, गुणथी सयमकिरिया, व्यवहारे रहिया ते फरसे, जे निश्चयनयदरिया, धन० ॥९॥ दुक्करकारक थकी पण अधिका, ज्ञान गुणे इम तेहो, धर्मदासगणि वचने लहिए, जेहने प्रवचननेहो, धन० ॥ १० ॥ सुविहितगच्छकिरियानो धोरी, श्रीहरिभद्र कहाय एह भाव धरतो ते कारण, मुझ मन तेह सुहाय धन०॥११॥ सयमठाण विचारी जोता, जा न लहे निजसाखे, तो जुठु बोलीने दुर्मति, शु साधे गुणपाखे? धन० ॥ १२ ॥ नवि माया धर्मे नवि कहेवु, परजननी अनुवृत्ति, धर्मवचन आगममा कहिए, कपट रहित मनवृत्ति, धन० ॥ १३ ॥ सयमविण सयतता थापे, पापश्रमण ते भाख्यो, उत्तराध्ययने सरलस्वभावे, शुद्ध प्ररुपक दाख्यो, धन०॥१४॥ एक बाल पण किरियानये ते, ज्ञाननये नवि बाला सेवा योग्य सुसय तने ते, बोले उपदेशमाला धन० ॥ १५ ॥ किरियानये पण एक बाल ते जे लगी मुनिरागी, ज्ञानयोगमा जस मन वर्ते,ते किरिया सोभागी, धन० ॥ १६ ॥ बालादिक अनुकूलक्रियाथी, आपे इच्छायोगी, अध्यातम मुखयोग अभ्यासे, किम नवि कहिये योगी, धन० ॥ १७ ॥ उचित क्रिया निज शक्ति छाडी, जे अति वेगे चढतो, ते भयथितिपरिपाक थया विण, जगमा दीसे पडतो, धन० ॥ १८ ॥ माचे मोटाईमा जे मुनि, चलवे डाम्भमाला, शुद्ध प्ररुपक गुण विण न घटे, तस भव अरहटमाला धन० ॥ १९ ॥ निजगुण सचे मन नवि खचे, ग्रथ भणी जन वचे, लुचे केश न मुचे माया, तो व्रत न रहे पचे, धन० ॥ २० याग ग्रथना भाव न जाणे, जाणे तो न प्रकाशे फोगट मोटाइ म राखे, तस गण [illegible]नाशे, धन० ॥ २१ ॥ मेले वेशे महीयल म्हाले,बा

परे नीचो चाले, ज्ञान विना जग धधे घाले, ते किम मारग चाले, धन० ॥ २२ ॥ परपरिणति पोतानी माने, वर्त आरतध्याने, बध मोक्ष कारण न पीछाने, ते पहिले गुणठाण, धन० ॥ २३ ॥ किरिया लव पण जे ज्ञानीनो, दृष्टि थिरादिक लागे, तेहथी सुजश लहीने साहिब सीमधर ! तुज रागे, धन० ॥ २४ ॥

ढाळ सोळमी

(सकल ससार अवतार ए हु मे गणु – ओ देशी)

स्वामी सीमधर ! तु भले ध्याइये, आपणो आतमा जिम प्रगटे पाइये द्रव्यगुणपज्जवा तुज यथा निर्मला, तिम मुज शक्तिथी जइवि भवसामला ॥ १ ॥ चार छे चेतनानी दशा अवितथो, बहुशयने – शयने – जागरणे-चोथी तथा, मिच्छ अविरत सुयत तेरमे तेहनी, आदि गुणठाणे नयचक्र माहे मुणी ॥ २ ॥ भावसयोगजा कर्मउदयागता, कर्म नवि जीव नवि मूल ते नवि छता खडीयथी भित्तिमा जिम होय श्वेतता, भित्ति नवि खडीय नवि तेह भ्रमसगता ॥ ३ ॥ देह नवि वचन नवि जीव नवि चित्त छे, कर्म नवि राग नवि द्वेष नवि चित्त छे, पुद्गली भाव पुद्गलपणे परिणमे द्रव्य नवि जूजूउ अेक होवे किमे ? ॥ ४ ॥ पथिजन लूटता चोरने जिम भणे, वाट को लूटीइ तिमज मूढो गिणे, अेकक्षेत्रे मिल्या अणुतणी देखतो, विकृति अे जीवनी प्रकृति उवेखतो ॥ ५ ॥ देहकर्मादि नवि काज पुद्गलतणा जीवना तेह व्यवहार माने घणा सयलगुणठाण जिअठाणसयोगथी शुद्धपरिणाम विण जीवकार्य नथी, ॥ ६ ॥ नाण – दसण – चरण शुद्ध परिणाम जे, तत्त जोता न छे जीवथी भिन्न ते रत्न जिम ज्योतिथी कारककारण पणे, रहित इम अेकता सहज नाणी मुणे ॥७॥ अन्न पण नवि घटे पूरणद्रव्यना, द्रव्य पण किम कहु द्रव्यना गुण

विना ? अकल ने अलख इम जीव अतितन्तथी, प्रथमअंगे वधु अपदने पद नथी ॥ ८ ॥ शुद्धता ध्यान इम निश्चये आपनु, तुज समापत्ति औषध सकल पापनु द्रव्य अनुयोग समति प्रमुखथी लही, भक्ति वैराग्य ने ज्ञान धरिय सही ॥ ९ ॥ जेह अहंकार-ममकारनु बधन, शुद्धनय ते दहे दहन जिम इधन शुद्धनयदीपिका मुक्तिमार्गे भणी, शुद्धनय आथि छे साधुने आपणी ॥ १० ॥ सकल गणिपिटकनु सार जेणे लह्यु, तेहने पण परमसार अेहज कह्यु, ओघनिर्युक्तिमा अेह विण नवि मिटे, दुःख नवि वचन अे प्रथम अंगे घटे ॥ ११ ॥ शुद्धनयध्यान तेहने सदा परिणमे, जेहने शुद्ध व्यवहार हियडे रमे मलिनवस्त्रे यथा राग कुंकुमतणो, हीन व्यवहार चित्त अेहथी नवि गुणो ॥ १२ ॥ जेह व्यवहार सेढी प्रथम छांडता, अेक अे आदरे आपमत माडता तास उतावळे नवि टले आपदा, क्षुधित इच्छाये उंबर न पाचे कदा ॥ १३ ॥ भावलव जेह व्यवहार गुणथी भळे, शुद्धनयभावना तेहथी नवि चले, शुद्ध व्यवहार गुरुयोग परिणतपणु तेह विण शुद्धनयमा नहि ते गणु ॥ १४ ॥ केइ नवि भेद जाणे अपरिणतमति, शुद्धनय अति हि गभीर छे ते वती मेग्ल्ल जाणता केई मारग त्यजे, होय अति परिणति परसमय स्थिति भजे ॥ १५ ॥ तेह कारण धरी सर्व नय नवि कह्या, कालिकश्रुत माहे तीन प्राये लह्या देखी आवश्यके शुद्धनय धुरि भणी, जाणिये उलटी रीति बोटिक तणी ॥ १६ ॥ शुद्ध व्यवहार छे गच्छकिरियास्थिति, दुप्पसह जाव तीरथ कह्यु छे नीति तेह सविज्ञगीतार्थथी सभवे, अवर अेरड सम कोण जग लेखवे ॥ १७ ॥ शास्त्र अनुसार जे नवि हठे ताणिये, नीति तप गच्छनी ते भली जाणिये जीत दाखे जिहा समय – सारु बुधा नाम ने ठाम कुमते नहीं जम मुधा ॥१८॥ नाम निर्ग्रंथ ने अेहनु पहु, प्रथम अड पाट लगे गुरु गुणे समलु – नवम पाटे यदा, तेह कारण थयु नाम पो

पनरमे पाटे श्री चन्द्रसूरि कयु चद्र गच्छ नाम निर्मलपणे विस्तर्यु, सोलमे पाट वनवास निर्ममगति, नाम वनवासी सामंतभद्रो यति ॥ २० ॥ पाट छवीसमे सर्वदेवाभिधा, सूरि वडगच्छ तिहां नाम श्रवणे सुधा, वडतल सूरिपद आपीयु ते यती, वर्धीय तस अहगुणे तेह वाध्या यति ॥ २१ ॥ सूरि जगचद जग ससरसे चन्द्रमा, जेह गुरुपाटे चउ अधिक चालीसमा, तेह पाम्यु तपा नाम बहु तप करी, प्रगट आघाटपुरि विजयकमला वरी ॥ २२ ॥ अेह पद नाम गुणठाम तपगण तणा, शुद्ध सद्दहण गुणरयण अेहमा घणा, अेह अनुगत परपर भणी सेवता, ज्ञानयोगी विबुध प्रगट जगदेवता ॥ २३ ॥ कोइ कहे मुक्ति छे वीणता चीवरा कोइ कहे सहज जमता घर दहिवरां, मूढ अे दोय तस भेद जाणे नहीं, ज्ञानयोगे क्रिया साधता ते सही ॥ २४ ॥ सरलभावे प्रभो ! शुद्ध इम जाणता, इं लहु सुजस तुझ वचन मन आणतां, पूर्व सुविहिततणा ग्रंथ जाणी करी, मुज होजो तुझ कृपा भव पयोनिधि-तरी ॥ २५ ॥

ढाळ सत्तरमी

कडखाना देशी

आज जिनराज ! मुज काज सिध्या सवे, विनती माहरी चित धारी, मार्ग जो में लह्यो तुज कृपारस थकी, तो हुइ सम्पदा प्रगट सारी आज० ॥ १ ॥ वेगळे मत्त हुओ देव ! मुज मन थकी कमलना वनथकी जिम परागो, चमकपाषाण जिम लोहने खेंचशे मुक्तिने सहेज तुज भक्तिरागो आज० ॥ २ ॥ तु वसे जो प्रभो हर्षभर हियडले, तो सकल पापना बध तूटे, उगते गगनसूर्यत

मण्डले, दहदिशि तिम तिमिरपडल फूटे आन० ॥ ३ ॥ सींचजे तू सदा विपुलकरुणारसे, मुय मने शुद्ध मति कल्पवेली, नाणदसण कुसुम चरणवरमंजरी, मुक्तिफल आपशे ते एकली आज० ॥ ४ ॥ लोकसंज्ञा थकी लोक बहु वाउलो, राउलो दास ते सवि उवेखे, एक तुज आणसु जेह राता रहे, तेहने एह निज मित्र देखे आन० ॥ ५ ॥ आणनिनमाण ! तुज एक हु शिर धरु, अवरनी वाणि नवि काने मुणिए, सर्वदर्शन तणुं मूल तुज शासन, तेणे ते एक सुविवेक थुणिए, आन० ॥ ६ ॥ तुझ वचनराग सुखसागर हु गणु, सकल सुरमनुजसुख एक बिंदु, सार करजो सदा देव ! सेवक तणी, तु सुमतिकमलिनीवनदिणिंद आज० ॥ ७ ॥ ज्ञानयोगे धरी तृप्ति नवि लाजिए, गाजिए एक तुज वचनरागे, शक्तिउल्लास अधिको हुसे तुज थकी, तु सदा सकलसुखहेत जागे, आन० ॥ ८ ॥ वडतपागच्छनदनवने सुरतरु, हीरविजयो जयो सूरिराया, तास पाटे विजयसेन सुरीसरु, नित नमे नरपति जास पाया आन० ॥ ९ ॥ तास पाटे विजयदेव सुरीसर, पाट तस गुरु विजयसिंह धोरी, जास हितसीखथी मारग ए अनुसर्यो, जेहथी सवि टली कुमतिचोरी, आन० ॥ १० ॥ हीरगुरुशीस अवतंस मोटो हुओ, वाचका राज कल्याणविजयो हमगुरु सम वडे शब्द अनुशासने शीस तस विबुधवर लाभविजयो आन० ॥ ११ ॥ शीस तस जीतविजयो जयो विबुधवर, नयविजय विवुध तस सुगुरुभाया, रहिए काशा मठे जेहथी में भले, न्यायदर्शन विपुल भाव पाया आज० ॥ १२ ॥ जेहथी शुद्ध लहिए सकल नयनिपुण, सिद्धसेनादिकृत शास्त्रभावा, तेह ए सुगुरु करुणाप्रभो ! तुज सुगुण, वयणरयणायरे मुज नावा, आज० ॥ १३ ॥

कलश

इम सकलसुखकर दुरित भयहर स्वामि सीमंधर तणी, ए विनती जे सुणे भावे ते लहे लीला घणी, श्रीनयविजयबुधचरणसेवक जसविनय बुध आपणी, रुचि शक्ति सारु प्रगट कीधी शास्त्रमर्यादा भणी ॥

इति महोपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजी विरचित
श्री सीमंधर जिन विज्ञप्ति
अपरनाम साडी त्रणसो गाथानुं स्तवन संपूर्ण

श्रीमद् यशोविजयजीकृत
चढ्यापड्यानी सज्झाय, हितशिक्षा स्वाध्याय.

(रे कुमति ! कां प्रतिमा उत्थापी ? – ए देशी)

चढयापडयानो अंतर समजी, मन परिणामे रहीइरे, थोडो पण जिहां गुण देखाने, तिहां अतिहि गहगहीइरे लोको ! भोळविया मत भूलो, ए आंकणी ॥ १ ॥ अंतर्मुहूर्त अछे गुण-वृद्धि, अंतर्मुहूर्त हाणि, चढवु पडवु तिहांताइ मलवु, ते गत किणहि न जाणी रे, लोको० ॥ २ ॥ बाह्य कष्टथी ऊंचु चढवु, ते तो जडना भामा, संयम-श्रेणि-शिखरे चढवु, अंतरंग परिणामा रे, लोको० ॥ ३ ॥ तिहां निमित्त छे बाहिर किरिया, ते जो सूत्रे साची, नहि तो दुःखदायक पग साहमु, मोर जेम जिम नाची रे लोको० ॥ ४ ॥ पासत्थादिक सरिखो वेष, जूठां कारण दाखे, इक्वीस पाणीनो रस न करे, मीठां पाणा चाखे रे, लोको० ॥ ५ ॥ परिचित घरनी भिक्षा लेवे, न करे ते समुदाणी,

१ ३ परिचित अपरिचितना भेदभाव विना अनेक घरोथी भिक्षा न ल

वसति-दोष न तजे क्रीतादिक, जिन-आणा मनि आणी रे, लोको० ॥ ६ ॥ वस्त्र-पात्र-दूषण नवि टाळे, करे पतितनो सगो कलह वैरनी वात उदीरे, मनमान्यु तिहा रगो रे, लोको० ॥ ७ ॥ हीणो निज परिवार वधावे, आप कष्ट बहु दाखी, वढियो तेहने किणी परे कहीइ ? सूत्र नहि जिहा साखी रे, लोको० ॥ ८ ॥ न गणे मत्तरगुणनी हाणी सत्र-क्रियावादी पगु दुःख महशे निम उपदेशमाळे, बोल्यो मथुरामगुरे, लोको० ॥ ९ ॥ एक मूल कारण चिंतवता, आवे मोटु हासू, पच महाव्रत किहा उच्चरिया ? , सेवु केहनु पासु रे, लोको० ॥ १० ॥ पहेलो जे व्रत जूठ उच्चरिया, ते तो नावे लेखे; फेरीने हवे ते उच्चरीइ, पच लोको निम देखे रे लोको० ॥ ११ ॥ मुनिने ते सघळु मायवळु वात घटे नवि कूडी शुद्ध-प्ररूपकनी जे जे यतना, ते ते जाणो रूडी रे लोको० ॥ १२ ॥ पहेला मूल गुणेथी हीणो, फरी दिक्षा ते लेखे, चरण अश होइ ते तप छेदे, उत्तम मारग सेवे रे, लोको० ॥ १३ ॥ एहवु भाष्य कह्यु व्यवहारे, क्रियामूढ नावि जाणे, अधिकाइ दाखी कोइ फेरे, मतवालो मत ताणे रे, लोको० ॥ १४ ॥ शुद्ध-कथकने कहे अज्ञानी, घणी उपधि जे धारे द्विविध बाल ते मारग लोपे, माल्यु अग आचारे रे लोको० ॥ १५ ॥ पासत्थादिक जाति न तजीइ, तो किम ऊचा चढिइ ? ज्ञानाधिक-आणाइ रहीइ, ते साधे नवि पडिइ रे, लोको० ॥ १६ ॥ पासत्थो तेहने पण कहीइ, जे व्रत लेइ विराधे, धुरथी जेणे व्रत नवि लीधा, ते स्यो मारग साधे रे ? लोको० ॥ १७ ॥ सर्व शुद्धि विण पणि व्रत यतना, शुद्ध-कथकने छाजे, इच्छायोगी आप हीनता, कहेतो ते नवि लाजे रे, लोको० ॥ १८ ॥ कुसुमपुरे एक शेठ तणे घरि, हेठि रह्यो संवेगी, उपरि इक सबर गुण-हीणो, पणि गुण-निधि गुणरगी रे. लोको० ॥ १९ ॥ सवेगी कहे 'उपरि छे ते, महा मोकलो पापी गुणरगी कहे 'जे व्रत पाळे, तस कीर्ति जग व्यापी रे, लोको०

---

१ कल्पना थान करी नायन करे.

॥ २० ॥ संवेगीना बाह्य कष्टथी, थया लोक बहु रागी, कोइक गुद्ध कथकना पणि मति, जेहनी ज्ञाने लागी रे, लोको० ॥ २१ ॥ चोमासु पूरी बिहु विचरीया, तिहां आव्या इक नाणी, "बिहुमां अल्प अधिक भव सुणना ?" पूछे इम बहु प्राणी रे, लोको० ॥ २२ ॥ ज्ञानी कहे संवेगी निदाई, घणा भव रझडइये, शुद्ध-कथक वहिलो शिव-सुखमा, पाप खपावी भळइय रे, लोको० ॥ २३ ॥ सुणी अेहवु बहुजन समज्या, भाव मार्ग रुचि जागी, अे उपदे शपदे सवि जोयो, जो तुझे गुणना रागी रे लोको० ॥ २४ ॥ शुद्ध चारित्र कलि माहि विरला, शुद्ध कथक पाण थोडा, इच्छाचारी बहुला दीसे, जाणे बाका घोडा रे, लोको० ॥ २५ ॥ पासत्थादिकने पण संयम-ठाण कह्यो जे हीणो, शुद्ध प्ररूपक पदवणे शासन कहिओ न होअे खीणो ! रे, लोको० ॥ २६ ॥ जिन विण अठवु चर न करीओ, होय ते तो उद्धरीओ, नवो मारग जन आगें भाखे, कहे किणि परि निस्तरीओ रे ? लोको० ॥ २७ ॥ संजम-ठाण विचा जोवा जो न लहे निज साखे, तो जुठु बोलीने दुर्मति ! श साधे गुण पाखे रे ? लोको० ॥ २८ ॥ संयम विण संयतता था पापश्रमण ते भाख्यो, उत्तराध्ययने सरल स्वभावें, शुद्ध-प्ररूप दाख्यो रे लोको० ॥२९॥ सुविहित गच्छ क्रियानो धोरी, हरिभद्र कहाओ, अेह भाव धरो ते कारणे मुज मन तेह सुहाओ लोको० ॥ ३० ॥ शुद्ध कथक वचन जे चाले, मूळ उत्तर गुण धा वचन क्षमादिक रंगे लीना ते मुनिनी बलिहारीरे लोको० ॥ ३१ पूजानिक ज्ञाने ज्ञानाधिक, संयत चरण विलासे, अेके नहि जे बिहु माहे, किम जइअे तस पासे रे ? लोको० ॥ ३२ ॥ जिम जि प्रवचन-ज्ञाने झीले, तिम संवेगे रंगी, अे आवश्यक-व विचारी, होजो ज्ञानना रंगी रे, लोको० ॥ ३३ ॥ ज्ञानाधिकना गुण दूषे, कष्ट करे अभिमानी प्राये गंठी लगे नवि आव्या, ते ख अज्ञाने रे, लोको० ॥ ३४ ॥ तेहनी कष्टक्रिया अनुमोदे, उन्मार्ग

थावे तेहथी दुर्गतिना दुःख लहीजे, जे पचाशक कहावेरे, लोको० ॥ ३५ ॥ कुलगणमय तणी जे लज्जा ते आपछंदे टाळी पाप भीरु गुरुआणाकारी, निज मारग अजुआळी रे, लोको० ॥ ३६ ॥ ज्ञानाधिक्नी दीक्षा लेवे, करे तस वयणे परखी, बीजानी षोडशके भाखी, होलीनृपने सरिखी रे, लोको० ॥ ३७ ॥ ज्ञानाधिक्नो विनय विराधे, श्री जिनवर दुहवाओ, विनयभेद समजाने किंकर, ज्ञानधननो थाओरे लोको० ॥ ३८ ॥ ते माटे ज्ञानाधिक्वयणे, रही क्रिया जे करश, अध्यातमपरिणति परिपाके, ते भवसायर तरशे रे लोको० ॥ ३९ ॥ वाचक जसविजये इम दाखी, शीख सवने साची पणि परिणमशे तेह तणे मनि, जेहनी मति नवि काची रे, लोको० ॥ ४० ॥

इति श्री सविग्न – पक्षीय – वदन चपेटा
स्वाध्याय (सज्झाय) समाप्त
इति श्री हितोपदेश स्वाध्याय

अमृतवेलिनी नानी सज्झाय

चेतन ! ज्ञान अजुआलजे, टालने मोह सताप रे, दुरित निज सचित गालने, पालजे आप्यु आप रे, चेतन ! ज्ञान अजुआलने ! खल तणी संगति परिहरे, मत करे कोईशु क्रोधरे, शुद्ध सिद्धांत सभारने, धारजे मति प्रतिबोध रे, चेतन० ॥ २ ॥ हरख मत आणने तूसव्यो, दूहव्यो मत धरे खेद रे रागद्वेषादि सधि (मघे) रहे, मनि वहे चारुनिर्वेद रे चेतन० ॥ ३ ॥ प्रथम उपकार मत अवगणे, तु गणे गुरु गुण शुद्ध रे, जिहा तिहा मत फरे कूलतो, झूलतो म म रहे मुद्ध रे चेतन० ॥ ४ ॥ समकित राग चित्त रजजे, भजजे नेत्र विवेक रे चित्त ममकार मत लावजे, भावने आतम

अेक रे, चेतन० ॥ ५ ॥ गारव पकमा म म रुले, मत मले मच्छर भाव रे, प्रीति म त्यजे गुणयत्तनी, सतनी पडिमा आदि रे चेतन०॥ ६ ॥ बाह्य क्रिया कपट तु मत करे, परिहरे आर्तध्यान रे मीठडो वदने मने मेलडो, इम किम तु शुभध्यान रे, चेतन० ॥ ७ चालतो आपछदे रखे, मत मखे पूठनो मस रे कथन गुरुनु सव भावजे, आप शोभावजे वन रे, चेतन० ॥ ८ ॥ हठ पड्यो बा मत ताणजे, आणजे चित्तमां सान रे, विनयथी दुःख नावि वाधरे वाधशे जगतमा मान रे चेतन० ॥ ९ ॥ कोक वारे तुझ ओळखे ओळवे धर्मनो पथ रे, गुरुवचनदीव तो कर धरे, अनुसरे प्रथ निर्ग्रंथ रे, चेतन० ॥ १० ॥ धारजे ध्याननी धारणा, अमृत पारणा प्राय रे, आलस अगनु परिहरे, तप करी शूपजे काय चेतन० ॥ ११ ॥ फलितचरित्त देखि मत भडकजे, अडवजे सव शु योग रे, सूरडी नवम रस पावना, भावना आणजे भोग चेतन० ॥ १२ ॥ लोकमयथी मन गोपवे, रोपवे तु महादोष अवर सुकृत कीधा विना, तुझ दिन अति शुभ शोभरे, चेतन०॥ १ लोकसद्भावमा चतुर तु, काइ अछतु नवि बोल रे, इम सुगतिगुण, वाधशे जिम गृही मोल रे चेतन० ॥१४॥ ज्ञान-द -चरणगुण तणा, अति घणो धरे प्रतिबंध रे, तन मन व साचो रहे, तु वहे साचली सधरे चेतन० ॥ १५ ॥ पोपट पड्यो पाजरे, मनि धरे सबल सताप रे, तिम पडे प्रतिबधे साधि सभाळजे आप रे, चेतन० ॥ १६ ॥ मन रमाडे शुभ मथ मत भमाडे भ्रमपाश रे, अनुभव रसवती चाखजे, राखजे सुगु आश रे, चेतन ॥ १७ ॥ आपसम सकल जग लेखवे, शि लोकने तत्त्व रे, मार्ग कहेतो मत हारजे, धारजे तू दृढ सत्त्व चेतन० ॥ १८ ॥ श्री नयविजय गुरु शिष्यनी, सीखडी अमृत भळी जेह छे अनुसरे, ते लहे जस रगरेल रे, चेतन० ॥ १

५० पाछळ निंदा करवी

इति श्री हितशिक्षा सज्झाय समाप्त

जिन प्रतिमा स्थापन स्वाध्याय।

[१]

जिनजीनी प्रतिमावदन दीसे समकितने आलावे, अंगोपांग प्रगट अर्थ ए, मूरख मनमा नावे. कुमति ! का प्रतिमा उत्थापी ? ए मति शुभमति कापी रे कुमति ! का प्रतिमा उत्थापी ? मारग लोपे पापी रे, कुमति ! का प्रतिमा उत्थापी ? एह अरथ अबड अधिकारे, जुओ उपांग उववाइ, ए समकितनो मारग मरडी, कहे दया शी मायी रे ? कुमति० ॥ २ ॥ समकित विण सुरदुर्गति पामे, अरस विरस आहारे जुओ जमाली दयाए न तरीओ, हुओ बहुल संसारी कु० ॥ ३ ॥ चारण मुनि जिन प्रतिमा वंदे भाख्यु भगवई अंगे चैत्य साखी आलोयण भाखे, व्यवहारे मनरंगे रे कु० ॥ ४ ॥ प्रतिमानतिफल काउस्सग्गे, आवश्यकमा भाख्यु चैत्यवंदन वैयावच्च मुनिने, दसमे अंगे दाख्यु रे, कु० ॥ ५ ॥ [illegible] सुरे प्रतिमा पूजी, रायपसेणी माहिं, समकित विणु [illegible] पडता, दया न साहे बांहि रे, कु० ॥ ६ ॥ द्रौपदीए जिनप्रतिमा पूजी, छठे अंगे वांचे, तो शुं एक दया पोकारी, [illegible] माचे रे, कु० ॥ ७ ॥ एक जिन-प्रतिमा-वंदन-द्वेषे, [illegible] लोपे, नदिमा जे आगम सख्या, आपमती का [illegible] कु० ॥ ८ ॥ जिनपूजा फल दानादिक सम, महानिशीथे [illegible] कुमतियामना, तो किम मनमा वहिए रे ? कु० ॥ ९ ॥ [illegible] गाये जिन पूज्या, कल्पसूत्रमा देखो, [illegible] मिठे सूत्रनो लेखो रे कु० ॥ १० ॥ [illegible] तु देखी धूजे, तो पापी ते दूर [illegible]

कु० ॥ ११ ॥ पडिकमण मुनिदान विहारे, हिंसा दोष विशेष, लाभालाभ विचारी जोता, प्रतिमामां शो द्वेष रे ? कु० ॥ १२ ॥ टीका चूर्णि भाष्य उवेख्या, उवेखी निर्युक्ति, प्रतिमा कारण सूत्र उवेख्या, दूर रही तुझ मुगति रे कु० ॥ १३ ॥ शुद्ध परपर चाली आवी, प्रतिमावदन वाणी, सम्मूर्च्छिम जे ए मूढ न माने, तेह अदीठ कल्याण रे कु० ॥ १४ ॥ जिनप्रतिमा जिन सरिखी जाणे, पचांगीना जाण, कवि जसविजय कहे ते गिरुआ, कीजे तास वखाण रे कु० ॥ १५ ॥

---

[२]

सत्तर भेद पूजा सांभळी, तु कुमति ! जगधघे रे, शुद्ध परपर सूत्र न माने घाटी अधोअधेरे सत्तर० ॥ १ ॥ जिन प्रासाद करा व्यानु फल, महानिशीथि वखाण्यु दान शील तप भावना सरीखु, तो तु ते नवी जाण्यु रे ? सत्तर० ॥ २ ॥ जिन प्रतिमा जिनदाढा पूजा, नति हित करण भाखीरे, सूरिआभ सुरने इहा जोयो, रायपसेणी साखीरे सत्तर० ॥ ३ ॥ मोक्ष तणु कारण जिनपूजा, बहुविध भगति कीधीरे, समकितदृष्टि सुरनर वदे, आगमवात प्रसिद्धीरे, सत्तर० ॥ ४ ॥ पुष्फारोहणादिक विधिसूत्रे, देखी पण काइ भूले रे ? हिंसा दाखी सूत्र उत्थापी, फल पामी फूल मूले रे सत्तर० ॥ ५ ॥ जिनपूजामां दोष न दाख्यो, आधाकर्मिक भांति रे, जिन आणा विणु कुमति ! पडी तु, कुगुरु तणी शु बातें र सत्तर० ॥ ६ ॥ नाग भूतयक्षादि कहे ते, पूजा हिंसा लहीए रे सूयगडागमां नवि जिन हेते, ते किम हिंसा कहीए रे ? स० ॥ ७ ॥ मिथ्यादृष्टि हरीहर पूजे, जिनेश्वर पूजेरे तु तो वेसा एक न पूजे, कुमति पडिओ धूजे रे ॥ ८ ॥ सार सूत्रनु समझी जिननी पूजा जे मन धारेरे, विजय कहे ते गिरुआ, तेह तर्यां ने तारे रे स० ॥ ९ ॥

[३]

पच महाव्रत तणी रे चारि, त्रिविधत्रिविध जे भाखी [illegible] छूट नदी उतरता, अह छींडी किहा राखी रे कुमति ! [illegible] किहा राख्य ॥ १ ॥ नदीय तणा जीव घणु अनपोकारी, [illegible] मूक्यो ? मुक्ति मार्ग रखवाला थइने, चोर थइ घर चूर्यो रे कु० ॥ २ ॥ अेक गुरुवदन आणी हेते, नदी पाप [illegible] विराधिने जन निमळा फर अंतर [illegible] करता ? कु० ॥ ३ ॥ [illegible] हिंसाना स्थानक जाणी, जिनप्रतिमा उथापी [illegible] तरता, के धरमी के पापी रे ? कु० ॥ ४ ॥ [illegible] प्रतिमा, सुर मानवे अे पूजी, [illegible] हुइ ते [illegible] का मूझी रे ? कु० ॥ ५ ॥ जिनजनम सहु सुर [illegible] कलश भरावे अेक कोडी साठि [illegible] नवरावे, [illegible] पावेरे ? कु० ॥ ६ ॥ दया दया मुखे पर पोकारे, [illegible] जाणे, मकड जतु जेणे शरणे राख्या, नदीय [illegible] कुमति० ॥ ७ ॥

["जे प्रतमाथी आ स्वाध्याय लीधी छे [illegible] विनयजीनी कृतिओ छे, तेथी जो के आमा [illegible] दर्शेल नथा तो पण आ तेमनीज कृति [illegible]

चेतन अने कर्म

राग–धनाश्री, अथवा [illegible]

चेतन जो तु ज्ञान अभ्यासी, [illegible]
मति शक्ति विकासी चे० ॥ १ ॥ [illegible]
छोरी उदासी, सुर-नर-[illegible]
दासी, चे० ॥ २ ॥ मोह-चोर [illegible]

फासी, आसा छोर उदास रहे जो, सो उत्तम सन्यासी चे० ॥ ३ ॥ जोग लइ पर आस धरतु है, या ही जगमें हांसी, तु जाने में गुणकु सचु, गुण तो आजें नासी चे० ॥ ४ ॥ पुद्गलकी तू आस धरत है, सो तो सबहि विनाशी, तू तो भिन्नरूप है उनतें, चिदानंद अविनाशी, चे० ॥ ५ ॥ धन खरचे नर बहुत गुमाने, करवत लेवे कासी, तोभी दुःख को अंत न आवे, जो आशा नहीं घासी, चे० ॥ ६ ॥ सुख जल विषम विषय मृगतृष्णा, होत मूढमति प्यासी विभ्रमभूमि भइ परआशी, तू तो सहज विलासी, चे० ॥ ७ ॥ याके पिता मोह दुःख भ्राता, होत विषय-रति मासी, भव सुत भरता अविरति प्राणी, मिथ्यामति ओ सासी चे० ॥ ८ ॥ आशा छोर रहे जो जोगी, सो होवे शिववासी, उनको सुजस बखाने ज्ञाता, अंतरदृष्टि प्रकासी चे० ॥ ९ ॥

मायानी भयानकता (सज्झाय)

[आप स्वभावमेंरे, अवधू सदा मगनमें रहना—ओ देशी]

माया कारमी रे, माया म करो चतुर सुजान — ओ टेक माया वाह्यो जगतविलुधो, दुखियो थाय अजान जे नर मायाओ मोही रह्यो, तेने सुपने नहि सुख ठाण माया० ॥ १ ॥ नाना मोटा नरने माया, नारीने अधिकेरी, वळी विशेषे अधिकी माया, घरडाने झाझेरी माया० ॥ २ ॥ माया कामण माया मोहन, माया जग धूतारी मायाथी मन सहुनु चळीयु, लोभीने बहु प्यारी माया० ॥ ३ ॥ माया कारण देशदेशांतर, अटवी वनमां जाय, जहाज न द्वीप-द्वीपांतर जइ सायर झंपलाय माया० ॥ ४ ॥ माया करी बहु मेली, लोभे लक्षण जाय, भयथी धन धरतीमां घाले, विषधर थाय माया० ॥ ५ ॥ जोगी-जति-तपसी-सन्यासी,

नम हर [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible]
माया० ॥ ६ ॥ [illegible] [illegible] [illegible]
रत्न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
माया, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] माया० ॥ ६ ॥

नयना [illegible] [illegible] ([illegible])

[illegible] [illegible] [illegible]

चतुर नर, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] चतुर [illegible] ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] नदी [illegible], चतुर नर० ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] चतुर नर० ॥ ३ ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] न माने आपकी [illegible] [illegible]
चतुर नर० ॥ ४ ॥ [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible] गुरुजन [illegible] [illegible]
॥ ५ ॥ [illegible] गुरुजन [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] चतुर नर० ॥ ६ ॥ [illegible]
[illegible] नय आ न [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible] गुरुजन, चतुर नर० ॥ ७ ॥ [illegible]
[illegible], जो [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] पास चतुर नर० ॥ ८ ॥

श्रीमद् यशोविजयजीकृत सुगुरुनी सज्झाय

ढाळ पहेली

[ऋषभनो वश रयणायरु – ए देशी]

सद्गुरु एहवा सेविये, जे सयम गुण रात्ता रे, निज सम जग
जन जाणता, वीर वचनने ध्याता रे सद्गुरु एहवा सेविये –
ए आकणी ॥ १ ॥ चार कषायने परिहरे साधु शुभमति भाखे रे
सजमवत अकिंचना, सनिधि काइ न राखे रे स० ॥ २ ।
आणिय भोजन मूछतु, साहमीने देई मुने रे, कलह–कथा सवि
परिहरे, श्रुत सज्झाय प्रयुने रे, स० ॥ ३ ॥ कटक ग्राम नग
तणा, सम सुखदु ख अहिआसे रे, निर्भय हृदय सदा करे
बहुविध तप सुविलासे रे. स० ॥ ४ ॥ मेह मेदिनी परि सवि सहे
काउसग्गे परितापो रे, खमिय परीसह उद्धरे, जाति मरण भ
व्यापो रे. स० ॥ ५ ॥ करे सम वचन सुसमता, अध्यातम गु
लीनारे। विषयविभूति न अभिलपे, सूत्र अरथ रस पीनारे, स
॥ ६ ॥ " एह कुशील " न इम कहे, जेहथी परजन रूसे रे, जाति
मदादिक परिहरी, धर्मध्यान विभूसे रे स० ॥ ७ ॥ आप रही म
धर्ममा, परने धर्ममा थापे रे, सर्व कुशील लक्षण त्यजी, भव
भव तणा कापे रे स० ॥ ८ ॥ अध्ययने कह्या गुण घणा, दश
कालिक दशमे रे, कचन परि तेह परखिये, ए कालि पणि विम
रे. स० ॥ ९ ॥

ढाळ त्रीजी

(चोपाइनी देशी)

उत्तराध्ययने कहियो ते तणो, मारग ते हवे भवियण ! सुणो हिंसा अलिय अदत्त अबभ, छाडे पुन परिग्रहआरभ ॥ १० ॥ धूप-पुष्प वासित घर चित्र, मने न वछे परम पवित्र, जिहां रहे त्यां इद्रिय सविकार, काम हेतु होवे इणि वार ॥ ११ ॥ स्त्री-पशु-पडक वर्जित ठाम, प्रासुक वास करे अभिराम, घर न करे करावे सदा, त्रस थावर वध तिहां छे सदा ॥ १२ ॥ अन्न-पान न पचावे पचे, पचतु देखी नवी मन रुचे, धान्य-नीर-पृथ्वी-तृण पात, निश्रित जीव तणो तिहां घात ॥ १३ ॥ दीप अगनी दीपावे नहि, शस्त्र षट्‌धार ते सही, कचन-तृण समवडि मन धरे, क्रयविक्रय कहिये नवि करे ॥ १४ ॥ सरीददार क्रय करतो कहिउ, विक्रय करतो वलि वाणिउ क्रयविक्रयमा वर्ते जेह, भिक्षुभाव नवि पाले तेह ॥ १५ ॥ क्रय विक्रयमा बहुली हाणि, भिक्षावृत्ति महा गुणखाणि, इम जाणी आगम अनुसरी, मुनि समुदान करे गोचरी ॥ १६ ॥ रसलालची न करे गुणवत, रस अर्थे नवि भुजे दत, सयमजीवितरक्षा हेत, सतोषी मुनि भोजन लेत ॥ १७ ॥ अर्चन-रचना पूजा-नति, नवि वछे शुभध्यानी यति, करी महाव्रत-आराधना, केवल ज्ञान लहे शुभ मना ॥ १८ ॥

ढाळ चोथी

(श्री सीमधर जिन त्रिभुवनभाण — ए देशी)

मारग साधु तणो छे भावे, दर्शन ज्ञानचारित्र स्वभावे, परका दिक आचार कुपथ, पासत्थादिकनो निज यूथ ॥ १९ ॥

दिक जे सेवे, कालहानि गुणे दूषण देवे, जिनमारग छोडी भवकामी, थाये कुमत कुमारगगामी ॥ २० ॥ मारग एक अहिंसा रूप, जेहथी तरीए भव कूप, सर्व युक्तिथी एह ज आणो, एह न सार समय मन आणो ॥ २१ ॥ उर्ध्व-अध-तीर्छा जे प्राणी, त्रस-थावर ते न हणे नाणी, पणगदीप रचने उद्देशी, कीधु अन्न न लिए शुभलेशी ॥ २२ ॥ आधाकर्मादिक अविशुद्ध, अवयव मिश्रित जे छे अशुद्ध, ते पण पोते दोषथी टाळे ए मार्ग प्रथम अजुआळे ॥ २३ ॥ हणताने नवि मुनि अनुमोदे, कूपादिक न वखाणे प्रमोदे, पुण्य पाप तिहां पूछे कोई, मौन धरे जिनआगम जोई ॥ २४ ॥ पुण्य कहे तो पातक पोषे, पाप कहे जन-वृत्ति विशोषे, कहे भाखे 'निर्दोष आहार,' सूझे श्रमने इहां अधिकार ॥ २५ ॥ मुक्ति कारणे सवि किरिया करतो, पूरण मार्ग भाखे निरतो, भवजल वहता जनने जेह, दीप समान कहे दुःख छेह ॥ २६ ॥ एह धर्म न लहे अज्ञानी, बालिश अपंडित पंडित मानी, बीज-उदक-उद्देशिकभोजी, ध्यान धरे असमाधि प्रयुंजी ॥ २७ ॥ माछां भक्षण ध्याये पंखी, ढुंकादिक जिम आमिष कंखी, विषय-प्राप्ति ध्याये तिम पापी, बहुतारंभ परिग्रह व्यापी ॥ २८ ॥ विषय तणा सुख वंछे प्राणी परिग्रहवंत न ते सुहझाणी, ते हिंसाना दोष न दाखे, जिनमति कल्पित कारण भाखे ॥ २९ ॥ अंध चलावे काणी नावा, तेह समर्थ न तीरे जावा, मिथ्यादृष्टि भवजल पडिया, पार न पामे तिम दुःख नडिया ॥ ३० ॥ जेह अतीत अनागतनाणी, वर्तमान तस एक कहाणी, दया मूल समतामय सार, धर्म तेहनो परमाधार ॥ ३१ ॥ धर्म ठही उपसर्ग-निपाते, मुनि न चळे जिम गिरी घनवाते, इग्यारमुं अध्ययन संभारो, बीजे अंगे इम मन धारो ॥ ३२ ॥

ढाळ चोथी

(इणि पुरी कवल कोइ न लेमी – ए देशी)

ते मुनिने भामणडे जइए, जे व्रत-किरिया पाळेरे, सूधु भाखी जे वळी जगमा, जिन-मारग अजुआळेरे ते मुनिने भामणडे जइये, ओ आकणी ॥ ३३॥ जे सूधो मारग पाळे ते, शुद्ध कहिये निरधारी रे बीजो शुद्ध कहे भजनाए, वहु भाष्य व्यवहारे रे ते० ॥ ३४ ॥ द्विविध बाळ ते शुद्ध न भाखे, भाखे सवेगपाखी रे ओ भजनानो भाव विचारो, ठाणागादिक साखीरे ते० ॥ ३५॥ कुगुरुवासना पास पड्याने, तिन बळथी जे छोडेरे, शुद्ध कथक ते गुणमणि भरिया, मार्ग मुक्तिने जोडेरे ते० ॥ ३६ ॥ बहुल असयतनी जे पूजा, ओ दशमु अछेरु रे, पष्टिशतके म रयु ठाणागे, कलिलक्षण अधिकेरु रे ते० ॥ ३७॥ अेहमा पण जिनशासन बळथी, जे मुनिपूजा चलावेरे तेह विशुद्ध कथक बुध जनना, सुरपति पण गुण गावे रे ते० ॥ ३८ ॥ करतो अति दुःकर पण पडियो, आगीतार्थ जजालेरे, शुद्धकथन हीणो पण सुदर, बोले उपदेशमालेरे ते० ॥ ३९ ॥ शुद्ध प्ररुपक साधु नमीजे, शरण तेहनु कीजेरे तास वचन अनुसारे रहीं, चिदानद फल लीजे रे ते० ॥ ४० ॥

गाथा

सिरिणयविजय गुरुण, पसायमासज्ज मयलकम्मकर ।
भणिया गुणा गुरुण, साहुणा जससिसेण एए ॥ १ ॥
इति श्री सुगुरुनी सज्झाय

पांच कुगुरुनी सज्झाय

[अथवा पासत्था विचार भास]

ढाळ पहेली

(चोपाइनी देशी)

सेवो सद्गुरु गुण निरधारी, इहभवि परभावि जे उपगारी वर्जो कुगुरु समय अनुसारे, पासत्थादिक पच प्रकारे ॥ १ ॥ निज श्रावक ने जे बल सार, सुविहितसगाते करता वारे, कुल-थिति भगे भय देखाडे, मुग्धलोकने भाखे पाडे ॥ २ ॥ ज्ञानादिक गुण आप न राखे, सूधो मारग मुखे नवि भाखे करे साधुनिंदा विस्तारे, पासत्थो ते सध प्रकारे ॥ ३ ॥ देश थकी सज्यातरपिंड, नित्यपिंड मुने नृपपिंड अग्रपिंड निष्कारण सेवे, साहमु आण्यु भोजन लेवे ॥ ४ ॥ देश-नगर कुलममता माडे, थापित कुलमर्यादा छाडे विवाह उच्छव जोवे फिरतो, न रहे जननो परिचय करतो ॥ ५ ॥ जेह महाव्रतभारे जूतो, छाडी तेह प्रमाद रतो, धर्मपाशमा रहतो कहिये, पासत्थो जिनवचने लहिये ॥ ६ ॥

ढाळ बीजी

गळिया बळद तणी परेरे, जेह न वहे व्रतभार, ते उसन्नो जाणीयेरे, सध देश विहु प्रकारोरे भविजन ! सामळो-ए आकणी ॥ १ ॥ पाटपाटला वावरे रे, ओपे काले रे जेह, थापितपिंड जिमे सदा रे, सर्वउसन्नो तेहो रे, भवि० ॥ २ ॥ ओछा अधिका जे करेरे, पडिकमणादिक ठाण गुरुवचन नवि जाळवेरे, देश-उसन्नो ते जाणोरे भवि० ॥ ३ ॥ रायवेठ सम भय धर्वीरे, किरिया विण

उपयोग, जेह करे ते नवि लहेरे परभव चारित्रयागरे भवि० ॥ ४ ॥ जेह किरिया शिथिल करेरे, दीक्षित शीस अनेक भव सायर अधिको पढे रे ए उमगो अविवेक रे भवि० ॥ ५ ॥

ढाळ त्रीजी

(वीर माता प्रीति कारण - ए देशी)

नाण दसण चरण भेदथी, कयु त्रिविध कुशील, नाणथी नाण आचारनो, करे भग दुःशील वीरवाणी हृदये धारिये ॥ १ ॥ दर्श नाचार दर्शन यरी, विराधे भवि पापी, बोलिये चरण कुशीलना हवे लक्षण व्यापी वीर० ॥ २ ॥ मनात सोभाग अर्थ करे, उपर औषध आपे, प्रश्नविद्यादि थरथी कहे, निमित्तादिक थापे वीर० ॥ ३ ॥ जाति कुल प्रमुख आजीविका, कर जेहवे माया, स्त्री प्रमुख अग लक्षण कह, वहे मयनी छाया वीर० ॥ ४ ॥ इम अनाचार मरयोगथी, करे कुत्सित शील पर त्यनी अधिक माया भर्यो कह्यो तेणे कुशील, वीर० ॥ ५ ॥

ढाळ चौथी

[मुनिजन मारग चालता – ए देशी]

ममत्तो जिहां मिले, तिहां तहवा होवे, नट जिम बहुरुपी फिरे, मुनिवेष विगोवे आगमअर्थ विचारीअ–अ आगणी ॥ १ ॥ विहु भेदे ते जाणिये, शुभ अशुभ प्रकार, मूल–उत्तर गुण दोषने, योगे शुभमार आगम० ॥ २ ॥ पासत्थादिकशु मिल्यो, ते थाये अधर्मी संवेगी साथे मल्यो, प्राये थाये धर्मी आगम० ॥ ३ ॥ पचास्रव–रत गारवी, स्रीजनशु रत्तो ने मोहे मातो रहे, ते अशुभ ससत्तो

आगम० ॥ ४ ॥ इम अनवस्थित दोष ते, सगतिथी पावे, तिवसे गथी आवसा, निन कटुता आवे आगम० ॥ ५ ॥

ढाळ पांचमी

(कुमति ! ए छिंडी किहा राखी – ए देशी)

चाले सत्र विरूद्धाचारे, भाखे सूत्र विरद्ध, यथाछद इच्छाए चाले, ते नहि मनमा शुद्धरे, प्राणी ! वीर-वचन चित्त धारो, ए आकणी ॥१॥ सूत्र परपरा जे न मिळे, ते उत्सूत्र विचारो, अध-परपर चाल्यु आव्यु, ते पण तिम निरधारोरे प्राणी० ॥ २ ॥ निजमति कल्पित जनने भाखे, गारधरसमा माचे, यथाछद गृहिकाज करतो, नवनव रूपे नाचेरे, प्राणी० ॥ ३ ॥ एक प्ररुपण तेहनी चरणे, बीजी गमने खोटी, 'पडिलेहण मुहपत्तिए करश्यु, किसी चरवली मोटीरे ? प्राणी० ॥ ४ ॥ मात्रकविधि पात्रकथी होइये, पडला काज चलोटे, लेपे दोष घणो इत्यादिक, चरण मृषा मलि लेटेरे, प्राणी० ॥ ५ ॥ चौमासे जो मेह न वरसे, तो ढींड्ये श्यो दोष ? राजविरुद्ध गमन शु वारीयु ? मुनिने श्यो तनु पोषरे प्राणी० ॥ ६ ॥ वर्षाकाळे वस्त्र विरहता खप करता नही हाणी, नित्यवासमा काई न दूषण साहमु हुए नाणीरे प्राणी० ॥ ७ ॥ इम गति विपयप्ररुपण खोटी ए सवि छे विस्तारे आगमअर्थी जोई लेजो, भाष्य सहित व्यवहारेरे, प्राणी० ॥ ८ ॥

ढाळ छठ्ठी

(सुरसुदरी कहे शिरनामी – ए देशी)

इम पाचे कुगुरु प्रकाश्या आवश्यकमा जिम भाख्या, समकित-प्रकरण बहु भाखी, योगबिंदु प्रमुख इहा साखी, ए थानक सब

अशक्ति, जो सेवे कारण व्यक्ति ॥ १ ॥ सो मुनिगुणनी नहि हाणी, ए उपदेशमाला वाणी ॥ २ ॥ जस परिग्रह प्रमुख अकाज, उन्मार्ग कहिए नवि लाज, ते तो बोल्यो विमणो बाल, जूओ पहिलो अंग विशाळ ॥ ३ ॥ आधाकर्मादिक थापे, यति नाम धरावे आपे, ते पापश्रमण जाणीने, उत्तराध्ययने मन दीने, ॥ ४ ॥ जे कुगुरु होए गच्छनाथ, नवि लीजे तेहनो साथ, अज्ञानी जे गच्छधारी, ते बोल्यो अनंत संसारी ॥ ५ ॥ भावाचारय जिन सरिखो, बीजा नवि लख परिखो पूछे गोतम कहे वीर, मध्य महानिशीथ गंभीर ॥ ६ ॥ जे ज्ञानक्रियानो दरियो, ते सद्गुरु गुणमणि भरियो, जे शुद्ध-प्ररूपक नाणी, ते पण उत्तम गुणखाणी ॥ ७ ॥ उसनो पण रत्न टाले, जे जिन मारग अजुआले, इम बोले गच्छाचार, गुरुज्ञानी जगदाधार ॥ ८ ॥ ज्ञानी छे केवलीकल्प, ए कल्पभाष्यनो जल्प, जे शुद्ध कथक गुणधारी, ते सद्गुरुनी बलिहारी ॥ ९ ॥

अंतिम गाथा

एसो कुगुरुसज्झाओ, जिनवयणाउ फुड भणिओ ।
सिरिणयविजयमुणीण, सीसेण जणाण बोहट्ठा ॥ १ ॥

श्रीऋषभनाथजिन चैत्यवन्दन

सद्भक्त्यानतमौलिनिर्जरवरभ्राजिष्णुमौलिप्रभा—, संमिश्रारुणदीप्तिशोभिचरणाम्भोजद्वय सर्वदा। सर्वज्ञ पुरुषोत्तम सुचरितो धर्मार्थिना प्राणिना, भूयाद् भूरिविभूतये मुनिपति श्रीनाभिसूनुर्जिन ॥ १ ॥ सद्बोधोपचिता सदैव दधता प्रौढप्रतापश्रियो, येनाज्ञानतमोवितानमखिल निर्भिन्नमन्त क्षणम्। श्रीशत्रुञ्जयपूर्वशैलशिखर भास्वा निवोद्भासयन्, भव्याम्भोजहित स एव जयतु श्रीमारुदेवप्रभु ॥२॥

यो विज्ञानमयो जगत्त्रयगुरुयं सर्वलोकाः श्रिता, सिद्धिर्येन वृता समस्तजनता यस्मै नतिं तन्वते । यस्मान्मोहमतिर्गता मतिभृता यस्यैव सेव्यं वचा, यस्मिन् विश्वगुणास्तमेव सुतरां वन्दे युगादीश्वरम् ॥ ३ ॥

श्रीअजितनाथजिन चैत्यवन्दन

सकलसुरसमृद्धिर्यस्य पादारविन्दे, विलसति गुणरक्ता भक्तराजीव नित्यं । त्रिभुवनजनमान्यं शान्तमुद्राभिरामं, स जयति जिनराजस्तुङ्गतारङ्गतीर्थे ॥ १ ॥ प्रभवति किल भव्यो यस्य निर्वर्णनेन, व्यपगतदुरिताघ प्राप्तमोदप्रपञ्च । निजबलजितरागद्वेषविद्वेषिवर्ग, तमजितवरगोत्रं तीर्थनाथं नमामि ॥ २ ॥ नरपतिनिवहश्रेयशेखरं नागरेन्द्रं, सुरपतियतिमुख्यैर्भक्तिदक्ष समर्च्य । दिनपतिरिव लोकेऽपास्तमोहान्धकारो, जिनपतिरजितेशः पातु मां पुण्यमूर्ति ॥ ३ ॥

श्रीसम्भवजिन चैत्यवन्दन

यद्भक्त्यासक्तचित्ता प्रचुरतरभवभ्रान्तियुक्ता मनुष्या । मजाता साधुभावोऽमितनिजगुणाश्चेविण भव एव । स श्रीमान् सम्भवेश प्रशमरसमयो विश्वविश्वोपकर्ता भद्रवां दिव्यदीप्ति परमपदकृते सेव्यतां भव्यलोका ॥ १ ॥ शुक्लध्यानोदकेनोज्ज्वलमतिशयितस्वच्छभावाद्भुतेन, स्वस्मादाद्य धृत्त शिवपदनिगम कर्मपङ्कप्रपञ्चम् । नीरन्ध्रं दूरयित्वा प्रकृतिमुपगतो निर्विकल्प स्वरूप, सेव्यन्ताक्ष्र्यध्वजोऽसौ जगति जिनपतिर्वीतराग सदैव ॥ २ ॥ वार्द्धौ विद्योतिरत्नप्रकर इव परिभ्राजते सर्वकाले, यस्मिन्नि शेषदोषव्यपगमविशदे श्रीजितारेस्तनूजे । दुष्पापो दुष्टसत्त्वे स्फुटगुणनिकर शुद्ध-

सुधिक्षमादि , कल्याणश्रीनिवास स भवति वदताऽभ्यर्चनीयो न केषाम् ? ॥ ३ ॥

श्रीअभिनन्दनजिन चैत्यवन्दन

विशदशारदसोमसमानन कमलकोमलचारुविलोचन । शुचिगुणः सुतरामभिनन्दन ! जय मुनिर्मलताञ्चितसूधन ॥ १ ॥ जगति कान्तिहरीश्वरलाञ्छित-प्रमसरोरुह ! भूरिकृपानिधे ! मम समीहितसिद्धिविधायक त्वदपर कमपीह न तर्कये ॥ २ ॥ प्रवरसंवर ! संवर भूपतेस्तनय ! नीतिविचक्षण ! ते पदम् । शरणमस्तु जिनेश ! निरन्तर रुचिरभक्तियुक्तिभृतो मम ॥ ३ ॥

श्रीसुमतिजिन चैत्यवन्दन

सुवर्णवर्णो हरिणा सवर्णो मनोज्ञन म सुमतिर्वरीयान् । गवस्ततो दुष्टकुदृष्टिराग-द्विपेन्द्र ! नेत्र स्थितिरत्र कार्या ॥१॥ जिनेश्वरो मेघनरेन्द्रसूनु-र्धनोपमो गर्जति मानसे मे । अहो गुरुद्वेषहुताशन ! त्वा मसौ शम नेष्यति सद्य एव ॥ २ ॥ इतः सुदूर भज दुष्टबुद्धे ! समं दुरात्मीयपरिच्छदेन । सुबुद्धिभर्ता सुमतिर्जिनेशो मनोरम स्थास्त-मितो मदीयम् ॥ ३ ॥

श्रीपद्मप्रभजिन चैत्यवन्दन

वनारप्रभामण्डलैर्भासमान कृतात्यन्तदुःखारदापापमान । सुसीमाङ्गज ! श्रीपतिर्दैवदेवः सदा मे मुदाऽभ्यर्चनीयस्त्वमेव ॥१॥ यदीयं मनः पङ्कजं नित्यमेव त्वयाऽलङ्कृत ध्येयरूपेण देव ! । प्रधानस्व रूपं त्वमेवातिपुण्यं जगन्नाथ ! जानामि लोके सुधन्यम् ॥२॥ अतोऽधीश ! पद्मप्रभाऽऽनन्दधाम ! स्मरामि प्रभाते सदैवाङ्ग नाम । मनोवाञ्छितार्थप्रद योगिगम्य यथा चक्रवाको रवेर्धाम रम्यम् ॥ ३ ॥

श्रीचन्द्रप्रभजिन चैत्यवन्दन

अनन्तकान्तिप्रकरेण चारुणा कलाधिपेनाश्रितमात्मसाम्यत । जिनेन्द्र ! चन्द्रप्रभ ! देवमुत्तम भवन्तमेवात्महित विभावये ॥ १ ॥ उदारचारित्रनिधे जगत्प्रभो ! तवाननाम्भोजविलोकनेन मे । व्यथा समस्ताऽस्तमितोदित सुरा यथा तमिस्रा दिवमर्कतेजसा ॥ २ ॥ सदैव ससेवनतत्परे जने भवन्ति सर्वेऽपि सुराः सुदृष्टय । समस्तलोके समचित्तवृत्तिना त्वयैव सञ्जातमतो नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

श्रीसुविधिनाथजिन चैत्यवन्दन

विश्वाभिवन्द्य मकराङ्कितपादपद्म ! सुग्रीवजात ! जिनपुङ्गव शान्तिसद्म ! भव्यात्मतारणपरोत्तमयानपात्र ! मा तारयस्व भववारिनिधेर्विरूपात् ॥ १ ॥ निःशेषदोषविगमोद्भवमोक्षमार्ग भक्त्या श्रयन्ति भवदाश्रयतो मुनीन्द्र ! । ससेवित सुरमणिर्बहुधा जनाना किं नाम नो भवति कामितसिद्धिकारी ? ॥२॥ विश्व कृपारसनिधि सुविधे ! स्वयम्भूर्भवा भवसमिति विज्ञपयामि तावत् । देवाधिदेव ! तव दर्शनवल्लभोऽह शश्वद्भवामि भुवनेश ! तथा विधेहि ॥ ३ ॥

श्रीश्रेयांसनाथजिन चैत्यवन्दन

" चिरपरिचिता गाढव्याप्ता सुबुद्धिपराङ्मुखी निजबलपरिस्फूर्त्योदग्रा समभ्रतया मम । व्यपगतवती दूर तृष्णा स्वनिष्ठकुदृष्टिता अपचित सहा सद्यो भूत्वा यदीयसुदृष्टित ॥ १ ॥ निरुपमसुखश्रेणिहेतुर्निरा कृतदुर्दशा शुचिनरगुणग्रामावासो निसर्गमहोज्वला । हृदयकमले प्रादुर्भूता सुतरवरुचिर्मम विदलितभयभ्रान्तिर्यस्याप्यजस्रमनुस्मृते ॥२॥ उपकृतिमतिर्दाने दक्षो निरस्तजगद्व्यथ समुचितकृतिर्विज्ञाना शुप्रकाशितसत्पथ । नृपगणगुरोर्विष्णोर्वंशे प्रभाकरसन्निभ स भवतु मम श्रेयासो न प्रबोधसमृद्धये ॥ ३ ॥

द्रयतु संघ मे सर्वदा ॥२॥ विवेकिजनवल्लभ भुवि दुरात्मना दुर्लभ दुरन्तदुरितव्यथाभरनिवारणे तत्परम् । सवाङ्गपदपद्मयोर्युगमनि न्धवीरप्रभो ! प्रभूतसुखसिद्धये मम चिराय सम्पद्यताम् ॥३॥ इति ॥

आवती चोवीसीनुं चैत्यवंदन

पद्मनाभ प्रथम जिणंद नृप श्रेणिक जीव, सुरदेव बीजा नमु सुपास श्रावक जीव ॥ सुपास त्रीजा चउथी नृप कोणिक उदयी, स्वयम्प्रभ चौथा जिणंद पोटिल मुनि भाई । सर्वानुभूति जिन पांचमा दढायु श्रावक जाण, देवश्रुत छठा जिन कार्त्तिक सेठ वखाण । श्री उदयी जिन सातमा शंख श्रावक जीव, श्री पेढाल जिन आठमा आनन्द मुनि जीव ॥ नवमा पोटिल वन्दिए जीव जेह सुनन्द, शतकीर्ति दसमा नमु शतक श्रावक जाण । श्री मुनत अग्यारमा देवकी राणी जाण, श्री अमम जिन बारमा जीव केशव गुणखाण ॥ निष्कषाय जिन तेरमा सत्यकी विद्याधर, निष्पुलाक जिन चौदमा बलभद्र सुहंकर ॥ श्री निर्मम जिन पंदरमा जीव सुलसा साची, चित्रगुप्त जिन सोलमा रोहिणी जीव भाखी ॥ श्री समाधि सत्तरमा रेवती श्राविका जाण । श्री संवर अढारमा जीव शतानिक वखाण ॥ श्री यशोधर ओगणी समा, कृष्ण द्वीपायन जीव । विजय नामे वीसमा जिणंद, जीव कर्ण सोहाय ॥ एकवीसमा श्री मल्लीनाथ कृष्ण नारद कहिए, अंबड श्रावक जीव देव बावीशमा लहिए । अनंतवीर्य तेवीसमा जीव अमरनो जेह, भद्रंकर चोवीशमा स्वातिबुद्ध गुण गेह । ए चोवीसे जिनवरा ए होशे आवते काले, भाव धरीने वन्दिए कर जोडीने भाले ॥ लछन वर्ण प्रमाण आयु अतर सवि सरखा, सम्प्रति जिन चोवीस परे चढते भावे निरख्या। पचकल्याणक एहनाए होशे एहज दिवस, धीरविमल गुरुनो कहे, ज्ञानविमल सूरीश ॥ इति॥

चोवीस जिन लंछन चैत्यवंदन

वृषभ लंछन ऋषभ देव, अजित लंछन हाथी, संभव लंछन घोडलो, शिवपुरनो साथी ॥ १ ॥ अभिनंदन लंछन कपि, क्रौंच लंछन सुमति, पद्म लंछन पद्मप्रभु, विश्वदेवा सुमति ॥ २ ॥ सुपार्श्व लंछन साथीयो, चन्द्रप्रभु लंछन चंद्र, मगर लंछन सुविधि प्रभु श्रीवत्स शीतल जिणंद ॥ ३ ॥ लंछन गेंडो श्रेयांसने, वासुपूज्यने महीष सूअर लंछन विमल देव, भविया ते नमो शीष ॥ ४ ॥ सिंचाणो जिन अनंतने, वज्र लंछन श्रीधर्म, शांति लंछन मृगलो, राखे धर्मनो मर्म ॥ ५ ॥ कुंथुनाथ जिन बोकडो, अरजिन नंद्यावर्त मल्लि कुंभ घणामणि, सुव्रत कच्छप विख्यात ॥ ६ ॥ नमि जिनने नीलो कमळ, पामिए पंकज माहि, शंख लंछन प्रभु नेमजी, दीसे रूप आहि ॥ ७ ॥ पार्श्वनाथजीने चरण सर्प, नीलवरण शोभित, सिद्धारथ कुल चंदन, वधमान विख्यात ॥ ८ ॥ एणी पर लंछन चितवीए, ओळखीए जिनराय, ज्ञान विमल प्रभु सेवता लक्ष्मी रतन सुरिराय ॥ ९ ॥

श्री ऋषभजिन चैत्यवंदन

अरिहंत नमो भगवंत नमो, परमेश्वर जिनराज नमो। प्रथम जिनेश्वर प्रेमे पेखत, सिद्धया सघळा काज नमो ॥ अ० १ ॥ प्रभु पारगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो, अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि, प्रवचनजलधिमयंक नमो ॥ अ० २ ॥ तिहुअण भवियण जन मनवंछिय, पूरण देव रसाल नमो। ललि-ललि पाय नमुं हुं भावे, कर जोडीने त्रिकाल नमो ॥ अ० ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जगजन सज्जन नयनानंदन देव नमो सकल सुरासुर नरवर नायक, सारे अहनिश सेव नमो ॥ अ० ४ ॥ तुं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तुं निष्कारण बंधु नमो, शरणागत [illegible] वत्सल, तुंहि [illegible] नमो ॥ अ० ५ ॥

दर्शित, लोकालोकस्वभाव नमो, नाशित सकल कलंक कलुषगण, दुरित उपद्रव भाव नमो ॥ अ० ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु जग हित-कारक जगजननाथ नमो, घोर अपार भवोदधि तारण, तुं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ७ ॥ अशरण शरण निराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो बोधि दियो अनुपम दानेसर, ज्ञान-विमल सूरीश नमो ॥ अ० ८ ॥

श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन

जगनाथने ते नमु हाथ जोडी, करु विनति भक्तिशु मान मोडी, कृपानाथ संसार कूपार तारो, लह्यो पुण्यथी आज देदार तारो ॥ १ ॥ सोहिला मळे राज्य देवादि भोगो, परम दोहिलो एक तुज भक्ति जोगो, घणा कालथी तु लह्यो स्वामी मीठो, प्रभु पारगामी सहु दुःख नीठो ॥ २ ॥ चिदानंद रूपी परब्रह्म लीला, विलासी विभो ! त्यक्तकामाग्निकीला, गुणाधार जोगीश नेता अमायी, जय त्वं विभो ! भूतले सुखदायी ॥ ३ ॥ न दीठी जेणे ताहरी योगमुद्रा, पड्या रातदिसे महामोह निद्रा किसी तास होशे गति ज्ञानसिंधो, ममत्ता भर्ये हे जगज्जीवबंधो ॥ ४ ॥ सुधारसदीने दरशन नित्य देखे, गणु तेहनो हे विभो ! जन्म लेखे, त्वदाज्ञा वशे जे रह्या विश्व माहे करे कर्मनी हाण क्षण एक माहे ॥ ५ ॥ जिनेशाय नित्य प्रभाते नमस्ते, भवि ध्यान होजो हृदये समस्ते, सतजी देवनादेवने हप पूरे सुसाभोग मळी हेन उरे ॥ ६ ॥ कहे देशना स्वामी वैराग्य केरी सुणे पर्षदा बार बेठी भलेरी, सुधाभोघधारा समी ताप टाले, के भवथा सामळे एक ढाले ॥ लहे मोक्षना सुखलीला अनंती, व क्षायिक ज्ञान भावे रहती, चिदानंद चित्ते धरे ध्येय जाणी, कं राम नित्ये जपो जैनवाणी ॥ ८ ॥

जिनपूजानुं चैत्यवंदन

प्रणमी श्री गुरुराज आज, जिन मंदिर केरो पुण्य भणी करशु सफल, जिन वचन भलेरो ॥ १ ॥ देहरे जावा मन करे, चोथ तणु फल पामे, जिनवर जुहारवा उठता, छठ पोते आवे ॥ २ ॥ जइशु जिनवर भणी, मारग चालता, होवे द्वादश तणु पुण्य, भक्ति म्हालता ॥ ३ ॥ अर्ध पथ जिनवर भणी, पदर उपवास, दीठे स्वामी तणो भुवन, लहिए एक मास ॥ ४ ॥ जिनवर पासे आवता, छमासी फल सिद्ध, आव्या जिनवर बारणे, वर्ष तप फल लीध ॥ ५ ॥ सो वर्ष उपवास पुण्य, प्रदक्षिणा देता, सहस्र वर्ष उपवास पुण्य, जे नजरे जाता ॥ ६ ॥ फल घणो फूलनी माळनो, प्रभुकंठे ठवता। पार न आवे गीत नाद, केरा फल थुणता ॥ ७ ॥ शिर पूजी पूजा करीए, सूर धूप तणो धूप, अक्षत सार ते अक्षय सुख, दीपे तनुरूप ॥ ८ ॥ निर्मळ तनमन करीए, थुणता इन्द्र जगीश नाटक भावना भावतां, पामे पदवी जगीश ॥ ९ ॥ जिनवर भक्ति वाळीए, प्रेमे प्रकाशी, सुणी श्रीगुरुवयणसार, पूर्व ऋषिए भाखी ॥ १० ॥ अष्ट कर्मने टाळवा, जिन मंदिर जइशु, भेटी चरण भगवंतना, हवे निर्मळ थइशु ॥ ११ ॥ कीर्तिविजय उवज्झायनाए विनय कहे कर जोड, सफळ होजो मुज विनति, जिन सेवाना कोड ॥ १२ ॥

चोवीश तीर्थंकरना तप, दीक्षा, नगरी विगेरेनु चैत्यवंदन

सुमतिनाथ एकासणु करी संयम लीध, मल्लिपास जिनराज दोय अठमशु प्रसिद्ध ॥ १ ॥ छठ्ठ भक्त करी अवर सर्व, लिये संयम भार, वासुपूज्य करी चोथभक्त, थया श्री अणगार ॥ २ ॥ वधत पारणु करेए, इक्षुरसे रिसहेस परमान्ने बीजे दिने पारणु अवर जिनेश ॥ ३ ॥ विनीता नयरीए लीए, दीक्षा श्री प्रथम जिणंद, द्वारा नयरी नेमि नाथ, सहसावनने वृंद ॥ ४ ॥ शेष तीर्थंकर जन्मभूमि, लिये संयम

भार, अणपरण्या श्री मल्लिनाथ, नेमिनाथ कुमार ॥ ५ ॥ वासुपूज्य पास वीरजीए, भूप थया नवि एह, अवर राज्य भोगवी थया, ज्ञान विमल गुणगेह ॥ ६ ॥ चार सहसनु ऋषभदेव, श्री वीर एकाकी- त्रण शत साथे मल्लि पास, सहस साथे बाकी ॥ ७ ॥ षट् शत साथे वासुपूज्य एहे संयम भार मन पर्यव तव ऊपने सवि जिनने सुखकार ॥ ८ ॥ एम चोवीशे जिनवराए, सभार्या सुख थाय, ज्ञानविमल सूरि इम कहे, होजो जिन सुपसाय ॥ ९ ॥ इति ॥

सामान्य चैत्यवन्दन

तुज मूर्तिने निरखवा मुज नयणा तरसे, तुज गुणगणने बोलवा रसना मुज हरखे, ॥ १ ॥ काया अति आनंद मुज तुम युगपद फरसे, तो सेवक तार्या विना कहो किम हवे सरसे ॥ २ ॥ एम जाणीने साहिबाए नेक नजरे मोहे जोय, ज्ञानविमल प्रभु सुनजरथी, ते शुं जे नवि होय ? ॥ ३ ॥ इति ॥

श्रीऋषभजिन स्तुति

भव्याम्भोजविबोधनैकतरणे विस्तारिकर्मावली – रम्भासामज नाभिनन्दन ! महानष्टापदाभासुरै । भक्त्या वन्दितपादपद्म विदुषां सम्पादय प्रोज्झिता–रम्भासाम जनाभिनन्दन महानष्टापदाभासुर ॥१॥ ते च पातु जिनोत्तमा क्षतरुजो नाचिर्क्षिपुर्यन्मनो, दारा विभ्रमरोचिता सुमनसो मन्दारवा राजिता । यत्पादौ च सुरोज्झिता सुरभयान्चक्रुः पतन्त्योऽम्बरा दाराविभ्रमरोचिता सुमनसो मन्दारवाराजिता ॥ २ ॥ शान्ति वस्तनुतान्मिथोऽनुगमनात् यन्नैगमाद्यैर्नय रक्षोभ जन हेऽतुला छितमदोदीर्णागजाल धृतम् । तत्पूज्यैर्नगतां जिन प्रवचन दध्यत्कुवादावली–रक्षोभज्जनहेतु लाञ्छितमदो दीर्णाङ्गजाल–

म्भृतम् ॥ ३ ॥ गीवाणुल्यपि यत्र नित्यमदधात् गन्धाल्यधूलीरणा-, न्नाळी केसरवालमा मनुदिताऽऽगुभामरीभासिता। पायाद्व श्रुतदेवता निदधती तत्राब्जकान्ती क्रम।, ॥ लीके मराऽलमा मनुदिता शुभामरी- भासिता ॥ ४ ॥

श्रीशान्तिनाथजिन स्तुति

राजत्या नवपद्मरागरुचिभिः पादैर्जिताष्टापदा-द्रेऽद्योप द्रुतजातरूपविभया तन्वाऽ-प धीरो क्षमाम्। बिभ्रयामरसेनया जिनपते श्रीशान्तिनाथाऽस्मरो द्रेद्योपद्रुत जातरूप विभयाऽस्न्वायधी रक्ष माम् ॥१॥ ते जीयासुरविद्विषो जिनवरा मालां दधना रजो राप। मेदुरपारिजात- सुमन सन्तानका-ताश्चिता। यीर्या कुन्दसमत्विषेपदपि ये न प्राप्तशोपमयी राया मेदुरपारिजातसुमन सन्तानकान्ताञ्चिता। ॥२॥ जैनेन्द्र मतमातनोतु सतत सम्यग्दृशा सद्गुणा-लीलाभ गमहारिभिन्नमदन तापापहन्नामरम्। दुर्निर्भेदनिरन्तरान्तरतमो-निर्नाशि पर्युल्लसल्लीलाऽमङ्गमहारिभिन्नमदनन्ताऽपापहृद्धामरम् ॥३॥ दण्डच्छत्रकमण्डलूनि कलयन् स प्रशान्ति क्रियात्-सन्त्यज्यानि शमी क्षणेन शमिनो मुक्ताक्षमाली हितम्। तप्ताम्पदपिण्डपिङ्गरुचिर्य।-धारयन् मूर्ता, सत्यज्यानिशमीक्षणेन शमिनो मुक्ता-क्षमाली हितम ॥ ४ ॥

हरतु नो राजी जिनाना भवा-यास सारमहो दधाव पिहिताशाली विहायो-ऽदितम् ॥२॥ सुर्वाणागुपदार्थदर्शनवशात् भास्वत्प्रभायास्वपा-मानत्याजनभृत्तमा हरत मे हासाऽदरिद्रोदिका । अक्षोम्या तव भारती जिनपते प्रोन्मादिना वादिना, मानत्या जनकृत्तमोहरवमेश स्ताऽदरिद्रोदिका ॥ ३॥ हराटम्यित्तचूतटम्यिलतिका यस्या जनोऽभ्यागमत्, विश्वासेवितताप्रपादपरता वाचा रिपुत्रासकृत् । सा मतिं विततोतु नोऽर्जुनरुचि सिंहेऽधिरूढोल्लसद्-विश्वासे वितता प्रपाऽऽपरताऽम्बा पारिपुत्राऽसकृत् ॥ ४ ॥

श्रीपार्श्वनाथजिनस्तुति.

मालामालानबाहुर्दधददधदर यामुदारा मुदारा-ल्लीनाऽलीना मिहाली मधुरमधुरसा सूचितोमाचितो मा । पातात्पातात्स पार्श्वो रुचिररुचिरदो दयराजीव राजी, पत्रापत्रा यदीया तनुरवतनुरवो नन्दकोनोदको नो ॥१॥ राजी राजीववक्त्रा तरलतरलसत्केतुरङ्गत्तुरङ्गव्यालव्यालप्रमोघाचितरचितरणे भीतिहृद्धाऽतिहृद्धा । सारा साराज्जिनानामलममलमतेर्बोधिका माऽधिकामा,-दव्याद्याधिकालानाजननजराऽऽसमानाऽसमाना ॥ २ ॥ सद्योऽसद्योगभिद्यागमलममलया जैनराजीनराजी-नूता नूतार्थधामोह ततहततम पातकाऽपातकामा । शास्त्री शास्त्री नराणां हृदयहृदयशोरोधिकाऽबाधिका वः देयादेया मुद वे मनुजमनु जरा त्याजयन्ती जयन्ती ॥३॥ याता यातारतेना सदसि सदसिभृत् कालका तालकान्ता,-ऽपारिं पारिन्द्राराः सुरवसुरवधूपूजिताऽर जिताऽर । सा श्यासात्रायता त्वामविषमविषभृद्भूषणाऽभीषणा भी-हीनाऽहीनाऽग्रपत्नी कुवलयवलयश्यामदेहाऽमदेहा ॥ ४ ॥

श्रीवीरजिन स्तुति.

स्फूर्जद्भक्तिनतेन्द्रशीर्षविलसत्कोटीररत्नावली, रङ्गत्कान्तिकरम्बिताद्भूतनखश्रेणिसमुज्जृम्भितम् । सिद्धार्थोद्भूपरुहस्य कीर्तित

३॥ शक्रश्चन्द्ररविमहाश्च धरणनद्रो द्रगान्त्यविका, दिक्पाला सकपार्द मुखगणिश्चक्रेश्वरी भारती। येन्ये ज्ञानतपःक्रियाव्रतविधि तीर्थयात्रादिषु, श्रीसंघस्य द्रुत चतुर्विधस्यरास्ते सन्तु मङ्गकरा ॥४॥

चार शरणां

[१]

मुजने चार शरणा होजो, अरिहंत सिद्ध सुसाधुजी; केवळी धर्म शीयो, रत्न अमुलक लाधुजी मुजने० ॥ १ ॥ चिहु गति तणा छेदवा, समरथ शरणा एहोनी पूर्वे मुनिवर जे हुआ, तेणे शरणा तेहोनी मुजने० ॥ २ ॥ ससार माहि जीवने, समरथ ा चारोजी गणि समयसुन्दर इम कहे कल्याण मंगलकारोनी ० ॥ ३ ॥

[२]

एकादशी स्तुति

(शिखरिणी छन्द)

अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रत मपमलं केवलमलम् । वलक्षैकादश्या सदसि रसदुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणानां क्षपतु विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेन्द्रश्रेण्या गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदास्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं । जिनानामप्यापु क्षणमतिसुखं नारकसद, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिना एव यानि प्रणिजगदुरत्मीयसमये, फलं यत्कर्तृणामिति च विदितं शुद्धसमये । अनिष्टारिष्टानां क्षतिरनुभवेयुर्बहुमुदं, क्षितौ० ॥ ३ ॥ सुरा सेन्द्राः सर्वे सकलजिनचन्द्रप्रमुदिता, तथा च ज्योति ष्काखिलभुवननाथा समुदिता । तपो यत्कर्तृणां विदधति सुखं विस्मितहृदं, क्षितौ० ॥ ४ ॥

श्रीपर्वतीर्थस्तुतिः

श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं, श्रीनाभिराजांगजं, वंदे रैवतशैल मौलिमुकुटं श्रीनेमिनाथं यथा । तारंगेऽप्यजितं जिनं भृगुपुरे श्री सुव्रतं स्तम्भने, श्रीपार्श्वं प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा ॥ १ वंदेऽनुत्तरकल्पतल्पभुवने ग्रैवेयकव्यंतरा, ज्योतिष्कामरमंदरा द्रिवसतीस्तीर्थंकरानादरात् । जंबूपुष्करधातकीपु रुचके नंदीश्वं कुंडले, ये चान्येपि जिना नमामि सततं तान् कृत्रिमाकृत्रिमान् ॥ २ श्रीमद्वीरजिनास्यपद्महदतोनिर्गम्य तं गौतमं, गंगावर्तनमेत्य य प्रतिभिन्ने मिथ्यात्ववैताढ्यकं । उत्पत्तिस्थितिसंहृतित्रिपथगा ज्ञानाम्बुदारूढिगा, सा मे कर्ममल-हरत्वविकलं श्रीद्वादशांगी नदं

॥३॥ शक्रस्तवप्रविमहाग्र चरणमर्त्येन्द्रगान्यविधा , दिक्पाला सभ्यार्दि गोमुखगणिप्रकेश्वरी- भारती । येन्य श्रातप क्रियामतविति सर्वार्थयासादेषु श्रीसंघस्य सुरा सम्यग्दृष्टयसुरोले सन्तु भद्रकरा ॥४॥

चार शरणां

[१]

मुजने चार शरणा होजो, अरिहंत सिद्ध सुसाधुजी; केवली धर्म प्रकाशीयो, रत्न अमुलख लाधुजी मुजने० ॥ १ ॥ चिहुं गति तणा दुःख छेदवा, समरथ शरणां एहोजी, पूर्व मुनिवर जे हुआ, तेणे कीधा शरणा तेहोजी मुजने० ॥ २ ॥ संसार माहि जीवने, समरथ शरणा चारोजी, गणि समयसुन्दर इम कहे कल्याण मंगलकारोजी मुजने० ॥ ३ ॥

[२]

लाख चोराशी जीव खमावीए, मन धरी परम विवेकोजी मिच्छामि दुक्कड दीजिए, जिनवचने लहिये टेकोजी लाख० ॥ १ ॥ सात लाख भू-दग-तेउ-वाउना, दश चौदे वनना भेदोजी, षट् विगल सुर-तिरि-नारकी, चउचउचउदे नरना भेदोजी लाख०॥२ ॥ मुज वैर नहीं केहशुं, सहु शुं मैत्री भावोजी गणि समयसुन्दर इम कहे पामीए पुण्यप्रभावोजी लाख० ॥ ३ ॥

[३]

पाप अढारे जीव परिहरो, अरिहंत सिद्धनी साखेजी, आलोयां पाप छूटीये, भगवंत इणी परे भाखेजी पाप० ॥ १ ॥ आश्रव कषाय दोय बंधना, वळी कलह अभ्याख्यानोजी, रति अरति पैशुन्य निंदना, मायामोस मिथ्यात्वोजी पाप० ॥ २ ॥ मनवचकायाए जे कीधां, मिच्छामि दुक्कड देजोजी, गणि समयसुन्दर इम कहे, जैन धर्मनो मर्म एहोजी पाप० ॥ ३ ॥

[४]

धन धन ते दिन मुज कदी होसे ? हु पामीश संयम सूधोजी, पूर्व ऋषिपथे चालशु, गुरुवचने प्रतिबुद्धोजी धन० ॥ १ ॥ अंतपंत भिक्षा गोचरी, रण वने काउस्सग्ग लेइशुंजी, समता शत्रुमित्र भावशु, संवेग सूधो धरशुंजी धन० ॥ २ ॥ संसारना संकट थकी, हु छूटीश जिनवचने अवधारोजी, धन्य धन्य समयसुन्दर ते घडी, तो हु पामीश भवनो पारोजी धन० ॥ ३ ॥



साधु–साध्वी योग्य आवश्यक क्रियाना सूत्रो

स्थंडिलप्रतिलेखनासूत्रम्

(१) आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे (२) आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे (३) आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे (४) आगाढे मज्झे पासवणे अणहियासे (५) आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे (६) आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे, ॥ ६ ॥ (१) आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे (२) आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे (३) आगाढे मज्झे उच्चारे पासवण अहियासे (४) आगाढे मज्झे पासवणे अहियासे (५) आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे (६) आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ (१) अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे (२) अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे (३) अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे (४) अणागाढे मज्झे पासवणे अणहियासे (५) अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे (६) अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ (१) अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे (२) अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे (३) अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे (४) अणागाढे मज्झे पासवणे अहियासे (५) अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे (६) अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥

सामायिकसूत्रम्

करेमि भंते ! सामाइयं, सव्व सावज्जं जोग पच्चक्खामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

आलोचनासूत्रम्

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असमणपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हं महव्वयाणं छण्हं जीवनिकायाणं सत्तण्हं पिंडेसणाणं अट्ठण्हं पवयणमाउणं नवण्हं बंभचेरगुत्तीणं दसविहे समणधम्मे समणाणं जोगाणं जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

अतिचारगाथासूत्रम्

सयणासणन्नपाणे चेईं जइ सिज्ज कायउच्चारे ।
समिई भावण गुत्तीं वितहायरणे य अइयारो ॥ १ ॥

दैवसिकअतिचारसूत्रम्

ठाणे कमणे चंकमणे, आउत्त अणाउत्ते, हरियकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे त्रसकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे ठाणाओ ठाणं संकामिया, देहरे गोचरी बाहिरभूमि मार्गे जाता आवतां स्त्री-

तिर्यंचतणा मघट्ट परिताप उपद्रव हुवा, दिवसमाहि चार वार सज्झाय सात वार चैत्यवंदन कीधां नहि, प्रतिलेखना आधी-पाछी भणावी, अस्तव्यस्त कीधी, आर्तध्यान रौद्रध्यान ध्यायां, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायां नहि, गोचरी तणा बेंतालीस दोष उपनता जोया नहि, पांच दोष माडली तणा टाल्या नहीं, मात्रु अणपूंजे लीधु, अणपूंजी भूमिकाए परठव्यु, परठवता अणुजाणह जस्सुग्गहं परठव्या पछ वार त्रण वोसिरे वोसिरे कीधु नहि, देहराउपाश्रय माहि पेसता नीसरतां निसीहि आवस्सही कहेवी विसारी, जिनभुवने चोराशी आशातना, गुरु प्रत्ये तेत्रीश आशातना कीधी होय, अनेरो ज कोई दिवस संबंधी पापदोष लाग्यो होय ते मनि हु मने वचने कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं॥

प्रतिक्रमणसूत्रम्

नमो अरिहंताणं० ॥ करेमि भंते सामाइअं० ॥ चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ०। इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहिआए०। इच्छामि पडिक्कमिउं पगामसिज्जाए निगामसिज्जाए संथारा उव्वट्टणाए परिअट्टणाए आउंटणपसारणाए छप्पइयसंघट्टणाए कुइए कक्कराइए छीए जंभाइए आमोसे ससरक्खामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तिआए

आसिआए दिट्ठीविप्परिआसिआए मणविप्परिआसिआए पाण-
भोअणविप्परिआसिआए जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स
मिच्छामि दुक्कड ॥ पडिक्कमामि गोअरचरिआए भिक्खायरिआए
उग्घाडकवाडउग्घाडणाए साणावच्छादारासंघट्टणाए मंडिपाहु
डिआए बलिपाहुडिआए ठवणापाहुडिआए संकिए सहसागारे
अणेसणाए पाणेसणाए पाणभोअणाए बीअभोअणाए हरिअ
भोअणाए पच्छेकम्मिआए पुरेकम्मिआए अदिट्ठहडाए दगसंस
ट्ठहडाए रयससट्ठहडाए पारिसाडणिआए पारिट्ठावणिआ
ओहासणभिक्खाए ज उग्गमेण उप्पायणेसणाए अपरिसु
पडिग्गहिअ परिभुत्त वा ज न परिट्ठविअ तस्स मिच्छा
दुक्कड ॥ पडिक्कमामि चाउक्काल सज्झायस्स अकरणयाए उ
ओकाल भडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए दुप्पडिलेहणाए अप्प
ज्जणाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइआरे अणायारे
मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड । पडिक्कमा
एगविहे असजमे १ पडिक्कमामि दोहिं बधणेहिं-रागबधणे
दोसबधणेण २ पडिक्कमामि तीहिं दडेहिं-मणदडेण वयदडे
कायदडेण, पडिक्कमामि तीहिं गुत्तीहिं-मणगुत्तीए वयगुत्ती
कायगुत्तीए, पडिक्कमामि तीहिं सल्लेहिं-मायासल्लेण निआण
ल्लेण मिच्छादसणसल्लेण, पडि० तीहिं गारवेहिं-इड्ढीगार
रसगारवेण सायागारवेण, पडि० तीहिं विराहणाहिं-नाणवि
हणाए दसणविराहणाए चरित्तविराहणाए ३ पडि० चउहिं क
एहिं-कोहकसाएण माणकसाएण मायाकसाएण लोभकसाए
पडि० चउहिं सन्नाहिं-आहारसन्नाए भयसन्नाए मेहुणसन्न
५, पडि० चउहिं विकहाहिं-इत्थीकहाए भत्तकह

देसकहाए रायकहाए, पडि० चउहिं झाणेहिं–अट्टेण झाणेण रुद्देण झाणेण धम्मेण झाणेण सुक्केण झाणेण, पडि० पचहिं किरिआहिं–काइआए अहिगरणिआए पाउसिआए पारितावणिआए पाणाइवायकिरिआए, प० पचहिं कामगुणेहिं–सद्देण रुवेण रसेण गंधेण फासेण, प० पचहिं महव्वएहिं–पाणाइवायाओ वेरमण मुसावायाओ वेरमण अदिन्नादाणाओ वेरमण मेहुणाओ वेरमण परिग्गहाओ वेरमण, प० पचहिं समिईहिं–इरियासमिइए भासासमिइए एसणासमिइए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिइए उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणिआसमिइए प० छहिं जीवनिकाएहिं–पुढविकाएण आउकाएण तेउकाएण वाउकाएण वणस्सइकाएण तसकाएण, प० छहिं लेसाहिं–किण्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए पम्हलेसाए सुक्कलेसाए, प० सत्तहिं भयठाणेहिं अट्ठहिं मयठाणेहिं नवहिं बभचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे इगारसहिं उवासगपडिमाहिं बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं तेरसहिं किरिआठाणेहिं चउदसहिं भूअगामेहिं पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं सोलसहिं गाहासोलसएहिं सत्तरसविहे असंजमे अट्ठारसविहे अबभ एगूणवीसाए नायज्झयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इक्कवीसाए सबलेहिं बावीसाए परीसहेहिं तेवीसाए सूअगडज्झयणेहि चउवीसाए देवेहिं पणवीसाए भावणाहिं छव्वीसाए दसाकप्पववहाराण उद्देसणकालेहिं सत्तावीसाए अणगारगुणेहिं अट्ठावीसाए आयारप्पकप्पेहिं एगूणतीसाए पावसुअप्पसगेहिं तीसाए मोहणीयठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाए जोगसगहेहिं तित्तीसाए आसायणाहिं, अरिहताण आसायणाए १ सिद्धाण आसायणाए २ आयरियाण आसायणाए

आसिआए दिट्ठीविप्परिआसिआए मणविप्परिआसिआए पाण मोअणविप्परिआसिआए जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ पडिक्कमामि गोअरचरिआए भिक्खायरिआए उग्घाडकवाडउग्घाडणाए साणावच्छादारासंघट्टणाए मंडिपाहु डिआए बलिपाहुडिआए ठवणापाहुडिआए संकिए सहसागारिए अणेसणाए पाणेमणाए पाणभोअणाए बीअभोअणाए हरिअ भोअणाए पच्छेकम्मिआए पुरेकम्मिआए अदिट्ठहडाए दगसंस ट्ठहडाए रयससट्ठहडाए पारिसाडणिआए पारिट्ठावणिआए ओहासणभिक्खाए ज उग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिसुद्ध पडिग्गहिअ परिभुत्त वा ज न परिट्ठविअ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ पडिक्कमामि चाउक्काल सज्झायस्स अकरणयाए उभ ओकाल भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए दुप्पडिलेहणाए अप्पम ज्जणाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइआरे अणायारे जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड । पडिक्कमामि एगविहे असंजमे १ पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं–रागबंधणेण दोसबंधणेण २ पडिक्कमामि तीहिं दंडेहिं–मणदंडेण वयदंडेण कायदंडेण, पडिक्कमामि तीहिं गुत्तीहिं–मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए, पडिक्कमामि तीहिं सल्लेहिं–मायासल्लेण निआणस ल्लेण मिच्छादंसणसल्लेण, पडि० तीहिं गारवेहिं–इड्ढीगारवेण रसगारवेण सायागारवेण, पडि० तीहिं विराहणाहिं–नाणविरा हणाए दंसणविराहणाए चरित्तविराहणाए ३ पडि० चउहिं कसा एहिं–कोहकसाएण माणकसाएण मायाकसाएण लोभकसाएण पडि० चउहिं सन्नाहिं–आहारसन्नाए भयसन्नाए मेहुणसन्ना ए ... , पडि० चउहिं विकहाहिं–इत्थीकहाए भत्तकहा

देसस्हाए रायस्हाए, पडि० चउहिं झाणेहिं–अट्टेण झाणेण रुद्देण झाणेण धम्मेण झाणेण सुक्केण झाणेण, पडि० पचहिं किरिआहिं–काइआए अहिगरणिआए पाउसिआए पारितावणिआए पाणाइ-वायकिरिआए, प० पचहिं कामगुणेहिं–सद्देण रुवेण रसेण गंधेण फासेण, प० पचहिं महव्वएहिं–पाणाइवायाओ वेरमण मुसावायाओ वेरमण अदिन्नादाणाओ वेरमण मेहुणाओ वेरमण परिग्गहाओ वेरमण, प० पचहिं समिइहिं–इरियासमिइए भासासमिइए एसणासमिइए आयाणभडमत्तनिक्खवणासमिइए उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणिआसमिइए प० छहिं जीवनिकाएहिं–पुढविकाएण आउकाएण तेउकाएण वाउकाएण वणस्सइकाएण तसकाएण, प० छहिं लेसाहिं–किण्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए पम्हलेसाए सुक्कलेसाए, प० सत्तहिं भयठाणेहिं अट्ठहिं मयठाणेहिं नवहिं बभचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे इगारसहिं उवासगपडिमाहिं बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं तेरसहिं किरिआठाणेहिं चउदसहिं भूअगामेहिं पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं सोलसहिं गाहासोलसएहिं सत्तरसविहे असजमे अट्ठारसविहे अबभे एगूणवीसाए नायज्झयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इक्कीसाए सबलेहिं बावीसाए परीसहेहिं तेवीसाए सूअगडज्झयणेहिं चउवीसाए देवेहिं पणवीसाए भावणाहिं छव्वीसाए दसाकप्पववहाराण उद्देसणकालेहिं सत्तावीसाए अणगारगुणेहिं अट्ठावीसाए आयारप्पकप्पेहिं एगूणतीसाए पावसुअप्पसगेहिं तीसाए मोहणीयठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाए जोगसगहेहिं तित्तीसाए आसायणाहिं, अरिहताण आसायणाए १ सिद्धाण आसायणाए २ आयरियाण आसायणाए

आसिआए दिट्ठीनिप्परिआसिआए मणनिप्परिआसिआए पाण-
भोअणनिप्परिआसिआए जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स
मिच्छामि दुक्कड ॥ पडिक्कमामि गोअरचरिआए भिक्खायरिआए
उग्घाडकवाडउग्घाडणाए साणावच्छादारासंघट्टणाए मंडिपाहु
डिआए बलिपाहुडिआए ठवणापाहुडिआए संकिए सहसागारे
अणेसणाए पाणेसणाए पाणभोअणाए बीअभोअणाए हरिअ
भोअणाए पच्छेकम्मिआए पुरेकम्मिआए अदिट्ठहडाए दगसं
ट्ठहडाए रयससट्ठहडाए पारिसाडणिआए पारिट्ठावणिआ
ओहासणभिक्खाए ज उग्गमेण उप्पायणेसणाए अपरिसु
पडिग्गहिअ परिभुत्त वा ज न परिट्ठविअ तस्स मिच्छा
दुक्कड ॥ पडिक्कमामि चाउक्काल सज्झायस्स अकरणयाए उ
ओकाल भडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए दुप्पडिलेहणाए अप्प
ज्जणाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइआरे अणायारे
मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड । पडिक्कम
एगविहे असजमे १ पडिक्कमामि दोहिं बधणेहिं-रागबध
दोसबधणेण २ पडिक्कमामि तीहिं दंडेहिं-मणदंडेण वयदं
कायदंडेण, पडिक्कमामि तीहिं गुत्तीहिं-मणगुत्तीए वयगु
कायगुत्तीए, पडिक्कमामि तीहिं सल्लेहिं-मायासल्लेण निआ
ल्लेण मिच्छादसणसल्लेण, पडि० तीहिं गारवेहिं-इड्ढीगा
रसगारवेण सायागारवेण, पडि० तीहिं विराहणाहिं-नाणा
हणाए दसणविराहणाए चरित्तविराहणाए ३ पडि० चउहिं क
एहिं-कोहकसाएण माणकसाएण मायाकसाएण लोभकसा
पडि० चउहिं सन्नाहिं-आहारसन्नाए भयसन्नाए मेहुणस
[illegible] ५, पडि० चउहिं विकहाहिं-इत्थीकहाए भत्त

३ उवज्झायाण आसायणाए ४ साहूण आसायणाए ५ साहुणीण आसायणाए ६ सावयाण आसायणाए ७ सावियाण आसायणाए ८ देवाण आसायणाए ९ देवीण आसायणाए १० इहलोगस्स आसायणाए ११ परलोगस्स आसायणाए १२ केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए १३ सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स आसायणाए १४ सव्वपाणभूअजीवसत्ताण आसायणाए १५ कालस्स आसायणाए १६ सुअस्स आसायणाए १७ सुअदेवयाए आसायणाए १८ वायणायरिअस्स आसायणाए १९ ज वाइद्ध २० वच्चामेलिअ २१ हीणक्खर २२ अच्चक्खर २३ पयहीण २४ विणयहीण २५ घोसहीण २६ जोगहीण २७ सुट्ठु दिन्न २८ दुट्ठु पडिच्छिअ २९ अकाले कओ सज्झाओ ३० काले न कओ सज्झाओ ३१ असज्झाए सज्झाइअ ३२ सज्झाए न सज्झाइअ ३३ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ नमो चउवीसाए तित्थयराण उसभाइमहावीरपज्जवसाणाण इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिअ पडिपुन्न नेआउअ ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग निज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमविसधि सव्वदुक्खप्पहीणमग्ग, इत्थ ठिआ जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वायति सव्वदुक्खाणमंत करंति, त धम्म सद्दहामि पत्तिआमि रोएमि फासेमि पालेमि अणुपालेमि, त धम्म सद्दहतो पत्तियतो रोअतो फासतो पालतो अणुपालतो तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए असजम परिआणामि सजम उवसपज्जामि अबभ परिआणामि बंभ उवसपज्जामि अकप्प परिआणामि कप्प उवसपज्जामि अन्नाण परिआणामि नाण उवसपज्जामि अकिरिअ परिआणामि किरिअ

उवसपज्जामि मिच्छत्त परिआणामि सम्मत्त उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमग्ग परिआणामि मग्ग उवसंपज्जामि, ज समरामि ज च न संमरामि ज पडिक्कमामि ज च न पडिक्कमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स अइआरस्स पडिक्कमामि समणोऽहं संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे अनिआणो दिट्ठिसपन्नो मायामोसविवज्जिओ अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु जावंत केवि साहू रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा अट्ठारसहस्ससीलंगधारा अक्खयायारचरित्ता ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि, खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइअ निंदिअ गरहिअ दुगुंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंता वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥

संथारा पोरिसी

निसीहि निसीहि निसीहि नमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं [एम कहा पछी एक नवकार तथा करेमि भंते० त्रण वार कहेवा त्यार पछी नीचे प्रमाणे भणवु] अणुजाणह जिट्ठिज्जा! अणुजाणह परमगुरु! गुरुगुणरयणेहिं मंडियसरीरा। बहुपडिपुन्ना पोरिसी राइयसंथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं बाहुवहाणेण वामपासेण । कुक्कुडिपायपसारण अतरंत पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइअसंडासा उव्वट्टंते य कायपडिलेहा । दव्वाइउवओग उस्सासनिरुंभणाऽऽलोए ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाओ इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए । आहारमुवहिदेह

सव्व तिविहेण वोसिरिअ ॥ ४ ॥ चत्तारि मगल, अरिहता मगल सिद्धा मंगलं साहू मगल केवलिपन्नत्तो धम्मो मगल ॥ चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरण पवज्जामि, अरिहते सरण पवज्जामि सिद्धे सरण पवज्जामि साहू सरण पवज्जामि केवलिपन्नत्त धम्म सरणं पवज्जामि ॥ पाणाइवाय मलिअ चोरिक्क मेहुण दविणमुच्छ । कोह माण माय लोह पिज्ज तहा दास ॥ ५ ॥ कलह अब्भक्खाण पेसुन्न रइअरइसमा उत्त । परपरिवाय मायामोस मिच्छत्तसल्ल च ॥ ६ ॥ वोसिरिसु इमाइ मुक्खमग्गससग्गविग्घभूआइ । दुग्गइनिबधणाइ अट्ठारस पावठाणाइ ॥ ७ ॥ एगोऽहं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ । एव अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ ॥ ८ ॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाणदसणसजुओ । सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे सजोगलक्खणा ॥ १२ ॥ सजोगमूला जीवेण, पत्ता दुःख परपरा । तम्हा सजोगसबध, सव्व तिविहेण वोसिरिअ ॥ १३ ॥ अरिहतो मह देवो जावज्जीव सुसाहुणो गुरुणो । जिणपन्नत्त तत्त, इअ सम्मत्त मए गहिअ ॥ १५ ॥ (आ गाथा त्रण वार बोलवी, पछी त्रण नवकार गणी, नीचेनी त्रण गाथा बोलवी)

खमिअ खमाविअ मइ खमिअ, सव्वह जीवनिकाय । सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भाव ॥ १५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह राज भमत, ते मे सव्व खमाविआ, मज्झवि तेह खमत ॥ १६ ॥ ज ज मणेण बद्ध ज ज वाएण भासिअ पाव । ज ज काएण कय मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ १७ ॥

रात्रिकअतिचार

सथारा उव्वट्टणकी परियट्टणकी आउटणकी पसारणकी उप्पइय सघट्टणकी सथारो उत्तरपट्टो टाली अधिकु उपगरण वापर्युं मातरियु अणपडिलेह्यु हलाव्यु, मातु अणपडिलेह्यु लीधुं अणपूर्जी भूमिकाए परठव्यु परठवता अणुजाणह जस्सुग्गहो कीधो नहीं, परठव्या पुठे त्रण वार वोसिरे वोसिरे न कीधो, सथारापोरसि भणवी विसारी भणाव्या विना सुता, कुस्वप्न दु:स्वप्न लाधु, सुपनातर माहि शीयळ तणी विराधना हुइ, आहट्टदोहट्ट चिंतव्यु सकल्पविकल्प कीधो, अनेरो जे कोइ रात्रि सबधी पापदोष लाग्यो होय ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कड ॥

अनेरा कन्हे पढयो अनेरो गुरु कह्यो, देववदन वांदण पडिक्क मणे सज्झाय करता पढता गुणता कूडो अक्षर काने मात्रे आगलो आछो भण्या गुण्यो, सूत्रार्थ तदुभय कूडां कह्यां, काजो अणउद्धर्यो, डाडो अणपडिलेह्यो, वसति अणशोध्या अणपवेया असज्झाइ अणोज्झा कालवेलामांहि श्रीदशवैकालिकप्रमुख सिद्धात पढयो गुण्यो परावर्त्यो, अविधिए योगोपधान कीधां कराव्या, ज्ञानोपगरण पाटी पोथी ठवणी कवली नोकारवाली सापडा सांपडी दस्तरी वही कागलीआ ओलीआ प्रत्ये पग लाग्यो, थूक लाग्यो, थूके करी अक्षर भाज्यो, ज्ञानवत प्रत्ये प्रद्वेष मत्सर वह्यो, अतराय अवना आशातना कीधी कुणहि प्रते तोतडो बोबडो देखी हस्यो वितर्क्यो, मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मन.पर्यवज्ञान केवलज्ञान, ए पाच ज्ञान तणी असद्दहणा आशा तना कीधी, ज्ञानाचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥२॥

दर्शनाचार आठ अतिचार — निस्संकिअ,निकंखिअ निव्वि तिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ । उववूह थिरीकरणे, वच्छल्लपभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥ देव गुरु धर्मतणे विषे निश्शकपणु न कीधु, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं, धर्मसबंधीया फल तणे विषे निस्सदेह बुद्धि धरी नहि, साधु साध्वीतणी निंदा जुगुप्सा कीधी, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणु कीधु, सघ माहि गुणवत तणी अनुपबृहणा कीधी, अस्थिरीकरण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति निपजावी, तथा देवद्रव्य गुरुद्रव्य साधारणद्रव्य भक्षित उपे क्षित प्रज्ञापराधे विणाड्यो, विणसतो उवेख्यो, छती शक्ति सारसभाल न कीधी, ठवणायरिय हाथ थकी पाड्यो, पडिलेहवं

विमायो, जिनभुवनतणी चोराशी आशातना, गुरु प्रत्य तेत्रीश आशातना कीधी होय, दर्शनाचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥ ३ ॥

चारित्राचारे आठ अतिचार — पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिइहिं तीहिं गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ इर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदानभंडमात्रनिक्षेपणासमिति, पारिष्ठापनिकासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति ए अष्ट प्रवचनमाता रुडी पेरे पाळी नहीं, साधुतणे धर्मे सदैव, श्रावकतणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे जे कांइ खंडनविराधना कीधी होय, चारित्राचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥ ४ ॥

विशेषतश्चारित्राचारे तपोधन तणे धर्मे—वयछक्कं ६ कायछक्कं १२ अकप्पो १३ गिहिभायण १४ । पलिअंक १५ निसिज्जाए १६, सिणाणं १७ सोभवज्जणं १८ ॥ १ ॥ व्रतषट्के पहिले महाव्रते प्राणातिपात सूक्ष्म बादर त्रस थावर जीव तणी विराधना हुइ १ बीजे महाव्रते क्रोध लोभ भय हास्य लगे जूठु बोल्या २ त्रीजे अदत्तादानविरमणमहाव्रते 'सामीजीवादत्तं तित्थयरअदत्तं तहेव य गुरुहिं । एवमदत्तं चउहा पण्णत्तं वीयराएहिं ॥ १ ॥' स्वामिअदत्त, जीवअदत्त तीर्थंकरअदत्त गुरुअदत्त, ए चतुर्विध अदत्तादानमांहि जे काइ अदत्त परिभोगव्यु ३ चोथे महाव्रते 'वसहि१ कह२ निसिज्जि३ दिय४ कुड्डितर५ पुव्वकीलिए६ पणिए७ । अइमायाहार८ [illegible] य९ नव [illegible] ॥ १ ॥ ए नववाड सूधी

मुहणे स्वमातरे दृष्टिविपर्यास हुओ४ पांचमे महाव्रते धर्मोपकरणतणे विषे इच्छा मूर्छा गृद्धि आसक्ति धरी, अधिको उपगरण धार्यो, पर्व तिथिए पडिलेह्यो विसार्यो ५ छठे रात्रिभोजनविरमणव्रते अशरो भातपाणी कीधो, छारोद्गार आव्यो, पात्रे पात्रबंधे तक्रादिनो छांटो लाग्यो, खरड्यो रह्यो, लेपतेल-औषधादिक तणो सनिधि रह्यो, अतिमात्राए आहार लीधो ६, ए छए व्रत विषइओ अनेरो ज कोइ अ० ॥

कायषट्के गाम तणे पइसारे नीसारे पग पडिलेहवा विसार्या, माटी मीठु खडी धावडी अरणटो पाषाण तणी चातर्ली उपर पग आव्यो ७ अप्काय वाघाशे फूसणा हुवा, व्होरवा गया ऊलखो हाल्यो, लोटो ढोल्यो, काचा पाणी तणा छांटा लाग्या ८ तेउकाय वीजदीवा तणी उजेही हुइ ९ वाउकाय उघाडे मुखे बोल्या, महावाय वाजता कपडाकांबली तणा छेडा साचव्या नहीं, फूंक दीधी १० वनस्पतिकाय नीलफूल सेवाल थड फल फूल वृक्ष शाखा प्रशाखा तणा संघट्ट परपर निरंतर हुवा ११ त्रसकाय बेइंद्री तेइंद्री चउरिंदी पचेंद्री काग बग उडाव्या, ढोर त्रासव्यां, बालक बीहवराव्यां १२, षट्काय विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥

अकल्पनीय सिज्जा वस्त्र पात्र पिंड परिभोगव्यो, सिज्जातर तणो पिंड परिभोगव्यो, उपयोग कीधा पाखे विहर्यो, धात्रीदोष असत्रीअससक्त पूर्वकर्म पश्चात्कर्म उद्गम उत्पादना दोष चिंतव्या नहीं १३ गृहस्थतणो भाजन भाज्यो, फोड्यो, वलतो पाछो आप्यो नहीं १४ छता मथारिया उत्तरपट्टो टाली अधिको वापर्यो १५ देशतः स्नान कीधु, मुखे भीनो हाथ

लगाडयो,१६ सर्वत. स्नान तणी वांछा कीधी१७ शरीर तणो मेल फेडयो, केश रोम नख समार्या, अनेरी काइ शरीरविभूषा कीधी१८ अकल्पनीयपिंडादि विषइओ अनेरो जे कोइ अति० ॥

आवस्सय१ सज्झाए २ पडिलेहण३ झाण४ भिक्ख ५ अभत्तट्ठे६ आगमणे निग्गमणे७ ठाणे८ निसीअण९ तुअट्टे१० ॥१॥

आवश्यक–उभयकाल व्याक्षिप्तचित्त पणे पडिक्कमणो कीधो, पडिक्कमणामाहिं ऊंघ आवी, बेठा पडिक्कमणु कीधु१ दिवस प्रत्ये चार वार सज्झाय सात वार चैत्यवंदन न कीधा२ पडिलेहणा आघीपाछी भणावी, अस्तोव्यस्त कीधी३ आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्याया, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्याया नहीं४ गोचरी गया बेतालीश दोष उपजता चिंतव्या नहीं, पांच दोष मांडली तणा टाल्या नहीं ५ छती शक्तिए पर्वतिथिए उपवासादिक तप कीधो नहि ६ देहरा उपासरा मांहि पेसतां निसीही, नीसरतां आवस्सही कहेवी विसारी, इच्छामिच्छादिक दशविध चक्रवाल सामाचारी साचवी नही, गुरु तणो वचन तहत्ति करी पडिवज्यो नहि, अपराध आवे मिच्छामि दुक्कड दीधां नहि, ७ स्थानके रहेता हरियकाय बीयकाय कीडीतणा नगरा शोध्या नहीं८ ओघो मुहपत्ति चोलपट्टो मचव्या, स्त्री–तिर्यंच तणा संघट्ट अनंतर परंपर हुआ ९ वडा प्रते पसाओ करी लहुडा प्रते इच्छाकार इत्यादिक विनय साचव्यो नहि १० साधुसामाचारी विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्षदिवसमांहीं सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सवि हु मनवचनकायाए करी मिच्छामि दुक्कड ॥

पाक्षिकसूत्रम्

तित्थकरे अतित्थे अतित्थसिद्धे अ तित्थसिद्धे य। सिद्धे जिणे रिसी महरिसी य नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जे अ इमं गुणरयणसायरमविराहिऊण तिण्णसंसारा। ते मंगलं करित्ता अहमवि आराहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता सिद्धा साहू सुयं च धम्मो अ। खंती गुत्ती मुत्ती अज्जवया मद्दवं चेव ॥३॥ लोयम्मि संजया जं करिंति परमरिसिदेसियमुआरं। अहमवि उवट्ठिओ तं महव्वयउच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ से किं तं महव्वय उच्चारणा ?, महव्वयउच्चारणा पंचविहा पण्णत्ता राइभोअणवेरमणछट्ठा, तंजहा–सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं १ सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं २ सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ३ सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ४ सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ५ सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥

तत्थ खलु पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेव सयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। से पाणाइवाए चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं पाणाइवाए छसु जीवनिकाएसु, खित्तओ णं पाणाइवाए सव्वलोए कालओ णं पाणाइवाए दिआ वा राओ वा, भावओ णं पाणा

इवाए रागेण वा दोसेण वा, ज मए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसबलस्स निरग्गिसरणस्स सपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स असनिहिसचयस्स अविसवाइअस्स ससारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण फलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अणभिगमेण अभिगमेण वा पमाएण रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मदयाए किड्डयाए तिगारवगरुययाए चउक्कसाओवगएण पचिंदिओवसट्टेण पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयतेण इह वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु पाणाइवाओ कओ वा काराविओ वा कीरतो वा परेहिं समणुन्नाओ त निंदामि गरिहामि तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण, अईअ निंदामि पडुप्पन्न सवरेमि अणागय पच्चक्खामि सव्व पाणाइवाय जावज्जीवाए, अणिस्सिओऽह नेव सय पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायावेज्जा पाणे अइवायतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तजहा—अरिहतसक्खिअ सिद्धसक्खिअ साहूसक्खिअ देवसक्खिअ अप्पसक्खिअ, एव भवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु पाणाइवायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए, पारगामिए सव्वेसिं पाणाण भूयाण [illegible] अजूरणयाए [illegible]ए अपीडणयाए

अणुट्ठवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे, त दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए ससारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसपज्जित्ताणं विहरामि। पढमे भते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ पणाइवायाओ वेरमण ॥ १ ॥

अहावरे दोच्चे भते! महव्वए मुसावायाओ वेरमण, सव्वं भते! मुसावाय पच्चक्खामि, से कोहा वा १ लोहा वा २ भया वा ३ हासा वा ४ नेव सय मुस वएज्जा नेवन्नेहिं मुस वाया विज्जा मुस वयतेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण, मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि, से मुसावाए चउव्विहे पन्नत्ते, तजहा–दव्वओ १ खित्तओ २ कालओ ३ भावओ ४, दव्वओ ण मुसावाए सव्वदव्वेसु, खित्तओ णं मुसावाए लोए वा अलोए वा, कालओ णं मुसावाए दिआ वा राओ वा, भावओ ण मुसावाए रागेण वा दोसेण वा, ज मए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवन्नियस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसबलस्स निरग्गीसरणस्स सपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स असनिहिसचयस्स अविसवाइअस्स ससारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पु

वा अप्प वा बहु वा अणु वा थूलं वा चित्तमंत वा अचित्तमंत वा नेवं सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिण्णं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि, से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा- दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं अदिन्नादाणे गहण-धारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तओ णं अदिन्नादाणे गामे वा नगरे वा अरण्णे वा कालओ णं अदिन्नादाणे दिआ वा राओ वा, भावओ णं अदिन्नादाणे रागेण वा दोसेण वा, जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नव-बंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनि-हिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगम-णपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बाल-याए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुयआए चउक्सा-ओवगएणं पंचिंदिओवसट्टेणं पडिपुण्णभारियाए सायासुक्खमणु-पालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहिअं वा गाहाविअं वा घिप्पंतं वा परेहिं समणुन्नायं तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, अईअं निंदामि

पडुप्पन्न सवेरेमि अणागय पच्चक्खामि सव्व अदिन्नादाण जाव-ज्जीवाए, अणिस्सिओऽह नेव सय अदिन्न गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्न गिण्हाविज्जा अदिन्न गिण्हतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा तंजहा—अरिहंतसक्खिअ सिद्धसक्खिअ साहुसक्खिअ देवसक्खिअ अप्पसक्खिअ, एव भवइ भिक्खु वा भिक्खुणी वा सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाण वा एस खलु अदिन्नादाणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए (पारगामिए) सव्वेसिं पाणाण सव्वेसिं भूआण सव्वेसिं जीवाण सव्वेसिं सत्ताण अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिण्णे परमरिसिदेसिए पसत्थे, त दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए ससारुत्तारणाए-त्तिकट्टु उवसपज्जित्ताण विहरामि । तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण ॥ ३ ॥

अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमण, सव्व भंते ! मेहुण पच्चक्खामि, से दिव्व वा माणुस वा तिरिक्खजोणिअ वा, नेव सय मेहुण सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुण सेवाविज्जा मेहुण सेवतेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण, मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते, तजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, दव्वओ ण मेहुणे रूवेसु

वा रूवसहगएसु वा, खित्तओ ण मेहुणे उड्ढलोए वा अहोलोए वा तिरियलोए वा, कालओ ण मेहुणे दिआ वा राओ वा, भावओ ण मेहुणे रागेण वा दोसेण वा, ज मए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणगाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए अबोहीए अणभिगमेण अभिगमेण वा पमाएण रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयआए चउक्कसाओवगएण पंचिंदिओवसट्टेण पडिपुण्णभारयाए सायासोक्खमणुपालयंतेण इह वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु मेहुण सेविअ वा सेवाविअ वा सेविज्जंत वा परेहिं समणुन्नाय त निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण, अईयं निंदामि पडुप्पन्न संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्व मेहुण जावज्जीवाए, अणिस्सिओऽहं नेव सयं मेहुणं सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सेवंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तंजहा–अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं, एवं हवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु मेहुणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए

(पारगामिए) सव्वेसिं पाणाण सव्वेसिं भूआण सव्वेसिं जीवाण सव्वेसिं सत्ताण अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे, तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताण विहरामि। चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥ ४ ॥

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। से परिग्गहे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु, खित्तओ णं परिग्गहे सव्वलोए कालओ णं परिग्गहे दिआ वा राओ वा, भावओ णं परिग्गहे अप्पग्घे वा महग्घे वा रागेण वा दोसेण वा, जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तिअस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स

गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पचमहव्वय-
जुत्तस्स असंनिहि त्त्वयस्स अविसवाइअस्स ससारपारगामिअस्स
निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुर्व्वि अन्नाणयाए असवणयाए
अबोहीए अणभिगमेण अभिगमेण वा पमाएण रागदोसपडि
बद्धयाए बालयाए मोहयाए मदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए
चउक्कसाओवगएण पचिंदिओवसट्टेण पडिपुन्नभारियाए साया
सोक्खमणुपालयतेण इह वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु परिग्गहो
गहिओ वा गाहाविओ वा घिप्पतो वा परेहिं समणुन्नाओ त
निंदामि गरिहामि तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण, अईअं
निंदामि पडुप्पन्न सवरेमि अणागय पच्चक्खामि सव्व परिग्गह
जावज्जीवाए, अणिस्सिओऽह नेव सय परिग्गह परिगिण्हिज्जा
नेवन्नेहिं परिग्गह परिगिण्हाविज्जा परिग्गह परिगिण्हतेवि अन्ने
न समणुजाणिज्जा, तजहा—अरिहतसक्खिअ सिद्धसक्खिअ
साहुसक्खिअ देवसक्खिअ अप्पसक्खिअ, एव हवइ भिक्खू वा
भिक्खुणी वा सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा
राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा,
एस खलु परिग्गहस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगा
मिए [पारगामिए] सव्वेसिं पाणाण सव्वेसिं भूआण सव्वेसिं
जीवाण सव्वेसिं सत्ताण अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरण-
याए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए
महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए
पसत्थे, त दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए
ससारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसपज्जित्ताण विहरामि, पचमे भते !
महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण ॥ ५ ॥

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राइभोअणाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! राइभोअणं पच्चक्खामि, से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेव सयं राइं भुंजिज्जा नेवन्नेहिं राइं भुंजाविज्जा राइं भुंजंतेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । से राइभोअणे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं राइभोअणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, खित्तओ णं राइभोअणं समयखित्ते, कालओ णं राइभोअणे दिआ वा राओ वा, भावओ णं राइभोअणे तित्ते वा कडुए वा कसाए वा अंबिले वा महुरे वा लवणे वा रागेण वा दोसेण वा, जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णिअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खाविभिअस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अणभिगमेणं अभिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचिंदिओवसट्टेणं पडिपुण्णभारिआए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु राइभोअणं भुत्तं वा भुंजाविअं वा भुंजंतं वा परेहिं समणुन्नायं वा

निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, अईअं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं राइभोअणं जावज्जीवाए, अणिस्सिओऽहं नेव सयं राइभोअणं भुंजिज्जा नेवन्नेहिं राइभोअणं भुंजाविज्जा राइभोअणं भुंजंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तंजहा-अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं, एवं हवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु राइभोअणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए (पारगामिए) सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिण्णे परमरिसिदेसिए पसत्थे, तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। छट्ठे भंते ! वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥

इच्चेइआइं पंच महव्वयाइं राइभोअणवेरमणछट्ठाइं अत्तहिअट्ठयाए उवसंपज्जित्ता णं विहरामि ॥

अप्पसत्था य जे जोगा, परिणामा य दारुणा। पाणाइवायस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे॥ १॥ तिव्वरागा य जा भासा, तिव्वदोसा तहेव य। मुसावायस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥ २॥ उग्गहंसि अजाइत्ता, अविदिन्ने य उग्गहे। अदिन्ना-

जुत्ता गुत्तो ठिओ समणधम्म । छट्ठ वयमणुरक्खे, विरया मा
राईभोअणाओ ॥ १८ ॥ आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ
समणधम्मे । तिविहेण अप्पमत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ १९ ॥
सावज्जजोगमेग, मिच्छत्त एगमेव अन्नाण । परिवज्जतो गुत्तो,
रक्खामि महव्वए पच ॥ २० ॥ अणवज्जजोगमेग, सम्मत्त
एगमेव नाण तु । उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ २१ ॥
दो चेव रागदोसे, दुण्णि य झाणाइ अट्टरुद्दाइ । परिवज्जतो
गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ २२ ॥ दुविह चरित्तधम्म, दुन्नि
य झाणाइ धम्मसुक्काइ । उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए
पच ॥ २३ ॥ किण्हा नीला काऊ, तिन्नि य लेसाओ अप्प
सत्थाओ । परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ २४ ॥
तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि य लेसाओ सुप्पसत्थाओ । उवसपन्नो
जुत्ता, रक्खामि महव्वए पच ॥ २५ ॥ मणसा मणसचविऊ
वायासचेण करणसच्चेण । तिविहेणवि सचविऊ रक्खामि महव्वए
पच ॥ २६ ॥ चत्तारि य दुहसिज्जा, चउरो सन्ना तहा कसाया
य । परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ २७ ॥ चत्तारि
य सुहसिज्जा, चउव्विह सवर समाहिं च । उवसपन्नो जुत्तो,
रक्खामि महव्वए पच ॥ २८ ॥ पचेव य कामगुणे, पचेव य
अण्हवे महादोसे । परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच
॥ २९ ॥ पचिंदियसवरणा, तहेव पचविहमेव सज्झायं । उव
सपन्ना जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ ३० ॥ छज्जीवनिकाय
वह, छप्पि य भासाउ अप्पसत्थाओ । परिवज्जतो गुत्तो,
रक्खामि महव्वए पच ॥ ३१ ॥ छव्विहमब्भितरय, बज्झपि य
छव्विह तवोकम्म । उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच

॥ ३२ ॥ सत्त य भयट्ठाणाइ, सत्तविह चेव नाणविन्नाण । परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ ३३ ॥ पिंडेसण पाणेसण, उग्गहसत्तिक्कया महज्झयणा । उवसपन्ना जुत्ता, रक्खामि महव्वए पच ॥ ३४ ॥ अट्ठ य मयट्ठाणाइ, अट्ठ य कम्माइ तेसि बध च । परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ ३५ ॥ अट्ठ य पवयणमाया, दिट्ठा अट्ठविहनिट्ठिअट्ठेहिं । उवसपन्ना जुत्ता, रक्खामि महव्वए पच ॥ ३६ ॥ नव पावनिआणाइ ससारत्था य नवविहा जीवा । परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ ३७ ॥ नवबभचेरगुत्तो, दुनवविह बभचेरपरिसुद्ध । उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ ३८ ॥ उवघाय च दसविह असवर तह य सकिलेस च । परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ ३९ ॥ सच्चसमाहिट्ठाणा, दस चेव दसाउ समणधम्म च । उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ ४० ॥ आसायण च सव्व, तिगुण इक्कारस विवज्जतो । उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ ४१ ॥ एव तिदडविरओ तिगरणसुद्धो तिसल्लनीसल्लो । तिविहेण पडिक्कतो, रक्खामि महव्वए पच ॥ ४२॥

इच्चेअ महव्वयउच्चारण थिरत्त सल्लुद्धरण धिइबल च ववसाओ साहणट्ठो पावनिवारण निकायणा भावविसोही पडागाहरण निज्जूहणाऽऽराहणा गुणाण सवरजोगो पसत्थझाणोवउत्तया जुत्तया य नाणे परमट्ठो उत्तमट्ठो, एस खलु तित्थकरेहिं रइरागदोसमहणेहिं देसिओ पवयणस्स सारो छज्जीवनिकायसजमो, उवएसिअ तेलोक्कसक्कय ठाण अब्भुवगया । णमो त्थु ते सिद्ध

बुद्ध मुत्त नीरय निस्संग माणमूरण गुणरयणसायरमणंतमप्प
मेअ ।। नमो त्थु ते महइमहावीरवद्धमाणसामिस्स। नमो त्थु ते
अरहओ, नमो त्थु ते भगवओत्तिकट्टु । एसा खलु महव्वय
उच्चारणा कया ।। इच्छामो सुत्तकित्तणं काउं, नमो तेसिं खमा
समणाणं जेहिं इमं वाइअं छव्विहमावस्सयं भगवंतं, तंजहा-
सामाइअं १ चउवीसत्थओ २ वंदणयं ३ पडिक्कमणं ४ काउ
स्सग्गो ५ पच्चक्खाणं ६, सव्वेहिंपि एअम्मि छव्विहे आवस्सए
भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सनिज्जुत्तिए ससंगहणीए जे गुणा
वा भावा वा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पण्णत्ता वा परूविआ वा ते
भावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो,
ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहिं रोअंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणु
पालंतेहिं अंतो पक्खस्स जं वाइअं पढिअं परिअट्टिअं पुच्छिअं
अणुपेहिअं अणुपालिअं तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए
बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि,
अंतो पक्खस्स जं न वाइअं न पढिअं न परिअट्टिअं न पुच्छिअं
नाणुपेहिअं नाणुपालिअं संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कार
परक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो
विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं
पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइअं अंगबाहिरं उक्कि
लिअं भगवंतं, तंजहा - दसवेआलिअं १ कप्पिआकप्पिअं
२ चुल्लकप्पसुअं ३ महाकप्पसुअं ४ उववाइअं ५ रायप्पसेणिअं
६ जीवाभिगमो ७ पण्णवणा ८ महापन्नवणा ९ नंदी

१० अणुओगदाराइं ११ देविंदत्थओ १२ तंदुलवेआलिअं १३ चंदाविज्झयं १४ पमायप्पमायं १५ पोरिसिमंडलं १६ मंडलप्पवेसो १७ गणिविज्जा १८ विज्जाचरणविणिच्छओ १९ झाणविभत्ती २० मरणविभत्ती २१ आयविसोही २२ मलेहणासुअं २३ वीयरायसुअं २४ विहारकप्पो २५ चरणविही २६ आउरपच्चक्खाणं २७ महापच्चक्खाणं २८, सव्वेहिंपि एअंमि अंगबाहिरे उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सनिज्जुत्तिए ससंगहणीए जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूविआ वा ते भावे सद्दहामो पत्तिआमो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो, ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहिं रोअंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पक्खस्स जं वाइअं पढिअं परिअट्टिअं पुच्छिअं अणुपेहिअं अणुपालिअं तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, अंतो पक्खस्स जं न वाइअं न पढिअं न परिअट्टिअं न पुच्छिअं नाणुपेहिअं नाणुपालिअं संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कारपरक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइअं अंगबाहिरं कालिअं भगवंतं, तंजहा—उत्तरज्झयणाइं १ दसाओ २ कप्पो ३ ववहारो ४ इसिभासिआइं ५ निसीहं ६ महानिसीहं ७ जंबुदीवपन्नत्ती ८ सूरपन्नत्ती ९ चंदपन्नत्ती १० दीवसागरपन्नत्ती

११ खुड्डिया विमाणपविभत्ती १२ महल्लिआ विमाणपविभत्ती
१३ अंगचूलिआए १४ वग्गचूलिआए १५ विवाहचूलिआए
१६ अरुणोववाए १७ वरुणोववाए १८ गरुलोववाए १९
(धरणोववाए) वेसमणोववाए २० वेलंधरोववाए २१ देविंदो
ववाए २२ उट्ठाणसुए २३ समुट्ठाणसुए २४ नागपरिआवलि
आणं २५ निरयावलिआणं २६ कप्पिआणं २७ कप्पवडिं
सयाणं २८ पुप्फिआणं २९ पुप्फचूलिआणं ३० (वण्हिआणं)
वण्हिदसाणं ३१ आसीविसभावणाणं ३२ दिट्ठीविसभावणाणं
३३ चारण (सुमिण) भावणाणं ३४ महासुमिणभावणाणं ३५
तेअग्गिनिसग्गाणं ३६, सव्वेहिंपि एअम्मि अंगबाहिरे कालि
भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सनिज्जुत्तिए ससंगहणीए जे गु
ना भावा ना अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पण्णत्ता वा परूविआ वा
भावे सद्दहामो पत्तिआमो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो
ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अ
पालंतेहिं अंतो पक्खस्स जं वाइअं पढिअं परिअट्टिअं पुच्छि
अणुपेहिअं अणुपालिअं तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खया
बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ता णं विहरामि
अंतो पक्खस्स जं न वाइअं न पढिअं न परिअट्टिअं न पुच्छि
नाणुपेहिअं नाणुपालिअं संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्का
परक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टे
विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छि
पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइअं दुवालसंगं ग
पिडगं भगवंतं, तंजहा—आयारो १ सूअगडो २ ठाणं ३ स

याओ ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अनगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइअदसाओ ९ पण्हावागरणं १० विवागसुअं ११ दिट्ठिवाओ १२, सव्वेहिंपि एअंमि दुवालसंगे गणिपिडगे भगवंते समुत्ते सअत्थे सगंथे सणिज्जुत्तिए ससंगहणीए जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूविआ वा ते भावे सद्दहामो पत्तिआमो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो, ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पक्खस्स जं वाइअं पढिअं परिअट्टिअं पुच्छिअं अणुपेहिअं अणुपालिअं तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, अंतो पक्खस्स जं न वाइअं न पढिअं न परिअट्टिअं न पुच्छिअं नाणुपेहिअं नाणुपालिअं संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कारपरक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइअं दुवालसंगं गणिपिडगं भगवंतं, सम्मं काएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टंति सम्मं आणाए आराहंति अहं च नाराहेमि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सुअदेवया भगवई नाणावरणीअकम्मसंघायं ॥
तेसिं खवेउ सययं जेसिं सुअसायरे भत्ती ॥ १ ॥

॥ इति पाक्षिकसूत्र समाप्त ॥

श्रीपाक्षिकखामणा

इच्छामि खमासमणो ! पिअ च मे ज भे हट्ठाण तुट्ठाण अप्पायंकाण अभग्गजोगाण सुसीलाण सुव्वयाण सायरियउव ज्झायाण नाणेण दसणेण चरित्तेण तवसा अप्पाण भावेमाणाण बहुसुभेण भे दिवसो पोसहो पक्खो वइक्कतो अन्नो य मे कल्ला णेण पज्जुवट्ठिओ सिरसा मणसा मत्थएण वदामि ॥ १ ॥ गुरु कहे तुब्भेहिं सम ॥

इच्छामि खमासमणो ! पुव्विं चेइआइ वदित्ता नमसित्ता तुब्भण्ह पायमूले विहरमाणेण जे केई बहुदेवसिया साहुणो दिट्ठा सामाणा वा वसमाणा वा गामाणुगाम दूइज्जमाणा वा राइणिया सपुच्छति ओमराइणिया वदति अज्जया वदति अज्जि याओ वदति सावया वदति साविआओ वदति अहंपि निस्सल्ले निक्साओत्तिकट्टु सिरसा मणसा मत्थएण वदामि ॥ २ ॥ गुरु अहमवि वदावेमि चेइआइ ॥

इच्छामि खमासमणो ! [अब्भुट्ठिओह] उवट्ठिओह तुब्भण्ह सतिअ अहाकप्प वा वत्थ वा पडिग्गह वा कबल वा पायपुछण वा (रयहरण वा) अक्खर वा पय वा गाह सिलोग वा (सिलोगद्ध वा) अट्ठ वा हेउ वा पसिण वा वागरण वा तुब्भेहिं चिअत्तेण दिन्न मए अविणएण पडिच्छिअ तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥ ३ ॥ गुरु–आयरियसतिअ ॥

इच्छामि खमासमणो ! अहमपुव्वाईं कयाइ च मे किइक म्माइ आयारमतरे विणयमतरे सेहिओ सेहाविओ सगहिओ उवग्गहिओ सारिओ वारिओ चोइओ पडिचोइओ, चिअत्ता

वंदिचोयणा, (अन्भुट्ठिओह) उवट्ठिओह तुब्भंह तत्तेयसिरीए इमाणो चाउरंतसमारकंताराओ साहट्टु नित्थरिस्सामिसिकट्टु सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ ४ ॥ गुरु.– नित्थारगपारगा होह ॥

श्री दशवैकालिक सूत्र मूल पाठ ।

॥ १ ॥ द्रुमपुष्पिकाध्ययनम् ॥

(अनुष्टुब्वृत्तम्)

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो । देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥ जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं । न य पुप्फं किलामेइ सो अ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणा मुत्ता जे लोए संति साहुणो । विहंगमा व पुप्फेसु, दाण भत्तेसणे रया ॥ ३ ॥ वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मइ अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥ महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो, त्तिबेमि ॥ ५ ॥

इति दुमपुष्फियनामपढमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ २ ॥ श्रामण्यपूर्विकाध्ययनम् ॥

कहं नु कुज्जा सामन्नं, जो कामे न निवारए, पए पए विसीअंतो संकप्पस्स वसंगओ ॥ १ ॥ वत्थगंधमलंकारं इत्थिओ सयणाणि य, अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चाइत्ति वुच्चई ॥२॥ जे अ कंते पिए भोए लद्धे विपिट्ठि कुव्वइ, साहीणे चयइ भोए, से हु चाई त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

(काव्यम्)

समाइ पेहाइ परिव्वयतो, सिआ मणो निस्सरई बहिद्धा। न सा मह नोवि अहपि तीसे, इच्चेव ताओ विणइज्ज राग ॥४॥ आयावयाही चय सोगमल्ल, कामे कमाही, कमिअ खु दुक्ख, छिंदाहि दोस विणइज्ज राग, अेव सुही होहिसि सपराअे ॥ ५ ॥

अनुष्टुब्वृत्तम्

पक्खदे जलिअ जोइ, धूमकेउ दुरासय, नेच्छति वतय भोत्तु कुले जाया अगधणे ॥६॥ धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो त जीवियकारणा, वत इच्छसि आवेउ, सेय ते मरण भवे ॥ ७ ॥ अह च भोगरायस्स, त चऽसि अधगवण्हिणो, मा कुले गधणा होमो, सजम निहुओ चर ॥ ८ ॥ जइ त काहिसि भाव जा जा दिच्छसि नारिओ, वायाविद्धुव्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥९॥ तीस सो वयण सोच्चा, सजयाए सुभासिय, अकुसेण जहा नागो, धम्मे सपडिवाइओ ॥१०॥ अेव करति सबुद्धा, पडिया पविअक्खणा, विणिअट्टति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो, त्तिबेमि ॥ ११ ॥

॥ इति सामण्णपुव्वियनामनीय अज्झयण समत्त ॥

॥ ३ ॥ क्षुल्लकाचाराध्ययनम् ॥

अनुष्टुब्वृत्तम्

सजमे सुट्ठिअप्पाण विप्पमुक्काण ताइण तासिमअणाइन्न, निग्गथाण महेसिण ॥ १ ॥ उद्देसिय कीयगट, नियागमभिहटाणि य। राइभत्ते सिणाणे य, गधमल्ले अ वीयणे ॥२॥ सनिही गिहिमत्ते अ रायपिंडे किमिच्छअे, सवाहणा दतपहोयणा अ, सपुच्छणा

देहपलोयणा अ ॥३॥ अट्ठावअे अ नालीअे, छत्तस्स य धारणट्ठाअे, तेगिच्छं पाणहा पाअे, समारम च जोइणो ॥ ४ ॥ सज्जायरपिंड च, आसंदी पलिअंकअे, गिहंतरनिसिज्जा य, गायस्सुव्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥ गिहिणो वेआवडिय, जा य आजीवत्तिया, तत्तानिव्वुडभोइत्त, आउरस्सरणाणि अ ॥ ६ ॥ मूलअ सिंगबेरे य, उच्छुखडे अनिव्वुडे, कंदे मूले य सचित्ते, फले बीअे य आमअे ॥७॥ सोवचले सिंधवे लोणे, रोमालोणे य आमअे, सामुद्दे पंसुखारे य, कालालोणे य आमअे ॥८॥ धूवणि त्ति वमणे अ, वत्थिकम्म विरेयणे, अजण दंतवणे अ गायाब्भगविभूसणे ॥९॥ सव्वमेयमणाइन्न, निग्गयाण महेसिण, सजममि अ जुत्ताण, लहुभूयविहारिणं ॥१०॥ पचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु सजया, पचनिग्गहणा धीरा, निग्गथा उज्जुदसिणा ॥११॥ आयावयति गिम्हेसु, हेमतेसु अवाउडा, वासासु पडिसलीणा सजया सुसमाहिया ॥१२॥ परीसहरिऊदता धूअमोहा जिइदिआ, सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमति महेसिणो ॥१३॥ दुक्कराइ करित्ताण, दुस्सहाइ सहेत्तु अ, के इत्थ देवलोअेसु, केइ सिज्झति नीरया ॥१४॥ खवित्ता पुव्वकम्माइ सजमेण तवेण य, सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुडे, त्तिबेमि ॥१५॥

॥ इति खुड्डियायारकहानाम तइयअज्झयण समत्त ॥

॥ ४ ॥ छज्जीवणिअज्झयण ॥

सुअ मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय इह खलु छज्जीवणिआनामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइआ सुअक्खाया, सुपन्नत्ता सेअ मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्म-

पन्नत्ती ॥ १ ॥ कयरा खलु सा छज्जीवणिआनामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइआ, सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअ मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपन्नत्ती ? ॥ २ ॥ इमा खलु सा छज्जीवणिआनामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइआ सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेय मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपन्नत्ती ॥ ३ ॥ तजहा—पुढविकाइआ, आउकाइआ, तेउकाइआ, वाउकाइआ, वणस्सइकाइआ, तसकाइआ ॥ ४ ॥ पुढवी चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण ॥ ५ ॥ आउ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता, अन्नत्थ सत्थपरिणएण ॥ ६ ॥ तेऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण ॥ ७ ॥ वाऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण ॥ ८ ॥ वणस्सइ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण ॥ ९ ॥ तजहा अग्गबीआ मूलबीआ पोरबीआ खधबीआ बीअरुहा सम्मुच्छिमा तणलया वणस्सइकाइआ सबीआ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता, अन्नत्थ सत्थपरिणएण ॥ १० ॥ से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा, तजहा अंडया पोयया जराउआ रसया ससेइमा सम्मुच्छिमा उब्भिआ उववाइआ, जेसिं केसिं चि पाणाण अभिक्कत पडिक्कत सकुचिअं पसारिअ रुअ भत तसिअ पलाइअ आगइ गइ विन्नाया, जे अ कीडपयगा, जा य कुथुपिपीलिआ, सव्वे बेइदिआ सव्वे तेइदिया सव्वे चउरिंदिआ सव्वे पचिंदिआ सव्वे तिरिक्खजोणिआ, सव्वे ` सव्वे मणुआ सव्वे देवा सव्वे पाणा परमाहम्मिआ ।

अेसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाउ त्ति पवुचइ ॥ सूत्र १ ॥

इच्चेसिं छण्ह जीवनिकायाण नेव सय दड समारभिज्जा, नेवन्नेहिं दड समारभाविज्जा, दड समारभतेवि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाअे तिविह तिविहेण मणेण वायाअे काअेण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ सूत्र २ ॥

पढमे भते ! महव्वअे पाणाइवायाओ वेरमण, सव्व भते ! पाणाइवाय पच्चक्खामि, स सुहुम वा बायर वा, तस वा थावर वा, नेव सय पाणे अइवाइज्जा, नेव अन्नेहिं पाण अइवायाविज्जा पाणे अइवायते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह, तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि । पढमे भते महव्वअे उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण ॥ १ ॥ (सूत्र ३)

अहावरे दुचे भते ! महव्वअे मुसावायाओ वेरमण, सव्व भते ! मुसावाय पच्चक्खामि, से कोहा वा, लोहा वा, भया वा हासा वा नेव सय मुस वएज्जा नेव अन्नेहिं मुस वायाविज्जा मुस वयते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाअे तिविह तिविहेण मणेण वायाअे काअेण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि तस्स भते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि, दुचे भते ! महव्वअे उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण ॥ २ ॥ (सूत्र ४)

अहावरे तचे भते ! महव्वअे अदिन्नादाणाओ वेरमण, सव्वं भते ! अदिन्नादाण पच्चक्खामि, से गामे वा नगरे वा रन्ने वा

अप्प वा बहु वा अणु वा थूल वा चित्तमंत वा अचित्तमंत वा नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा, अदिन्नं गिण्हंतेऽवि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि, तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं॥ ३ ॥ (सूत्र ५)

अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वं वा माणुस्सं वा तिरिक्खजोणियं वा नेव सयं मेहुणं सेविज्जा, नेवऽन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥ ४ ॥ (सू० ६)

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं, सव्वं भंते! परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवऽन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहं परिगिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। पंचमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥ (सू० ७)

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राईभोयणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! राइभोयणं पच्चक्खामि, से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेव सयं राई भुंजिज्जा नेवऽन्नेहिं राइ भुंजाविज्जा राई भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंत पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । छट्ठे भंते ! वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ (सू० ८) इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राइभोअणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठयाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि (सू० ९)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय पावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा, से पुढविं वा भित्तिं वा, सिलं वा, लेलुं वा, ससरक्खं वा कायं, ससरक्खं वा वत्थं, हत्थेण वा पाएण वा कट्ठेण वा किलिंचेण वा अंगुलिआए वा सिलागाए वा सिलागहत्थेण वा न आलिहिज्जा न विलिहिज्जा न घट्टिज्जा न भिंदिज्जा, अन्नं न आलिहाविज्जा न विलिहाविज्जा न घट्टाविज्जा न भिंदाविज्जा, अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥ (सू० १०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा

जागरमाणे वा से उदग वा ओस वा हिम वा, महिअ वा करग वा हरतणुग वा सुद्धोदग वा उदउल्ल वा काय उदउल्लं वा वत्थ ससिणिद्ध वा काय ससिणिद्ध वा वत्थं न आमुसिज्जा न संफुसिज्जा न आवीलिज्जा न पविलिज्जा, न अक्खोडिज्जा न पक्खोडिज्जा न आयाविज्जा न पयाविज्जा अन्न न आमुसाविज्जा न संफुसाविज्जा न आवीलाविज्जा न पवीलाविज्जा, न अक्खोडाविज्जा न पक्खोडाविज्जा न आयाविज्जा न पयाविज्जा, अन्न आमुसत वा संफुसत वा, आवीलत वा, पवीलत वा, अक्खोडत वा, पक्खोडत वा, आयावत वा, पयावत वा न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण, मणेणं वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ २ ॥ (सू० ११)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से अगणिं वा इगाल वा मुम्मुर वा अर्चि वा जाल वा अलाय वा सुद्धागणिं वा उक्क वा न उंजेज्जा न घट्टिज्जा न भिंदिज्जा न उज्जालिज्जा न पज्जालिज्जा न निव्वाविज्जा अन्न न उजाविज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदाविज्जा न उज्जालावेज्जा न पज्जालाविज्जा न निव्वाविज्जा अन्न उजंत वा घट्टंत वा भिंदतं वा उज्जालत वा पज्जालत वा निव्वावतं वा न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाओ तिविहं तिविहेण मणेणं वायाओ काओण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण

वोसिरामि ॥ ३ ॥ (सूत्र १२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से सिअण वा विहुणेण वा विहुणहत्थेण वा तालिअंटेण वा पत्तेण वा, पत्तभंगेण वा साहाओ वा साहाभंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा, चेलकण्णेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा काय बाहिरं वावि पुग्गलं, न फुमिज्जा न वीअेज्जा अन्नं न फुमाविज्जा न वीआविज्जा, अन्नं फुमंतं वा वीअंतं वा न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ४ ॥ (सूत्र १३)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से वीअेसु वा, वीअपइट्ठेसु वा रूढेसु वा, रूढपइट्ठेसु वा, जाअेसु वा जायपइट्ठेसु वा हरिअेसु वा हरिअपइट्ठेसु वा छिन्नेसु वा छिन्नपइट्ठेसु वा सचित्तेसु वा सचित्तकोलपडिनिस्सिअेसु वा न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीअेज्जा न तुअट्टेज्जा अन्नं न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न निसीआवेज्जा, न तुअट्टावेज्जा, अन्नं गच्छंतं वा, चिट्ठंतं वा, निसीयंतं वा, तुयट्टंतं वा, न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि

निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ (सूत्र १४) से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीडं वा पयंग वा कुंथुं वा पिवीलियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि वा उरंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि पडिग्गहंसि वा कम्बलंसि वा पाय पुंछणंसि वा रयहरणंसि वा गोच्छगंसि वा उडगंसि वा दण्डगंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगंसि वा वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगंतमवणिज्जा णो णं संघायमावज्जिज्जा ॥

अजयं चरमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ। बधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ १ ॥ अजयं चिट्ठमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ। बधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ २ ॥ अजयं आसमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ । बधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥ अजयं सयमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ । बधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४ ॥ अजयं भुंजमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ। बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥ अजयं भासमाणो य, पाणभूयाइं हिंसइ, बधइ पावयं कम्मं, तं से होई कडुअं फलं ॥ ६ ॥ कहं चरे ? कहं चिट्ठे ? कहमासे ? कहं सए ? कहं भुंजंतो भासंतो पावं कम्मं न बन्धइ ? ॥ ७ ॥ जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए, जयं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधइ ॥ ८ ॥ सव्वभूयऽप्पभूअस्स, सम्मं भूयाइं

पासओ, पिहिआसवस्स दंतस्स, पाव कम्म न बंधइ ॥ ९ ॥ पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए, अनाणी किं काही ? किं वा नाही य सेयपावगं ? ॥ १० ॥ सोचा जाणइ कल्लाण, सोचा जाणइ पावगं, उभयपि जाणइ सोचा, जं सेअं तं समायरे ॥ ११ ॥ जो जीवे वि न याणाइ, अजीवे वि न याणइ, जीवाजीवे अयाणतो, कह सो नाही य संजमं ? ॥१२॥ जो जीवे वि वियाणेइ अजीवे वि वियाणइ, जीवाजीवे वियाणतो, सो हु नाहीइ य संजमं ॥ १३ ॥ जया जीवमजीवे य, दो वि एए वियाणइ, तया गइ बहुविह, सव्वजीवाण जाणइ ॥ १४ ॥ जया गई बहुविह सव्वजीवाण जाणइ, तया पुन्न च पाव च, बंध मुक्ख च जाणइ ॥ १५ ॥ जया पुण्ण च पाव च, बंध मुक्ख च जाणइ, तया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे अ माणुसे ॥ १६ ॥ जया निव्विंदए भोए जे दिव्वे जे अ माणुसे । तया चयइ संजोग, सब्भितर बाहिर ॥ १७ ॥ जया चयइ संजोग, सब्भितरबाहिर, तया मुंडे भवित्ताण पव्वइए अणगारिअं ॥ १८ ॥ जया मुंडे भवित्ताण पव्वइए अणगारिअं, तया संवरमुक्किट्ठ, धम्म फास अणुत्तर ॥ १९ ॥ जया संवरमुक्किट्ठ, धम्म फासे अणुत्तर, तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुस कड ॥ २० ॥ जया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुस कड, तया सव्वत्तग नाण दसण चाभिगच्छइ ॥ २१ ॥ जया सव्वत्तग नाण दसण चाभिगच्छइ, तया लोग मलोग च जिणो जाणइ केवली ॥ २२ ॥ जया लोगमलोग च जिणो जाणइ केवली, तया जोगे निरुभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई ॥ २३ ॥ जया जोगे निरुभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जई, तया कम्म

थोहरि कुआरि गुग्गुलि गलोय पमुहाइ छिन्नरुहा ॥ १० ॥
इच्चाइणो अणेगे हवंति भेया अणंत-कायाण ।
तेसिं परिजाणणत्थं लक्खणमेयं सुए भणियं ॥ ११ ॥
गूढ सिर संधि पव्वं समभंगमहीरगं च छिन्न रुहं ।
साहारण सरीरं तव्विवरीयं च पत्तेयं ॥१२॥
एग सरीरे एगो जीवो जसिं तु ते य पत्तेया ।
फल फूल छल्लि कट्ठा, मूलग पत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥
पत्तेयतरु मुत्तुं पंचवि पुढवाइणो सयल लोए ।
सुहुमा हवंति नियमा अंतमुहुत्ताऊ अद्दिस्सा ॥ १४ ॥
संख कवड्डय गंडुल जलोय चंदणग अलस लहगाइ ।
मेहरि किमि पूयरगा बेइंदिय माइवाहाइ ॥ १५ ॥
गोमी मंकण जूआ पिपीलि उद्दहिया य मक्कोडा ।
इल्लिय घयमिल्लीओ सावय गोकीडजाईओ ॥ १६ ॥
गद्दहय चोरकीडा गोमयकीटा य धन्नकीडा य ।
कुंथु गोवालिय इल्लिया तेइंदिय इंदगोवाइ ॥ १७ ॥
चउरिंदिया य विच्छू ढिंकुण भमरा य भमरीया तिड्डा ।
मच्छिय डंसा मसगा कंसारी कविल-डोलाई ॥ १८ ॥
पंचिंदिया य चउहा नारय तिरिया मणुस्स देवा य ।
नेरइया सत्तविहा नायव्वा पुढवी-भेएण ॥ १९ ॥
जलयर थलयर खयरा तिविहा पंचिंदिया तिरिक्खा य ।
सुसुमार मच्छ कच्छव गाहा मगरा य जलचारी ॥ २० ॥
चउपय उरपरिसप्पा भुयपरिसप्पा य थलयरा तिविहा ।

गो सप्प नउल पमुहा बोधव्वा ते समासेण ॥ २१ ॥
खयरा रोमयपक्खी चम्मयपक्खी य पायडा चेव ।
नरलोगाओ बाहिं समुग्गपक्खी वियपक्खी ॥ २२ ॥
सव्वे जल-थल-खयरा समुच्छिमा गब्भया दुहा हुंति ।
कम्मा-कम्मगा-भूमि अतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥
दसहा भवणाहिवइ अट्ठविहा वाणमंतरा हुंति ।
जोइसिया पंचविहा दुविहा वेमाणिया देवा ॥ २४ ॥
सिद्धा पनरस भेया तित्था-तित्थाइसिद्ध भेएण ।
एए संखेवेण जीव-विगप्पा समक्खाया ॥ २५ ॥
एएसिं जीवाण सरीरमाऊठिई सकायम्मि ।
पाणा जोणि पमाण जेसिं जं अत्थि तं भणिमो ॥ २६ ॥
अंगुल असंख भागो सरीर-मेगिंदियाण सव्वेसिं ।
जोयणसहस्समहियं नवरं पत्तेयरुक्खाणं ॥ २७ ॥
बारस जोयण तिन्नेव गाउआ जोयण च अणुक्कमसो ।
बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय देहमुच्चत्त ॥ २८ ॥
धणु सय पंच पमाणा नेरइया सत्तमाइ पुढवीए ।
तत्तो अद्धद्धूणा नेया रयणप्पहा जाव ॥ २९ ॥
जोयणसहस्समाणा मच्छा उरगा य गब्भया हुंति ।
धणुहपुहुत्त पक्खिसु भुअचारी गाउअ पुहुत्त ॥ ३० ॥
खयरा धणुह पुहुत्त भुयगा उरगा य जोयण पुहुत्त ।
गाउअ पुहुत्तमित्ता समुच्छिमा चउप्पया भणिया ॥ ३१ ॥
छ च्चेव गाउआइ चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा ।

कोसातिग च मणुस्सा उक्कोस सरीरमाणेण ॥ ३२ ॥
ईसाणत सुराण रयणीओ सत्त हुति उच्चत्त ।
दुग दुग दुग चउ गेविज्जणुत्तरेक्किक्कपरिहाणी ॥ ३३ ॥
बावीसा पुढवीए सत्त य आउस्स तिन्नि वाउस्स ।
वास सहस्सा दस तरुगणाण तेऊ ति रत्ताऊ ॥ ३४ ॥
वासाणि बारसाऊ बेइंदियाण तेइंदियाण तु ।
अउणापन्न दिणाइं चउरिंदीण तु छम्मासा ॥ ३५ ॥
सुरनेरइयाण ठिई उक्कोसा सागराणि तित्तीस ।
चउप्पय तिरिय मणुस्सा तिन्नि य पलिओवमा हुति ॥ ३६ ॥
जलयर उर भुयगाण परमाऊ होई पुव्व कोडी उ ।
पक्खीण पुण भणिओ असखभागो य पलियस्स ॥ ३७ ॥
सव्वे सुहुमा साहारणा य समुच्छिमा मणुस्सा य ।
उक्कोसजहन्नेण अतमुहुत्त चिय जियति ॥ ३८ ॥
ओगाहणाउ माण एव सखेवओ समक्खाय ।
जे पुण इत्थ विसेसा विसेससुत्ताउ ते नेया ॥ ३९ ॥
एगिंदिया य सव्वे असखउस्सप्पिणी सकायम्मि ।
उववज्जति चयति य अणतकाया अणताओ ॥ ४० ॥
सखिज्ज-समा विगला सत्तट्ठ भवा पणिंदि-तिरी-मणुआ ।
उववज्जति सकाए नारय देवा य नो चेव ॥ ४१ ॥
दसहा जिआण पाणा इंदिय ऊसास आउ बल रूवा ।
एगिंदिएसु चउरो विगलेसु छ सत्त अट्ठेव ॥ ४२ ॥
असन्नि सन्नि पचि-दिएसु नव दस कमेण बोधव्वा ।

तेहिं सह निप्पओगो जीवाण भण्णए मरणं ॥ ४३ ॥
एवं अणोरपारे संसारे सायरम्मि भीमम्मि ।
पत्तो अणंतखुत्तो जीवेहिं अपत्तधम्मेहिं ॥ ४४ ॥
तह चउरासी लक्खा संखा जोणीण होइ जीवाणं ।
पुढवाइणो चउण्ह पत्तेयं सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥
दस पत्तेय तरूणं चउदस लक्खा हवंति इयरेसु ।
विगलिंदिएसु दो दो चउरो पंचिंदितिरियाणं ॥ ४६ ॥
चउरो चउरो नारय सुरेसु मणुआण चउदस हवंति ।
संपिंडिया य सव्वे चुलसी लक्खाउ जोणीणं ॥ ४७ ॥
सिद्धाणं नत्थि देहो न आउकम्मं न पाणजोणीओ ।
साइ अणंता तेसिं ठिइ जिणंदागमे भणिआ ॥ ४८ ॥
काले अणाइनिहणे जोणि गहणम्मि भीसणे इत्थ ।
भमिया भमिहिंति चिरं जीवा जिणवयणमलहंता ॥ ४९ ॥
ता संपइ संपत्ते मणुअत्ते दुल्लहे वि सम्मत्ते ।
सिरिसंतिसूरिसिट्ठे करेह भो ! उज्जमं धम्मे ॥ ५० ॥
एसो जीववियारो संखेवरुईण जाणणा हेऊ ।
संखित्तो उद्धरिओ रूद्दाओ सुयसमुद्दाओ ॥ ५१ ॥

॥ इति श्री जीवविचार प्रकरण ॥

श्री नवतत्त्व प्रकरण

जीवाऽजीवा पुण्णं पावाऽऽसव संवरो य निज्जरणा ।
बंधो मुक्खो य तहा नवतत्ता हुंति नायव्वा ॥ १ ॥
चउदस चउदस बायाला बासी अ हुंति बायाला ।
सत्तावन्नं बारस, चउ, नव भेया कमेणेसिं ॥ २ ॥

एगविह दुविह तिविहा, चउव्विहा पच छव्विहा जीवा
चेयणतसइयरेहिं, वेय-गई-करण-काएहिं ॥ ३ ॥
एगिंदियसुहुमियरा, सन्नियर पणिंदिया य सबीतिचउ ॥
अपजत्ता पज्जत्ता, कमेण चउदस जियट्ठाणा ॥ ४ ॥
नाण च दसण चेव, चरित्त च तवो तहा
वीरीय उवओगो य, एव जीअस्स लक्खण ॥ ५ ॥
आहारसरीरिंदिय-पज्जत्ती आणपाणभासमण
चउ पच पच छप्पि य, इगविगलाऽसन्निसन्नीण ॥ ६ ॥
पणिंदिअत्तिबलूसा-साऊ दस पाण चउ छ सग अट्ठ
इग-दु ति-चउरिंदीण, असन्नि-सन्नीण नव दस य ॥ ७ ॥
धम्माधम्मागासा, तिय-तिय-भेया तहेव अद्धा य ।
खधा देस पएसा, परमाणु अजीव चउदसहा ॥ ८ ॥
धम्माऽधम्मा पुग्गल, नह कालो पच हुति अजीवा,
चलणसहावो धम्मो, थिरसठाणो अहम्मो य ॥ ९ ॥
अवगाहो आगास, पुग्गलजीवाण पुग्गला चउहा,
खधा देस पएसा, परमाणु चेव नायव्वा ॥ १० ॥
सद्धयार उज्जोअ, पभा छायातवेहि अ (इय),
वन्न गध रसा फासा, पुग्गलाण तु लक्खण ॥ ११ ॥
एगा कोडि सतसट्ठि, लक्खा सत्तहुत्तरी सहस्सा य,
दो य सया सोलहिया, आवलिया इगमुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥
समयावली मुहुत्ता, दीहा पक्खा य मास वरिसा य,
भणिओ पलिया सागर, उस्सप्पिणिसप्पिणी कालो ॥ १३ ॥
परिणामि जीव मुत्त, सपएसा एग खित्तकिरिया य,
णिच्च कारण कत्ता, सव्वगय इयर अप्पवेसे ॥ १४ ॥

मा उच्चगोअ मणुदुग, सुरदुग पचिंदिजाइ पण देहा,
आइतिवणूणुरगा, आइमसघयणमठाणा ॥ १५ ॥
वन्नचउक्क गुरुलहु, परघा उस्सास आयवुज्जोअ,
सुभखगइनिमिणतसदस सुरनरतिरिआउ तित्थयर ॥ १६ ॥
तस बायर पज्जत्त, पत्तेअ थिर सुभ च सुभग च,
सुस्सर आइज्ज जस, तसाइदसग इम होइ ॥ १७ ॥
नाणतरायदसग, नव बीए नीअसाय मिच्छत्त,
थावरदस-निरयतिग, कसाय पणवीस तिरियदुग ॥ १८ ॥
इगबितिचउजाईओ, कुखगइ उवघाय हुति पावस्स,
अपसत्थ वन्नचऊ, अपढमसघयणसठाणा ॥ १९ ॥
थावर सुहुम अपज्ज, साहारणमथिरमसुभदुभगाणि
दुस्सरणाइज्जजस, थावरदसग विवज्जत्थ ॥ २० ॥
इदिअ कसाय अव्वय, जोगा पच चउ पच तिन्नि कमा,
किरियाओ पणवीस, इमा उ ताओ अणुक्कमसो ॥ २१ ॥
काइय अहिगरणिया, पाउसिया पारितावणी किरिया,
पाणाइवायरभिय, परिग्गहिआ मायवत्तीआ ॥ २२ ॥
मिच्छादसणवत्ती, अपच्चक्खाणा य दिट्ठि पुट्ठि य,
पाडुच्चिय सामतो-वणीअ नेसत्थि साहत्थी ॥ २३ ॥
आणवणि विआरणिया, अणभोगा अणवकखपच्चइया,
अन्ना पओग समुदा-ण पिज्ज दोसेरियावहिया ॥ २४ ॥
समिई गुत्ती परिसह, जइधम्मो भावणा चरित्ताणि,
पण ति दुवीस दस बार, पचभेएहिं
इरिया भासेसणादाणे, उच्चारे समिईसु
मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती तहेव य

खुहा पिवासा सीउण्ह, दसाचेलारइत्थिओ,
चरिया निसीहिया सिज्जा, अक्कोस वह जायणा ॥ २७ ॥
अलाभ रोग तणफासा, मल सक्कार-परीसहा,
पन्ना अनाण सम्मत्त, इअ बावीस परीसहा ॥ २८ ॥
खंती मद्दव अज्जव, मुत्ती तव संजमे अ बोधव्वे,
सच्चं सोअं आकिं-चणं च बंभं च जइधम्मो ॥ २९ ॥
पढममणिच्चमसरणं, संसारो एगया य अन्नत्तं,
असुइत्तं आसव सं-वरो य तह णिज्जरा नवमी ॥ ३० ॥
लोगसहावो बोही दुल्लहा धम्मस्स साहगा अरिहा,
एआओ भावणाओ, भावेअव्वा पयत्तेण ॥ ३१ ॥
सामाइअत्थ पढमं, छेओवट्ठावणं भवे बीअं,
परिहारविसुद्धीअं सुहुमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥
तत्तो अ अहक्खायं, खायं सव्वंमि जीवलोगंमि,
जं चरिऊण सुविहिया, वच्चंति अयरामरं ठाणं ॥ ३३ ॥
बारसविहं तवो णि-,ज्जरा य बंधो चउव्विगप्पो अ,
पयइ-ट्ठिइ-अणुभाग-प्पएसभेएहिं नायव्वो ॥ ३४ ॥
अणसणमूणोअरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ,
कायकिलेसो संली-णया य बज्झो तवो होइ ॥ ३५ ॥
पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ,
झाणं उस्सग्गोऽवि अ, अब्भिंतरओ तवो होइ ॥ ३६ ॥
पयइ सहावो वुत्तो, ठिई कालावहारणं,
अणुभागो रसो णेओ, पएसो दलसंचओ ॥ ३७ ॥
पडपडिहारऽसिमज्ज-, हडचित्तकुलालभंडगारीणं,
जह एएसिं भावा, कम्माणऽवि जाण तह भावा ॥ ३८ ॥

जीवाइ नव पयत्थ, जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्त,
भावेण सद्दहंतो, अयाणमाणेऽवि सम्मत्त ॥ ५१ ॥
सव्वाइ जिणेसर–, भासियाइ वयणाइ नन्नहा हुंति,
इइ बुद्धि जस्स मणे, सम्मत्त निचल तस्स ॥ ५२ ॥
अंतोमुहुत्तमित्त–पि फासिय हुज्ज जेहिं सम्मत्त,
तेसि अवड्ढपुग्गल–परियट्टो चेव ससारो ॥ ५३ ॥
उस्सप्पिणी अणता पुग्गलपरिअट्टओ मुणेयव्वो,
तेऽणताऽतीअद्धा, अणागयद्धा अणतगुणा ॥ ५४ ॥
जिणअजिण तित्थऽतित्था, गिहि अन सलिंग थीनरनपुसा,
पत्तेय सयबुद्धा, बुद्धबोहिय इक्कणिक्का य ॥ ५५ ॥
जिणसिद्धा अरिहंता, अजिणसिद्धा य पुडरिअपमुहा,
गणहारि तित्थसिद्धा, अतित्थसिद्धा य मरुदेवा ॥ ५६ ॥
गिहिलिंगसिद्ध भरहो, वक्कलचीरी य अन्नलिंगम्मि,
साहू सलिंगसिद्धा, थीसिद्धा चदणापमुहा ॥ ५७ ॥
पुसिद्धा गोयमाई, गांगेयाई नपुसया सिद्धा,
पत्तेयसयबुद्धा, भणिया करकडुकविलाई ॥ ५८ ॥
तह बुद्धबोहि गुरुबो–हिया य इगसमय इगसिद्धा य,
इग समयेऽवि अणेगा, सिद्धा तेऽणेगसिद्धा य ॥ ५९ ॥
॥ इति श्री नवतत्त्वमूलम् ॥

दण्डक प्रकरण

नमिउ चउवीस जिणे, तस्सुत्त–, वियार लेस देसणओ,
दंडग-पएहिं ते च्चिय, थोसामि सुणेह भो भव्वा ॥ १ ॥
नेरइया असुराई, पुढवाइ बेइंदियादओ चेव,
गब्भय–तिरिय मणुस्सा, वंतर जोइसिया वेमाणी ॥ २ ॥

सरिरित्तपरी उ इमा, सरीर–मोगाहणा य सघयणा,
सन्ना सठाण कसाय, लेसिन्दिय दु समुग्घाया, ॥ ३ ॥
दिट्ठी दसण नाणे जोगु–वओगो–ववाय चवण–ठिइ,
पज्नत्ति किमाहारे, सन्नी गइ आगई वेए ॥ ४ ॥
चउगब्भ–तिरिय–वाउसु, मणुआण पच सेस तिसरीरा,
थावर चउगे दुहओ, अगुल असखभाग तणू ॥ ५ ॥
सव्वेसिंपि जहन्ना, साहाविय अगुलस्स असखसो,
उक्कोस पण मय घणु नेरइया सत्त हत्थ सुरा ॥ ६ ॥
गब्भतिरि सहस जोयण, वणस्सई अहिय जोयण सहस्स,
नर तेइदि तिगाऊ नेइदिय जोयणे नार ॥ ७ ॥
जोयण–मेग चउरिंदि, देह–मुच्चत्तण सुए भणिअ,
वेउव्विय–देह पुण अगुलसखसमारभे ॥ ८ ॥
देव नर अहिय लक्ख, तिरियाण नव य जोयण सयाइ,
दुगुण तु नारयाण, भणिय वेउव्विय सरीर ॥ ९ ॥
अतमुहुत्त निरअे, मुहुत्त चत्तारि तिरिय–मणुअेसु,
देवेसु अद्ध मासो, उक्कोस विउव्वणाकालो ॥ १० ॥
थावर सुर नेरइआ असघयणा य विगल छेवट्ठा,
सघयण छग गब्भय, नर–तिरिसुवि मुणेयव्व, ॥ ११ ॥
सव्वेसि चउ दह वा, सन्ना सव्वे सुरा य चउरसा,
नर तिरिय छ सठाणा, हुडा विगलिंदि नेरइया ॥ १२ ॥
नाणाविह धय सूई, बुब्बुय वण वाउ तेउ अपकाया,
पुढवी मसूर चदा-कारासठाणओ भणिया ॥ १३ ॥
सव्वे वि चउ कसाया, लेसछग्ग गब्भ तिरिय मणुअेसु,
नारय तेउ ... तिलेसा य ॥ १४ ॥

जोइसिय तेउ लेसा, सेसा सव्वेरि हुंति चउ लेसा,
इदिय दार सुगम, मणुआण सत्त समुग्घाया ॥ १५ ॥
वेयण कसाय मरणे, वेउव्विय तेयगे य आहारे,
केवलिय समुग्घाया सत्त इमे हुंति सन्नीण ॥ १६ ॥
अेगिंदियाण केवलि, तेउ आहारग विणा उ चत्तारि,
ते वेउव्विय वज्जा, विगला सन्नीण ते चेव ॥ १७ ॥
पण गब्भ तिरि सुरेसु, नारय वाउसु चउर तिय सेसे,
विगल दु दिट्ठी थावर, मिच्छत्ती सेस तिय दिट्ठी, ॥ १८ ॥
थावर बितिसु अचक्खु, चउरिंदिसु तद्दुग सुअे भणिअ,
मणुआ चउ दसणिणो, सेसेसु तिग तिग भणिय ॥ १९ ॥
अन्नाण नाण तिय तिय, सुर तिरिनिरअे थिरे अनाणदुग,
नाणान्नाण दु विगले, मणुअे पण नाण तिअनाणा ॥ २० ॥
इक्कारस सुर निरअे, तिरिअेसु तेर पन्नर मणुअेसु,
विगले चउ पण वाअे, जोगतिय थावरे होइ ॥ २१ ॥
उवओगा मणुअेसु, बारस नव निरय तिरिय देवेसु,
विगल दुगे पण छक्क, चउरिंदिसु थावरे तियग ॥ २२ ॥
सखमसखा समये, गब्भय तिरि विगल नारय सुरा य,
मणुआ नियमा सखा, वणणंता थावर असखा ॥ २३ ॥
असन्नी नर असखा, जह उववाअे तहेव चवणे वि,
बावीस सग ति दस वास–, सहस्स उक्किट्ठ पुढवाइ ॥ २४ ॥
ति दिणग्गि ति पल्लाउ, नर तिरि सुर निरय सागर तित्तीसा,
वंतर पल्ल जोइस, वरिस लक्खाहिय पलिय ॥ २५ ॥
असुराण अहियअयरं, देसूण दु पल्लय नव निकाये,
बारस वासुण पण दिण, छम्मासुक्किट्ठ विगलाउ ॥ २६ ॥

पुढवाइ दस पयाण, अंतमुहुत्त जहन्न आउठिइ,
दस सहस्स वरिस ठिइया, भवणाहिव निरय वन्तरिआ ॥ २७ ॥
वेमाणिय जोइसिया, पल्ल तयट्ठम भाउआ हुंति,
सुर नर तिरि निरएसु, छ पज्जत्ती थावरे चउग ॥ २८ ॥
विगले पंच पज्जत्ती, छद्दिसि आहार होइ सव्वेसिं,
पण गइ पये भयणा, अह सन्नितिय भणिस्सामि ॥ २९ ॥
चउविह सुर तिरिएसु, निरएसु अ दीहकालिगी सन्ना,
विगले हेउवएसा, सन्ना रहिया थिरा सव्वे ॥ ३० ॥
मणुआण दीहकालिय, दिट्ठिवाओवएसिया के वि,
पज्ज पण तिरि मणुअ च्चिय, चउविह देवेसु गच्छंति ॥ ३१ ॥
संखाउ पज्ज पणिंदि, तिरियनरेसु तहेव पज्जत्ते,
भूदग पत्तयवणे, एएसु च्चिय सुरागमणं ॥ ३२ ॥
पज्जत्त संख गब्भय, तिरिय नरा निरयसत्तगे जंति,
निरय उवट्टा एएसु, उववज्जंति न सेसेसु ॥ ३३ ॥
पुढवी आउ वणस्सइ, मज्झे नारय विवज्जिया जीवा,
सव्वे उववज्जंति, निय निय कम्माणुमाणेण ॥ ३४ ॥
पुढवाइ दस पएसु, पुढवी आऊ वणस्सइ जंति,
पुढवाइ दस पएहिं, य तेऊ वाऊसु उववाओ ॥ ३५ ॥
तेऊ वाऊ गमणं, पुढवी पमुहम्मि होइ पय नवगे,
पुढवाइ ठाण दसगा, विगलाइतियं तहिं जंति ॥ ३६ ॥
गमणागमणं गब्भय, तिरियाणं सयल जीवठाणेसु,
सव्वत्थ जंति मणुआ, तेऊवाऊहिं नो जंति ॥ ३७ ॥
तिय [illegible] चउविह [illegible]
[illegible] नपुंसवेओ हवइ एगो ॥ ३[illegible]

पज्ज मणु थायरग्गि, वेमाणिय भवण निरय वतरिया,
जोइस चउ पण तिरिया, बेइदिय तेइदिय भू आउ ॥ ३९ ॥
वाऊ वणस्सइ च्चिय, अहिया अहिया कमेणिमे हुंति
सव्वे वि इमे भावा, जीवा भवेणतसो पत्ता ॥ ४० ॥
सपइ तुम्ह भत्तस्स, दडग-पय भमण भग्गहियथस्स,
दडतिय विरय सुलह, लहु मम दिंतु मुक्खपय ॥ ४१ ॥
सिरि जिणहस मुणीसर रज्जे सिरि धवलचद सीसेण.
गजसारेण लिहिया, अेसा विन्नत्ति अप्पहिया ॥ ४२ ॥

श्री लघु सग्रहणी प्रकरण मूल

नमिय जिण सव्वन्नु, जगपुज्ज जगगुरु महावीर,
जबूदीव पयत्थे, वुच्छ सुत्ता सपरहेऊ ॥ १ ॥
खडा जोयण वासा, पव्वय कूडा य तित्थ सेढीओ,
विजय दह सलिलाओ, पिडेसिं होइ सघयणी ॥ २ ॥
नउअ सय खडाण, भरहपमाणेण भाइए लक्खे,
अहवा नउअ सयगुण, भरह पमाण हवइ लक्ख ॥ ३ ॥
अहविग खडे भाहे, दो हिमवते अ हेमवइ चउरो,
अह महा हिमवते, सोलस खडाइ हरिवासे ॥ ४ ॥
बत्तीस पुण निसढे, मिलिआ तेसट्ठी बीयपासे वि,
चउसट्ठी उ विदेहे, तिरासि पिंडे नउय सय ॥ ५ ॥
जोयण परिमाणाइ समचउरसाइ इत्थ खडाइ,
लक्खस्स य परिहिए, तप्पाय गुणे य हुतेव ॥ ६ ॥
विक्खम वग्ग दह गुण, करणी वट्टस्स परिरओ होई,
विक्खम पाय गुणिओ, परिरओ तस्स गणियपय ॥ ७ ॥

परिही तिलक्ख सोलस, सहस्स दाय सय सत्तवीसहिया,
कोस तिगट्ठावीसं धणुसय तेरगुलद्धहिअ ॥ ८ ॥
सत्तेव य कोडि सया, नउआ छप्पन सय-सहस्साइ,
चउनउय च सहस्सा, सय दीवड्ढ च साहिय ॥ ९ ॥
गाउअमेग पनरस, धणुसया तह धणुणि पन्नरस,
सट्ठिं च अगुलाइ, जम्बूदीवस्स गणियपय ॥ १० ॥
भरहाइ सत्त वासा, वियड्ढ चउ चउर तीस वट्टियरे,
सोलस वक्खारगिरी, दो चित्त विचित्त दो जमगा ॥ ११ ॥
दोसय कणयगिरीण, चउ गयदता य तह सुमेरु य,
छ वासहरा पिंडे, एगुणसत्तरि सया दुन्नी ॥ १२ ॥
सोलस वक्खारेसु, चउ चउ कूडा य हुन्ति पत्तेय,
सोमणस गधमायण, सत्तड्ठ य रुप्पि महाहिमवे ॥ १३ ॥
चउतीस वियड्ढेसु, विज्जुप्पह निसढ नीलवतेसु,
तह माल्लवत सुरगिरि नव नव कूडाइ पत्तेय ॥ १४ ॥
हिमसिहरिसु इक्कारस, इय इगसट्ठी गिरीसु कूडाण,
एगत्ते सव्वधण, सय-चउरो सत्तसट्ठी य ॥ १५ ॥
चउ सत्त अट्ठ नवगे-, ग रस कूडेहिं गुणह जहसख,
सोलस दु दु गुणयाल, दुवे य सगसट्ठी सय चउरो ॥ १६ ॥
चउतीस विजएसु, उसह कूडा अट्ठ मेरु जबुम्मि,
अट्ठ य देवकुराए, हरिकूड हरिस्सहे सट्ठी ॥ १७ ॥
मागह वरदाम पभास, तित्थ विजयेसु एरवय भरहे,
चउतीसा ... दुरुत्तर सय तु तित्थाण ॥ १८
विज्जाहर ... सेढीओ दुन्नि दुन्नि वेअड्ढे,
इय ... छत्तीसमय तु सेढीण ॥ १९

चक्की जे अव्वाइ, विजयाइ इत्थ हुति चउवीसा,
मह दह छ पउमाइ, कुरुसु दसग त्ति सोलसग ॥ २० ॥
गंगा सिंधू रत्ता, रत्तवइ चउ नइओ पत्तेय,
चउदसहिं सहस्सेहिं, समग वच्चति जलहिंमि॥ २१ ॥
एव अब्भिंतरिया, चउरो पुण अट्ठवीस सहस्सेहिं,
पुणरवि छप्पन्नेहिं, सहस्सेहिं जति चउ सलिला ॥ २२ ॥
कुरुमज्झे चउरासी, सहस्साइ तह य विजय सोलसेसु,
बत्तीसाण नइण, चउदस सहस्साइ पत्तेयं ॥ २३ ॥
चउदस सहस्स गुणिया, अडतीस नइओ विजयमज्झिल्ला,
सीओयाए निवडति, तह य सीयाए एमेव ॥ २४ ॥
सीया सीओयाविय, बत्तीस सहस्स पच लक्खेहिं,
सव्वे चउदस लक्खा, छप्पन्न सहस्स मेलविया ॥ २५ ॥
उज्जोयणे मक्रोमे, गंगा सिंधूण वित्थरो मूले,
दसगुणिओ पज्जंते, इय दु दु गुणणेण सेसाण ॥ २६ ॥
जोयण सयमुच्चिट्ठा, कणयमया सिहरि चुल्ल हिमवंता,
रुप्पि महाहिमवंता, दुस उच्चा रुप्प कणयमया ॥ २७ ॥
चत्तारि जोयण सए, उच्चिट्ठो निसढ नीलवंतो य,
निसढो तवणिज्जमओ, वेरुलिओ नीलवंतगिरी ॥ २८ ॥
सव्वेवि पव्वयवरा, समयक्खित्तंमि मंदर विहूणा,
धरणितले उवगाढा, उस्सेह चउत्थ भायंमि ॥ २८ ॥
खडाइ गाहाहिं, दसहिं दारेहिं जंबुदीवस्स,
सघयणी सम्मत्ता, रइया हरिभद्दसूरिहिं ॥ ३० ॥

पहिले कर्मग्रन्थ की मूल गाथाएं

सिरिवीरजिणं वंदिय, कम्मविवागं समासओ वुच्छं ।
कीरइ जिएण हेउहिं, जेण तो भण्णए कम्मं ॥ १ ॥
पयइठिइरसपएसा, तं चउहा मोयगस्स दिट्ठंता ।
मूलपगइट्ठ उत्तर-पगई अडवन्नसयभेयं ॥ २ ॥
इह नाणदंसणावरण-वेयमोहाउनामगोयाणि ।
विग्घं च पणनवदुअ-ट्ठवीसचउतिसयदुपणविहं ॥ ३ ॥
मइसुयओहीमणके-वलाणि नाणाणि तत्थ मइनाणं ।
वंजणवग्गहचउहा, मणनयणविणिंदियचउक्का ॥ ४ ॥
अत्थुग्गहईहावा-यधारणा करणमाणसेहिं छहा ।
इय अट्ठवीसभेयं, चउदसहा वीसहा व सुयं ॥ ५ ॥
अक्खरसन्नीसम्मं, साइअं खलु सपज्जवसियं च ।
गमियं अंगपविट्ठं सत्त वि एए सपडिवक्खा ॥ ६ ॥
पज्जय अक्खरपयसं-घाया पडिवत्ति तह य अणुओगो ।
पाहुडपाहुडपाहुड-वत्थूपुव्वा य ससमासा ॥ ७ ॥
अणुगामिवड्ढमाणय-पडिवाइयरविहा छहा ओही ।
रिउमइ विउलमई मण-नाणं केवलमिगविहाणं ॥ ८ ॥
एसिं जं आवरणं, पडु व्व चक्खुस्स तं तयावरणं ।
दंसणचउ पण निद्दा, वित्तिसमं दंसणावरणं ॥ ९ ॥
चक्खुदिट्ठिअचक्खु-सेसिंदियओहिकेवलेहिं च ।
दंसणमिह सामन्नं, तस्सावरणं तयं चउहा ॥ १० ॥
सुहपडिबोहा निद्दा, निद्दानिद्दा य दुक्खपडिबोहा ।
पयला ठिओवविट्ठ-स्स पयलपयला उ चंकमओ ॥ ११ ॥

दिणचिंतियत्थकरणी, थीणद्धी अद्धचक्किअद्धबला ।
महुलित्तखग्गधारा–लिहणं व दुहा उ वेयणियं ॥ १२ ॥
ओसन्नं सुरमणुए, सायमसायं तु तिरियनरएसु ।
मज्जं व मोहणीयं, दुविहं दंसणचरणमोहा ॥ १३ ॥
दंसणमोहं तिविहं, सम्मं मीसं तहेव मिच्छत्तं ।
सुद्धं अद्धविसुद्धं, अविसुद्धं तं हवइ कमसो ॥ १४ ॥
जिअअजिअपुण्णपावा–सवसंवरबंधमुक्खनिज्जरणा ।
जेणं सद्दहइ तयं, सम्मं खइगाइबहुभेयं ॥ १५ ॥
मीसा न रागदोसो, जिणधम्मे अंतमुहु जहा अन्ने ।
नालियरदीवमणुणो, मिच्छं जिणधम्मविवरीयं ॥ १६ ॥
सोलस कसाय नव नो–कसाय दुविहं चरित्तमोहणीयं ।
अणअप्पच्चक्खाणा पच्चक्खाणा य संजलणा ॥ १७ ॥
जाजीव–वरिस–चउमा–सपक्खगा नरयतिरियनरअमरा ।
सम्माणुसव्वविरई–अहक्खायचरित्तघायकरा ॥ १८ ॥
जलरेणुपुढविपव्वय–राईसरिसो चउव्विहो कोहो ।
तिणिसलयाकट्ठट्ठिय–सेलत्थंभोवमो माणो ॥ १९ ॥
मायावलेहिगोमु–त्तिमिंढसिंगघणवंसिमूलसमा ।
लोहो हलिद्दखंजण–कद्दमकिमिरागसामाणो ॥ २० ॥
जस्सुदया होइ जिए, हास–रई–अरइ–सोग–भय–कुच्छा ।
सनिमित्तमन्नहा वा, तं इह हासाइमोहणियं ॥ २१ ॥
पुरिसित्थितदुभयं पइ, अहिलासो जव्वसा हवइ सो उ ।
थीनरनपुवेउदओ, फुंफुमतणनगरदाहसमो ॥ २२ ॥
सुरनरतिरिनरयाऊ, हडिसरिसं नामकम्म चित्तिसमं ।
बायालतिनवइविहं, तिउत्तरसयं च सत्तट्ठी ॥ २३ ॥

गइजाइतणुउवंगा, बंधण संघायणाणि संघयणा ।
संठाणवन्नगंधर-सफासअणुपुव्विविहगगइ ॥ २४ ॥
पिंडपयडित्ति चउदस, परघाउस्सासआयवुज्जोयं ।
अगुरुलहुतित्थनिमिणो-वघायमिय अट्ठ पत्तेया ॥ २५ ॥
तसबायरपज्जत्तं, पत्तेयथिरं सुभं च सुभगं च ।
सुसराइज्जजसं तस-दसगं थावरदसं तु इमं ॥ २६ ॥
थावरसुहुमअपज्ज, साहारणअथिरअसुभदुभगाणि ।
दुस्सरणाइज्जाजस-मिय नामे सेयरा वीसं ॥ २७ ॥
तसचउथिरछक्कं अथि-रछक्क सुहुमतिगथावरचउक्कं ।
सुभगतिगाइविभासा, तदाइसंखाहिं पयडीहिं ॥ २८ ॥
वण्णचउ अगुरुलहुचउ, तसाइ-दुति-चउर-छक्कमिच्चाइ ।
इअ अन्नावि विभासा तयाइसंखाहिं पयडीहिं ॥ २९ ॥
गइयाईण उ कमसो, चउपणपणतिपणपंचछछक्कं ।
पणदुगपणट्ठचउदुग, इय उत्तरभेयपणसट्ठी ॥ ३० ॥
अडवीसजुया तिनवइ, संते वा पनरबंधणे तिसयं ।
बंधणसंघायगहो, तणूसु सामण्णवण्णचऊ ॥ ३१ ॥
इय सत्तट्ठी बंधो-दए य न य सम्ममीसया बंधे ।
बंधुदए सत्ताए, वीसदुवीसट्ठवण्णसयं ॥ ३२ ॥
निरयतिरिनरसुरगइ, इगबियतियचउपणिंदिजाईओ ।
ओरालविउव्वाहा-रगतेयकम्मण पण सरीरा ॥ ३३ ॥
बाहूरु पिट्ठि सिर उर, उयरंग उवंग अंगुली पमुहा ।
सेसा अंगोवंगा, पढमतणुतिगस्सुवंगाणि ॥ ३४ ॥
उरलाइपुग्गलाणं, निबद्धबज्झंतयाण संबंधं ।
जं कुणइ जउसमं त [illegible] नेयं ॥ ३५ ॥

जं सघायइ उरला–इपुग्गले तणगण व दताली ।
त सघाय बधण–मिव तणुनामेण पचविह ॥ ३६ ॥
ओरालविउव्वाहा–रयाण सगतेयकम्मजुत्ताण ।
नवबधणाणि इयरदु–सहियाण तिन्नि तेसिं च ॥ ३७ ॥
सघयणमट्ठिनिचओ त छद्धा वज्जरिसहनाराय ।
तह रिसह नाराय नाराय अद्धनाराय ॥ ३८ ॥
कीलिय छेवट्ठ इह, रिसहो पट्टो य कीलिया वज्ज ।
उभओ मक्कडबधो, नाराय इममुरालगे ॥ ३९ ॥
समचउरस निग्गो–हसाइखुज्जाइ वामण हुड ।
सठाणा वण्णा किण्ह–नीललोहियहलिद्दसिया ॥ ४० ॥
सुरहिदुरही रसा पण, तित्तकडुकसायअबिला महुरा ।
फासागुरुलहुमिउखर–सीउण्हसिणिद्धरुक्खट्ठा ॥ ४१ ॥
नीलकसिण दुगध, तित्त कडुय गुरु खर रुक्ख ।
सीय च असुहनवग, इक्कारसग सुभ सेस ॥ ४२ ॥
चउहगइव्वणुपुव्वी, गइपुव्विदुग तिग नियाउजुय ।
पुव्वी उदओ वक्के, सुहअसुहवसुट्टविहगगई ॥ ४३ ॥
परघाउदया पाणी, परेसि बलिण पि होइ दुद्धरिसा ।
ऊससणलद्धिजुत्तो, हवेइ ऊसासनामवसा ॥ ४४ ॥
रविबिंबे उ जियग, तावजुय आयवाउ न उ जलणे ।
जमुसिणफासस्स तहिं, लोहियवन्नस्स उदउ त्ति ॥ ४५ ॥
अणुसिणपयासरूव, जियगमुज्जोयए इहुज्जोया ।
जइदेवुत्तरविक्किय–जोइसखज्जोयमाइ व्व ॥ ४६ ॥
अग न गुरु न लहुय, जायइ जीवस्स अगुरुलहुउदया ।
तित्थेण तिहुयणस्स वि, पुज्जो से उदओ केवलिणो ॥ ४७

अंगावगनियमणं, निम्माण कुणइ सुनहारसम ।
उवघाया उवहम्मइ, सतणुवयवलंबिगाईहिं ॥ ४८ ॥
बितिचउपणिंदिय तसा, बायरओ बायरा जिया थूला ।
नियनियपज्जत्तिजुया पज्जत्ता लद्धिकरणेहिं ॥ ४९ ॥
पत्तेय तणू पत्ते-उदयेण दंतअट्ठिमाइ थिरं ।
नाभुवरि सिराइ सुहं, सुभगाओ सव्वजणइट्ठो ॥ ५० ॥
सुसरा महुरसुहझुणी, आइज्जा सव्वलोयगिज्झवओ ।
जसओ जसकित्तीओ, थावरदसगं विवज्जत्थं ॥ ५१ ॥
गोयं दुहुच्चनीयं, कुलाल इव सुघडभुंभलाईयं ।
विग्घं दाणे लाभे, भोगुवभोगेसु वीरिए य ॥ ५२ ॥
सिरिहरियसमं एयं, जह पडिकूलेण तेण रायाई ।
न कुणइ दाणाईयं, एवं विग्घेण जीवो वि ॥ ५३ ॥
पडिणीयत्तणनिण्हव-उवघायपओस अंतराएणं ।
अच्चासायणयाए आवरणदुगं जिओ जयइ ॥ ५४ ॥
गुरुभत्तिखंतिकरुणा-वयजोगकसायविजयदाणजुओ
दढधम्माइ अज्जइ, सायमसाय विवज्जयओ ॥ ५५ ॥
उम्मग्गदेसणामग्ग-नासणादेवदव्वहरणेहिं ।
दंसणमोहं जिणमुणि-चेइयसंघाइपडिणीओ ॥ ५६ ॥
दुविहं पि चरणमोहं, कसायहासाइविसयविवसमणो ।
बंधइ निरयाउ महा-रंभपरिग्गहरओ रुद्दो ॥ ५७ ॥
तिरियाउ गूढहियओ, सढो ससल्लो तहा मणुस्साउ ।
पयईइ तणुकसाओ, दाणरुई मज्झिमगुणो य ॥ ५८ ॥
अविरयमाइ सुराउं, बालतवोकामनिज्जरो जयइ ।

साधु-साध्वी

सरलो अगारविड्ढो, सुहनाम अन्नहा असुहं ॥ ५९ ॥
गुणपेही मयरहियो, अज्झयणज्झावणारुइ निच्चं ।
पकुणइ जिणाइभत्तो, उच्चं नीयं इयरहा उ ॥ ६० ॥
जिणपूयाविग्घकरो, हिंसाइपरायणो जयइ विग्धं ।
इय कम्मविवागोऽयं, लिहियो देविंदसूरीहिं ॥ ६१ ॥

दूसरा कर्मग्रन्थ

तह थुणिमो वीरजिणं, जह गुणठाणेसु सयलकम्माइं ।
बंधुदओदीरणयासत्तापत्ताणि खवियाणि ॥ १ ॥
मिच्छे सासण मीसे अविरय देसे पमत्त अपमत्ते ।
नियट्टि अनियट्टि सुहुमुवसम खीण सजोगि अजोगिगुणा ॥ २ ॥
अभिनवकम्मग्गहणं, बंधो ओहेण तत्थ वीससयं ।
तित्थयराहारगदुगवज्जं मिच्छंमि सत्तरसयं ॥ ३ ॥
नरयतिगजाइथावरचउ, हुंडायवछिवट्ठ नपुमिच्छं ।
सोलंतो इगहियसय, सासणि तिरिथीणदुहगतिगं ॥ ४ ॥
अणमज्झागिइ संघयण चउ, निउज्जोय कुखगइत्थिति ।
पणवीसंतो मीसे चउसयरिदुआउअबंधा ॥ ५ ॥
सम्मे सगसयरि जिणाउ-बंधि वइर नरतिग बियकसाया ।
उरल दुगंतो देसे, सत्तट्ठी तिअ कसायंतो ॥ ६ ॥
तेवट्ठि पमत्ते सोग, अरइ अथिर दुग अजस अस्साय ।
वुच्छिज्ज छच्च सत्त व, नेइ सुराउ जयानिट्ठं ॥ ७ ॥

गुणसट्ठि अपमत्ते सुराउबंधं तु जइ इहागच्छे ।
अन्नह अट्ठावण्णा ज आहारगदुग बंधे ॥ ८ ॥
अडवन्न अपुव्वाइमि निद्द दुगंतो छपन्न पणभागे ।
सुरदुग पणिंदि सुखगई तसनव उरलविणु तणुवंगा ॥ ९ ॥
समचउरनिमिण जिणवण्ण अगुरुलहु चउ छलंसि तीसंतो ।
चरमे छवीस बंधो हासरई कुच्छभयभेओ ॥ १० ॥
अनियट्टि भागपणगे, इगेगहीणो दुवीसविहबंधो ।
पुम संजलण चउण्ह, कमेण छेओ सतरसुहुमे ॥ ११ ॥
चउदसणुच्चजसनाण विग्घदसगंति सोलसुच्छेओ ।
तिसु सायबंधछेओ सजोगिबंध तुणंतो अ ॥ १२ ॥
उदओ विवागवेयणमुदीरणमपत्ति इह दुवीससयं ।
सतरसयं मिच्छे मीस-सम्म-आहार-जिणणुदया ॥ १३ ॥
सुहुम-तिगायव-मिच्छं मिच्छंतं सासणे इगार-सयं ।
निरयाणुपुव्विणुदया अण-थावर-इग विगल-अंतो ॥ १४ ॥
मीसे सयमणुपुव्वी-णुदया मीसोदएण मीसंतो ।
चउसयमजए सम्माणुपुव्वि-खेवा बिय-कसाया ॥ १५ ॥
मणुतिरिणु पुव्विविउवट्ठ दुहग अणाइज्जदुग सतरछेओ ।
सगसीइ देसि तिरिगइ आउ निउज्जोय तिकसाया ॥ १६ ॥
अट्ठच्छेओ इगसी पमत्ति आहार-जुगल-पक्खेवा ।
थीणतिगाहारगदुग छेओ छस्सयरि अपमत्ते ॥ १७ ॥
सम्मत्तंतिमसंघयण तियगच्छेओ बिसत्तरि अपुव्वे ।
हासाइछक्कअंतो छसट्ठि अनियट्टिवेयतिगं ॥ १८ ॥
संजलणतिगं छच्छेओ सट्ठि सुहुमंमि तुरियलोभंतो ।
उवसंतगुणे गुणसट्ठि रिसहनाराय दुगअंतो ॥ १९

मगवन्न खीण–दुचरिमि निद्दुगंतो अ चरिमि पणवन्ना ।
नाणतरायदसण–चउछेओ सजोगि बायाला ॥ २० ॥
तित्थुदया उरलाथिरखगइदुपरित्ततिगछसठाणा ।
अगुरुलहुवन्न–चउ–निमिणतेयकम्माइसघयण ॥ २१ ॥
दूसरसूसरसायासाएगयर च तीस–वुच्छेओ ।
बारस अजोगि सुभगाइज्जजसन्नयरवेयणिय ॥ २२ ॥
तसतिग पणिंदि मणुयाउ गइजिणुच्चति चरम–समयतो ।
उदउव्वुदीरणा परमपमत्ताई सगगुणेसु ॥ २३ ॥
एसा पयडि–तिगुणा वेयणियाहार जुगलथीणतिग ।
मणुयाउ पमत्तता अजोगि अणुदीरगो भगव ॥ २४ ॥
सत्ता कम्माणठिई बधाई–लद्ध–अत्त–लाभाण ।
सते अडयाल–सय जा उवसमु विजिणु बियतइए ॥ २५ ॥
अपुव्वाइ–चउक्के अण–तिरि–निरयाउ विणु बियाल सयं ।
समाइ चउसु सत्तग–खयमि इगचत्त–सयमहवा ॥ २६ ॥
खवग तु पप्प चउसुवि पणयाल नरयतिरिसुराउविणा ।
सत्तगविणु अडतीस जा अनियट्टी पढममागो ॥ २७ ॥
थावरतिरिनिरयायव–दुग थीणतिगेग विगल साहार ।
सोलखओ दुवीससय बियसि बियतियकसायतो ॥ २८ ॥
तइयाइसु चउदस–तेर–बार–छ–पण–चउ–तिहियसयकमसो ।
नपुइत्थिहासछगपुस तुरिय कोहमयमायखओ ॥ २९ ॥
सुहुमि दुसय लोहतो खीण दुचरिमेगसओ दुनिद्दखओ ।
नवनवइ चरमसमए चउदसणनाणविग्घतो ॥ ३० ॥
पणसीइ सयोगि अजोगि दुचरिमे देवखगइ गधदुग ।
फासट्ट वन्नरस तणु बधणसघायपण निमिण ॥ ३१ ॥

सघयणअथिरसठाण–छक अगुरुलहुचउ अपज्जत्त ।
साय व असाय वा परित्तुवगतिग सुसर निय ॥ ३२ ॥
बिमयरिसओ य चरिमे तेरस मणुयतसतिग–जसाइज्ज ।
सुभगजिणुच्चपणिदिय –सायासाएगयरछेओ ॥ ३३ ॥
नरअणुपुव्वि विणा वा बारस चरिमसमयमि जो खविउ ।
पत्तो सिद्धिं देविंदवंदियं नमह तं वीरं ॥ ३४ ॥

तीसरा 'बन्धस्वामित्व' कर्मग्रन्थ

बधविहाणविमुक्कं, वदिय सिरिवद्धमाणजिणचन्दं ।
गइयाईसु वुच्छ, समासओ बधसामित्त ॥ १ ॥
जिणसुरविउव्वाहारदु–देवाउय नरयसुहुम विगलतिग ।
एगिंदिथावरायव–नपुमिच्छ हुडछेवट्ठ ॥ २ ॥
अणमज्झागिइ सघय–णकुखग नियइत्थिदुहगथीणतिग ।
उज्जोयतिरिदुग तिरि–नराउनरउरलदुगरिसह ॥ ३ ॥
सुरइगुणवीसवज्ज, इगसउ ओहेण बधहिं निरया ।
तित्थ विणा मिच्छि सय, सासणि नपुचउ विणा छनुई ॥ ४ ॥
विणु अण–छवीस मीसे, बिसयरि सममि जिणनराउजुया ।
इय रयणाइसु भगो, पकाइसु तित्थयरहीणो ॥ ५ ॥
अजिणमणुआउ ओहे, सत्तमिए नरदुगुच्च विणुमिच्छे ।
इगनवई सासाणे तिरिआउ नपुसचउवज्ज ॥ ६ ॥
अणचउवीसविरहिआ, सनरदुगुच्चा य सयरि मीसदुगे ।
सतरसउ ओहि मिच्छे, पज्जतिरिया विणु जिणाहारं ॥

विणु नरयमोल सासणि, सुराउ अणएगतीस विणु मीसे ।
ससुराउ सयरि सम्मे, बीयकसाए विणा देसे ॥ ८ ॥
इय चउगुणसु वि नरा, परमजया सजिण ओहु देसाई ।
जिणइकारस हीणं, नवसउ अपजत्ततिरियनरा ॥ ९ ॥
निरय व्व सुरा नवरं, ओहे मिच्छे इगिंदितिग सहिया ।
कप्पदुगे वि य एव जिणहीणो जोइभवणवणे ॥ १० ॥
रयणु व सणकुमारा,–इ आणयाई उज्जोयचउरहिया ।
अपज्जतिरिय व नवसय,–मिगिंदिपुढविजलतरुविगले ॥ ११ ॥
छनवइसासणि विणुसुहु- मतर केइ पुण बिंति चउनवइं ।
तिरियनराऊहिं विणा, तणु-पज्जत्तिं न ते जंति ॥ १२ ॥
ओहु पणिंदितसेगइ–तसे जिणिकार नरतिगुचविणा ।
मणवयजोगे ओहो, उरले नरभंगु तम्मिस्से ॥ १३ ॥
आहारछग विणोहे, चउदससउ मिच्छि जिणपणगहीणं ।
सासणि चउनवइ विणा, नरतिरिआऊ सुहुमतेर ॥ १४ ॥
अणचउवीसाइ विणा जिणपणजुय सम्मि जोगिणो साय ।
विणु तिरिनराउकम्मे, वि एवमाहारदुगि ओहो ॥ १५ ॥
सुर ओहो वेउव्वे, तिरियनराउरहिओ य तम्मिस्से ।
वेयतिगाइमबियतिय–कसाय नवदुचउपचगुणे ॥ १६ ॥
सजलणतिगे नव दस, ओहे च अजइ दुति अनाणतिगे ।
बारस अचक्खुचक्खुसु, पढमा अहखायचरमचऊ ॥ १७ ॥
मणनाणि सग जयाई, समइयछेय चउ दुन्नि परिहारे ।
केवलदुगि दो चरमा-ऽजयाइ नव मइसुओहिदुगे ॥ १८ ॥
अड उवसमि चउ वेयगि, खइये इक्कार मिच्छतिगि देसे ।
सुहुमि सठाण तेरस, आहारगि नियनियगुणोहो ॥ १९ ॥

परभुवसमि सट्टता, आउ न बधंति तेण अजयगुणे ।
देवमणुआउहीणो, देसाइसु पुण सुराउ विणा ॥ २० ॥
ओहे अट्ठारसयं, आहारदुगूण-माइलेसतिगे ।
तं तित्थोणं मिच्छे, साणाइसु सव्वहिं ओहो ॥ २१ ॥
तेउ नरयनवूणा, उज्जोयचउनरयबारविणु सुक्का ।
विणु नरयबार पम्हा, अजिणाहारा इमा मिच्छे ॥ २२ ॥
सव्वगुण भव्व-सन्निसु, ओहु अभव्वा असन्नि मिच्छसमा ।
सासणि असन्नि सन्निव्व, कम्मणभंगो अणाहारे ॥ २३ ॥
तिसु दुसु सुक्काइ-गुणा चउ सग तेरत्ति बंधसामित्तं ।
देविंदसूरिलिहियं, नेयं कम्मत्थयं सोउं ॥ २४ ॥

चौथा कर्मग्रन्थ

नमिय जिणं जिअमग्गण,-गुणठाणुवओगजोगलेसाओ ।
बंधप्पबहूभावे, संखिज्जाई किमवि वुच्छं ॥ १ ॥
इह सुहुमबायरेगिं,-दिबितिचउअसन्निसन्निपंचिंदी ।
अपजत्ता पज्जत्ता, कमेण चउदस जियट्ठाणा ॥ २ ॥
बायरअसन्निविगले अपज्जि पढमबिय सन्नि अपजत्ते ।
अजयजुअ सन्नि पज्जे, सव्वगुणा मिच्छ सेसेसु ॥ ३ ॥
अपजत्तछक्कि कम्मुर-लमीसजोगा अपज्जसन्नीसु ।
ते सविउव्वमीसएसु तणुपज्जेसु उरलमन्ने ॥ ४ ॥
सव्वे [illegible] पजत्ते, उरलं सुहुमे सभासु तं चउसु ।
[illegible] दुग, पजसन्निसु बार उवओगा ॥ ५

पजचउरिंदिअसनिसु, दुदस दु अनाण दसगु चक्खु विणा।
सनि अपज्जे मणना,-णचक्खुकेवलदुगविहुणा ॥ ६ ॥
सनिदुगे छलेस अप,-ज्जबायरे पढम चउ ति सेसेसु।
सत्तट्ठ बंधुदीरण, सतुदया अट्ठ तेरससु ॥ ७ ॥
सत्तट्ठछेगबंधा, संतुदया सत्तअट्ठचत्तारि।
सत्तट्ठछपंचदुगं, उदीरणा सनिपज्जत्ते ॥ ८ ॥
गइइंदिए य काये, जोए वेए कसायनाणेसु।
संजमदंसणलेसा, भवसम्मे सनिआहारे ॥ ९ ॥
सुरनरतिरिनिरयगई, इगबियतियचउपणिंदि छक्काया।
भूजलजलणानिलवणा, तसा य मणवयणतणुजोगा ॥ १० ॥
वेय नरित्थिनपुंसा, कसाय कोहमयमायलोभ त्ति।
मइसुयवहिमणकेवल,-विहंगमइसुअअनाण सागारा ॥ ११ ॥
सामाइछेयपरिहा,-रसुहुमअहखायदेसजयअजया।
चक्खुअचक्खूओही,-केवलदंसण अणागारा ॥ १२ ॥
किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्क भव्वियरा।
वेयगखइगुवसममिं,-च्छमीससासाण सनियरे ॥ १३ ॥
आहारेयर भेया सुरनरयविभंगमइसुओहिदुगे।
सम्मत्ततिगे पम्हा, सुक्का सन्नीसु सन्निदुगं ॥ १४ ॥
तमसनिअपज्जजुयं, नरे सबायरअपज्ज तेऊए।
थावर इगिंदि पढमा, चउ बार असन्नि दु दु विगले ॥ १५ ॥
दस चरम तसे अजया,-हारगतिरितणुकसायदुअनाणे।
पढमतिलेसाभवियर,-अचक्खुनपुमिच्छि सव्वे वि ॥ १६ ॥
पजसन्नी केवलदुग,-संजयमणनाणदेसमणमीसे।
पण चरमपज्ज वयणे, तिय छ य पज्जियर चक्खुंमि ॥ १७ ॥

थीनरपणिंदि चरमा, चउ अणहारे दु सनि छ अपज्जा ।
ते सुहुमअपज्ज विणा, सासणि इत्तो गुणे वुच्छं ॥ १८ ॥
पण तिरि चउ सुरनरए, नरसनिपणिंदिभव्वतसि सव्वे ।
इगविगलभूदगवणे, दु दु एग गइतसअभव्वे ॥ १९ ॥
वेयतिकसाय नव दस, लोभे चउ अजय दु ति अनाणतिगे ।
बारस अचक्खु चक्खुसु, पढमा अहखाइ चरम चउ ॥ २० ॥
मणनाणि सग जयाई, समइयछेय चउ दुन्नि परिहारे ।
केवलदुगि दो चरमा,-जयाइ नव मइ सुओहिदुगे ॥ २१ ॥
अड उवसमि चउ वेयगि, खइए इक्कार मिच्छतिगि देसे ।
सुहुमे य सठाण तेर, – स जोग आहार सुक्काए ॥ २२ ॥
असन्निसु पढमदुगं, पढमतिलेसासु छ च दुसु सत्त ।
पढमतिमदुगअजया, अणहारे मग्गणासु गुणा ॥ २३ ॥
सचेयरमीसअस, – च्चमोसमणवइविउव्वियाहारा ।
उरलं मीसा कम्मण, इय जोगा कम्ममणहारे ॥ २४ ॥
नरगइपणिंदितसतणु, – अचक्खुनरनपुकसायसमदुग ।
सनिछलेसाहारग, – भवमइसुओहिदुगे सव्वे ॥ २५ ॥
तिरिइत्थि अजयसासण, – अनाणउवसमअभव्वमिच्छेसु ।
तेराहारदुगूणा, ते उरलदुगूणा सुरनरए ॥ २६ ॥
कम्मुरलदुग थावरि, ते सविउव्विदुग पच इगि पवणे ।
छ असनि चरमवइजुय, ते विउवदुगूण चउ विगले ॥ २७ ॥
कम्मुरलमीसविणु मण, – वइसमइयछेयचक्खुमणनाणे ।
उरलदुगकम्मपढम, – तिममणवइ केवलदुगमि ॥ २८ ॥
मणवइउरला परिहा, – रि सुहुमि नव ते उ मीसि सविउव्वा ।
देसे सविउव्विदुगा, सकम्मुरलमीस अहक्खाए ॥ २९ ॥

ति अनाण नाण पण चउ, दसण बार जियलक्खणुवओगा ।
विणुमणनाणदुकेवल, नव सुरतिरिनिरय अजएसु ॥ ३० ॥
तसजोयवेयसुक्का, – हारनरपणिंदिसनिभवि सव्वे ।
नयणेयरपणलेसा, – कसाइ दस केवल दुगूणा ॥ ३१ ॥
चउरिंदिअसनिदुअना, – णदसण इगिबितिथावरि अचक्खु ।
तिअनाण दसणदुग, अनाणतिगअभवि मिच्छदुगे ॥ ३२ ॥
केवलदुगे नियदुग, नव तिअनाण विणु खइय अहखाये ।
दसणनाणतिगं दे, – सि मीसि अन्नाणमीस त ॥ ३३ ॥
मणनाणचक्खुवज्जा, अणहारि तिन्नि दसण चउनाणा
चउनाणसजमोवसम, – वेयगे ओहिदसे य ॥ ३४ ॥
दो तेर तेर बारस, मणे कमा अट्ठ दु चउ चउ वयणे ।
चउ दु पण तिन्नि काये, जियगुणजोगोवओगन्ने ॥ ३५ ॥
छसु लेसासु सठाण, एगिंदिअसनिभूदगवणेसु ।
पढमा चउरो तिन्नि उ, नारयविगलग्गिपवणेसु ॥ ३६ ॥
अहखायसुहुमकेवल – दुगि सुक्का छवि सेसठाणेसु ।
नरनिरयदेवतिरिया, थोवा दु असखणतगुणा ॥ ३७ ॥
पणचउतिदुएगिंदि, थोवा तिन्नि अहिया अणतगुणा ।
तस थोव असखग्गी, भूजलानिल अहिय वणणता ॥ ३८ ॥
मणवयणकायजोगा, थोवा असखगुण अणतगुणा ।
पुरिसा थोवा इत्थी, सखगुणाणतगुण कीवा ॥ ३९ ॥
माणी कोही माई लोही अहिय मणनाणिणो थोवा ।
ओहि असखामइसुय, अहियसम असख विब्भगा ॥ ४० ॥
केवलिणो णतगुणा, मइसुयअन्नाणि णतगुण तुल्ला ।
सुहुमा थोवा परिहा–र सख अहखाय सखगुणा ॥ ४१ ॥

छेयसमईय संखा, देस असंखगुण णंतगुण अजया ।
थोव असंखदुणंता, ओहिनयणकेवलअचक्खु ॥ ४२ ॥
पच्छाणुपुव्वि लेसा, थोवा दो संख णंत दो अहिया ।
अभवियर थोवणंता सासण थोवोवसम संखा ॥ ४३ ॥
मीसा संखा वेयग, असंखगुण खइयमिच्छ दु अणंता ।
सन्नियर थोव णंता,-णहार थोवेयर असंखा ॥ ४४ ॥
सव्व जियठाण मिच्छे, सग सासणि पण अपज्ज सन्निदुगं ।
सम्मे सन्नी दुविहो, सेसेसु सन्निपज्जत्तो ॥ ४५ ॥
मिच्छदुगअजइ जोगा,-हारदुगूणा अपुव्वपणगे उ ।
मणवइ उरलं सविउ,-व्व मीसि सविउव्वदुग देसे ॥ ४६ ॥
साहारदुग पमत्ते, ते विउवाहारमीस विणु इयरे ।
कम्मुरलदुगंताइम,-मणवयण सयोगि न अजोगी ॥ ४७ ॥
तिअनाणदुदंसाइम, दुगे अजइ देसि नाणदंसतिगं ।
ते मीसि मीसा समणा, जयाइ केवलदु अंतदुगे ॥ ४८ ॥
सासणभावे नाणं विउव्वगाहारगे उरलमिस्सं ।
नेगिंदिसु सासाणो नेहाहिगयं सुयमयं पि ॥ ४९ ॥
छसु सव्वा तेउतिगं इगि छसु सुक्का अयोगि अल्लेसा ।
बंधस्स मिच्छ अविरइ,-कसायजोग त्ति चउ हेऊ ॥ ५० ॥
अभिगहियमणभिगहिया,-भिनिवेसियसंसइयमणाभोगं ।
पण मिच्छ बार अविरइ मणकरणानियमु छजियवहो ॥ ५१ ॥
नव सोल कसाया पन,-र जोग इय उत्तरा उ सगवन्ना ।
इगचउपणतिगुणेसु,-चउतिदुगपच्चओ बंधो ॥ ५२ ॥
चउमिच्छमिच्छ अविरइ,-पच्चइया सायसोलपणतीसा ।
जोग विणु ... -हारगमिणरजनमेसाओ ॥ ५३ ॥



पणपन्न पन्न तियछहि,-अचत्त गुणचत्त छचउदुगवीसा।
सोलस दस नव नव स,-त्त हेउणो न उ अजोगिम्मि ॥ ५४ ॥
पणपन्न मिच्छि हारग,-दुगूण सासाणि पन्नमिच्छ विणा।
मिस्सदुगकम्मअणविणु, तिचत्त मीसे अह छचत्ता ॥ ५५ ॥
सदुमिस्सकम्म अजए, अविरइ कम्मुरलमीसविकसाये।
मुत्तु गुणचत्त देसे, छवीस साहारदु पमत्ते ॥ ५६ ॥
अविरइ इगारतिकसा,-यवज्ज अपमत्ति मीसदुगरहिया।
चउवीस अपुव्वे पुण, दुवीस अनिउव्वियाहारा ॥ ५७ ॥
अच्छहास सोल बायरि, सुहुमे दस वेयसंजलणति विणा।
खीणुवसंति अलोभा, सजोगि पुव्वुत्त सग जोगा ॥ ५८ ॥
अपमत्तंता सत्त,-ट्ठ मीस अप्पुव्वबायरा सत्त।
बंधइ छस्सुहुमो ए,-गमुवरिमा बंधगाऽजोगी ॥ ५९ ॥
आसुहुम संतुदये, अट्ठ वि मोह विणु सत्त खीणमि।
चउ चरिमदुगे अट्ठ उ, संते उवसंति सत्तुदए ॥ ६० ॥
उइरंति पमत्तंता, सगट्ठ मीसट्ठ वेयआउ विणा।
छग अपमत्ताइ तओ, छ पंच सुहुमो पणुवसंतो ॥ ६१ ॥
पण दो खीण दु जोगी,-णुदीरगु अजोगी थोव उवसंता।
संखगुण खीण सुहुमा,-नियट्टिअपुव्व सम अहिया ॥ ६२ ॥
जोगिअपमत्तइयरे, संखगुणा देससासणामीसा।
अविरय अजोगिमिच्छा, असंख चउरो दुवे णंता ॥ ६३ ॥
उवसमखयमीसोदय,-परिणामा दुनवट्ठारइगवीसा।
तिय भेय संनिवाइय, सम्मं चरणं पढमभावे ॥ ६४ ॥
बीए केवलजुयलं सम्मं दाणाइलद्धि पण चरणं।
तइए सेसुवओगा, पण लद्धी सम्मविरइदुगं ॥ ६५ ॥

अनाणमसिद्धत्ता, सन्नमन्नेमाकसायगइवेया ।
मिच्छ तुरिए भव्वा,—भव्वत्तजियत्त परिणामे ॥ ६६ ॥
चउ चउ गम्मु मीसग, परिणामुदएहिं चउ सखइएहिं ।
उवसमजुएहिं वा चउ, केवलि परिणामुदयखइए ॥ ६७ ॥
खयपरिणामे सिद्धा, नराण पणजोगुवसमसेढीए ।
इय पनर सन्निवाइय,—भेया वीस असंभविणो ॥ ६८ ॥
मोहेव समो मीसो, चउघाइसु अट्ठकम्मसु च सेसा ।
धम्माइ पारिणामिय,—भावे खधा उदइए वि ॥ ६९ ॥
सम्माइचउसु तिग चउ, भावा चउ पणुवसामगुवसंते ।
चउ खीणापुव्व तिन्नि, सेसगुणट्ठाणगेगजिए ॥ ७० ॥
संखिज्जेगमसंखं परित्तजुत्तनियपयजुय तिविहं ।
एवमणतं पि तिहा, जहन्नमज्झुक्कसा सव्वे ॥ ७१ ॥
लहुसंखिज्ज दुच्चिय, अओ परं मज्झिमं तु जा गुरुअं ।
जंबूदीवपमाणय,—चउपल्लपरूवणाइ इमं ॥ ७२ ॥
पल्लाणवट्ठियसला,—ग पडिसलागामहासलागक्खा ।
जोयणसहसोगाढा, सवेइयंता ससिहभरिया ॥ ७३ ॥
ता दीवुदहिसु इक्कि,—क्कसरिसवखिविय निट्ठिए पढमे ।
पढमं व तदन्तं चिय, पुण भरिए तंमि तह खीणे ॥ ७४ ॥
खिप्पइ सलागपल्ले,—गु सरिसवो इय सलागखवणेणं ।
पुन्नो बीयो य तओ, पुव्विं पि व तंमि उद्धरिए ॥ ७५ ॥
खीणे सलाग तइए, एव पढमेहिं बीययं भरसु ।
तेहिं तइय तेहि य, तुरियं जा किर फुडा चउरो ॥ ७६ ॥
पढमतिपल्लुद्धरिया, दीवुदही पल्लचउसरिसवा य ।
सव्वो वि एगरासी, रूवूणो परमसंखिज्जं ॥ ७७ ॥

रूवजुय तु परित्ता,-सह लहु अस्स रासि अन्मासे ।
जुत्तासखिज्जे लहु, आवलियासमयपरिमाणं ॥ ७८ ॥
बितिचउपचमगुणणे, कमा सगासख पढमचउसत्ता ।
णता ते रूवजुया, मज्झारूण गुरु पच्छा ॥ ७९ ॥
इय सुत्त अन्ने, वग्गियमित्तसि चउ थयमसख ।
होइ असखासख लहु रूवजुय तु त मज्झ ॥ ८० ॥
रूवूणमाइम गुरु तिवग्गिउ त इमे दस क्खेवे ।
लोगाकासपएसा, धम्माधम्मेगजियदेसा ॥ ८१ ॥
ठिइबधज्झवसाया, अणुभागा जोगछेयपलिभागा ।
दुण्ह य समाण समया, पत्तेयनिगोयए खिवसु ॥ ८२ ॥
पुणरवि तमि तिवग्गिय, परित्तणत लहु तस्स रासीण ।
अन्मासे लहु जुत्ता, णत अभव्वजियपमाण ॥ ८३ ॥
तव्वग्गे पुण जायइ, णताणत लहु त च तिक्खुत्तो ।
वग्गसु तह वि न त हो,-इ णत खेवे खिवसु छ इमे ॥ ८४ ॥
सिद्धा निगोयजीवा, वणस्सई कालपुग्गला चेव ।
सव्वमलोगनह पुण, तिवग्गिउ केवलदुगमि ॥ ८५ ॥
खित्तेणताणत, हवेइ जिट्ठ तु ववहरइ मज्झ ।
इय सुहुमत्थवियारो, लिहिओ देविंदसूरीहि ॥ ८६ ॥

अथ शतक नामा पचम कर्मग्रथ

नमिअ जिण धुवबधो-दयसत्ता घाइपुन्नपरिअत्ता
सेअर चउविभागा, वुच्छ बधविह सामी अ ॥ १ ॥

वनचउतेअकम्मा,–गुरुलहुनिमिणोवघायभयकुच्छा,
मिच्छकसायावरणा, विग्घं धुवबंधि सगचत्ता ॥ २ ॥
तणुवंगागिइसंघयण, जाइगइखगइपुव्विजिणुसासं,
उज्जोआयवपरघा–तसवीसा गोअवेअणिअं ॥ ३ ॥
हासाइजुअलदुगवेअ–आउ तेवुत्तरी अधुवबंधी (घा);
भंगा अणाइसाई, अणंतसंतुत्तरा चउरो ॥ ४ ॥
पढमबिआ धुवउदइसु, धुवबंधिसु तइअवज्जभंगतिगं,
मिच्छंमि तिन्नि भंगा दुहावि अधुवा तुरिअभंगा ॥ ५ ॥
निमिणथिरअथिरअगुरुअ–सुहअसुहतेअकम्मचउवन्ना,
नाणंतरायदंसण, मिच्छं धुवउदय सगवीसा ॥ ६ ॥
थिरसुभिअर विणु अधुव,–बंधी मिच्छविणुमोहधुवबंधी,
निद्दोवघायमीसं, सम्मं पणनवइ अधुवुदया ॥ ७ ॥
तसवन्नवीससगतेअ,–कम्म धुवबंधी सेस वेअतिगं,
आगिइतिग वेअणिअं, दुजुअल सगउरलुसासचउ ॥ ८ ॥
खगइतिरिदुग नीअं धुवसंता सम्म मीसमणुयदुग,
विउव्विक्कार जिणाऊ हारसगुच्चा अधुवसंता ॥ ९ ॥
पढमतिगुणेसु मिच्छं, नियमा अजयाइअट्ठगे भज्जं,
सासाणे खलु सम्मं संतं मिच्छाइदसगे वा ॥ १० ॥
सासणमीसेसु धुवं, मीसं मिच्छाइनवसु भयणाए,
आइदुगे अण नियमा, भइआ मीसाइनवगंमि ॥ ११ ॥
आहारसत्तगं वा, सव्वगुणे बितिगुणे विणा तित्थं,
नोभयसंते मिच्छो, अंतमुहुत्तं भवे तित्थे ॥ १२ ॥
केवलजुअलावरणा, पण निद्दा बारसाइमकसाया,
मिच्छं ति सव्वघाई, चउनाणतिदंसणावरणा ॥ १३ ॥

सजलण नोकसाया, निघ इअ दसघाइ य अघाई;
पत्तेयतणुऽट्ठाऊ, तसवीसा गोअदुगवन्ना ॥ १४ ॥
सुरनरतिगुच्चसाय तसदसतणुवंग वइरचउरंस,
परघासगतिरिआउं, वन्नचउपणिंदि सुभखगई ॥ १५ ॥
बायाल पुण्णपगई अपढमसंठाणखगइसंघयणा,
तिरिदुगअसायनीओ, -वघायइगविगलनिरयतिगं ॥ १६ ॥
थावरदसवन्नचउक्का, घाइ पणयाल सहिअ बासीई,
पावपयडि त्ति दोसु वि वन्नाइगहा सुहा असुहा ॥ १७ ॥
नामधुवबंधिनवगं दसण पण नाण विग्घ परघायं,
भयकुच्छमिच्छसासं, जिण गुणतीसा अपरिअत्ता ॥ १८ ॥
तणुअट्ठ वेअदुजुअल, कसाय उज्जोअगोअदुग निद्दा,
तसवीसाउ परित्ता, खित्तविवागाऽणुपुव्वीओ ॥ १९ ॥
घणघाइदुगोअजिणा, तसिअरतिगसुभगदुभगचउसास,
जाइतिग जिअविवागा, आऊ चउरो भवविवागा ॥ २० ॥
नामधुवोदयचउतणु, -वघायसाहारणिअरजोअतिगं,
पुग्गलविवागिबंधो, पयइठिइरसपएस त्ति ॥ २१ ॥
मूलपयडीण अडसत्त, छेगबंधेसु तिन्नि भूगारा ।
अप्पतरा तिअ चउरो, अवट्ठिओ न हु अवत्तव्वो ॥ २२ ॥
एगादहिगे भूओ, एगाइ ऊणगम्मि अप्पतरो ।
तम्मत्तोऽवट्ठियओ, पढमे समए अवत्तव्वो ॥ २३ ॥
नव छ चउ दंसे दु दु, ति दु मोहे दु इगवीस सत्तरस ।
तेरस नव पण चउ ति दु, इक्को नव अट्ठ दस दुन्नि ॥ २४ ॥
तिपण छअट्ठनवहिआ, वीसा तीसेगतीस इग नामे ।
छस्सगअट्ठतिबंधा सेसेसु य ठाणमिक्किक्कं ॥ २५ ॥

वीसयरकोडिकोडि, नामे गोए अ सत्तरी मोहे ।
तीसियरचउसु उदही निरयसुराउमि तित्तीसा ॥ २६ ॥
मुत्तु अकसायठिइ, बार मुहुत्ता जहन्न वेअणिए ।
अट्ठट्ठ नामगोएसु, सेसएसु मुहुत्तंतो ॥ २७ ॥
विग्घावरण असाए, तीस अट्ठार सुहुमविगलतिगे ।
पढमागिइसंघयणे, दस दुसुवरिमेसु दुगवुड्ढी ॥ २८ ॥
चालीस कसाएसु, मिउलहुनिद्धुण्हसुरहिसिअमहुरे ।
दस दोसड्ढ समहिआ, ते हालिद्दंबिलाईण ॥ २९ ॥
दस सुहविहगइउच्चे, सुरदुगथिरछक्कपुरिसरइहासे ।
मिच्छे सत्तरि मणुदुग इत्थी साएसु पन्नरस ॥ ३० ॥
भयकुच्छअरइसोए, विउव्वितिरिउरलनिरयदुगनीए ।
तेअ पण अथिरछक्के, तस चउ थावर इग पणिंदी ॥ ३१ ॥
नपुकुखगइसासचउ-गुरुकक्खडरुक्खसीयदुग्गंधे ।
वीसं कोडाकोडी एवइआबाह वाससया ॥ ३२ ॥
गुरु कोडिकोडि अंतो, तित्थाहाराण भिन्नमुहु बाहा ।
लहु ठिइ संखगुणूणा, नरतिरिआणाउ पल्लतिगं ॥ ३३ ॥
इगविगल पुव्वकोडी पलिआऽसंखंस आउ चउ अमणा ।
निरुवक्कमाण छमासा, अबाह सेसाण भवतंसो ॥ ३४ ॥
लहुठिइबंधो संजलण-लोहपणविग्घनाणदंसेसु ।
भिन्नमुहुत्तं ते अट्ठ, जसुच्चे बारस य साए ॥ ३५ ॥
दोइगमासो पक्खो संजलणतिगे पुमट्ठवरिसाणि ।
सेसाणुक्कोसाओ, मिच्छत्तठिइइ जं लद्धं ॥ ३६ ॥

[illegible]

कममो पणवीसाए, पना सय सहस सगुणिओ ॥ ३७॥
निगल्असखिंसु जिट्ठा पणिट्ठओ पहसखभागूणो;
सुरनिरयाउ समा दस, सहस्स सेसाउ खुड्डभव ॥ ३८ ॥
सव्वाण वि लहुबंध, भिन्नमुहू अबाह आउजिट्ठेवि,
केइ सुराउसम जिण, – मतमुहू बिंति आहार ॥ ३९ ॥
सत्तरस समहिआ किर इगाणुपाणंमि हुंति खुड्डभवा,
सगतीससयतिहुत्तर, पाणू पुण इगमुहुत्तंमि ॥ ४० ॥
पणसट्ठि सहस पण सय, छत्तीसा इगमुहुत्तखुड्डभवा,
आवलिआण दो सय, छप्पन्ना एगखुड्डभवे ॥ ४१ ॥
अविरयसम्मो तित्थ आहारदुगामराउ य पमत्तो;
मिच्छद्दिट्ठी बधइ, जिट्ठठिइं सेस पयडीण ॥ ४२ ॥
विगलसुहुमाउगतिग, तिरिमणुआ सुरविउव्विनिरयदुग,
एगिंदियाथावरायव आईसाणा सुरुक्कोसं ॥ ४३ ॥
तिरिउरलदुगुज्जोअ छिवट्ठ सुरनिरय सेस चउगइआ,
आहारजिणमपुव्वो, – ऽनिअट्ठिसंजलणपुरिसऽहू ॥ ४४ ॥
साय जसुच्चावरणा, विग्घ सुहुमो विउव्विछ असन्नी,
सन्नी वि आउ बायर – पज्जगिंदी उ सेसाण ॥ ४५ ॥
उक्कोसजहन्नेअर, भगा साइ अणाइ धुव अधुवा;
चउहा सग अजहन्नो, सेसतिगे आउचउसु दुहा ॥ ४६ ॥
चउभेओ अजहन्नो, संजलणावरणनवगविग्घाण,
सेसतिगि साइ अधुवो, तह चउहा सेसपयडीण ॥ ४७ ॥
साणाइअपुव्वंते, अयरतो कोडिकोडिओ नहिगो,
बधो न हु हीणो न य मिच्छे भव्विअरसंनिंमि ॥ ४८ ॥

जइन्दुभयो वायर पज्ज असंखगुण सुहुमपज्जऽहिगो,
एसिं अपज्जाण लहू, सुहुमेअर अपज्जपज्जगुरु ॥ ४९ ॥
लहु बिअपज्जअपज्जे, अपजअर बिअगुरूऽहिगो एवं,
तिचउअसन्निसु नवरं संखगुणो बिअअमणपज्जे ॥ ५० ॥
ता जइनिट्ठो बंधो, संखगुणो देसविरयहस्सिअरो,
सम्मचउ सन्निचउरो ठिइबंधाणुक्कम संखगुणा ॥ ५१ ॥
सव्वाणवि जिट्ठठिइ, असुभा ज साइसंकिलेसेण,
इयरा विसोहिओ पुण मुत्तु नरअमरतिरिआउ ॥ ५२ ॥
सुहुमनिगोआइखण – प्पजोग बायर य विगलअमणमणा,
अपज्जलहु पढमदुगुरु पजहस्सिअरो असंखगुणो ॥ ५३ ॥
अपजत्ततसुक्कोसो पज्जजहन्निअरु एव ठिइठाणा,
अपजेअर संखगुणा, परमपजबिए असंखगुणा ॥ ५४ ॥
पइखणमसंखगुणविरिअ अपजपइठिइमसंखलोगसमा,
अज्झवसाया अहिआ, सत्तसु आउसु असंखगुणा ॥ ५५ ॥
तिरिनिरयतिजोआण नरभवजुअ सचउपल्ल तेसट्ठं,
थावरचउइगविगला – यवेसु पणसीइसयमयरा ॥ ५६ ॥
अपढमसंघयणागिइ – खगईअणमिच्छदुहगथीणतिगं,
निअनपुइत्थि दुतीसं पणिंदिसु अबंधठिइ परमा ॥ ५७ ॥
विजयाइसु गेविज्जे तमाइ दहिसय दुतीस तेसट्ठं,
पणसीइ सययबंधो, पल्लतिगं सुरविउव्विदुगे ॥ ५८ ॥
समयादसंखकालं, तिरिदुगनीएसु आउ अंतमुहू,
उरलि असंखपरट्टा, सायठिइ पुव्वकोडूणा ॥ ५९ ॥
जलहिसय पणसीअं, परघुस्सासे पणिंदि तसचउगे,
बत्तीसं सुहविहगइ, पुमसुभगतिगुच्च चउरंसे ॥ ६० ॥

असुखगइजाइआगिइ, संघयणाहारनिरयजोअदुगं;
थिरसुभनमयावरदस, नपुइत्थी दुजुअलमसायं ॥ ६१ ॥
समयादसंखमुहुत्तं, मणुदुगजिणवइरउरलुवंगेसु;
तित्तीसयरा परमो अंतमुहू लहूवि आउजिणे ॥ ६२ ॥
तिव्वो असुहसुहाण संकेसविसोहिओ विवज्जयओ,
मंदरसो गिरिमहिरय,-जलरेहासरिसकसाएहिं ॥ ६३ ॥
चउठाणाइ असुहो, सुहऽन्नहा विग्धदेसघाइआवरणा,
पुमसंजलणिगदुतिचउ-ठाणरसा सेस दुगमाइ ॥ ६४ ॥
निंबुच्छुरसो सहजो दुतिचउभागकढिइक्कभागंतो,
इगठाणाइ असुहो, असुहाण सुहो सुहाणं तु ॥ ६५ ॥
तिव्वमिगथावरायव सुरमिच्छाविगलसुहुमनिरयतिगं,
तिरिमणुआउ तिरिनरा, तिरिदुगछेवट्ठ सुरनिरया ॥ ६६ ॥
विउविसुराहारदुगं सुखगइवन्नचउतेअजिणसाय,
समचउपरघातसदस, पणिंदिसासुच्च खवगा उ ॥ ६७ ॥
तमतमगा उज्जोअं, सम्मसुरा मणुअउरलदुगवइरं,
अपमत्तो अमराउं, चउगइ मिच्छा उ सेसाणं ॥ ६८ ॥
थीणतिगं अणमिच्छं मंदरसं संजमुम्मुहो मिच्छो,
बिअतिअकसाय अविरय-देसपमत्तो अरइसोए ॥ ६९ ॥
अपमाइ हारगदुगं, दुनिद्दअसुवन्नहासरइकुच्छा,
भयमुवघायमपुव्वो, अनिअट्ठी पुरिससंजलणे ॥ ७० ॥
विग्घावरणे सुहुमो, मणुतिरिआ सुहुमविगलतिगआउ,
वेउव्विछक्कममरा निरया उज्जोअउरलदुगं ॥ ७१ ॥
तिरिदुगनिअं तमतमा जिणमविरयनिरयविणिगथावरयं,
आसुहमायव सम्मो व सायथिरसुभजसा सिअरा ॥ ७२ ॥

तसवन्नतेअचउमणु खगइदुग पणिंदि सासपरघुच्चं;
संघयणागिइनपुंथी सुभगिअरतिमिच्छचउगइआ ॥ ७३ ॥
चउतेअवन्न वेअणिअ–नामणुक्कोस सेसधुवबंधी;
घाईण अजहन्नो गोए दुविहो इमो चउहा ॥ ७४ ॥
सेसंमि दुहा, इग दुग–णुगाइ जा अभवणंतगुणिआणू,
खंधा उरलोचिअवग्गणा उ तह अगहणंतरिआ ॥ ७५ ॥
एमेव विउव्वाहार,–तेअभासाणुपाणमणकम्मे,
सुहुमा कमावगाहो, ऊणूणंगुलअसंखंसा ॥ ७६ ॥
इक्किक्कहिआ सिद्धा–णंतंसा अंतरेसु अग्गहणा,
सव्वत्थ जहन्नुचिआ, निअणंतंसाहिआ जिट्ठा ॥ ७७ ॥
अंतिमचउफासदुगंध,–पंचवन्नरसकम्मखंधदलं,
सव्वजिअणंतगुणरसं, अणुजुत्तमणंतयपएसं ॥ ७८ ॥
एगपएसोगाढं निअसव्वपएसओ गहेइ जिओ,
थोवो आउ तदंसो, नामे गोए समो अहिओ ॥ ७९ ॥
विग्घावरणे मोहे सव्वोवरि वेअणीइ जेणप्पे,
तस्स फुडत्तं न हवइ, ठिईविसेसेण सेसाणं ॥ ८० ॥
निअजाइलद्धदलिआ–णंतंसो होइ सव्वघाईणं,
बज्झंतीण विभज्जइ, सेसं सेसाण पइसमयं ॥ ८१ ॥
सम्मदरसव्वविरई, अणवीसंजोअदंसखवगे अ,
मोहसमसंतखवगे खीणसजोगिअरगुणसेढी ॥ ८२ ॥
गुणसेढी दलरयणा–णुसमयमुदयादसंखगुणणाए,
एयगुणा पुण कमसो, असंखगुणनिज्जरा जीवा ॥ ८३ ॥
पलिआसंखंसमुहू, सासणइअरगुणअंतरं हस्सं,
गुरु मिच्छि बे छसट्ठी इअरगुणे पुग्गलद्धंतो ॥ ८४ ॥

उद्धारअद्धाखित्त पलिअ तिहा समयवाससयसमए,
केसवहारो दीवो – दहिआउतसाइपरिमाण ॥ ८५ ॥
दव्वे खित्ते काले, भावे चउह दुह बायरो सुहुमो,
होइ अणतुस्सप्पिणी – परिमाणो पुग्गलपरट्टो ॥ ८६ ॥
उरलाइसत्तगेण एगजिओ मुअइ फुसिअ सव्व अणू,
जत्तिअकालि स थूलो, दव्वे सुहुमा सगन्नयरा ॥ ८७ ॥
लोगपएसोसप्पिणि – समया अणुभागबंधठाणा य,
जहतह कममरणेण पुट्ठा खित्ताइथूलिअरा ॥ ८८ ॥
अप्पयरपयडिबंधी, उक्कडजोगी अ सन्निपज्जत्तो,
कुणइ पएसुक्कोस, जहन्नय तस्स वच्चासे ॥ ८९ ॥
मिच्छ अजय चउ आऊ बितिगुण–विणुमोहिसत्तमिच्छाइ,
छण्ह सतरससुहुमो अजया देसा बितिकसाए ॥ ९० ॥
पणअनिअट्ठीसुखगइ, नराउसुरसुभगतिगविउव्विदुग,
समचउरसमसाय वइर मिच्छो व सम्मो वा ॥ ९१ ॥
निद्दापयलादुजुअल – भयकुच्छातित्थ सम्मगो सुजई,
आहारदुग सेसा उक्कोसपएसगा मिच्छो ॥ ९२ ॥
सुमुणी दुन्नि असन्नी निरयतिगसुराउसुरविउव्विदुग ।
सम्मो जिण जहन्न सुहुमनिगोआइखणि सेसा ॥ ९३ ॥
दंसणछगभयकुच्छा बितितुरिअकसायविग्घनाणाण,
मूलछगेऽणुक्कोसो चउह दुहा सेसि सव्वत्थ ॥ ९४ ॥
सेढिअसखिज्जंसे जोगट्ठाणाणि पयडिठिइभेआ,
ठिइबंधज्झवसाया – णुभागठाणा असखगुणा ॥ ९५ ॥
तत्तो कम्मपएसा अणतगुणिआ तओ रसच्छेआ,
जोगा पयडिपएस ठिइअणुभाग कसायाओ ॥ ९६ ॥

चउदसरज्जू लोगो, बुद्धिकओ सत्तरज्जुमाणघणो,
तद्दीहेगपएसा सेढी पयरो अ तव्वग्गो ॥ ९७ ॥
अणदंसनपुंसित्थी वेअच्छक्कं च पुरिसवेअं च,
दो दो एगंतरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥ ९८ ॥
अणमिच्छमीससम्मं, तिआउइगविगलथीणतिगुज्जोअं,
तिरिनिरयथावरदुगं साहारायवअडनपुत्थी ॥ ९९ ॥
छगपुमसंजलणा दो – निद्दाविग्घावरणखए नाणी,
देविंदसूरिलिहिअं सयगमिणं आयसरणट्ठा ॥ १०० ॥

अथ सप्ततिकानामा षष्ठ कर्मग्रन्थ

सिद्धपएहिं महत्थं बंधोदयसंतपयडिठाणाणं,
वुच्छं सुण संखेवं नीसंदं दिट्ठिवायस्स ॥ १ ॥
कइ बंधंतो वेयइ ? कइ कइ वा संतपयडिठाणाणि ?
मूलुत्तर पगईसु भंगविगप्पा मुणेअव्वा ॥ २ ॥
अट्ठविहसत्तछब्बंधएसु, अट्ठेव उदयसंतंसा,
एगविहे तिविगप्पो एगविगप्पो अबंधंमि ॥ ३ ॥
सत्तट्ठबंध अट्ठुदय-संत तेरससु जीवठाणेसु,
एगंमि पंच भंगा दो भंगा हुंति केवलिणो ॥ ४ ॥
अट्ठसु एगविगप्पो छस्सुवि गुणसन्निएसु दुविगप्पो,
पत्तेअं पत्तेअं बंधोदयसंतकम्माणं ॥ ५ ॥
पंचनवदुन्निअट्ठा-वीसा चउरो तहेव बायाला,
दुन्नि अ पंच य भणिया पयडीओ आणुपुव्वीए ॥ ६ ॥

बधोदयसतंसा नाणावरणतराइए पच,
बधोवरमेवि उदय-सतसा हुति पचेव ॥ ७ ॥
बधस्स य सतस्स य पगइट्ठाणाइ तिण्णि तुल्लाइ,
उदयट्ठाणाइँ दुवे चउ पणग दसणावरणे ॥ ८ ॥
बिआवरणे नवबधगेसु, चउपच उदय नव सता;
छचउबधे चेव चउबधुदए छलसा य ॥ ९ ॥
उवरयबधे चउ पण नवस चउरुदय छच चउ सता,
वेअणि आउय गोए विभज्ज मोह पर वुच्छ ॥ १० ॥
गोअमि सत्त भगा, अट्ठ य भगा हवति वेअणिए,
पण नव नव पण भगा आउचउक्के वि कमसो उ ॥ ११ ॥
बावीस इक्कवीसा, सत्तरस तेरसेव नव पच,
चउ तिग दुग च इक्क बधठाणाणि मोहस्स ॥ १२ ॥
एग व दो व चउरो एत्तो एगाहिआ दसुक्कोसा,
ओहेण मोहणिज्जे उदयट्ठाणाणि नव हुति ॥ १३ ॥
अट्ठ य सत्त य छ च्चउ, तिग दुग एगाहिआ भवे वीसा,
तेरस बारिक्कारस, इत्तो पचाइ एगूणा ॥ १४ ॥
सतस्स पयडिठाणाणि ताणि मोहस्स हुति पन्नरस,
बधोदयसते पुण भगविगप्पा बहू जाण ॥ १५ ॥
छब्बावीसे चउ इगवीसे, सत्तरस तेरसे दो दो,
नवबधगे वि दुण्णि उ इक्किक्कमओ पर भगा ॥ १६ ॥
दस बावीसे नव इगवीसे सत्ताइ उदयकम्मसा,
छाइ नव सत्तरसे, तेरे पचाइ अट्ठेव ॥ १७ ॥
चत्तारिआइ नवबधएसु उक्कोस सत्तमुदयसा,
पचविहबधगे पुण उदओ दुण्ह मुणेअव्वो ॥ १८ ॥

इत्तो चउबंधाई, इक्किक्कुदया हवंति सव्वेवि,
बंधोवरमे वि तहा, उदयाभावे वि वा हुज्जा ॥ १९ ॥
इक्क छव्विक्कारस, दस सत्त चउक्क इक्कग चेव,
एए चउवीसगया, बार दुगिक्कंमि इक्कारा ॥ २० ॥
नव तेसीइसएहिं, उदयविगप्पेहि मोहिआ जीवा,
अउणुत्तरिसीआला, पयविंदसएहि विन्नेआ ॥ २१ ॥
नवपंचाणउअसए उदयविगप्पेहिं मोहिआ जीवा
अउणुत्तरि एगुत्तरि पयविंदसएहिं विन्नेआ ॥ २२ ॥
तिन्नेव य बावीसे इगवीसे अट्ठवीस सत्तरसे,
छच्चेव तेर नव ब- धगेसु पंचेव ठाणाणि ॥ २३ ॥
पंचविहचउविहेसु, छ छक्क सेसेसु जाण पंचेव,
पत्तेअं पत्तेअं चत्तारि अ बंधवुच्छेए ॥ २४ ॥
दसनवपनरसाइं, बंधोदयसंतपयडिठाणाणि,
भणिआणि मोहणिज्जे इत्तो नामं परं वुच्छं ॥ २५ ॥
तेवीस पण्णवीसा, छव्वीसा अट्ठवीस गुणतीसा,
तीसेगतीसमेगं, बंधट्ठाणाणि नामस्स ॥ २६ ॥
चउपणवीसा सोलस, नव बाणउईसया य अडयाला,
एयालुत्तरछाया – लसया इक्किक्कबंधविही ॥ २७ ॥
वीसिगवीसा चउवी – सगा उ एगाहिआ य इगतीसा,
उदयट्ठाणाणि भवे नव अट्ठ य हुंति नामस्स ॥ २८ ॥
इक्कबिआलिक्कारस तित्तीसा छस्सयाणि तित्तीसा,
बारससत्तरससयाण – हिगाणि बिपंचसीईहिं ॥ २९ ॥

अउणत्तीमिक्कारस, सयाणिहिअ सत्तरपचमट्ठीहिं,
इक्किक्कग च वीसा, दट्टुदयंतेसु उदयविहि ॥ ३० ॥
ति दुनउइ गुणनउइ, अडसी छल्सी असीइ गुणसीइ;
अट्ठयछप्पन्नत्तरि, नव अट्ठ य नामसंताणि ॥ ३१ ॥
अट्ठ य बारस बारस, बंधोदयसंतपयडिठाणाणि,
ओहेणाएसेण य, जत्थ जहासंभव विभजे ॥ ३२ ॥
नव पणगोदयसंता, तेवीसे पन्नवीस छव्वीसे,
अट्ठ चउरट्ठवीसे नव सत्ति गुणतीस तीसम्मि ॥ ३३ ॥
एगेगमेगतीसे एगे एगुदय अट्ठ संतम्मि,
उवरयबंधे दस दस वे यग संतम्मि ठाणाणि ॥ ३४ ॥
तिविगप्पपगइठाणेहिं, जीवगुणसन्निएसु ठाणेसु;
भंगा पउजियव्वा, ज थ जहासंभवो भवइ ॥ ३५ ॥
तेरससु जीवसखेवएसु नाणतरायतिविगप्पो,
इक्कम्मि तिदुविगप्पो करण पइ इत्थ अविगप्पो ॥ ३६ ॥
तेरे नव चउ पणग नव संतेगम्मि भगमिक्कारा,
वेअणिआउयगोए, विभज्ज मोह पर वुच्छ ॥ ३७ ॥
पज्जत्तगसन्निअरे, अट्ठ चउक्कं च वेअणियभंगा,
सत्त य तिग च गोए, पत्तेअ जीवठाणेसु ॥ ३८ ॥
पज्जत्ताऽपज्जत्तग, समणे पज्जत्तअमण सेसेसु,
अट्ठावीस दसग नवग पणग च आउस्स ॥ ३९ ॥
अट्ठसु पचसु एगे, एग दुग दस य मोहबंधगए,
तिग चउ नव उदयगए, तिग तिग पन्नरस संतम्मि ॥ ४० ॥
पण दुग पणग पण चउ, पणग पणगा हवंति तिन्नेव,
पण छप्पणग छच्छ – प्पणग अट्ठ दसग ति ॥ ४१ ॥

सत्तेर अपज्जत्ता, सामी सुहुमा य बायरा चेव,
विगलिंदियाउ तिन्नि उ, तह य असन्नी य सन्नी अ ॥ ४२ ॥
नाणंतराय तिविहमवि, दससु दो हुंति दोसु ठाणेसु,
मिच्छासाणे बाए नव चउ पण नव य संतंसा ॥ ४३ ॥
मिस्साइ नियट्टीओ, छ चउ पण नव य संतकम्मंसा;
चउबंध तिगे चउ पण नवंस दुसु जुअल छस्संता ॥ ४४ ॥
उवसंते चउ पण नव, खीणे चउरुदय छच्च चउ संता,
वेअणि आउ अ गोए, विभज्ज मोहं परं वुच्छं ॥ ४५ ॥
चउ छस्सु दुन्नि सत्तसु एगे चउ गुणिसु वेअणिअभंगा,
गोए पण चउ दो तिसु, एगट्ठसु दुन्नि इक्कंमि ॥ ४६ ॥
अट्ठच्छाहिगवीसा, सोलस वीसं च बारस छ दोसु,
दो चउसु तीसु इक्कं, मिच्छाइसु आउए भंगा ॥ ४७ ॥
गुणठाणएसु अट्ठसु इक्किक्कं मोहबंधठाणं तु,
पंच अनिअट्टिठाणे, बंधोवरमो परं तत्तो ॥ ४८ ॥
सत्ताइ दस उ मिच्छे सासायणमीसए नवुक्कोसा,
छाइ नव उ अविरए, देसे पंचाइ अट्ठेव ॥ ४९ ॥
विरए खओवसमिए, चउराइ सत्त छच्च पुव्वंमि,
अनिअट्टिबायरे पुण, इक्को व दुवे व उदयंसा ॥ ५० ॥
एगं सुहुमसरागो वेएइ अवेअगा भवे सेसा,
भंगाणं च पमाणं पुव्वुद्दिट्ठेण नायव्वं ॥ ५१ ॥
इक्क छडिक्कारिक्कारसेव इक्कारसेव नव तिन्नि,
एए चउवीसगया, बार दुगे पंच इक्कंमि ॥ ५२ ॥
बारस पणसट्ठिसया, उदयविगप्पेहिं मोहिआ जीवा;
चुलसीई सत्तुत्तरी, पयविंदसएहिं विन्नेआ ॥ ५३ ॥

अट्ठग चउ चउ चउरट्ठगा य, चउरो अ हुंति चउवीसा,
मिच्छाइअपुव्वंता, बारस पणग च अनिअट्टी ॥ ५४ ॥
जोगोवओगलेसा,-इएहिं गुणिआ हवंति कायव्वा,
जे जत्थ गुणट्ठाणे हवंति ते तत्थ गुणकारा ॥ ५५ ॥
अट्ठट्ठी बत्तीसं बत्तीसं सट्ठिमेव बावन्ना,
चोआल दोसु वीसा विअ, मिच्छमाईसु सामन्नं ॥ ५६ ॥
तिन्नेगे एगेगं तिग मीसे पंच चउसु तिग पुव्वे,
इक्कार बायरंमि उ, सुहुमे चउ तिन्नि उवसंते ॥ ५७ ॥
छन्नव छक्कं तिग सत्त, दुग दुग तिग दुग ति अट्ठ चउ;
दुग छच्चउ दुग पण चउ, चउ दुग चउ पणग एग चऊ ॥ ५८ ॥
एगेगमट्ठ एगेगमट्ठ, छउमत्थकेवलिजिणाण,
एग चउ एग चउ अट्ठ चउ दु छक्कमुदयंसा ॥ ५९ ॥
चउ पणवीसा सोलस, नव चत्ताला सया य बाणउइ,
बत्तीसुत्तर छायाल-सया मिच्छस्स बंधविही ॥ ६० ॥
अट्ठ सया चउसट्ठी बत्तीसयाइ सासणे भेआ,
अट्ठावीसाइसु सव्वाणऽट्ठहिगछन्नउइ ॥ ६१ ॥
इगचत्तिगार बत्तीस छ सय इगतीसिगारनवनउई,
सत्तरिगसि गुतीसचउद, इगारचउसट्ठि मिच्छुदया ॥ ६२ ॥
बत्तीस दुन्नि अट्ठ य बासीइ सया य पंच नव उदया,
बारहिआ तेवीसा बावन्निक्कारस सया य ॥ ६३ ॥
दो छक्कट्ठ चउक्कं पण नव इक्कार छक्कगं उदया,
नेरइआइसु सत्ता ति पंच इक्कारस चउक्कं ॥ ६४ ॥
इग विगलिंदिअ सगले पण पंच य अट्ठ बंधठाणाणि,
पण छक्किक्कारुदया पण पण बारस य संताणि ॥ ६५ ॥

इअ कम्मपगइठाणाणि, सुस्ठु बधुदयसतकम्माण,
गइआइएहिं अट्ठसु, चउप्पयारेण नेयाणि ॥ ६६ ॥
उदयस्सुदीरणाए, सामित्ताओ न विज्जइ विसेसा,
मुत्तूण य इगयाल, सेसाण सन्वपयडीण ॥ ६७ ॥
नाणतरायदसग दसण नव वअणिज्ज मिच्छत्त,
सम्मत्त लोभ वेआ–उआणि नव नाम उच्च च ॥ ६८ ॥
तित्थयराहारगविरहिआउ अज्जेइ सव्व पयडीओ,
मिच्छत्तवेअगो सा–सणोवि गुणवीससेसाओ ॥ ६९ ॥
छायालसेस मीसो अविरयसम्मो तिआलपरिसेसा,
तेवन्न देसविरओ विरओ सगवन्नसेसाओ ॥ ७० ॥
इगुणट्ठिमप्पमत्तो बधइ देवाउअस्स इअरावि,
अट्ठावन्नमपुव्वो, छप्पन वावि छव्वीस ॥ ७१ ॥
बावीसा एगूण बधइ अट्ठारसतमनिअट्टि,
सतरस सुहुमसरागो, सायममोहो सजोगुत्ति ॥ ७२ ॥
एसो उ बधसामित्त–ओहो गइआइएसु वि तहेव,
ओहाओ साहिज्जइ जत्थ जहा पगइसभावो ॥ ७३ ॥
तित्थयरदेवनिरया–उअ च तिसु तिसु गईसु बोधव्व,
अवसेसा पयडीओ हवति सव्वासु वि गईसु ॥ ७४ ॥
पढमकसायचउक्क दसणतिग सत्तगा वि उवसता,
अविरयसम्मत्ताओ, जाव नियट्टि त्ति नायव्वा ॥ ७५ ॥
सत्तट्ठ नव य पनरस सोलस अट्ठारसेव गुणवीसा,
एगाहि दु चउवीसा पणवीसा बायरे जाण ॥ ७६ ॥
सत्तावीस सुहुमे अट्ठावीस च मोहपयडीओ,
उवसतवीअराए, उवसता हुति नायव्वा ॥ ७७ ॥

अजलिबद्धो, अद्धोणओ अ पचगओ अ तिपणामा ।
सव्वत्थ वा तिवारं, सिराइ नमणे पणामतिय ॥ ९ ॥
अगग्गभावभेया, पुप्फाहारथुइहिं पूयतिग ।
पचुवयारा अट्ठो,–वयार सव्वोवयारा वा ॥ १० ॥
भाविज्ज अवत्थतिय, पिंडत्थ पयत्थ रूवरहियत्तं ।
छउमत्थ केवलित्त सिद्धत्त चेव तस्सत्थो ॥ ११ ॥
न्हवणच्चगेहिं छउमत्थ, वत्थपडिहारगेहिं केवलिय ।
पलियकुस्सग्गेहि अ जिणस्स भाविज्ज सिद्धत्त ॥ १२ ॥
उड्ढाहो तिरियाण तिदिसाण निरिक्खण चइज्जहवा ।
पच्छिम दाहिण वामाण जिणमुहन्नत्थ दिट्ठिजुओ ॥ १३ ॥
वन्नतिय वन्नत्था,– लवणमालवण तु पडिमाइ ।
जोगजिणमुत्तसुत्ती,–मुद्दाभेण्ण मुद्दतिय ॥ १४ ॥
अन्नुन्नतरिअगुलि कोसागारेहिं दोहिं हत्थेहिं ।
पिट्टोवरि कुप्पर,–सठिएहिं तह जोगमुद्दत्ति ॥ १५ ॥
चत्तारि अगुलाइ, पुरओ ऊणाइ जत्थ पच्छिमओ ।
पायाण उस्सग्गो एसा पुण होइ जिणमुद्दा ॥ १६ ॥
मुत्तासुत्ती मुद्दा, जत्थ समा दोवि गब्भिया हत्था ।
ते पुण निलाडदेसे लग्गा अन्ने अलग्गा त्ति ॥ १७ ॥
पचगो पणिवाओ, थयपाढो होइ जोगमुद्दाए ।
वदण जिणमुद्दाए पणिहाण मुत्तसुत्तीए ॥ १८ ॥
पणिहाणतिग चेइअमुणिवदण पत्थणा सरूव वा ।
मणवयकाएगत्त, सेसतियत्थो य पयडुत्ति ॥ १९ ॥
सच्चित्तदव्वमुज्झणम,–च्चित्तमणुज्झण मणेगत्त,
इगसाडिउत्तरासगु, अजली सिरसि जिणदिट्ठे ॥ २० ॥

इअ पचविहाभिगमो अहवा मु चति रायचिण्हाई।
खग्ग उत्तोवाणह मउड चमरे अ पचमओ ॥ २१ ॥
वदंति जिणे दाहिण,– दिसि ठिया पुरस वामदिसि नारी।
नव कर जहन्न सट्ठिकर जिट्ठमज्झुग्गहो सेसो ॥ २२ ॥
नमुक्कारेण जहन्ना चिइवदण मज्झ दडथुइजुअला।
पण दड थुइचउक्कग,– थयपणिहाणेहिं उक्कोसा ॥ २३ ॥
अन्न बिंति इगेग सक्कत्थएण जहन्न वदणया
तद्दुगतिगेण मज्झा उक्कोसा चउहिं पचहिं वा ॥ २४ ॥
पणिवाओ पचगो, दो जाणु करदुगुत्तमग च
सुमहत्थ – नमुक्कारा, इग दुग तिग जाव अट्ठ सय ॥ २५ ॥
अडसट्ठि अट्ठवीसा, नवनउयसय च दुसय सगनउया
दो–गुणतीस दु सट्ठा, दुसोल अड नउयसय दुवन्नसय ॥ २६ ॥
इअ नवकार – खमासमण,– इरिअ – सक्कत्थयाइ दडेसु।
पणिहाणसु अ अदुरुत्त – वन्न सोल सय सीयाला ॥ २७ ॥
नव बत्तीस तित्तीसा तिचत्त अडवीस सोल वीस पया
मगल – इरिया – सक्कत्थयाइसु एगसीइसय ॥ २८ ॥
अट्ठट्ठनवट्ठ य अट्ठवीस, सोलस य वीस वीसामा,
कमसो मगल–इरिया, सक्कत्थयाइसु सगनउई ॥ २९ ॥
पण्णट्ठसट्ठि नव पय, नवकारे अट्ठ सपया तत्थ।
सग सपय पय तुल्ला सतरक्खर अट्ठमी दुपया ॥ ३० ॥
पणिवाय अक्खराइ, अट्ठावीस तहा य इरियाओ।
नवनउअमक्खरसय, दुतीस पय सपया अट्ठ ॥ ३१ ॥
दुग दुग इ [illegible] पण इगार छग इरिय–सपयाइ
[illegible]

इच्छा इरि मम पाणा जे मे ओगिग्नि अभि सम्म ॥ ३२ ॥
अन्नुरगमो निमित्त ओहे-यरहेउ मगहे पच,
जीव-विराहण-पडिक्कमण,- भेयओ तिन्नि चूलाओ ॥ ३३ ॥
दु ति चउ पण पण दु,- चउ - तिपय सक्कत्थय सपयाइ पया।
नमु आग्ग पुरिसो ग्गगु, अभय धम्मऽप्प जिगमच्च, ॥ ३४ ॥
थाअव्व सपया ओह इयरहेऊवओग तद्धेऊ।
सविसमुवओग सरूव,- हेउ नियममफ ग य मुक्खे ॥ ३५ ॥
दो मगनउआ वन्ना, नव सपय पय तित्तीस सक्कथए,
चेइयथयऽट्ठ सपय तिचत्तपय वन्न दुसय गुणतीसा ॥ ३६ ॥
दु छ सग नव तिय छ च्चउ, छप्पय चिऽमपया पया पढमा।
अरिह वदण सद्धा अन्न मुहुम अेव जा ताव ॥ ३७ ॥
अन्नुरगमो निमित्त, हेऊ इग बहु वयत आगारा।
आगतुग आगारा उस्सग्गावहि सरूवट्ठ ॥ ३८ ॥
नामथयाइसु सपय पयसम अडवीस सोल वीस कमा।
अदुरुत्त वन्न दोसट्ठ दुसयसोलट्ठनउअसय ॥ ३९ ॥
पणिहाणि दुवन्नसय कमेण सग ति चउवीस तित्तीसा।
गुणतीस अट्ठवीसा चउतीसिगतीस बार गुरु वन्ना ॥ ४० ॥
पण दडा सक्क थयचेइअ नाम सुअ सिद्धत्थय इत्थ।
दो इग दो दो पच य, अहिगारा बारस कमेण ॥ ४१ ॥
नमु जेय अ अरिहं लोग, सव्व पुक्खर तम सिद्ध जो देवा।
उज्जि चत्ता वेआ,- वच्चग अहिगार पढमपया ॥ ४२ ॥
पढमहिगारे वंदे, भावजिणे बीयए उ दव्वजिणे।
इगचेइय ठवणजिणे, तइय चउत्थमि नामजिणे ॥ ४३ ॥

तिहुअणठवणजिणे पुण पचमए विहरमाणजिण छट्ठ।
सत्तमए सुयनाण, अट्ठमए सव्वसिद्धथुइ ॥ ४४ ॥
तित्थाहिव वीरथुइ, नवमे दसमे य उज्जयत थुई।
अट्ठावयाइ इगदिसि सुदिट्ठिसुरसमरणा चरिमे ॥ ४५ ॥
नव अहिगारा इह ललिअवित्थरा वित्तिमाइ अणुसारा।
तिन्नि सुयपरपरया बीओ दसमो इगारसमो ॥ ४६ ॥
आवस्सय चुण्णीए, ज भणिय सेसया जहिच्छाए।
तेण उज्जिताइ वि, अहिगारा सुयमया चेव ॥ ४७ ॥
बीओ सुयत्थयाइ, अत्थओ वन्निओ तहिं चेव।
सक्कत्थयते पढिओ, दव्वारिहऽवसरि पयडत्थो ॥ ४८ ॥
असढाऽऽइन्नणवज्ज गीअत्थ अवारिय ति मज्झत्था।
आयरणा वि हु आण त्ति, वयणओ सुबहु मन्नति ॥ ४९ ॥
चउ वदणिज्ज जिण मुणि, सुय सिद्धा इह सुरा य सरणिज्जा
चउह जिणा नाम ठवण, दव्व, भाव जिण भेएण ॥ ५० ॥
नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणिंदपडिमाओ।
दव्वजिणा जिणजीवा, भावजिणा समवसरणत्था ॥ ५१ ॥
अहिगय जिण पढमथुइ, बीया सव्वाण तइअ नाणस्स।
वेयावच्चगराण उवओगत्थ चउत्थ थुई ॥ ५२ ॥
पावखवणत्थ इरिआइ, वदणवत्तिआइ छ निमित्ता।
पवयणसुर सरणत्थ उस्सग्गो इअ निमित्तट्ठ ॥ ५३ ॥
चउ तस्स उत्तरीकरण, पमुह सद्धाइआ य पण हेउ।
वेयावच्चगरत्ताइ तिन्नि इअ हेउ बारसग ॥ ५४ ॥
अन्नत्थयाइ बारस आगारा एवमाइया चउरो।
अगणी पणिंदि छिंदण बोही खोभाऽऽइ डक्को य ॥ ५५ ॥

घोडग लय खमाट, मालुद्धी निअल मवरि सलिण वहू ।
लवुत्तर थण मजई, भमुहगुलि वायस कविट्टो ॥ ५६ ॥
सिरकंप मूअ वारणि पेहत्ति चइज्ज दोस उस्सग्गे ।
लवुत्तर थण सजर, न दोस समणीण सवहु सड्ढीण ॥ ५७ ॥
इरि उस्सग्गपमाण, पणवीसुस्सास अट्ट सेससु ।
गभीर महुर सद्द महत्थ जुत्त हवइ थुत्त ॥ ५८ ॥
पडिकमणे चइय जिमण चरिम पडिकमण सुअण पडिबोहे ।
चिइवदण इअ जइणो, सत्त उ वेला अहारत्ते ॥ ५९ ॥
पडिकमओ गिहिणो वि हु, सगवेला पचवेला इअरस्स ।
पूआसु तिसझासु अ, होइ तिवेला जहन्नेण ॥ ६० ॥
तबोल पाण भोयण, वाणह महुन्न सुअण निट्ठवण ।
मुत्तचार जूअ, वज्जे जिणनाह जगईए ॥ ६१ ॥
इरि नमुकार नमुत्थुण, रिहत थुइ लोग मन्व थुइ पुक्ख ।
थुइ सिद्ध वेया थुइ नमुत्थु जावतिथय जयवी ॥ ६२ ॥
सव्वोवाहि विसुद्ध, एव जो वदए सया देवे ।
देविंदविंदमहिअ, परमपय पावइ लहु सो ॥ ६३ ॥

श्री गुरुवंदन भाष्य मूल

गुरुवदणमह तिविह, त फिट्टा छोभ बारसावत्त ।
सिरनमणाइसु पढम पुण्ण खमासमण दुगि बीअ ॥ १ ॥
जह दूओ रायाण, नमिउ कज्ज निवेइउ पच्छा ।
वीसज्जिओ वि वदिअ, गच्छइ एमेव इत्थ दुग ॥ २ ॥
आयारस्स उ मूल, विणओ सो गुणवओ अ पडिवत्ती ।

गा य विहि वदणाओ, विही इमो बारमावत्ते ॥ ३ ॥
तस्य तु छदण दुग, तत्थ मिहा आइम मयम्मय ।
वीय तु दसणीण य, पयहिआण च तस्य तु ॥ ४ ॥
वदण चिइ किइकम्म, पूआकम्म च विणयकम्म च ।
कायव्व कस्स व केण, वावि काहेव कइखुत्तो ॥ ५ ॥
कइ ओणय कई सिर कइहिं व आवस्सएहि परिसुद्धं ।
कइदोमविप्पमुक्क किइकम्म कीस कीरइ वा ॥ ६ ॥
पण नाम पणाहरणा अजुग्ग पण जुग्ग पण चउ अदाया ।
चउदाय पण निमेहा चउ अणिसेह ट्ठकारणया ॥ ७ ॥
आवस्सय मुहणतय, तणुपेह पणीस दोस बत्तीसा ।
छगुण गुरुठवण दुग्गह, दुछवीस क्खर गुरु पणीसा ॥ ८ ॥
पय अडवन्न छठाणा छगुरुवयणा आसायणतितीस ।
दुविही दुवीस दारेहिं, चउसया बाणउइ ठाणा ॥ ९ ॥
वदणय चिइकम्म, किइकम्म विणयकम्म पूअकम्म ।
गुरुवदण पण नामा दव्वे भाव दुहाहरणा (दुहाहिण)॥ १० ॥
सीयलय खुड्डुए वीर कण्ह सेवग दु पालए सबे ।
पचे ए दिट्ठता, किइकम्मे दव्वभावेहिं ॥ ११ ॥
पासत्थो ओसन्नो कुसीलो ससत्तओ अहाछंदो ।
दुग दुग ति दु णेगविहा अवदणिज्जा जिणमयमि ॥ १२ ॥
आयरिय उवज्झाए पवत्ति थेरे तहेव रायणिए ।
किइकम्म निज्जरट्ठा कायव्वमिमेसि पचण्ह ॥ १३ ॥
माय पिअ [illegible] तहेव सव्व रायणिए ।
किइकम्म न का[illegible] समणाइ कुणंति पुणो ॥ १४ ॥

घोडग लय खभाट, मालुद्धी निअल मवरि दालिण वहू।
लवुत्तर अण सजंद, भमुहंगुलि वायस कविट्टो ॥ ५६॥
सिरकंप मूअ वारणि पेहत्ति चइज्ज दोस उस्सग्गे।
लवुत्तर थण सजइ, न दोस समणीण सवहू सद्धीण ॥ ५७॥
इरि उस्सग्गपमाण, पणवीसुस्सास अट्ट सेसेसु।
गभीर महुर सद्द महत्थ जुत्त हवइ थुत्त ॥ ५८॥
पडिकमणे चइय जिमण चरिम पडिकमण सुअण पडिबोहे।
चिइवंदण इअ जइणो, सत्त उ वेला अहोरत्ते ॥ ५९॥
पडिकमओ गिहिणा वि हु, सगवेला पचवेल इअरस्स।
पूआसु तिसझासु अ, होइ तिवेला जहन्नेण ॥ ६०॥
तंबोल पाण भोयण, वाणह मेहुन्न सुअण निट्ठवण।
मुत्तचार जूअ, वज्जे जिणनाह जगईए ॥ ६१॥
इरि नमुकार नमुत्थुण, रिहत थुइ लोग सव्व थुइ पुक्ख।
थुइ सिद्ध वेया थुइ नमुत्थु जावंतिथय जयवी ॥ ६२॥
सव्वोवाहि विसुद्ध, एव जो वदए सया देवे।
देविंदविंदमहिअ, परमपय पावइ लहु सो ॥ ६३॥

श्री गुरुवदन भाष्य मूल

गुरुवदणमह तिविह, त फिट्टा छोभ बारसावत्त।
सिरनमणाइसु पढम पुण्ण खमासमण दुगि बीअ ॥ १ ॥
जह दुओ रायाण, नमिउ कज्ज निवेइउ पच्छा।
वीसज्जिओ वि वदिअ, गच्छइ एमेर इत्थ दुग ॥ २ ॥
आयारस्स उ मूल, विणओ सो गुणवओ अ पडिवत्ती।

सा य विहि वदणाओ, विही इमो बारसावत्ते ॥ ३ ॥
तइय तु छदण दुगे, तत्य मिहो आइम सयलमवे ।
बाय तु दसणीण य, पयद्विआण च तइय तु ॥ ४ ॥
वंदण चिइ किइकम्म, पूआकम्म च विणयकम्म च ।
कायव्व कस्स व केण, वावि काहेव कइखुत्तो ॥ ५ ॥
कइ ओणय कइ सिर कइहिं व आवस्सएहिं परिसुद्ध ।
कइदोसविप्पमुक्क किइकम्म कीस कीरइ वा ॥ ६ ॥
पण नाम पणाहरणा अजुग्ग पण जुग्ग पण चउ अदाया ।
चउदाय पण निसेहा चउ अणिसेह इकारणया ॥ ७ ॥
आवस्सय मुहणतय, तणुपेह पणीस दास वत्तीसा ।
छगुण गुरुठवण दुग्गह, दुछवीस अक्खर गुरु पणीसा ॥ ८ ॥
पय अडवन्न छठाणा छगुरुवयणा आसायणतित्तीस ।
दुविही दुवीस दारेहिं, चउसया वाणउइ ठाणा ॥ ९ ॥
वदणय चिइकम्म, किइकम्म विणयकम्म पूअकम्म ।
गुरुवदण पण नामा दव्वे भावे दुहाहरणा (दुहोहण)॥ १० ॥
सीयलय खुड्डए वीर कण्ह सेवग दु पालए सवे ।
पचे ए दिट्ठता, किइकम्मे दव्वभावेहिं ॥ ११ ॥
पासत्थो ओसन्नो कुसील ससत्तओ अहाछदो ।
दुग दुग ति दु णेगविहा अवदणिज्जा जिणमयमि ॥ १२ ॥
आयरिय उवज्झाओ पवत्ति थेरे तहेव रायणिओ ।
किइकम्म निज्जरट्ठा कायव्वमिमेसि पचण्ह ॥ १३ ॥
माय पिअ जिट्ठभाया ओमावि तहेव सव्व रायणिओ ।
किइकम्म न कारिज्जा, चउ समणाइ कुणंति पुणो ॥ १४ ॥

निक्खित्त पराहुते अ पमत्ते मा कयाइ वंदिज्जा
आहार नीहारं कुणमाणे काउकामे अ ॥ १५ ॥
पसंते आसणत्थे अ उवसंते उवट्ठिए ।
अणुनवित्तु महावी किइकम्म पउंजइ ॥ १६ ॥
पडिकमणे सज्झाए काउस्सग्गावराह पाहुणए ।
आलोयण संवरणे उत्तमट्टे य वंदणय ॥ १७ ॥
दोऽवणयमहाजायं, आवत्ता बार चउ सिर तिगुत्त ।
दुपवेसिग निक्खमणं, पणवीसावस्सय किइकम्मे ॥ १८ ॥
किइकम्मंपि कुणंतो, न होइ किइकम्म निज्जराभागी
पणवीसामन्नयरं साहू ठाणं विराहंतो ॥ १९ ॥
दिट्ठिपडिलेह एगा उ उड्ढ पप्फोड तिगतिगंतरिआ ।
अक्खोड पमज्जणया, नव नव मुहपोत्ति पणवीसा ॥ २० ॥
पायाहिणेण तिअ तिअ वामेअर बाहु सीस मुह हियए
असुड्ढाहो पिट्ठे चउ छप्पय देह पणवीसा ॥ २१ ॥
आवस्सएसु जह जह कुणइ पयत्तं अहीणमइरित्तं ।
तिविह करणोवउत्तो तह तह से निज्जरा होइ ॥ २२ ॥
दोस अणाढिअ थद्धिअ पविद्ध परिपिंडिअं च टोलगइ ।
अंकुस कच्छभरिंगिअ मच्छुव्वत्तं मणपउट्ठं ॥ २३ ॥
वेइय बद्ध भयंतं, भय गारव मित्त कारणा तिन्न ।
पडणीय रुट्ठ तज्जिअ, सढ हीलिअ विपलिउंचियय ॥ २४
दिट्ठमदिट्ठ सिंग कर तम्मोअण अणिद्धणालिद्ध ।
ऊण उत्तर चूलिअ, मूअ ढड्ढर चुडलिय च ॥ २५ ॥
बत्तीस दोस परिसुद्ध किइकम्म जो पउंजइ गुरुणं ।
सो पावइ निव्वाण, अचिरेण विमाणवासं वा ॥ २६ ॥

इह छच गुणा विणओवयार माणाइभग गुरुपूआ ।
तित्थयराण य आणा सुअधम्माराहणा ऽकिरिया ॥ २७ ॥
गुरुगुणजुत्त तु गुरु, ठाविज्जा अहव तत्थ अक्खाई ।
अहवा नाणाइ तिअ, ठविज्ज सक्ख गुरुअभावे ॥ २८ ॥
अक्खे वराडए वा, कट्ठे पुत्थे अ चित्तकम्मे अ ।
सब्भावमसब्भाव गुरुठवणा इत्तरावकहा ॥ २९ ॥
गुरुविरहमि ठवणा गुरुवएसोवदसणत्थ च ।
जिणविरहमि जिणबिंब,—सेवणामतण सहल ॥ ३० ॥
चउदिसि गुरुग्गहो इह अहुट्ट तेरस करे सपरपक्खे ।
अणणुन्नायस्स सया, न कप्पए तत्थ पविसेउ ॥ ३१ ॥
पण तिग बारस दुग तिग चउरो छट्ठाण पय इगुणतीस ।
गुणतीस सेस आवस्सयाइ सव्वपय अडवन्ना ॥ ३२ ॥
इच्छा य अणुन्नवणा अव्वाबाह च जत्त जवणा य ।
अवराहखामणा वि य वदणदायस्स छट्ठाणा ॥ ३३ ॥
छदेणणुजाणामि तहत्ति तुब्भपि वट्टए एव ।
अहमवि खामेमि तुम वयणाइ वदणरिहस्स ॥ ३४ ॥
पुरओ पक्खासन्ने गता चिट्ठण निसीअणा यमणे ।
आलोयण ऽपडिसुणणे पुव्वालवणे अ आलोए ॥ ३५ ॥
तह उवदस निमतण, खद्धाययणे तहा अपडिसुणणे ।
खद्धत्ति य तत्थगए, किं तुम तज्जाय नो सुमणे ॥ ३६ ॥
नो सरसि कहछित्ता परिसभित्ता अणुट्ठियाइ कहे ।
सथार पायघट्टण चिट्ठुच्च समासणे आवि ॥ ३७ ॥
इरिया कुसुमिणुसग्गो, चिइवदण पुत्ति वदणालोय ।
वदण खामण वदण सवर चउछोभ दु सज्झाओ ॥ ३८ ॥

इरिया चिइवदण पुत्ति, वदण चरिम वदणा लोय ।
वदण खामण चउ छोभ दिवसुस्सग्गो दु सज्झाओ ॥ ३९ ॥
एय किइकम्मविहिं, जुजता चरणकरणमाउत्ता ।
साहू खवति कम्म अणेगभवसचियमणत ॥ ४० ॥
अप्पमइ भव्व बोहत्थ भासिय विवरिय य जमिह मए ।
त सोहतु गियत्था अणभिनिवेसी अमच्छरिणो ॥ ४१ ॥

श्री पच्चक्खाण भाष्य मूल

दस पच्चखाण चउ विहि आहार दुवीसगार अदुरुत्ता ।
दस विगइ तीस निगइगय दुहभगा छ सुद्धिफल ॥ १ ॥
अणागयमइक्कत कोडिसहिय नियटि अणगार ।
सागार निरवसेस परिमाणकड सके अद्धा ॥ २ ॥
नवकारसहिअ पोरिसि, पुरिमड्ढेगासणेगठाण अ ।
आयबिल अभत्तट्ठे, चरिमे अ अभिग्गहे विगइ ॥ ३ ॥
उग्गए सूरे अ नमो पोरिसि पच्चक्खउ उग्गए सूरे ।
सूरे उग्गए पुरिम, अभत्तट्ठ पच्चक्खाइ त्ति ॥ ४ ॥
भणइ गुरु सीसो पुण, पच्चक्खामि त्ति एव वोसिरइ ।
उवओगित्थ पमाण, न पमाण वजणच्छलणा ॥ ५ ॥
पढमे ठाणे तेरस बीए तिन्नि उ तिगाइ तइअमि ।
पाणस्स चउत्थमि, देसवगासाइ पचमए ।
नमु पोरिसी सड्ढा पुरिमवड्ढ अगुट्ठमाइ अड तेर ।
निवि विगइ बिल तिय तिय, दु इगासण एगठाणाई ॥ ७ ॥
चउत्थाइ, तेरस बीयमि तइय पाणस्स ।

देसवगास तुरिअे चरिमे जहसंभव नेय ॥ ८ ॥
तह मज्झ पच्चक्खाणेसु न पि हु सुत्तगयाइ नोमिरइ ।
करणविही उ न भन्नइ, जहावसीयाइ बिअछंदे, ॥ ९ ॥
तह तिविह पच्चक्खाण भन्नंति अ पाणगस्स आगारा ।
दुविहाहारे अचित्त,–भोइणो तह य फासुजले ॥ १० ॥
इत्तुच्चिय खवणंबिल, निव्वियाइसु फासुय चिय जलं तु ।
सड्ढा वि पियंति तहा प च्चक्खंति य तिहाहारं ॥ ११ ॥
चउहाहारं तु नमो, रत्तिंपि मुणीण सेस तिह चउहा ।
निसि पोरिसि पुरिमेगासणाइ सड्ढाण दुतिचउहा ॥ १२ ॥
खुहपसम खमेगागी आहारि व अेइ देइ वा साय ।
खुहिओ वि खिवइ कुट्ठे ज पंकुवम तमाहारो ॥ १३ ॥
असणे मुग्गोयण सत्तु, मंड पय खज्ज रब्ब कंदाई ।
पाणे कंजिय जव कयर, ककडोदग सुराइ जलं ॥ १४ ॥
खाईमे भत्तोस फलाइ, साइम सुंठि जीर अजमाई ।
महु गुड तंबोलाइ अणहारे मोअ निंबाइ ॥ १५ ॥
दो नवकारि छ पोरिसि, सग पुरिमड्ढे इगासणे अट्ठ ।
सत्तेगठाणि अंबिलि, अट्ठ पण चउत्थि छप्पाणे ॥ १६ ॥
चउ चरिम चउ भिग्गहि, पण पावरणे नवट्ठ निव्वीअे ।
आगारुक्खित्त विव–गमुत्त दवविगइ नियमिट्ठ ॥ १७ ॥
अन सह दु नमुक्कार अन्न सह प्पच्छ दिस य साहु सव्व ।
पोरिसि छ सड्ढपोरिसि, पुरिमड्ढे सत्त समहत्तरा ॥ १८ ॥
अन्न सह [illegible] अ, आउंटण गुरु अ पारि मह सव्व ।
अेग [illegible] उ, सग इगठाणे अउंट विणा ।

जाणगऽजाणगपास त्ति, भंगचउगं तिसु अणुन्ना ॥ ४३ ॥
फासिय पालिय सोहिय तीरिय किट्टिय आराहिय छ सुद्धं ।
पच्चक्खाणं फासिय विहिणोचियकालि जं पत्तं ॥ ४४ ॥
पालिय पुण पुण सरिय, सोहिय गुरुदत्त सेस भोयणओ ।
तीरिय समहिय काला, किट्टिय भोयणसमयसरणा ॥ ४५ ॥
इअ पडिअरिअं आरा-हियं, तु अहवा छ सुद्धि सद्दहणा ।
जाणण विणयऽणुभासण, अणुपालण भावसुद्धि त्ति ॥ ४६ ॥
पच्चक्खाणस्स फलं, इह परलोए य होइ दुविहं तु ।
इहलोए धम्मिल्लाई, दामन्नगमाइ परलोए ॥ ४७ ॥
पच्चक्खाणमिणं से-विऊण, भावेण जिणवरुद्दिट्ठं ।
पत्ता अणंत जीवा सासय सुक्खं अणाबाहं ॥ ४८ ॥

भाष्यत्रय समाप्त

॥ श्री तत्त्वार्थाधिगमसूत्रम् ॥

प्रथमोऽध्यायः ।

१ सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः । २ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् । ३ तन्निसर्गादधिगमाद्वा । ४ जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् । ५ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः । ६ प्रमाणनयैरधिगमः । ७ निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः । ८ सत्सङ्ख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च । ९ मतिश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलानि ज्ञानम् । १० तत्प्रमाणे । ११ आद्ये परोक्षम् । १२ प्रत्यक्षमन्यत् । १३ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् । १४ तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् । १५ अवग्रहेहापायधारणाः । १६ बहुबहुविधक्षिप्रानिश्रितासंदिग्धध्रुवाणां सेतराणाम् । १७ अर्थस्य । १८ व्यञ्जनस्यावग्रहः । १९ न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् । २० श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् । २१ द्विविधोऽवधिः । २२ भवप्रत्ययो नारकदेवानाम् । २३ यथोक्तनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् । २४ ऋजुविपुलमती मनःपर्यायः । २५ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः । २६ विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्याययोः । २७ मतिश्रुतयोर्निबन्धः सर्वद्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु । २८ रूपिष्ववधेः । २९ तदनन्तभागे मनःपर्यायस्य । ३० सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य । ३१ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः । ३२ मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च । ३३ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् । ३४ नैगमसङ्ग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दा नयाः । ३५ आद्यशब्दौ द्वित्रिभेदौ ॥

अथ द्वितीयोऽध्याय

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौद-
यिकपारिणामिकौ च। २ द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथा-
क्रमम्। ३ सम्यक्त्वचारित्रे। ४ ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोग-
वीर्याणि च। ५ ज्ञानाज्ञानदर्शनदानादिलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः
सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च। ६ गतिकषायलिंगमिथ्या-
दर्शनाज्ञानासंयतासिद्धत्वलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः। ७
जीवभव्याभव्यत्वादीनि च। ८ उपयोगो लक्षणम्। ९ स
द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः। १० संसारिणो मुक्ताश्च। ११ समनस्का-
मनस्काः। १२ संसारिणस्त्रसस्थावराः। १३ पृथिव्यम्बुवनस्पतयः
स्थावराः। १४ तेजोवायू द्वीन्द्रियादयश्च त्रसाः। १५ पञ्चेन्द्रि-
याणि। १६ द्विविधानि। १७ निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम्।
१८ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्। १९ उपयोगः स्पर्शादिषु।
२० स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि। २१ स्पर्शरसगन्धवर्ण-
शब्दास्तेषामर्थाः। २२ श्रुतमनिन्द्रियस्य। २३ वाय्वन्ता-
नामेकम्। २४ कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि।
२५ संज्ञिनः समनस्काः। २६ विग्रहगतौ कर्मयोगः।
२७ अनुश्रेणि गतिः। २८ अविग्रहा जीवस्य। २९ विग्रहवती
च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः। ३० एकसमयोऽविग्रहः। ३१
एकं द्वौ वाऽनाहारकः। ३२ सम्मूर्च्छनगर्भोपपाता जन्म।
३३ सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः। ३४ जरा-
य्वण्डपोतजानां गर्भः। ३५ नारकदेवानामुपपातः। ३६ शेषाणां
। ३७ औदारिकवैक्रियाहारकतैजसकार्मणानि

शरीराणि। ३८ परं परं सूक्ष्मम्। ३९ प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात्। ४० अनन्तगुणे परे। ४१ अप्रतिघाते। ४२ अनादि-सम्बन्धे च। ४३ सर्वस्य। ४४ तदादीनि भाज्यानि युगपदे-कस्याऽऽचतुर्भ्यः। ४५ निरुपभोगमन्त्यम्। ४६ गर्भसम्मूर्छ-नजमाद्यम्। ४७ वैक्रियमौपपातिकम्। ४८ लब्धिप्रत्ययं च। ४९ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं चतुर्दशपूर्वधरस्यैव। ५० नारकसम्मूर्छिनो नपुंसकानि। ५१ न देवाः। ५२ औप-पातिकचरमदेहोत्तमपुरुषासंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः।

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

१ रत्नशर्करावालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभाभूमयो घनाम्बु-वाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः पृथुतराः। २ तासु नरकाः। ३ नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः। ४ परस्परो-दीरितदुःखाः। ५ संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः। ६ तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः। ७ जम्बूद्वीपलवणादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः। ८ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः। ९ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः। १० तत्र भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि। ११ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मि-शिखरिणो वर्षधरपर्वताः। १२ द्विर्धातकीखण्डे। १३ पुष्करार्धे च। १४ प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः। १५ आर्या म्लिशश्च।

१६ भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्य.। १७ नृस्थिती परापरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते। १८ तिर्यग्योनीना च।

॥ अथ चतुर्थोऽध्याय ॥

देवाश्चतुर्निकाया.। २ तृतीय पीतलेश्य' ३ दशाष्टपञ्चद्वादश-विकल्पा कल्पोपपन्नपर्यन्ताः। ४ इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषद्यात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्बिषिकाश्चैकश।५ त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्का। ६ पूर्वयोर्द्वीन्द्रा'। ७ पीतान्तलेश्या. ८ कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ९ शेषा' स्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचारा ११ भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमारा' १२ व्यन्तरा किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचा १३ ज्योतिष्का सूर्याचन्द्रमसो ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च। १४ मेरुप्रदक्षिणानित्यगतयो नृलोके। १५ तत्कृत कालविभाग १६ बहिरवस्थिता १७ वैमानिका १८ कल्पोपपन्ना कल्पातीताश्च। १९ उपर्युपरि। २० सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्टशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धे च। २१ स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिका २२ गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीना। २३ पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु। २४ प्राग्ग्रैवेयकेभ्य. कल्पा। २५ ब्रह्मलोकालया लोकान्तिका। २६ सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधमरुतोऽरिष्टाश्च। २७ विजयादिषु द्विचरमा' २८ औप-

योरुपकार । १८ आकाशस्यावगाह' १९ शरीरवाङ्मनःप्राणापाना. पुद्गलानाम् । २० सुखदःखजीवितमरणोपग्रहाश्च । २१ परस्परोपग्रहो जीवानाम् । २२ वर्तना परिणामः क्रिया परत्वापरत्वे च कालस्य । २३ स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गला २४ शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपोद्योतवन्तश्च २५ अणव स्कन्धाश्च । २६ सघातभेदेभ्य उत्पद्यन्ते । २७ भेदादणु । २८ भेदसघाताभ्या चाक्षुषा । २९ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त सत् । ३० तद्भावाव्यय नित्यम् । ३१ अर्पितानर्पितसिद्धे । ३२ स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः । ३३ न जघन्यगुणानाम् । ३४ गुणसाम्ये सदृशानाम् । ३५ द्व्यधिकादिगुणाना तु । ३६ बन्धे समाधिकौ पारिणामिकौ । ३७ गुणपर्यायवद् द्रव्यम् । ३८ कालश्चेत्येके । ३९ सोऽनन्तसमय' ४० द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणा ४१ तद्भाव परिणाम । ४२ अनादिरादिमांश्च । ४३ रूपिष्वादिमान् । ४४ योगोपयोगौ जीवेषु ।

॥ अथ षष्ठोऽध्याय ॥

१ कायवाङ्मन'कर्म योग । २ स आस्रव' । ३ शुभः पुण्यस्य । ४ अशुभः पापस्य । ५ सकषायाकषाययो. साम्परायिकेर्यापथयो. । ६ अव्रतकषायेन्द्रियक्रिया' पच चतु. पच पचविंशतिसख्या' पूर्वस्य भेदा । ७ तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभाववीर्याधिकरणविशेषेभ्यस्तद्विशेष' । ८ अधिकरण जीवाजीवा. । ९ आद्य सरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारितानुमतकषाय विशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकश । १० निर्वर्तनानिक्षेपसयोगनिसर्गा

द्विचतुर्द्विभेदा परम् । ११ तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयो. । १२ दु खशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थान्यसद्वेद्यस्य । १३ भूतव्रत्यनुकम्पादान सरागसंयमादियोग क्षान्ति शौचमिति सद्वेद्यस्य । १४ केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य । १५ कषायोदयात्तीव्रात्मपरिणामश्चारित्रमोहस्य । १६ बह्वारम्भपरिग्रहत्वं च नारकस्यायुष । १७ माया तैर्यग्योनस्य । १८ अल्पारम्भपरिग्रहत्व स्वभावमार्दवार्जवं च मानुषस्य । १९ नि शीलव्रतत्व च सर्वेषाम् । २० सराग-संयमसंयमासंयमाकामनिर्जराबालतपांसि देवस्य । २१ योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्न । २२ विपरीत शुभस्य । २३ दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी संघसाधुसमाधिवैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभावनाप्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकृत्त्वस्य २४ परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य । २५ तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य । २६ विघ्नकरणमन्तरायस्य ।

॥ अथ सप्तमोऽध्याय ॥

१ हिंसाऽनृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् । २ देशसर्वतोऽणुमहती । ३ तत्स्थैर्यार्थं भावना. पञ्च पञ्च । ४ हिंसादिष्विहामुत्र चापायावद्यदर्शनम् । ५ दु खमेव वा । ६ मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानि सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनेयेषु । ७

जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम् । ८ प्रमत्तयोगात्प्राण-
व्यपरोपणं हिंसा । ९ असदभिधानमनृतम् । १० अदत्तादानं
स्तेयम् । ११ मैथुनमब्रह्म । १२ मूर्च्छा परिग्रहः । १३
निःशल्यो व्रती । १४ अगार्यनगारश्च । १५ अणुव्रतोऽगारी ।
१६ दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोगपरि-
भोगातिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च । १७ मारणान्तिकीं सल्लेखनां
जोषिता । १८ शङ्काकांक्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः
सम्यग्दृष्टेरतिचाराः । १९ व्रतशीलेषु पंच पंच यथाक्रमम् । २०
बन्धवधच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः । २१ मिथ्योप-
देशरहस्याभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमन्त्रभेदाः ।
२२ स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानो-
न्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः । २३ परविवाहकरणेत्वरपरिगृहीतापरि-
गृहीतागमनानङ्गक्रीडातीव्रकामाभिनिवेशाः । २४ क्षेत्रवास्तुहिर-
ण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः । २५ ऊर्ध्वा-
धस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि । २६ आनयन-
प्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः । २७ कन्दर्पकौत्कुच्य-
मौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगाधिकत्वानि । २८ योगदुष्प्रणि-
धानानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि । २९ अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितो-
त्सर्गादाननिक्षेपसंस्तारोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि । ३०
सचित्तसम्बद्धसम्मिश्राभिषवदुष्पक्वाहाराः । ३१ सचित्तनिक्षेप-
पिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः । ३२ जीवितमरणा-
शंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानकरणानि । ३३ अनुग्रहार्थं
स्वस्यातिसर्गो दानम् । ३४ विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ।

॥ अथ अष्टमोऽध्याय ॥

१ मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बन्धहेतवः । २ सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते । ३ स बन्धः । ४ प्रकृतिस्थित्यनुभावप्रदेशास्तद्विधयः । ५ आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुष्कनामगोत्रान्तरायाः ६ पञ्चनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् । ७ मत्यादीनाम् । ८ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धिवेदनीयानि च । ९ सदसद्वेद्ये । १० दर्शनचारित्रमोहनीयकषायनोकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विषोडशनवभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयानि कषायनोकषायावनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुंनपुंसकवेदाः । ११ नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि । १२ गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसंघातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघातपराघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तस्थिरादेययशांसि सेतराणि तीर्थकृत्त्वं च । १३ उच्चैर्नीचैश्च । १४ दानादीनाम् । १५ आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परा स्थितिः । १६ सप्ततिर्मोहनीयस्य । १७ नामगोत्रयोर्विंशतिः । १८ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष्कस्य । १९ अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य । २० नामगोत्रयोरष्टौ । २१ शेषाणामन्तर्मुहूर्तम् । २२ विपाकोऽनुभावः । २३ स यथानाम । २४ ततश्च निर्जरा । २५ नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाढस्थिताः

सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः । २६ सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्यरति-
पुरुषवेदशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ।

॥ अथ नवमोऽध्याय ॥

१ आस्रवनिरोध संवर । २ स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा-
परीषहजयचारित्रैः । ३ तपसा निर्जरा च । ४ सम्यग्योगनिग्रहो
गुप्ति । ५ ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गा समितयः । ६
उत्तम क्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मच
र्याणि धर्म । ७ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रव-
संवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षा ।
मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्या परिषहा । ९ क्षुत्पिपा-
साशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याऽऽक्रोशवध-
याचनाऽलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानादर्शनानि
१० सूक्ष्मसंपरायछद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश । ११ अेकादश
जिने । १२ बादरसंपराये सर्वे । १३ ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने ।
१४ दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ । १५ चारित्रमोहे नाग्न्या-
रतिस्त्रीनिषद्याऽऽक्रोशयाचनासत्कारपुरस्कारा । १६ वेदनीये
शेषा । १७ अेकादयो भाज्या युगपदेकोनविंशते । १८ सामायि-
कछेदोपस्थाप्यपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसंपराययथाख्यातानि चारि-
त्रम् । १९ अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविवि-
क्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्य तप । २० प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्त्य-
स्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् । २१ नवचतुर्दशपञ्चद्विभेद यथा-
प्राग्ध्यानात् । २२ आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्स-

गतप्रच्छेदपरिहारोपस्थापनानि । २३ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ।
२४ आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षकग्लानगणकुलसंघसाधुसमनोज्ञानाम् । २५ वाचनापृच्छनाऽनुप्रेक्षाऽऽम्नायधर्मोपदेशाः । २६ बाह्याभ्यन्तरोपध्योः । २७ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानम् । २८ आमुहूर्तात् । आर्तरौद्रधर्मशुक्लानि । ३० परे मोक्षहेतू ।
३१ आर्तममनोज्ञानां सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ।
३२ वेदनायाश्च । ३३ विपरीतं मनोज्ञानाम् । ३४ निदानं च ।
३५ तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् । ३६ हिंसाऽनृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः । ३७ आज्ञाऽपायविपाकसंस्थानविचयाय धर्ममप्रमत्तसंयतस्य । ३८ उपशान्तक्षीणकषाययोश्च । ३९ शुक्ले चाद्ये । ४० परे केवलिनः ।
४१ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाऽप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवृत्तीनि । ४२ तत् त्र्येककाययोगायोगानाम् । ४३ एकाश्रये सवितर्के पूर्वे । ४४ अविचारं द्वितीयम् । ४५ वितर्कः श्रुतम् ।
४६ विचारोऽर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तिः । ४७ सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः । ४८ पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः । ४९ संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपातस्थानविकल्पतः साध्याः ।

॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥

१ मोहक्षयाद् ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् । २ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्याम् । ३ कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः । ४औप-

शमिकादिभव्यत्वाभावाच्चान्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसि
द्धत्वेभ्य ५ तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् । ६ पूर्वप्रयोग
दसंगत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च तद्गतिः ७ क्षे
कालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनान्तरसंख्याल्पबहु
त्वत साध्या. ॥

—(समाप्त)—